PG HN S4-04 (DSE)

TWO YEAR MASTER'S DEGREE COURSE
(CBCS in accordance with NEP 2020)

SEMESTER-IV

अनुवाद विज्ञान और उसका सिद्धांत

HINDI

Padmanath Gohainbaruah School of Humanities
KRISHNA KANTA HANDIQUI STATE OPEN UNIVERSITY

विषय विशेषज्ञ

प्रोफेसर दिलीप कुमार मेधी, हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय , असम
प्रोफेसर अमूल्य बर्मन, हिंदी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय (सेवानिवृत विभागाध्यक्ष)
प्रोफेसर भूषण पाठक, अध्यक्ष, बी.एस.कॉलेज, हाउली, बरपेटा

पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. उज्ज्वल डेका बरुआ, सहायक प्राध्यापक,
कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

एसएलएम् तैयारी टीम

इकाइयाँ	**योगदानकर्ताओं के नाम**
1,5,7,13	डॉ. उज्जवल डेका बरुवा, सहायक प्राध्यापक कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
2, 14	डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
6,11	डॉ.टिंकू छेत्री, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
3, 4,5	डॉ. बी आकाश राव, सहायक अध्यापक, सूर्यसेन महाविद्यालय पश्चिम बंगाल डॉ.टिंकू छेत्री, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम
8, 9, 10,	मो.जोहुरुल इस्लाम, सहायक प्राध्यापक, इंदिरा गांधी सरकारी महाविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम

Editors

Content: डॉ.उज्जवल डेका बरुवा, सहायक अध्यापक, कृष्णकांत हेंदिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय
Language: डॉ. दिनेश साहू, सहायक प्राध्यापक, सिक्किम विश्वविद्यालय, सिक्किम
Structure & Format: डॉ. सुरभि चुतिया, सहायक प्राध्यापिका, कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय, असम.

June, 2026

© Krishna Kanta Handiqui State Open University.

No part of this publication which is material protected by this copyright notice may be produced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the KKHSOU.

Printed and published by Registrar on behalf of the Krishna Kanta Handiqui State Open University.

The university acknowledges with thanks the financial support provided by the **Distance Education Bureau**, New Delhi, for the preparation of this study material.

Headquarter-Patgaon, Rani Gate, Guwahati-781017
City Campus-Resham Nagar, Khanapara, Guwahati-781022; Web: www.kkhsou.in

अनुक्रमणिका

इकाई-1 अनुवाद 7-24
अर्थ, परिभाषा, अनुवाद सम्बन्धी विभिन्न विद्वानों का मत

इकाई-2 अनुवाद का महत्व एवं अनुवादक के गुण 25-36
आवश्यकता एवं अच्छे अनुवादक के गुण

इकाई-3 अनुवाद में लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा की धारणा 37-49
लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा से तात्पर्य एवं अवधारण

इकाई-4 अनुवाद के सम्बन्ध में पाश्चात्य सिद्धांत 50-70
प्राचीन, मध्य, आधुनिक विश्व में अनुवाद एवं विद्वानों के मत

इकाई-5 अनुवाद के सम्बन्ध में भारतीय सिद्धांत 71-79
भारतीय अनुवाद की प्रारंभिक, मध्य एवं देशीय चिंतन धारा,
भोलानाथ तिवारी तथा अन्य विद्वानों के मत

इकाई-6 अनुवाद का क्षेत्र 80-94
अनुवाद का विविध क्षेत्र-बोलचाल, पत्राचार, न्यायलय, साहित्य, संस्कृति, सीनेमा

इकाई-7 अनुवाद के प्रकार 95-106
शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, आशु अनुवाद

इकाई-8 अनुवाद-उद्देश्य और सीमाएँ 107-120
अनुवाद का उद्देश्य, अनुवाद की भाषागत सीमाएं, अनुवाद की सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ

इकाई-9 विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका 121-128
सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद, राजनैतिक सन्दर्भ, सांस्कृतिक सन्दर्भ,
व्यापार-व्यवसाय, खेल-कूद के सन्दर्भ

इकाई-10 अनुवाद के सन्दर्भ में पाश्चात्य सिद्धांत 129-139
अर्थ तथा पाश्चात्य विद्वानों का मत

इकाई-11 कार्यालयी अनुवाद और महत्व 140-150
कार्यालय अनुवाद से तात्पर्य, विशेषता, कार्यालय अनुवाद के नमूने

इकाई 12 जनसंचार माध्यमों का अनुवाद 151-160
उपयोगिकता, चुनौतियाँ, बदलता स्वरूप, इंटरनेट तथा विज्ञापन

इकाई-13 बैंकों में अनुवाद 161-178
बैंकों में अनुवाद, बैंकों में अनुवाद की आवश्यकता

इकाई-14 पारिभाषिक शब्दावली 179-187
पारिभाषिक शब्दावली के उदहारण

विषय परिचय

कृष्णकांत हेंडिक राज्यिक मुक्त विश्वविद्यालय के एम.ए. हिंदी के द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की चतुर्थ छमाही में 'अनुवाद विज्ञान और उसका सिद्धांत' विषय-विशिष्ट वैकल्पिक पत्र (चतुर्थ) के रूप में अध्ययनार्थ प्रस्तुत है। विषय के नाम से ही स्पष्ट है कि यह पत्र अनुवाद की संकल्पना, उसके सिद्धांतों, प्रक्रियाओं तथा व्यावहारिक पक्षों के व्यवस्थित अध्ययन पर केंद्रित है। इसमें अनुवाद के स्वरूप, प्रकार, सिद्धांत, समस्याएँ, अनुवादक की भूमिका, भारतीय और पाश्चात्य अनुवाद चिंतन, साहित्यिक एवं तकनीकी अनुवाद, प्रशासनिक अनुवाद तथा समकालीन संदर्भों में अनुवाद की उपयोगिता जैसे महत्वपूर्ण पक्षों का विस्तृत अध्ययन कराया जाता है। यह अध्ययन क्षेत्र अनुवाद को केवल भाषाई रूपांतरण की प्रक्रिया के रूप में नहीं देखता बल्कि उसे विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और ज्ञान-परंपराओं के मध्य सेतु के रूप में स्थापित करता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, प्रशासन, मीडिया, विधि, वाणिज्य तथा अंतरराष्ट्रीय संवाद के क्षेत्रों में अनुवाद एक प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य कर रहा है। इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी यह समझ पाते हैं कि स्रोत भाषा के भाव, विचार, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों को लक्ष्य भाषा में किस प्रकार प्रभावपूर्ण और स्वाभाविक ढंग से अभिव्यक्त किया जा सकता है। विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद केवल शब्दों का प्रतिस्थापन नहीं बल्कि अर्थ, संवेदना और सांस्कृतिक अनुभवों के पुनर्सृजन की एक सृजनात्मक प्रक्रिया है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल अनुवाद संबंधी सैद्धांतिक जानकारी प्रदान करना नहीं बल्कि उनमें व्यावहारिक अनुवाद-कौशल का विकास करना, अनुवाद की चुनौतियों से परिचित कराना तथा विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की संभावनाओं को समझने की दृष्टि विकसित करना भी है। यह पाठ्यक्रम छात्रों और हिंदी के गंभीर अध्येताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है क्योंकि यह उन्हें अनुवाद के सिद्धांतों, उसकी कार्यप्रणाली तथा रोजगारपरक संभावनाओं से अवगत कराता है। यह पत्र अनुवाद को एक स्वतंत्र ज्ञानानुशासन, सृजनात्मक प्रक्रिया और बहुभाषिक समाज की आवश्यकता के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

प्रत्येक इकाई में 'अपनी प्रगति जांचें' शीर्षक से महत्वपूर्ण प्रश्न दिए गए हैं, जिनके उत्तरों की रूपरेखा 'प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)' के अंतर्गत सारांश के बाद प्रस्तुत की गई है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में आत्ममूल्यांकन की प्रवृत्ति विकसित करना तथा समस्या-समाधान की क्षमता को सुदृढ़ करना है। प्रत्येक इकाई में बॉक्स के भीतर 'महत्वपूर्ण बिंदु' शीर्षक से मुख्य तथ्यों को भी सम्मिलित किया गया है, जिससे विद्यार्थी विषय की प्रमुख बातों को सरलता से समझ सकें। इसके अतिरिक्त, 'अधिक जानने के लिए पढ़ें' शीर्षक के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथों और उपयोगी स्रोतों की सूची दी गई है, जो विषय की गहन समझ विकसित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

इकाई-1 अनुवाद

इस इकाई में अनुवाद की मूलभूत संकल्पना, अर्थ, स्वरूप तथा सैद्धांतिक आधारों का अध्ययन कराया गया है। इसमें अनुवाद की परिभाषाएँ, अनुवाद और रूपांतरण का संबंध, भाषा, अर्थ एवं संदर्भ की भूमिका तथा अनुवाद को एक संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में समझाया गया है। साथ ही अनुवाद के व्यापक और सीमित संदर्भों का भी विवेचन किया गया है। इकाई के समापन में सारांश, प्रगति विवरण (संक्षिप्त रूपरेखा), अधिक अध्ययन हेतु संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास प्रश्न प्रस्तुत किए गए हैं। इस इकाई के अध्ययन के बाद शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा, उसकी प्रमुख विशेषताओं तथा हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध रूपों और प्रकारों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-2 अनुवाद का महत्व एवं अनुवादक के गुण

इस इकाई में अनुवाद की उपयोगिता और विभिन्न क्षेत्रों में उसके महत्व का अध्ययन किया गया है। शिक्षा, विश्व साहित्य, भारतीय साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, सांस्कृतिक समन्वय, प्रशासन, पर्यटन, जनसंचार तथा रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। साथ ही एक आदर्श अनुवादक के आवश्यक गुणों जैसे भाषिक दक्षता, विषय-ज्ञान, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, सृजनात्मकता तथा अभिव्यक्ति-कौशल का विवेचन किया गया है। इकाई के अंतर्गत विषय-वस्तु के अध्ययन के उपरांत सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक अध्ययन हेतु संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, उसकी प्रमुख विशेषताओं एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों का सम्यक् बोध प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-3 अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से तात्पर्य एवं धारणा

इस इकाई में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा तथा अनुवाद प्रक्रिया में उनके महत्व का अध्ययन कराया गया है। इसके अंतर्गत मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा, भाषिक युग्म, समतुल्यता तथा व्यतिरेकी विश्लेषण जैसी प्रमुख संकल्पनाओं का परिचय दिया गया है। साथ ही संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है। इकाई के अंतर्गत विषय-वस्तु के

अध्ययन के उपरांत सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक अध्ययन हेतु संदर्भ सामग्री तथा अभ्यास प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, उसकी प्रमुख विशेषताओं एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों का सम्यक् बोध प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-4 अनुवाद के सम्बन्ध में पाश्चात्य सिद्धांत

इस इकाई में पाश्चात्य अनुवाद परंपरा के विकास और प्रमुख सिद्धांतों का अध्ययन किया गया है। इसमें प्राचीन यूनानी और रोमन परंपरा, मध्यकालीन अनुवाद चिंतन, औपचारिक अनुवाद परंपरा तथा उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में विकसित आधुनिक अनुवाद सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। साथ ही अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं का भी परिचय दिया गया है। अंत में इकाई का सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक अध्ययन हेतु संदर्भ ग्रंथ तथा अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा, उसकी प्रमुख विशेषताओं तथा हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई-5 अनुवाद के सम्बन्ध में भारतीय सिद्धांत

इस इकाई में भारतीय अनुवाद चिंतन की परंपरा और उसके विकासक्रम का अध्ययन कराया गया है। इसमें प्रारंभिक भारतीय चिंतनधारा, प्राचीन भारत के राजकाज और अनुवाद संबंधी विचार, मुगलकालीन अनुवाद परंपरा तथा देशीय अनुवाद चिंतन की प्रमुख धाराओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही भारतीय संस्कृति और ज्ञान-परंपरा में अनुवाद की भूमिका को भी रेखांकित किया गया है। इस इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी सम्मिलित किए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई -6 अनुवाद का क्षेत्र

इस इकाई में अनुवाद की व्यापकता तथा उसके विविध कार्यक्षेत्रों का अध्ययन कराया गया है। प्रशासनिक साहित्य, बैंकिंग, विधि साहित्य, मीडिया, सृजनात्मक साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, शिक्षा तथा पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वैश्विक संदर्भ में अनुवाद की भूमिका को भी स्पष्ट किया गया है। इकाई में आगे सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न प्रस्तुत किए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई-7 अनुवाद के प्रकार

इस इकाई में अनुवाद के विभिन्न प्रकारों तथा उनके वर्गीकरण का अध्ययन किया गया है। इसमें शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण, अनुसृजन, पुनर्सृजन, नवलेखन, टीकानुवाद, सारानुवाद, आशु अनुवाद, पुनः अनुवाद, लिप्यंकन और लिप्यंतरण आदि के स्वरूप एवं विशेषताओं का विवेचन किया गया है। साथ ही विभिन्न प्रकार के अनुवादों की उपयोगिता तथा उनके चयन के आधारों पर भी प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी सम्मिलित किए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई-8 अनुवाद उद्देश्य और सीमाएँ

इस इकाई में अनुवाद के उद्देश्य तथा उसकी विभिन्न सीमाओं का अध्ययन कराया गया है। इसमें भाषा, संस्कृति, सामाजिक संदर्भ, लोकोक्तियों एवं मुहावरों के अनुवाद से संबंधित समस्याओं का विवेचन किया गया है। साथ ही पाठ की प्रकृति, स्थानीय परिवेश तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद में आने वाली चुनौतियों को स्पष्ट करते हुए यह बताया गया है कि अनुवाद का मूल उद्देश्य स्रोत भाषा के भाव, आशय और संदेश को लक्ष्य भाषा में प्रभावी तथा स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत करना है। इस इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई-9 विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका

इस इकाई में समाज और ज्ञान के विविध क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका का अध्ययन कराया गया है। इसमें साहित्य, राजनीति, संस्कृति, धर्म, व्यापार, सामाजिक संबंधों तथा खेल-कूद के क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता और महत्व पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों के बीच संवाद तथा ज्ञान-विनिमय का एक प्रभावी माध्यम है। इकाई के अंतर्गत सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न प्रस्तुत किए गए

हैं। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-10 अनुवाद के संदर्भ में पाश्चात्य सिद्धांत

इस इकाई में आधुनिक पाश्चात्य अनुवाद चिंतन और प्रमुख अनुवाद सिद्धांतों का परिचय दिया गया है। इसके अंतर्गत यूजीन नाइडा, जे. सी. कैटफर्ड, पीटर न्यूमार्क तथा गिडियन टौरी जैसे प्रमुख चिंतकों के सिद्धांतों का अध्ययन कराया गया है। साथ ही समतुल्यता, संप्रेषणीयता, भाषिक संरचना और सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित आधुनिक अनुवाद अवधारणाओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही इकाई का सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई-11 कार्यालयी अनुवाद और महत्व

इस इकाई में प्रशासनिक एवं कार्यालयी कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व का अध्ययन कराया गया है। इसमें राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 के प्रमुख प्रावधानों के संदर्भ में कार्यालयी अनुवाद की भूमिका को स्पष्ट किया गया है। साथ ही हिंदी कक्ष, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विधायी खंड तथा अनुवाद प्रशिक्षण की व्यवस्थाओं का परिचय देते हुए प्रशासनिक संचार में अनुवाद की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है। इकाई में आगे सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न प्रस्तुत किए गए हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-12 जनसंचार माध्यमों का अनुवाद

इस इकाई में जनसंचार माध्यमों की अवधारणा, स्वरूप, विकास और अनुवाद की भूमिका का अध्ययन कराया गया है। समाचार, विज्ञापन, रेडियो, दूरदर्शन, डिजिटल मीडिया तथा सोशल मीडिया जैसे माध्यमों में अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता का विवेचन किया गया है। साथ ही बहुभाषिक समाज में सूचना, ज्ञान और विचारों के प्रभावी संप्रेषण में अनुवाद की भूमिका को रेखांकित किया गया है। इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न पक्षों का विवेचन किया गया है। साथ ही, इकाई का सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली के स्वरूप, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

इकाई-13 बैंकों में अनुवाद

इस इकाई में बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता, महत्व तथा उसकी व्यावहारिक उपयोगिता का अध्ययन कराया गया है। इसमें बैंकिंग अनुवाद की अवधारणा, भारत की बैंकिंग व्यवस्था, बैंकिंग साहित्य की भाषा और विशिष्ट शब्दावली का परिचय दिया गया है। साथ ही बैंकिंग अनुवाद की आवश्यकताओं, चुनौतियों तथा उनसे संबंधित समस्याओं के समाधान पर भी चर्चा की गई है। इस इकाई में सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी समाविष्ट किए गए हैं। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की प्रकृति, उसकी विशेषताओं तथा हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई-14 पारिभाषिक शब्दावली

इस इकाई में पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा, स्वरूप, विशेषताओं और महत्व का अध्ययन कराया गया है। इसमें सुस्पष्टता, एकार्थकता, मानकीकरण, विषयानुकूलता तथा संप्रेषणीयता जैसे गुणों का विवेचन किया गया है। साथ ही हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के विभिन्न प्रकारों तथा अनुवाद, प्रशासन, शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में उसकी उपयोगिता को स्पष्ट किया गया है। इकाई में वर्णित विषयों के अतिरिक्त सारांश, प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा), अधिक जानने के लिए पढ़ें तथा अभ्यास प्रश्न भी दिए गए हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात शिक्षार्थी पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा, उसकी विशेषताओं एवं हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के विविध प्रकारों को समझ सकेंगे।

*** ***** ***

इकाई 1 अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3. अनुवाद' शब्द की संकल्पना और अर्थ-विस्तार
1.4. अनुवाद की परिभाषाएँ पारंपरिक और आधुनिक दृष्टियाँ
1.5 अनुवाद और रूपांतरण
1.6 अनुवाद की अवधारणाएं: भाषा, अर्थ और संदर्भ का संबंध
1.7 संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की अवधारणा
1.8 अनुवाद का संदर्भ
1.8.1. अनुवाद का व्यापक संदर्भ
1.8.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ
1.9 सारांश
1.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
1.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
1.12 अभ्यास प्रश्न

1.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :-

- अनुवाद शब्द की व्युत्पत्ति, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा भाषिक-सांस्कृतिक संदर्भ का स्पष्ट परिचय प्राप्त करेंगे।
- अनुवाद के विविध अर्थ, उसके भाषिक-भावात्मक और संदर्भगत स्तरों के सम्बन्ध में समझ विकसित करेंगे।
- अंतर्भाषिक, अंतर-भाषिक और अंतर-प्रतीकात्मक अनुवाद के प्रकारों एवं उसके व्यवहारिक उदाहरणों से अवगत रहेंगे।
- अनुवादप्रक्रिया में भाषा, अर्थ और संदर्भ के पारस्परिक संतुलन की पहचान कर पाएँगे।
- अनुवाद और रूपांतरण के बीच अंतर, समानताओं तथा समतुल्यता की कसौटियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में भाषा की भूमिका अत्यंत केंद्रीय रही है, क्योंकि भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य न केवल अपने विचारों, अनुभूतियों और ज्ञान को व्यक्त करता है, बल्कि अपने अस्तित्व और सांस्कृतिक स्मृतियों को भी संरक्षित करता है। विद्द की भाषाई विविधता मानव समाज की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक है तथा अलग-अलग भाषाओं में विचार करने और अभिव्यक्त होने की क्षमता मनुष्य को विशिष्ट बनाती है। ऐसे बहुभाषिक संसार में परस्पर संवाद तभी संभव हो पाता है, जब विभिन्न भाषाओं के बीच कोई सेतु उपस्थित होऔर वह सेतु है- अनुवाद। अनुवाद मात्र शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि वह अर्थ, भाव, शैली, संस्कृति और संदर्भ के रूपांतरण की सृजनात्मक प्रक्रिया है। किसी भी पाठ को दूसरी भाषा में रूपांतरित करते समय अनुवादक को स्रोत भाषा की भाषिक संरचना, सांस्कृतिक संकेतों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और लेखक की मूल मंशा का सूक्ष्म अध्ययन करना आवश्यक है; तभी वह अर्थ का सही संप्रेषण कर सकता है। इसीलिए अनुवाद दो भाषाओं के बीच सेतु ही नहीं बनाता, बल्कि दो समाजों, संस्कृतियों और चिंतन-परंपराओं के बीच गहरा संवाद स्थापित करता है। प्राचीन सभ्यताओं में धार्मिक ग्रंथों के प्रसार, शिक्षा के विस्तार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अनुवाद एक आवश्यक उपकरण थी। भारतीय परंपरा में बौद्ध ग्रंथों के

बहुभाषीय अनुवाद, उपनिषदों के विभिन्न भाषाई संस्करण, तथा रामायण-महाभारत के अनेक रूपांतर इस बात के प्रमाण हैं कि अनुवाद ने भारतीय ज्ञान-धारा और साहित्यिक चेतना को निरंतर समृद्ध किया है।

आधुनिक काल में वैद्रीकरण और तकनीकी विस्तार के कारण अनुवाद का महत्व और भी व्यापक हो गया है। यह अब केवल साहित्यिक जगत का विषय नहीं, बल्कि प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, न्याय, मीडिया, व्यापार और बहुराष्ट्रीय संपर्कों की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। आज अनुवाद को एक स्वतंत्र, व्यावसायिक और बहु-विषयी शैक्षणिक अनुशासन के रूप में स्वीकार किया जाता है, क्योंकि इसकी प्रभावशीलता सीधे अर्थ-निर्माण और संप्रेषण की दक्षता से जुड़ी होती है। अनुवाद की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है- 'अर्थ'। अर्थ केवल शब्दों में निहितनहीं होता; वह संदर्भ, परिस्थिति, सांस्कृतिक संकेत, वक्ता की मंशा और पाठक की अपेक्षाओं से निर्मित होता है। इसी कारण कई शब्द ऐसे होते हैं जिनका सरल, एक-रेखी अनुवाद संभव नहीं होता; जैसे- धर्म, कला, संस्कृति, संस्कार- ये शब्द बहुस्तरीय अर्थों से भरे पड़े हैं, जो अनुवादक से विशेष संवेदनशीलता और विवेक की मांग करता है। अनुवाद मूलत: संप्रेषण की वह प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अर्थ का प्रवाह सहज रूप से होना चाहिए। इस प्रवाह को सफल बनाने के लिए दोनों भाषाओं के व्याकरण, शैली, ध्वनि-विन्यास, अर्थ-व्यवस्था और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की गहन समझ आवश्यक है। अनुवादक के लिए संदर्भ की भूमिका अत्यंत निर्णायक होती है, क्योंकि संदर्भ के बिना न अर्थ स्पष्ट होता है और नसटीक अनुवाद। यही कारण है कि अनुवाद को केवल भाषाई कौशल नहीं, बल्कि एक रचनात्मक, विश्लेषणात्मक और सांस्कृतिक उत्तरदायित्व से पूर्ण क्रिया माना जाता है, जो मानवीय ज्ञान और वैद्रिक संवाद को नई दिशा प्रदान करती है।

1.3.'अनुवाद' शब्द की संकल्पना और अर्थ-विस्तार

1.3.1 अनुवाद शब्द की उत्पत्ति

अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा की अभिव्यक्ति, अर्थ और संदेश को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित किए जाते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया की जड़ों को समझने के लिए इसके शब्द-व्युत्पत्ति पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्द 'अनुवाद' संस्कृत धातु वद् से निर्मित है, जिसका अर्थ है- कहना, बोलना या वाणी के माध्यम से अभिव्यक्र करना। 'वद्' धातु के साथ उपसर्ग 'अनु' जुड़ने पर यह 'अनुवाद' बन जाता है। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ है- पीछे, क्रम से, अनुसरण करते हुए या किसी मार्ग का पालन करते हुए। 'अनुवाद' का शाब्दिक अर्थ हुआ- कहे हुए के पीछे-पीछे चलना, उसका अनुसरण करते हुए उसे लक्ष्य भाषा या अन्य रूप में पुन: प्रस्तुत करना। यह व्युत्पत्ति स्पष्ट करती है कि अनुवाद किसी भी प्रकार की स्वतंत्र रचना नहीं, बल्कि मूल कथन या अभिव्यक्ति का पुन:कथन है, जिसमें अनुकरण तो है, परंतु यांत्रिक पुनरावृत्ति नहीं। अनु उपसर्ग यह भी बताता है कि अनुवाद मूल पाठ से पूर्णत: हटकर नहीं चलता; वह उसके मार्ग काअनुसरण करता है, बल्कि उसकी संरचना और अर्थ को समझकर उसी का पुन: प्रकटीकरण है।

भारतीय परंपरा में इस शब्द का व्यावहारिक अर्थ भी अत्यंत रोचक है। प्राचीन शिक्षा-पद्धति में गुरुकुलों में शिक्षण मूलत: मौखिक रूप में संपन्न होता था। गुरु जो भी शिक्षा, मंत्र या श्लोक उच्चारित करते थे, शिष्य उन्हें उनके पीछे-पीछे दोहराते थे। यह 'अनुसरण करते हुए कथन'- यानि गुरु-वचन की पुनरुक्ति - उस समय 'अनुवचन' अथवा 'अनुवाक' कहलाती थी। यही प्रक्रिया शब्द के व्युत्पत्तिमूल अर्थ के अनुकूल है, जिसमें 'अनुवाद' का मूल आशय किसी कथन को पुन: दोहराना या अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण रूप से प्रस्तुत करना निहित है।

अंग्रेजी में प्रयुक्त शब्द 'Translation' लैटिन शब्द Translatum तथा मूल क्रिया Transferre से विकसित हुआ है। यहाँ Trans का अर्थ है - दूसरी ओर, उस पार, एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक और Ferre का अर्थ है - ले जाना या ढोना। इस प्रकार से Translation का शाब्दिक अर्थ है- स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा तक अर्थ या विचार को ले जाना। इस व्युत्पत्ति में 'स्थानांतरण' का भाव अत्यंत स्पष्ट है। यह बताता है कि किसी भाषा की अर्थ-व्यवस्था, उसकी सांस्कृतिक संकेत प्रणाली तथा संदेश को किसी भाषा-समूह से दूसरे भाषा-समूह तक पहुँचाना ही मूलत: Translation का उद्देश्य है।

फ्रेंच में इसे Traduire अथवा Traduction, जर्मन में Übersetzen तथा Übersetzung कहा जाता है। स्पैनिश में इसका रूप Traduzion या Traduction है, जबकि इतालवी में यह Traslare और Traduzione के रूप में प्रयुक्त होता है। विद्व की विविध भाषाओं में 'Translation' शब्द के भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद की अवधारणा सार्वभौमिक है और प्रत्येक भाषा ने इसे अपनी सांस्कृतिक एवं भाषिक संरचना के अनुसार अभिव्यक्त किया है। इन दोनों व्युत्पत्तियों के तुलना से स्पष्ट होता है कि-

- अनुवाद में अनुसरण का भाव प्रमुख है।
- Translation में स्थानांतरण का भाव प्रमुख है।

दोनों प्रक्रियाएँ अर्थ-संचरण के दायरे में आती हैं, परंतु दोनों शब्दों के मूल भाव अलग-अलग आयाम प्रस्तुत करते हैं। जहाँ 'अनुवाद' शब्द भाषा-रचना और मूल पाठ के संरचनात्मक अनुकरण का संकेत देता है, वहीं Translation भाषा, अर्थ और संदर्भ के वाहक रूप को इंगित करता है। इसीलिए भारतीय साहित्यिक परंपरा में अनुवाद को केवल रूपांतरण की प्रक्रिया न मानकर एक गहन अर्थ-व्यवस्था के संवाहक रूप में देखा गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु-

अनुवाद के संदर्भ में स्थानांतरण का अर्थ है-स्रोत भाषा में निहित अर्थ, भाव, विचार और सांस्कृतिक संकेतों को लक्ष्य भाषा में पहुँचाना। यह केवल शब्दों के स्थान परिवर्तन का कार्य नहीं, बल्कि मूल पाठ के संपूर्ण आशय को लक्ष्य भाषा की संरचना, शैली और सांस्कृतिक उपयुक्तता के अनुरूप पुनः अभिव्यक्त करना है। इस प्रक्रिया में संदेश अपने मूल रूप से हटकर एक नये भाषिक रूप में प्रवेश करता है, किंतु उसका भावार्थ सुरक्षित रहता है। स्थानांतरण का उद्देश्य यही है कि लक्ष्य भाषा के पाठक को वही भाव प्राप्त हो, जो स्रोत भाषा के पाठक को प्राप्त हुआ था। इस प्रकार अनुवाद में स्थानांतरण अर्थ-संचरण और प्रभाव-समानता दोनों को सुनिश्चित करने वाली केंद्रीय प्रक्रिया है।

1.3.2 अनुवाद का अर्थ

अनुवाद के अर्थ को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, अनुभव और समाज का वाहक भी है। जब किसी पाठ का अनुवाद किया जाता है, तो उस पाठ के शब्दों के साथ-साथ उसमें निहित सांस्कृतिक संकेत, सामाजिक संदर्भ, ऐतिहासिक अर्थ और साहित्यिक शैली भी नई भाषा में प्रवेश करती है। इसलिए अनुवाद का अर्थ अत्यंत व्यापक है- यह अर्थ, भाव, संस्कृति और संदर्भ का संचार है। कई विद्वानों ने इस बात पर बल दिया है कि अनुवाद अर्थ के प्रति निष्ठा का कार्य है; अर्थात अनुवादक का प्रमुख उद्देश्य यही होता है कि वह मूल पाठ में व्यक्त आशय को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक यथासंभव उसी रूप और प्रभाव में पहुँच सके।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि अनुवाद का अर्थ विभिन्न स्तरों पर बदलता है। एक स्तर पर अनुवाद भाषाई संरचनाओं के परिवर्तन का कार्य है, जहाँ वाक्य-विन्यास, व्याकरण और रूप-रचना को लक्ष्य भाषा के अनुसार ढाला जाता है। वहीँ, दूसरे स्तर पर अनुवाद अर्थ-निर्भरता का कार्य करता है, जहाँ शब्दों की विविध संभावनाओं, अनेकों अर्थ और प्रसंग-विशेष अर्थ पर ध्यान देना पड़ता है। तीसरे स्तर पर अनुवाद भाव-रचना की प्रक्रिया है, जिसमें मूल पाठ के भावानुभव, उसकी शैलीगत लय, कथन-शैली और साहित्यिक प्रभाव को लक्ष्य भाषा में पुनर्सृजित करने का प्रयास किया जाता है। यही कारण है कि अनुवाद को केवल एक भाषिक कार्य कहना उसके वास्तविक महत्व को सीमित कर देना है।

अनुवाद का अर्थ संचार के सिद्धांतों से भी गहराई से जुड़ा है। संप्रेषण-विज्ञान के अनुसार अर्थ तभी प्रभावी होता है जब संदेश भेजने वाले और प्राप्त करने वाले दोनों के बीच सांस्कृतिक एवं संदर्भगत समानता हो। अनुवाद इसी समानता को स्थापित करने का काम करता है। वह स्रोत और लक्ष्य दोनों समाजों के बीच अर्थ-सेतु का निर्माण करता है। यदि यह सेतु कमजोर हो जाए, तो न तो मूल पाठ का अर्थ स्पष्ट हो पाता है, न उसकी संवेदना लक्ष्य भाषा में जीवंत हो पाती है। समकालीन युग में अनुवाद का अर्थ और भी विस्तृत हो गया है। आज अनुवाद केवल साहित्य तक सीमित नहीं, बल्कि तकनीकी, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, कानूनी, व्यावसायिक और मीडियाक्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद की अर्थ-समझ अलग होती है; कहीं शाब्दिक सटीकता महत्वपूर्ण होती है, तो कहीं भावानुवाद अधिक उपयुक्त माना जाता है।

1.4 अनुवाद की परिभाषाएँ: पारंपरिक और आधुनिक दृष्टियाँ

अनुवाद के अर्थ और उसके स्वरूप पर विचार करते हुए यह स्पष्ट होता है कि विद्व के प्रमुख अनुवाद-सिद्धांतकारोंने इसे मात्र भाषा-परिवर्तन की तकनीक न मानकर अर्थ, शैली और समतुल्यता पर आधारित एक जटिल सृजनात्मक प्रक्रिया माना है। यूजीन नाइडा और चार्ल्स टेबर ने दि थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ ट्रांसलेशन में जिस निकटतम सहज समतुल्य (closest natural equivalent) की संकल्पना प्रस्तुत की है, उसमें अर्थ को प्राथमिक और शैली को द्वितीय महत्व दिया गया है; अर्थात् सफल अनुवाद वही है जो स्रोत भाषा के संदेश को स्वाभाविक ढंग से लक्ष्य भाषा में पुनर्स्थापित कर सके। दूसरी ओर जे.सी. कैटफर्ड का दृष्टिकोण अधिक भाषावैज्ञानिक है, जहाँ वे अनुवाद को पाठ्य सामग्री के प्रतिस्थापन - स्वन, शब्द, संरचना आदि भाषाई इकाइयोंके स्तर पर समानार्थक सामग्री द्वारा रूपांतरित करना मानते हैं। नाइडा जहाँ अर्थ-संप्रेषण को केंद्रीय महत्व देते हैं, वहीं कैटफर्ड भाषाई संरचना और शिल्पगत प्रतिस्थापन को प्रमुख मानते हैं। पीटर न्यूमार्क भी अनुवाद को एक शिल्प बताते हुए इस बात पर बल देते हैं कि अनुवादक का कार्य मूल संदेश को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि न तो अर्थ की हानि हो और न अभिप्राय की। इसी प्रकार डॉ. सैमुअल जॉनसन और ए.एच. स्मिथ दोनों ही अनुवाद में अर्थ-संरक्षण को प्रधान मानते हैं; जॉनसन इसे अर्थ को बनाए रखते हुए भाषा-परिवर्तन बताते हैं, जबकि स्मिथ यथासंभव अर्थ-संरक्षण पर ज़ोर देते हैं।

Wमहत्वपूर्ण बिंदु-

यूजीन ए. नाइडा प्रसिद्ध अमेरिकी भाषावैज्ञानिक और अनुवाद-सिद्धांतकार थे। वे विशेष रूप से भाषावैज्ञानिक, अनुवाद सिद्धांत, डायनेमिक इक्विवैलेंस और फंक्शनल इक्विवैलेंस के लिए जाने जाते हैं। नाइडा का कार्य मुख्यत: बाइबिल अनुवाद, संचार के सिद्धांत, अंतर-भाषीय अर्थानुवाद तथा अनुवाद की वैज्ञानिक पद्धति पर केंद्रित था। उन्होंने अनुवाद को केवल शब्दानुवाद नहीं, बल्कि अर्थ-आधारित संप्रेषणीय प्रक्रिया माना और अनुवाद में अर्थ एवं शैली की समतुल्यता को सर्वोपरि महत्व दिया।

भारतीय अनुवाद-चिंतकों ने भी अनुवाद को समतुल्यता, संरचनात्मक पुनर्गठन और सांस्कृतिक उपयुक्तता के संदर्भ में समझा है। प्रो. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव अनुवाद को संगठनात्मक रूपांतरण और सृजनात्मक पुनर्गठन की प्रक्रिया बताते हैं, जहाँ मूल पाठ के तथ्य संरक्षित रहते हैं, परंतु भाषा और संरचना लक्ष्य भाषा के अनुरूप पुनर्संगठित होती है। डॉ. नगेंद्र ने अनुवाद को निकटतम पर्याय शब्दावली और वाक्य-विन्यास द्वारा मूल पाठ के संपूर्ण आशय और रूपबंध को लक्षित भाषा में प्रतिस्थापित करने का कार्य कहा है। डॉ. भोलानाथ तिवारी आदर्श अनुवाद में शब्दानुवाद और भावानुवाद दोनों की संतुलित उपस्थिति आवश्यक मानते हैं, ताकि मूल अर्थ व शैली की रक्षा के साथ लक्ष्य भाषा की सहजता भी बनी रहे। प्रो. कृष्णकुमार गोस्वामी अनुवाद की प्रक्रिया को मूल पाठ की निकटतम समतुल्यता के आधार पर लक्ष्य भाषा में पुनर्सृजन मानते हैं, जिसमें न केवल अर्थ का बल्कि पाठ्य-संरचना और अभिव्यक्ति की विशिष्टताओं का भी समुचित ध्यान रखा जाता है। इस प्रकार विभिन्न विद्वानों के मतों से स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण नहीं, बल्कि अर्थ-संप्रेषण, शैली-संरक्षण, समतुल्यता, सांस्कृतिक अनुकूलन और सृजनात्मक पुनर्निर्माण का बहुआयामी कला-विज्ञान है।

1.4.1. भारतीय विद्वानों द्वारा अनुवाद की परिभाषाएँ

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल-उनके अनुसार अनुवाद वह प्रक्रिया या है जिसके माध्यम से किसी भाषा के भाव, विचार और अनुभव दूसरी भाषा में इस तरह ढलते हैं कि पाठक को मूल रचना की अनुभूति मिल सके।

2. हज़ारीप्रसाद द्विवेदी–वे अनुवाद को दो संस्कृतियों के बीच संवाद मानते हैं। उनके अनुसार अनुवाद में केवल शब्दों का नहीं, बल्कि संपूर्ण संवेदना का स्थानांतरण होना चाहिए।

3. नामवर सिंह–वे अनुवाद को ''अर्थ का पुनर्सृजन'' कहते हैं। उनके अनुसार अनुवादक केवल माध्यम नहीं, बल्कि सह–रचनाकार होता है जो मूल विचारों को नए संदर्भ में जीवंत करता है।

4. महावीर प्रसाद द्विवेदी–उनके मत में अनुवाद भाषा–ज्ञान का विस्तार है, जिसमें अनुवादक को दो भाषाओं की व्याकरणिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का संतुलित उपयोग करना पड़ता है।

5. डॉ. नगेन्द्र–वे अनुवाद को ''भाव–संप्रेषण का रचनात्मक कार्य'' कहते हैं, जिसमें अनुवादक को मूल पाठ की आत्मा को पकड़कर नई भाषा में पुनर्रचना करनी होती है।

6. डॉ. रामविलास शर्मा–उनके अनुसार अनुवाद वैचारिक स्पष्टता और सामाजिक संदर्भों की सटीक अभिव्यक्ति का माध्यम है। अनुवाद तभी सफल है जब वह मूल विचारधारा को सही ढंग से पहुँचाए।

7. विद्यनाथ त्रिपाठी– इनके अनुसार ''अनुभूति की पुनर्रचना'' बताते हैं, अर्थात मूल रचना की संवेदना को नई भाषा के पाठक तक विद्यसनीय रूप से पहुँचाना।

8. श्यामसुंदर दास– अनुवाद की परिभाषा का जिक्र करते हुए कहते हैं कि अनुवाद भाषाई समरूपता की खोज है, जिसमें अर्थ, शैली और भाव–संतुलन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

9. किशोरीदास वाजपेयी–किशोरीदास वाजपेयी के मुताबिक अनुवाद भाषाई दक्षता का अभ्यास है, जो विचार–समता और अभिव्यक्ति की सटीकता पर आधारित होता है।

10. केशवप्रसाद मिश्र–उनका मत है कि अनुवाद एक सांस्कृतिक यात्रा है, जहाँ अनुवादक मूल भाषा के भाव–जगत को लक्ष्य भाषा की संवेदनाओं से जोड़ता है।

1.4.2. पाश्चात्य विख्यात विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ

1. cicero -Translation, for cicero, is sense-for-sense, not word-for-word.उनके अनुसार अनुवाद में अर्थ–संप्रेषण प्रमुख है।
2. Horace-He believed that translation should reserve the spirit of the original work. यानी मूल पाठ की आत्मा को सुरक्षित रखना अधिक महत्वपूर्ण है।
3. John Dryden-Dryden defined translation through three modes-metaphrase, paraphrase, imitation. उनके अनुसार अच्छा अनुवाद इन तीनों संतुलनों का संयोजन है।
4. Alexander Tytler-He stated that translation must give a complete transcript of the original ideas. अर्थात् अनुवाद मूल विचारों का सटीक और संपूर्ण रूप होना चाहिए।
5. Friedrich Schleiermacher-He suggested two methods: move the author towards reader or move the reader towards author. वे अनुवाद को सांस्कृतिक सेतु का कार्य मानते हैं।
6. Eugene Nida-Nida emphasized dynamic equivalence, meaning the same effect on the reader. उनके अनुसार अनुवाद का उद्देश्य भावानुभूति की समानता है।
7. Roman Jakobson- Jakobson described translation as interlingual interpretation. उनके अनुसार यह भाषाओं के बीच अर्थ–व्याख्या है।

यूजीन नाइडा Translating consists in reproducing in the receptor language the closest natural equivalent of the source language message, first in terms of meaning and secondly in terms of style.

जे.सी. कैटफड The replacement of textual material in one language by equivalent textual material in

another language.

डॉ. सैमुअल जॉनसन To translate is to change into another language, retaining the sense.

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. अनुवाद' शब्द की व्युत्पत्ति पर संक्षेप में टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न 2.अनुवाद के संदर्भ में 'स्थानांतरण' का क्या अर्थ है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3.यूजीन नाइडा की अनुवाद-दृष्टि की मुख्य विशेषता क्या है?

प्रश्न 4.भारतीय विद्वानों के अनुसार अनुवाद की प्रक्रिया का स्वरूप किस प्रकार समझा जाता है?

ÂýÙz.cicero और Horace की अनुवादसंबंधी मान्यताओं में मुख्य अंतर क्या है?

1.4.3. समकालीन अनुवादकों द्वारा अनुवाद की परिभाषाएँ

1. अनामिका-वे अनुवाद को रचनात्मक सह-यात्रा मानती हैं, जहाँ अनुवादक मूल भाव को आत्मसात कर नये रूप में व्यक्त करता है।

2. अशोक वाजपेयी-उनके अनुसार अनुवाद साहित्य को वैद्रिक अनुभवों से जोड़ने वाला सृजनशील कर्म है।

3. नीलाभ अश्क-वे अनुवाद को बहुभाषिक चिंतन की निरंतर प्रक्रिया बताते हैं, जहाँ भाषा और संस्कृति दोनों का संतुलन आवश्यक है।

4. मनोज रुपड़ा- वे इसे ''सांस्कृतिक अनुवर्तन'' मानते हैं, जो नई संवेदनाओं को जन्म देता है।

5. प्रभात रंजन-उनके अनुसार अनुवाद आधुनिक पाठक और मूल पाठ के बीच सेतु बनाता है और अर्थ को नए संदर्भ में जीवंत करता है।

6. संजय द्विवेदी-अनुवाद को संवाद का विस्तृत रूप मानते हैं, जिसमें समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार अर्थ-निर्माण होता है।

7. अनिल जनविजय-उनके अनुसार अनुवाद साहित्य की बहुभाषिक चेतना को उभारने का महत्वपूर्ण साधन है।

8. मनीषा कुलश्रेष्ठ- अनुवाद को संवेदना की पुनर्बहाली मानती हैं, जिसमें शब्दों के साथ-साथ सामाजिक संदर्भ भी अनूदित होते हैं।

1.5 अनुवाद और रूपांतरण

हिंदी में 'अनुवाद' की संकल्पना किसी एक निश्चित अर्थ में कभी स्थिर नहीं रही। यह शब्द समय के साथ 'अनुवचन', 'अनुवाक', 'अनुकथन', 'भाषांतरण', 'तर्जुमा' और 'उल्था' जैसे विविध पर्यायों के प्रयोग और प्रतिस्पर्धा से विकसित होकर अपने वर्तमान रूप तक पहुँचा है। इसके बावजूद समकालीन अनुवाद-विमर्श में 'अनुवाद' और 'रूपांतरण' के अर्थ-क्षेत्र, उनकी सीमाओं तथा पारस्परिक भेदों को लेकर निरंतर बहस चलायी जाती है। दिलचस्प तथ्य यह है कि इस बहस का विस्तार हिंदी की तुलना में अंग्रेजी में लिखने वाले अनुवाद-सिद्धांतकारों के लेखन में अधिक सक्रिय और सुव्यवस्थित रूप से दिखाई देता है।

अनुवाद-विमर्श पर केंद्रित चर्चाओं में यह मत प्रबल है कि भारत की भाषिक-सांस्कृतिक बहुलता और ज्ञान-परंपराओं की विविधता के कारण ''रूपांतरण'' शब्द अनुवाद की बहुविध प्रक्रियाओं को अधिक समग्रता से व्यक्त करता है। अनुवाद केवल भाषा-स्तर का अंतरण नहीं है; वह विषय-वस्तु, शैली, अभिव्यक्ति, माध्यम तथा विधा - सभी स्तरों पर परिवर्तन की संभावनाओं को समाहित करता है। उदाहरणस्वरूप, रामकथा का संस्कृत से अन्य भारतीय भाषाओं में संक्रमण शाब्दिक अनुवाद से अधिक एक ऐसे रूपांतरण का परिणाम है, जिसमें मूल का भाव-तत्व केंद्रीय रहा है, न कि शब्द-निष्ठ पुनरुत्पादन। इस प्रकार की प्रक्रियाएँ कथावाचन, रंगमंच, नृत्य, दृश्यकलाओं और लोक-नाट्य रूपों के माध्यम से निरंतर विकसित होती रहती हैं, जिससे रूपांतरण की अवधारणा अधिक गत्यात्मक, सृजनशील और व्यापक

बन जाती है।

वास्तविक अनुवाद की प्रक्रिया में तीन मूलभूत अवयव महत्वपूर्ण होते हैं- मूल संदेश (विचार/कथ्य), स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा। अनुवादक का दायित्व होता है कि वह इन तीनों के मध्य की दूरी को न्यूनतम रखते हुए मूल आशय को दूसरे भाषिक संदर्भ में इस प्रकार प्रस्तुत करे कि वह स्वाभाविक और बोधगम्य प्रतीत हो। इसीलिए अनुवाद को 'भाषांतरण' कहा जाता है, क्योंकि इसमें मुख्य परिवर्तन भाषास्तर का होता है, न कि कथ्य का। भाषा-अंतरण के दौरान रूप (फॉर्म) बदल जाना स्वाभाविक है, इसीलिए कभी-कभी अनुवाद को 'रूपांतरण' भी कह दिया जाता है-किन्तु यहाँ रूपांतरण का अर्थ केवल भाषा-रूप में परिवर्तन है, न कि किसी व्यापक सृजनात्मक पुनर्गठन का।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब 'रूपांतरण' शब्द का प्रयोग अनुवाद की सामान्य परिभाषा के स्थान पर किया जाने लगता है। जीवविज्ञान, समाजशास्त्र, कला, मीडिया-लेखन और रंगमंच जैसे क्षेत्रों में 'रूपांतरण' का प्रयोजन बहुअर्थी तथा विस्तृत होता है। इन संदर्भों में 'रूप'केवल दृश्य रूप तक सीमित नहीं है; यह संरचना, माध्यम, शैली, विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति-सभी स्तरों पर परिवर्तन को इंगित करता है। इसलिए जब रूपांतरण की अवधारणा को अनुवाद पर लागू किया जाता है, तो वह मात्र भाषा-परिवर्तन से आगे बढ़कर विधा-परिवर्तन, माध्यम-परिवर्तन,स्थानीयकरण, पुनर्सृजन और अभिग्रहण तक विस्तृत दिखाई देती है।

रूपांतरण के ये व्यापक रूप कई स्तरों पर प्रस्तुत होते हैं-

मूल पाठ का लक्ष्य भाषा में पुनर्निर्माण,

- मूल भाषा की कथा का दूसरी भाषा में रंगमंचीय रूपांतरण,
- स्रोत-पाठ पर आधारित फिल्म या दृश्य-प्रस्तुति का निर्माण,
- एक ही भाषा में एक माध्यम से दूसरे माध्यम में अनुकूलन।

इन सभी स्थितियों में भाषा अनिवार्यत: नहीं बदलती; कई बार केवल माध्यम या विधा परिवर्तित होती है। इसीलिए एकभाषिक रूपांतरण (Same-Language Adaptation) को अनुवाद की श्रेणी में नहीं, बल्कि मीडिया-लेखन या रचनात्मक लेखन के अंतर्गत माना जाता है। परंतु जब रूपांतरण में भाषा-परिवर्तन भी शामिल हो जाए, तब वह अनुवादक्षेत्र से संबद्ध हो जाता है। इस दृष्टि से रूपांतरण को अनुवाद की एक विशिष्ट विधा कहा जा सकता है-किन्तु अनुवाद का पर्याय नहीं। रूपांतरण की प्रक्रिया में स्थानीयकरण, अभिग्रहण, शैली-परिवर्तन और नए प्रारूप का विकास जैसे सृजनात्मक स्तर शामिल होते हैं। परिणामस्वरूप कई बार लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत पाठ मूल से इतना दूर चला जाता है कि वह ''छायानुवाद'', ''अनुसृजन'' या ''अंतरप्रतीकात्मक रूपांतरण'' की श्रेणी में पहुँच जाता है, जो अनुवाद नहीं, बल्कि एक नवीन पाठसृजन होता है।

अनुवाद और रूपांतरण की सीमारेखा ''समतुल्यता'' (Equivalence) के माध्यम से स्पष्ट होती है। अनुवाद का आधार तुल्यता होता है- अर्थ, शैली और भाव में यथासंभव एक-सी छवि बनाए रखना। इसके विपरीत, रूपांतरण में समतुल्यता केवल तभी संभव है जब मूल कथ्य में सार्वकालिक या सार्वभौमिक तत्व हों, जो विभिन्न संस्कृतियों और देशों में सहज रूप से ढल सके। स्थानीय संदर्भों और सांस्कृतिक विशिष्टताओं से परिपूर्ण कृतियों का रूपांतरण कठिन होता है और कई बार नया रूप मूल से पर्याप्त दूरी बना लेता है। स्पष्त: कहा जा सकता है कि अनुवाद और रूपांतरण दोनों परस्पर संबद्ध होते हुए भी स्वतंत्र अवधारणाएँ हैं। अनुवाद मुख्यत: भाषिक अंतरण पर आधारित है, जबकि रूपांतरण में भाषा के साथ-साथ माध्यम, विधा, शैली और सांस्कृतिक रूपों का अंतरण भी सम्मिलित हो सकता है। इस प्रकार रूपांतरण को अनुवाद की एक रचनात्मक विधा अवश्य माना जा सकता है, पर उसे अनुवाद का पर्याय नहीं कहा जा सकता। रूपांतरण का मूल स्वरूप तभी सार्थक सिद्ध होता है जब वह लक्ष्यभाषा और संस्कृति के अनुरूप ढलकर भी मूल कृति के प्रभाव, विचार-तत्व और भाव-आधार को जीवित रख सके; अन्यथा वह अनुवाद की सीमा से बाहर निकलकर अनुसृजन के क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है।

1.6 अनुवाद की अवधारणाएं: भाषा, अर्थ और संदर्भ का संबंध

अनुवाद केवल भाषा रूपांतरण की तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक बहुआयामी संप्रेषणीय क्रिया है जिसमें भाषा, ¥Í üÑ ðÚÂÎÖü· ê¥ æÂâèâÕÏ ·ðâÌéÚÌ ç ×ØæÁàææãÐç ×âèÖèÂæÆØæâÎðæ ×ðdð Öæææ(Source Language) से लक्ष्य भाषा (Target Language) में रूपांतरित करने के लिए अनुवादक को न केवल भाषिक ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उसे अर्थ की गहन समझ और पाठ के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ की जानकारी भी आवश्यक होती है। प्रारंभिक दृष्टि में अनुवाद को शाब्दिक शब्दानुवाद या वाक्य-प्रतिलिपि समझा जाता था, किन्तु आधुनिक अनुवादसिद्धांतों ने इसे एक रचनात्मक और अर्थ-निर्माणात्मक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। यूजीन नाइडा और चार्ल्स टेबर के अनुसार, अनुवाद का उद्देश्य स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश का लक्ष्य भाषा में निकटतम प्राकृतिक समतुल्य प्रस्तुत करना है, जिसमें पहले अर्थ और फिर शैली का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद में केवल भाषिक रूपांतरण पर्याप्त नहीं है; अर्थ, शैली और संदर्भ का समन्वय अनिवार्य है। अनुवाद केवल भाषा रूपांतरण की तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक बहुआयामी संप्रेषणीय क्रिया है जिसमें भाषा, अर्थ और संदर्भ के आपसी संबंध को संतुलित किया जाता है। किसी भी पाठ या संदेश को स्रोत भाषा (Source Language) से लक्ष्य भाषा (Target Language) में रूपांतरित करने के लिए अनुवादक को न केवल भाषिक ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उसे अर्थ की गहन समझ और पाठ के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ की जानकारी भी आवश्यक होती है। प्रारंभिक दृष्टि में अनुवाद को शाब्दिक शब्दानुवाद या वाक्य-प्रतिलिपि समझा जाता था, किन्तु आधुनिक अनुवादसिद्धांतों ने इसे एक रचनात्मक और अर्थ-निर्माणात्मक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। यूजीन नाइडा और चार्ल्स टेबर के अनुसार, अनुवाद का उद्देश्य स्रोत भाषा में व्यक्त संदेश का लक्ष्य भाषा में निकटतम प्राकृतिक समतुल्य प्रस्तुत करना है, जिसमें पहले अर्थ और फिर शैली का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इसी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद में केवल भाषिक रूपांतरण पर्याप्त नहीं है; अर्थ, शैली और संदर्भ का समन्वय अनिवार्य है।

1. भाषा का महत्व-अनुवाद की प्रक्रिया में भाषा सर्वाधिक प्रमुख तत्व है, क्योंकि विचारों, भावों और अनुभवों का संप्रेषण भाषा के माध्यम से ही संभव होता है। अनुवादक का दायित्व केवल शब्द खोजने तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह दो भिन्न भाषाओं की संरचना, शैली, शब्दविन्यास और सांस्कृतिक संकेतों को समझकर उसका रचनात्मक रूपांतरण करता है। भाषा के विभिन्न स्तर-ध्वन्यात्मक गुण, शब्द-रूप, वाक्य-रचना, अलंकारिक प्रयोग और व्याकरणिक भिन्नताएँ-अनुवाद की गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित करते हैं।

कई बार स्रोत भाषा में प्रयुक्त किसी शब्द का अर्थ केवल उसके शाब्दिक रूप से स्पष्ट नहीं होता। उदाहरण के लिए, संस्कृत या अरबी जैसे भाषाई-साहित्यिक संदर्भों में शब्द एक विशिष्ट सांस्कृतिक अर्थ-विस्तार रखते हैं, जिसे हिंदी या अंग्रेजी में साधारण रूप से बदल देने से मूल भाव नष्ट हो सकता है। लक्ष्य भाषा में अनुवाद करते समय उस शब्द के शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त उसके भाव, प्रसंग, परंपरा और सांस्कृतिक संकेतों को भी सुरक्षित रखना आवश्यक होता है। इसलिए भाषा अनुवाद की नींव ही नहीं, बल्कि उसकी संपूर्ण प्रभावशीलता का केन्द्रीय आधार है।

Wमहत्वपूर्ण बिंदु-

भाषा वह व्यवस्थित माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करता है। यह संचार, ज्ञान-वितरण और सामाजिक संबंधों की स्थापना का प्रमुख साधन है। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक व्यवस्था है जो समाज को समझने और समझाने में मदद करती है।

2. अर्थ का महत्व-अनुवाद का वास्तविक उद्देश्य मूल रचना के विचारों और अर्थ को दूसरी भाषा में उस रूप में प्रस्तुत करना है, जहाँ पाठक को वही भावानुभूति प्राप्त हो जो स्रोत भाषा के पाठक को होती है। अर्थ केवल शब्दों के समूह से नहीं बनता, बल्कि इसमें लेखक की मंशा, भाव-स्थिति, सांस्कृतिक दृष्टि, सामाजिक संकेत और ऐतिहासिक संदर्भ का समग्र प्रतिरूप शामिल होता है।

अनुवादक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होती है कि वह शब्दों से आगे बढ़कर 'अर्थ-संरक्षण' सुनिश्चित करे। उदाहरण के लिए, भारतीय संदर्भ में ''संस्कृति'' शब्द के भावात्मक स्तर उतने गहरे और बहुस्तरीय हैं कि इसे केवल ''culture'' कह देना पर्याप्त नहीं होता। अत: अनुवादक को अर्थ को उसी भाव-गहराई के साथ लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना पड़ता है। इसी कारण प्रमुख विद्वानों ने कहा है कि अनुवाद में ''अर्थ की समानता'' (semantic equivalence) ही सर्वोच्च सिद्धांत है, शब्द समानता नहीं।

3. संदर्भ का महत्व- अनुवाद केवल भाषा और अर्थ का रूपांतरण नहीं है, बल्कि संदर्भ का पुनर्निर्माण भी है। किसी भी पाठ का सही आशय उसके काल, परिस्थितियों, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक परंपराओं और पाठकवर्ग की अपेक्षाओं पर आधारित होता है। यदि किसी कथन का संदर्भ अनदेखा कर दिया जाए, तो उसका अनुवाद भ्रामक, अपूर्ण या अर्थहीन हो सकता है।

संदर्भ विशेषकर मुहावरों, लोककथाओं, धार्मिक संकेतों, ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक प्रतीकों में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। जैसे किसी भाषा में प्रयुक्त किसी विशेष लोककथा का संकेत दूसरी भाषा में तब तक सफल नहीं होता जब तक अनुवादक उसके सांस्कृतिक महत्व को समझकर उपयुक्त वैकल्पिक अभिव्यक्ति प्रस्तुत न करे। आधुनिक अनुवाद सिद्धांतकारों ने इस बात पर जोर दिया है कि संदर्भ की उपेक्षा अनुवाद को सतही बना देती है और पाठक को वास्तविक अर्थ से दूर कर देती है।

4. भाषा, अर्थ और संदर्भ का त्रैतीय संतुलन- अनुवाद की सफलता इसी त्रिकोणीय संतुलन पर निर्भर करती है- भाषा, अर्थ और संदर्भ। यदि इनमें से किसी एक को अधिक महत्व दिया जाए और बाकी की अनदेखी की जाए, तो अनुवाद में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है। भाषा संप्रेषण का साधन है, अर्थ उसकी आत्मा है, और संदर्भ उसकी विद्रसनीयता और उपयुक्तता का आधार। एक कुशल अनुवादक इन तीनों में सामंजस्य स्थापित करता है, ताकि मूल रचना की वास्तविकता, भाव और उद्देश्य सुरक्षित रहें। विद्वानों ने कहा है कि अनुवाद न तो केवल शब्दानुगामी होना चाहिए और न केवल स्वतंत्र रचना जैसा; इसमें भावानुवाद और शब्दानुवाद दोनों के तत्व अपनी आवश्यकता के अनुपात में उपस्थित होने चाहिए। यही संतुलन अनुवाद को विद्रसनीय, पठनीय और प्रभावी बनाता है।

इसलिए पारंपरिक भारतीय परंपरा में अनुवाद का स्वरूप मुख्यत: आदर, निष्ठा, परंपरा संरक्षण, व्याख्यात्मकता और शास्त्रीयता पर आधारित था। इसका उद्देश्य मूल ज्ञान की सातत्यता बनाए रखना था, न कि उसका पुनर्सृजन करना।

1.7 संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में अनुवाद की अवधारणा

मानव सभ्यता का विकास मूलत: संप्रेषण और संवाद के निरंतर विस्तार पर आधारित है। संप्रेषण का अर्थ केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि भावों, विचारों, अनुभवों, संस्कृति और समाज के साझा बोध का प्रवाह भी है। ऐसे में अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा एक भाषिक समुदाय के विचार दूसरी भाषा के समुदाय तक पहुँचते हैं। अनुवाद केवल भाषिक पुनर्निर्माण नहीं होता, बल्कि यह संप्रेषण की एक जटिल, बहु-स्तरीय और सांस्कृतिक प्रक्रिया भी है। अनुवाद को संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में समझने पर यह स्पष्ट होता है कि अनुवादक स्रोत और लक्ष्यभाषी समुदायों के बीच सेतु की भूमिका निभाता है। इस संदर्भ में अनुवाद को एक व्यापक अंत:सांस्कृतिक संप्रेषण तंत्र के रूप में देखा जा सकता है।

1. संप्रेषण और अनुवाद का मूलभूत संबंध

संप्रेषण की परिभाषा में स्रोत, संदेश और प्राप्तकर्ता-ये तीन मूलभूत घटक माने जाते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया में भी यही तीन घटक मौजूद रहते हैं, परंतु यहाँ स्रोतभाषा, स्रोतसंदेश और लक्ष्यभाषा के पाठक या दर्शक शामिल हो जाते हैं। इस प्रकार अनुवाद संप्रेषण की सामान्य प्रक्रिया को एक नई दिशा प्रदान करता है जिसमें भाषा, संस्कृति, प्रसंग और संदेश के स्तरों के मध्य समन्वय स्थापित करना आवश्यक हो जाता है।

संप्रेषण का आधार स्पष्टता और उपयुक्तता है। अनुवाद में भी संदेश की स्पष्टता, संदर्भ की उपयुक्तता और भाषाई संवेदनशीलता अनिवार्य है। यदि स्रोतसंदेश का आशय लक्ष्यभाषा तक सही रूप में न पहुँचे, तो न संप्रेषण सफल होगा,

न अनुवाद विद्रूसनीय माना जाएगा। इसलिए अनुवाद एक द्वि-स्तरीय संप्रेषण प्रक्रिया है- पहला, अनुवादक का स्रोतपाठ से संवाद; दूसरा, अनुवादक द्वारा लक्ष्यभाषा पाठक से संवाद।

2. अनुवाद : अर्थ संवहन की प्रक्रिया

अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं है, बल्कि अर्थ का संवहन है। संप्रेषण प्रक्रिया में अर्थ की केंद्रीय भूमिका होती है। भाषा शब्दों का समूह मात्र नहीं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक स्मृति, जीवनअनुभव और सामूहिक दृष्टि का संग्रह भी है। जब किसी भाषा के विचार दूसरी भाषा में रूपांतरित होते हैं, तो केवल भाषाई संरचना ही नहीं बदलती, बल्कि अर्थ-बोध के नए आयाम भी जुड़ते हैं।

इस प्रक्रिया में तीन स्तरों पर संप्रेषण होता है—

बौद्धिक स्तर -लेखक द्वारा व्यक्त विचारों को अनुवादक समझता है।

भावात्मक स्तर -लेखक के भाव-अनुभव अनुवादक के भीतर संप्रेषित होते हैं।

सांस्कृतिक स्तर-स्रोतसमाज के सांस्कृतिक संकेतक अनुवादक तक पहुँचते हैं और वह उन्हें लक्षित समाज तक पहुँचाता है।

अनुवाद का अर्थ यह नहीं कि शब्द प्रति शब्द स्थानांतरण कर दिया जाए; बल्कि यह है कि स्रोतभाषा के भावगत, सांस्कृतिक और संदर्भगत अर्थ को लक्ष्यभाषा में पुनः सजीव रूप में प्रस्तुत किया जाए।

3. अनुवाद में संदर्भ और प्रसंग का संप्रेषण-

संप्रेषण प्रक्रिया में संदर्भ का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी संदेश अपने प्रसंग से अलग होकर पूर्ण अर्थ नहीं दे सकता। अनुवाद में संदर्भात्मक संप्रेषण और भी जटिल हो जाता है, क्योंकि भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाएँ भी बदल जाती हैं। किसी भाषा में प्रयुक्त मुहावरे, कहावतें, प्रतीक, उदाहरण और रूपक दूसरी भाषा में वही प्रभाव नहीं उत्पन्न कर सकते।

उदाहरण के लिए-भारतीय भाषाओं में प्रकृति आधारित सांस्कृतिक प्रतीक अक्सर मिलते हैं, लेकिन पश्चिमी भाषाओं में उनके समकक्ष प्रतीक अलग हो सकते हैं। अनुवादक का दायित्व है कि वह संदर्भ के अनुसार उपयुक्त रूपांतरण करे, ताकि मूल भाव वही रहे, परंतु लक्ष्यभाषा की संवेदना के अनुकूल भी लगे। इस प्रकार अनुवाद संदर्भों के पुनर्निर्माण का कार्य करता है, जो संप्रेषण प्रक्रिया की मुख्य आवश्यकता है।

4. संप्रेषण के माध्यम के रूप में अनुवाद और संस्कृति

भाषा संस्कृति का वाहक है, इसलिए भाषा बदलने का अर्थ केवल शब्द बदलना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संकेतों को नए सामाजिक ढाँचे में प्रस्तुत करना भी है। अनुवाद एक भाषाई क्रिया के साथ-साथ एक सांस्कृतिक संप्रेषण क्रिया भी है। प्रत्येक संस्कृति का अपना ज्ञानकोश, मूल्यक्रम, प्रतीक जगत और व्यवहार संहिता होती है। अनुवाद यही सांस्कृतिक जानकारी एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करता है। अनुवाद के माध्यम से संस्कृतियों में संवाद स्थापित होता है। यह पारस्परिक समझ, सहअस्तित्व और वैदृकता को बढ़ावा देता है। संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में अनुवाद मानव समाज को आपस में जोड़ने का साधन बन जाता है। जहाँ प्रत्यक्ष भाषा-भाषी संवाद संभव नहीं होता, वहाँ अनुवाद ही विचारों का माध्यम बनता है।

5. अनुवाद मेंत्रिस्तरीय संप्रेषण प्रक्रिया

अनुवाद की संप्रेषण प्रक्रिया को तीन स्तरों से समझा जा सकता है-

(क) स्रोतपाठ और अनुवादक का संवाद

अनुवादक सबसे पहले स्रोतपाठ से संवाद करता है। वह पाठ को पढ़ता, समझता और उसकी गहन व्याख्या करता है। यह चरण संप्रेषण का आंतरिक स्तर है जहाँ अनुवादक के ज्ञान, संवेदना और अनुभव की परीक्षा होती है।

(ख) अनुवादक और लक्ष्यभाषा का संवाद

अनुवादक लक्ष्यभाषा की संरचना, शैली, व्याकरण और सांस्कृतिक भेदों को ध्यान में रखते हुए रूपांतरण करता है। यह चरण मूल संदेश को नए संदर्भ में ढालने का कार्य है।

(ग) लक्ष्यपाठ और पाठक का संवाद

जब अनुवादित पाठ पाठक तक पहुँचता है, तो वह अंतिम संप्रेषण चरण पूर्ण होता है। यहाँ संदेश को कितना समझा गया, वह मूल के कितना निकट है, और उसके प्रभाव की क्या तीव्रता है- ये सब संप्रेषण की सफलता को निर्धारित करते हैं। इन तीनों स्तरों के समुचित सामंजस्य से ही अनुवाद एक सफल संप्रेषण प्रक्रिया बनता है।

6. अनुवाद में बहु-माध्यमीय संप्रेषण

आधुनिक समय में संप्रेषण केवल लिखित भाषा तक सीमित नहीं रहा। दृश्य-श्रव्य माध्यमों, डिजिटल तकनीकों और बहु-माध्यमीय संचार ने संवाद प्रक्रिया को अत्यंत विस्तृत और जटिल बना दिया है। ऐसे में अनुवाद की भूमिका भी विस्तृत हो गई है। आज अनुवाद केवल साहित्यिक ग्रंथों तक नहीं, बल्कि सिनेमा, समाचार, दृश्य-श्रव्य सामग्री, तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिक आविष्कार और सामाजिक-राजनीतिक विमर्श के प्रसार में भी आवश्यक है।

बहु-माध्यमीय संप्रेषण में अनुवाद को 'अनुकूलन', 'स्थानीकरण' और 'सांस्कृतिक रूपांतरण' की गहराई से समझना पड़ता है। एक दृश्य-अनुक्रम, एक ध्वनि, एक प्रतीक, अथवा एक भाव-चित्र का अनुवाद करना केवल 'भाषाई' कार्य नहीं, बल्कि यह संप्रेषण की बहु-स्तरीय प्रक्रिया का संचालन है।

1.8 अनुवाद का संदर्भ

अनुवाद के अब तक सम्पन्न अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामान्यत: 'अनुवाद' को दो भाषाओं के मध्य घटित होने वाली अर्थ-संचरण की प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। किंतु यह प्रश्न गंभीर विचार की मांग करता है कि क्या अनुवाद का वास्तविक अथवा प्रामाणिक अर्थ केवल इतना ही है? क्या अनुवाद मात्र भाषा-परिवर्तन की यांत्रिक क्रिया तक सीमित है, जैसा कि समकालीन व्यवहार में प्रचलित है?

वास्तविकता यह है कि अनुवाद का अर्थक्षेत्र इससे कहीं अधिक व्यापक, गहन और बहुआयामी है। अर्थ-अवलोकन के स्तर पर देखें तो अनुवाद केवल भाषिक विनिमय नहीं, बल्कि विभिन्न सांस्कृतिक, संदर्भगत और प्रतीकात्मक आयामों का समेकित रूप है। इसी कारण इसे एक व्यापक संदर्भ वाला शब्द माना जाता है, जिसमें भाषा, भाव, संस्कृति, प्रसंग और विचार-सभी स्तर पर अंतर्लीन रहते हैं। यदि अनुवाद को केवल दो भाषाओं के बीच होने वाली गतिविधि तक सीमित कर दिया जाए, तो यह परिभाषा न केवल अधूरी रह जाती है, बल्कि अनुवाद की वास्तविक प्रकृति को भी संकुचित कर देती है। ऐसे में अनुवाद की अवधारणा भ्रामक प्रतीत हो सकती है। अत: अनुवाद के विविध संदर्भों- भाषिक, सांस्कृतिक, प्रतीकात्मक और संदर्भगत परिस्थितियों का सम्यक् अवलोकन आवश्यक है ताकि इसके वास्तविक स्वरूप और दायरे को अधिक सुस्पष्टता के साथ समझा जा सके।

1.8.1 'अनुवाद' का व्यापक संदर्भ

परंपरागत रूप से अनुवाद का अभिप्राय किसी भाषा में व्यक्त कथ्य को दूसरी भाषा में स्पष्ट एवं सुबोध रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया से लगाया जाता रहा है। सामान्य समझ में यह दो भाषाओं के मध्य होने वाले अर्थ-सम्प्रेषण का कार्य-व्यापार प्रतीत होता है। किंतु अनुवाद को केवल भाषिक विनिमय तक सीमित रखना उसके वास्तविक दायरे को संकुचित कर देता है।

वास्तव में अनुवाद की प्रक्रिया भाषाओं के परस्पर रूपांतरण से कहीं अधिक विस्तृत है। किसी भाषा के भीतर अभिव्यक्ति- जैसे निबंध, कविता अथवा किसी अन्य साहित्यिक रूप- को भिन्न शैली, स्वरूप या संरचना में पुन: प्रस्तुत करने की क्रिया भी अनुवाद की व्यापक परिधि में आती है। इसीलिए भाषिक विविधता, शैली-परिवर्तन तथा बोलीगत विन्यास को भी अनुवाद का स्वरूप माना गया है। इस व्यापक संदर्भ में अनुवाद के न्यूनतम दो आधार माने जाते हैं:

(1) भाषिक स्तर पर रूपांतरण

(2) प्रतीकात्मक माध्यमों के बीच अंतरण

दो भिन्न प्रतीक-व्यवस्थाओं के मध्य अर्थ-परिवर्तन भी अनुवाद का एक महत्वपूर्ण आयाम है। भाषा स्वयं एक प्रतीक-व्यवस्था है, जबकि चित्रकला, संगीत, नाटक, नृत्य आदि भावात्मक और कलात्मक प्रतीक-व्यवस्थाएँ मानी जाती हैं। जब किसी भाषिक कथ्य को इन गैर-भाषिक माध्यमों में बिना उसके मूल अर्थ को परिवर्तित किए अभिव्यक्त किया जाता है, तब यह प्रक्रिया 'कथ्य के प्रतीकीकरण' का रूप धारण कर लेती है। साहित्यिक सिद्धांतों में इस रूपांतरण को 'प्रतीकांतरण' अथवा 'संकेतांतरण' के नाम से जाना जाता है।

इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए कलात्मक उदाहरण अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लियोनार्दो दा विंची (1452-1519) की प्रसिद्ध चित्रकृति मोनालिसा भावात्मक प्रतीकांतरण का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है, जिसमें सौंदर्य, रहस्य और मानवीय भावों को चित्रात्मक प्रतीकों के माध्यम से संप्रेषित किया गया है। इसी प्रकार भारतीय चित्रकला परंपरा में राजा रवि वर्मा की कृतियाँ भी प्रतीकांतरण की सशक्त मिसाल प्रस्तुत करती हैं।

भारतीय लोक-संस्कृति में भी इस प्रकार के रूपांतरण के प्रमाण मिलते हैं। उदाहरणार्थ, नागार्जुन की कविता 'सिंदूर की नागिन' का लोकगीत रूपांतरण इस तथ्य की पुष्टि करता है कि भिन्न माध्यमों- भाषिक, संगीतात्मक या चित्रात्मकके बीच अर्थ का रूपांतरण भी अनुवाद की ही प्रक्रिया है। इस प्रकार अनुवाद का व्यापक संदर्भ भाषाओं से आगे बढ़कर विविध अभिव्यक्ति-माध्यमों के अंत:संबंधों को समेटता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर देखा जाए तो अनुवाद के तीन संदर्भ स्पष्ट होते हैं-

(क) एक ही भाषा में अनुवाद,

(ख) एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद,

(ग) दो भिन्न माध्यमों अथवा प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच अनुवाद।

प्रसिद्ध भाषाविद रोमन याकोब्सन (Roman Jakobson) ने अपनी पुस्तक में इसी आधार पर तीन प्रकार बताए हैं-

-अंत:भाषिक अनुवाद

-अंतरभाषिक अनुवाद

-अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद

तीनों की परिभाषाएँ

अंत:भाषिक अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें एक ही भाषा के भीतर किसी कथ्य, विचार, संदेश या अभिव्यक्ति को नए रूप, नए विन्यास या नयी शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इस रूपांतरण में भाषा बदलती नहीं, बल्कि वही भाषा अपना स्वरूप, स्तर, शैली या अभिव्यक्ति-पद्धति बदलती है। इसी कारण इसे 'अनुव्याख्या' या 'पैराफ्रेसिंग' भी कहा जाता है। इस प्रकार का अनुवाद यह सिद्ध करता है कि भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि बहुविध अभिव्यक्ति-शैलियों, स्तरों और रजिस्टरों का जीवंत माध्यम है, जिनके बीच सतत अर्थ-परिवर्तन और पुनर्निर्माण चलता रहता है। अंत:भाषिक अनुवाद का सबसे प्रमुख उद्देश्य यह है कि मूल कथ्य को उसके सार, अर्थ और भाव को सुरक्षित रखते हुए नए पाठकवर्ग के लिए अधिक सुगम, स्पष्ट और ग्रहणीय बनाया जाए। चूँकि किसी भाषा में विभिन्न कालों, समाजों, क्षेत्रों और विधाओं के अनुसार प्रयोग में निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं, इसलिए कई बार पुरानी अभिव्यक्तियाँ आधुनिक पाठक के लिए अव्यक्त या कठिन हो जाती है। ऐसे में अंत:भाषिक अनुवाद उस अंतराल को भरने का कार्य करता है। उदाहरण के रूप में हम देख सकते हैं कि मध्यकालीन या प्राचीन हिंदी में लिखी गई रचनाएँ आधुनिक पाठकों के लिए कठिन हो सकती हैं। यदि इन्हें आधुनिक हिंदी में सरल शब्दों, सीधी वाक्य-रचना और समकालीन उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया जाए, तो यह अंत:भाषिक अनुवाद कहलाएगा। इसी प्रकार किसी औपचारिक शैली में लिखे गए सरकारी दस्तावेज को सामान्य पाठकों के लिए बोलचाल की भाषा में प्रस्तुत करना भी इसी श्रेणी में आता है।

अंत:भाषिक अनुवाद केवल कठिन भाषा को सरल बनाने तक सीमित नहीं है। इसमें शैली-परिवर्तन, रजिस्टर-परिवर्तन, विधागत रूपांतरण और व्याख्यात्मक पुनर्निर्माण भी सम्मिलित है। उदाहरणार्थ-

- किसी दार्शनिक निबंध को विद्यार्थियों के लिए सरल भाषायी रूप में समझाना,
- किसी कविता को गद्य रूप में कहना,

- वैज्ञानिक या तकनीकी लेखन को आम जन के लिए आसान भाषा में बदलना,
- किसी भाषण या वक्तव्य को सारगर्भित रूप में संक्षेपित करना।

ये सभी अंत:भाषिक अनुवाद की स्थितियाँ हैं।

अनुवाद में अनुवादक का कार्य केवल शब्दों को बदलना नहीं होता, बल्कि वह मूल अभिप्राय को समझकर उसका पुन:निर्माण करता है। यहाँ चुनौती यह है कि कथ्य को सरल बनाते समय उसका मूल अर्थ न खो जाए और संरचना को नए रूप में ढालते समय भी संदेश की संवेदनशीलता और गहनता सुरक्षित बनी रहे। इसलिए अंत:भाषिक अनुवाद के लिए भाषा का ज्ञान के साथ-साथ शैलीगत दक्षता, संदर्भ-बोध, साहित्यिक संवेदनशीलता और व्याख्यात्मक समझ भी आवश्यक है।

आज के समय में अंत:भाषिक अनुवाद की आवश्यकता और भी बढ़ गई है, क्योंकि पाठकवर्ग विविध है और उनकी भाषिक पहुँच भी भिन्न है। मीडिया, शिक्षा, साहित्य, प्रशासन, न्याय, विज्ञान-सभी क्षेत्रों में मूल सामग्री को अलग-अलग स्तरों पर पुनर्प्रस्तुत करने का कार्य इसी श्रेणी में आता है। यह न केवल भाषा की लोकतांत्रिकता को बढ़ाता है, बल्कि ज्ञान के प्रसार में समानता की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

(ख) अंतरभाषिक अनुवाद

अंतरभाषिक अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें किसी भाषा में व्यक्त विचार, कथ्य या संदेश को सीधे किसी अन्य भाषा में रूपांतरित किया जाता है। अनुवाद का यह रूप सबसे अधिक प्रचलित और व्यापक माना जाता है, इसलिए इसे ßæð çß· ¤¥ ÙßâêØæTranslation Proper भी कहा जाता है। सामान्य समझ वाला कोई भी व्यक्ति जब अनुवाद शब्द का प्रयोग करता है, तो उसका तात्पर्य प्राय: इसी श्रेणी से होता है, जहाँ दो भिन्न भाषाओं के बीच अर्थ-संप्रेषण सुनिश्चित किया जाता है- जैसे हिन्दी से अंग्रेजी, संस्कृत से हिन्दी, मराठी से गुजराती आदि।

अंतरभाषिक अनुवाद की प्रक्रिया के मूल में यह धारणा निहित है कि दो भाषाओं की संरचनाएँ, ध्वन्यात्मक तंत्र, शब्दकोशीय बनावट, मुहावरे, वाक्य-विन्यास, शैलीगत विशेषताएँ तथा सांस्कृतिक संदर्भसभी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। इसलिए किसी भाषा के कथ्य को किसी अन्य भाषा में संप्रेषित करना केवल शब्दान्तर नहीं, बल्कि अर्थ के पुनर्निर्माण और अर्थपरक समानता (semantic equivalence) की खोज का कार्य है। इसी कारण अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि उसे केवल दोनों भाषाओं का व्याकरणिक ज्ञान ही न हो, बल्कि उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों, प्रयोग-स्तरों, रजिस्टरों तथा अभिव्यक्ति की परंपराओं का भी गहरा बोध हो।

अंतरभाषिक अनुवाद में अनुवादक को दो मुख्य स्तरों पर कार्य करना पड़ता है—

भाषिक स्तर (Linguistic Level): इसमें व्याकरण, शब्दार्थ, वाक्य-रचना, लय, क्रिया-रूप, लिंग-पुरुष के भेद आदि की समझ शामिल होती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ी वाक्य They have finished their work का सही हिन्दी अनुवाद उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया है। तभी संभव है जब अनुवादक को अंग्रेजी के present perfect tense और हिन्दी के समाप्ति-सूचक क्रिया-रूप के बीच के संरचनात्मक अंतर की स्पष्ट समझ हो। यहाँ have finished का सीधा अनुवाद पूरा किया है नहीं, बल्कि कर लिया है अधिक स्वाभाविक और लक्ष्य भाषा की प्रणाली के अनुरूप है।

सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर (Socio-cultural Level): प्रत्येक भाषा अपनी संस्कृति से पोषित होती है। इसलिए अनुवादक को यह जानना आवश्यक है कि मूल भाषा में प्रयुक्त किसी शब्द या कथ्य का सांस्कृतिक अर्थ क्या है और लक्ष्य भाषा में उसे किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए ताकि वही भाव, वही अर्थ-भार और वही प्रभाव उत्पन्न हो सके।

अंतरभाषिक अनुवाद में यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि दो भाषाओं के बीच पूर्ण समानता संभव नहीं होती। इसलिए अनुवादक को अर्थ-संरक्षण (meaning preservation), शैली-संरक्षण (style retention) और प्रसंग-संरक्षण (contextual fidelity)- इन तीनों को संतुलित करते हुए अनुवाद करना होता है। यही अनुवादक की रचनात्मक योग्यता का प्रमाण है।

इस श्रेणी के अनुवाद में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ आती हैं-

- शब्दों के बहुआयामी अर्थ

- लोक-प्रयोगों और मुहावरों का समतुल्य चयन
- सांस्कृतिक संकेतों का रूपांतरण
- भाव और लहजे की अदला-बदली
- व्याकरण और लय में भिन्नताओं का सामंजस्य

उदाहरण के लिए, हिंदी का बोलचाल वाला वाक्य दिल पे मत ले यार यदि शब्दश: अंग्रेजी में अनूदित किया जाए, तो उसका रूप Don't take on your heart, friend जैसा अव्यवस्थित और अर्थहीन प्रतीत होगा। इसके विपरीत, अंग्रेजी में इसका सांस्कृतिक और भावगत रूप से सटीक तथा प्रामाणिक अनुवाद Donot take it to heart, budd अधिक उपयुक्त माना जाएगा।

यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि अंतरभाषिक अनुवाद केवल शब्द-प्रतिस्थापन पर आधारित नहीं होता, बल्कि इसमें रचनात्मकता, सांस्कृतिक अनुकूलन, मुहावरों की समझ और प्रसंगानुकूल अर्थ-संप्रेषण की विशिष्ट क्षमता आवश्यक होती है। यहीं से यह सिद्ध होता है कि अनुवादक को दोनों भाषाओं की संरचना के साथ-साथ उनके सांस्कृतिक मुहावरों, सामाजिक व्यवहारों और संदर्भगत संवेदनशीलताओं का भी गहरा ज्ञान होना चाहिए। समकालीन युग में अंतरभाषिक अनुवाद ज्ञान-विस्तार, शिक्षा, प्रशासन, कूटनीति, मीडिया, वैद्रिक संचार और साहित्यिक संवाद का अनिवार्य साधन बन चुका है। यह विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच सेतु का कार्य करता है और विद्र को आपस में जोड़ता है। अत: अंतरभाषिक अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण न होकर सांस्कृतिक, बौद्धिक और भावनात्मक अंतरण का महत्वपूर्ण माध्यम है।

(ग) अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद

भाषा एक प्रतीकात्मक व्यवस्था है। किसी भाषा के कथ्य को किसी अन्य प्रतीक व्यवस्था में प्रस्तुत करना ही अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद कहलाता है।

उदाहरण-

अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का स्वरूप उस स्थिति में स्पष्ट रूप से उभरकर आता है जब किसी भाषिक कथ्य को गैर-भाषिक माध्यमों- जैसे दृश्य-कला, संगीत, नृत्य या चलचित्रके माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है।

उदाहरणस्वरूप-

- **गीत को चित्रों में अभिव्यक्त करना**- जब किसी गीत की भाव-गहनता, कथा-धारा या विचार को शब्दों के बजाय दृश्य-रूपों, रंगों और आकृतियों के माध्यम से चित्रकला में व्यक्त किया जाता है, तो यह प्रतीक-व्यवस्था का परिवर्तन है। यहाँ ध्वन्यात्मक और भाषिक संकेतों को दृश्य प्रतीकों में रूपांतरित किया जाता है।
- **कविता को नृत्य-शैली में प्रस्तुत करना**- किसी कविता में निहित भाव, लय, बिंब और प्रतीकों को शारीरिक मुद्राओं, ताल, लय और अभिनेय भंगिमाओं के माध्यम से नृत्य में पुनर्सृजित करना अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें शब्दों की संवेदना को शारीरिक गतियों और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से अर्थ दिया जाता है।
- **कहानी का फिल्म-रूपांतरण**- जब किसी कहानी, उपन्यास या लघुकथा को चलचित्र की भाषा-अभिनय, दृश्य-निर्माण, संवाद, संगीत और फोटोग्राफीके सहारे प्रस्तुत किया जाता है, तब यह प्रतीकव्यवस्था का व्यापक रूपांतरण होता है। यहाँ कथ्य का रूपांतरण केवल शब्दों से दृश्य-श्रव्य माध्यम में नहीं होता, बल्कि भाव, वातावरण और अनुभव को भी नए माध्यम में अनुकूलित किया जाता है।

  अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद में ध्यान रखने की बात यह है कि दो प्रतीक व्यवस्थाओं के बीच इस प्रकार के अनुवाद में एक भाषिक प्रतीति होता है और दूसरा भावोत्पादक। चित्रकला, संगीत, नृत्य सब इसी कारण से अभिव्यक्ति माने जाते हैं।

उदाहरण-

यदि किसी कहानी में आँधी आती है तो मन में भय की लहर दौड़ जाती है जैसा वाक्य प्रयुक्त हो, और उसके

मंचीय रूपांतरण (नाटक) में इस कथ्य को तेज हवा की ध्वनि-प्रभाव, मद्धिम पड़ती रोशनी, तथा कलाकारों की आकस्मिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाए, तो यह भी अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाएगा।

यहाँ भाषिक कथन को शब्दों में कहने के बजाय ध्वनि, प्रकाश कीगति और दृश्य संकेतों के द्वारा व्यक्त किया गया है, जो एक प्रतीक व्यवस्था से दूसरी प्रतीक व्यवस्था में अर्थ के रूपांतरण को दर्शाता है।

1.8.2 अनुवाद का सीमित संदर्भ

अनुवाद के व्यापक परिप्रेक्ष्य में जहाँ प्रतीकांतरण और संकेतांतरण जैसी विविध प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं, वहीं सीमित संदर्भ में अनुवाद का आशय मुख्यत: दो भाषाओं के बीच होने वाले अर्थ-संप्रेषण से लगाया जाता है। रोमन याकोब्सन द्वारा प्रतिपादित वर्गीकरण में इसे अंतरभाषिक अनुवाद (Inter-lingual Translation) कहा गया है, जिसे वास्तविक अनुवाद (Translation Proper) की संज्ञा भी दी जाती है।

सीमित संदर्भ में अनुवादक का कार्य केवल किसी भाषा के शब्दों को किसी अन्य भाषा में प्रतिस्थापित करना नहीं होता, बल्कि वह मूल कथ्य का अर्थ, भाव, उद्देश्य और उसकी वैचारिक संवेदना को लक्ष्य भाषा में सुव्यवस्थित, स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से पुनर्सृजित करता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक को भाषिक संरचना, मुहावरे, वाक्य-विन्यास, सांस्कृतिक संकेतों तथा प्रसंगगत अर्थों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना पड़ता है। उद्देश्य केवल अनूदित सामग्री का निर्माण नहीं, बल्कि लक्ष्य भाषा में वही भावनात्मक, बौद्धिक और सांस्कृतिक प्रभाव उत्पन्न करना है, जो मूल भाषा के पाठ में निहित था।

सीमित संदर्भ में अनुवादक को यह भी समझना होता है कि दो भाषाओं की संरचनाएँ- ध्वनि-तंत्र, व्याकरण, लय, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। अत: किसी शब्द या वाक्य को ज्यों का त्यों दूसरी भाषा में उतारना संभव नहीं है। इसीलिए समतुल्यता (equivalence) एक केंद्रीय सिद्धांत बन जाता है, जिसके आधार पर अनुवादक लक्ष्य भाषा में वह रूप चुनता है जो अर्थ को सर्वाधिक सटीकता से प्रेषित कर सके।

कुछ स्थितियों में प्रत्यक्ष समतुल्य मिल जाना आसान होता है, जबकि अनेक बार भाषाओं की सांस्कृतिक संरचना भिन्न होने के कारण अनुवादक को व्याख्या (explanation), अर्थ-विस्तार (amplification) या सांस्कृतिक पुनर्प्रस्तुति (cultural substitution) का सहारा लेना पड़ता है। यह कार्य सरल नहीं, बल्कि विश्लेषणात्मक और रचनात्मक कौशल की माँग करता है।

सीमित संदर्भ के अंतर्गत पादभर्मी (literal) तथा प्रभावभर्मी (sense-for-sense) दोनों प्रकार के अनुवाद शामिल होते हैं।

पादभर्मी अनुवाद शब्द प्रति शब्द समानता पर आधारित होता है, परंतु साहित्यिक या सृजनात्मक पाठ में यह प्राय: असफल हो जाता है क्योंकि संरचना, छंद, लय और भावानुभूति का स्थानांतरण अक्षरश: संभव नहीं होता। इसके विपरीत, प्रभावभर्मी अनुवाद पाठक पर मूल रचना के समान प्रभाव उत्पन्न करने का प्रयास करता है। इसमें संरचना का अनुकूलन, शैलीगत परिवर्तन और व्यंजना का पुनर्सृजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सीमित संदर्भ में अनुवाद मूलत: भाषिक अंतरण की सटीकता, अर्थ की संरक्षा, सांस्कृतिक संप्रेषण, तथा प्रभाव-निर्माण की प्रक्रिया है। यह अनुवाद का वह स्वरूप है जो व्यावहारिक, शिक्षणात्मक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक तथा साहित्यिक सभी क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रयुक्त होता है।

उदाहरण

- Silent treatment → चुप्पी साध लेना / मौन दंड देना
- Bureaucratic hurdles → नौकरशाही की रुकावटें
- Illegal earnings → अवैध कमाई
- Harmless deception → निरापद छल / बिना नुकसान का झूठ

- Fierce competition → कड़ी प्रतिस्पर्धा / कटु प्रतिस्पर्धा
- False sympathy → झूठी सहानुभूति
- Face-saving excuse → खिसियानी प्रतिक्रिया / खुद को दिलासा देना
- Tit for tat → जैसे को तैसा
- Never lose heart → हिम्मत मत हारो / आशा मत छोड़ो
- To mislead someone → किसी को गुमराह करना

(ख) प्रभावभर्मी अनुवाद :

प्रभावभर्मी अनुवाद वास्तव में पाठक पर प्रभाव को केन्द्र में रखकर किया गया अनुवाद होता है। इसमें अनुवादक इस दृष्टि से अनुवाद करता है कि अनुवादित पाठ भी पाठक पर वही प्रभाव उत्पन्न करे जो मूल पाठ के पाठक पर पड़ता है। इसके लिए वह मूल भाषा पाठ की संरचना और अनुवादक के अपेक्षा मूल के उस प्रभाव को पकड़ने और उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है जो लक्ष्य भाषा के पाठक पर पढ़ा हो। अनुवादक, स्रोत भाषा पाठ के प्रभाव को पकड़कर अनुवादित संरचना में कोई भी छेड़छाड़ करने का श्रम-साध्य प्रयास है। यह प्रकार अनुवाद के लिए अनुवादित पाठ के अर्थ-मूल्यांकन को कोडित होता है। इसमें अनुवादक की संरचना, वाक्य विन्यास, शब्दावली और प्रसंग की सूक्ष्मताओं और प्रयोगात्मक अर्थ (Pragmatics) की भी अनुवादित पाठ में व्यंजक होता है। इसमें यह ध्यान रखा जाता है कि अनुवादित पाठ 'समान प्रभाव' वाला हो। जैसे अनुवाद न लगे; मूल कथ्य की सम्पूर्णता और उसकी संरचना भी अनुवाद विशेष तौर पर व्यक्त हो।

यहाँ यह उल्लेख करना भी उचित न होगा कि प्रभावभर्मी आयाम वाले अनुवाद में अनुवादक अनुवादित रचना में मूल पाठ के सम्प्रेषण अर्थ को खुद अपने पाठ के बाहर किसी को छूट होती है। वह मूल में अपनी ओर से जोड़ने-घटाने का कार्य कर पूरी रचना प्रस्तुत करता देती है। सृजनात्मक साहित्य स्वाभाविक स्थिति में प्रभावभर्मी अनुवाद का ही आश्रय लेता है। सूचनात्मक अनुवाद में ज्ञानात्मक एवं सूचना प्रदत्त साहित्य के अनुवाद में प्रभावभर्मी अनुवाद कारगर नहीं होता।

अपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 6. प्रश्न: समकालीन अनुवादकों के विचारों के अनुसार अनुवाद को किस तरह देखा जाता है?

प्रश्न 7. 'अनुवाद' और 'रूपांतरण' में मुख्य व्यावहारिक अंतर क्या है?

प्रश्न 8. रोमन याकोब्सन के अनुसार अनुवाद के कौन-से तीन प्रकार हैं?

प्रश्न 9. यूजीन नाइडा की अनुवाद-दृष्टि की प्रमुख वृद्धि/विशेषता क्या है?

प्रश्न 10. अनुवाद की सफलता किन तीन तत्वों के संतुलन पर निर्भर करती है?

21.9 सारांश

- अनुवाद मानवीय संप्रेषण का एक अनिवार्य और बहुआयामी रूप है, जो केवल भाषा-परिवर्तन नहीं, बल्कि अर्थ, भाव, संदर्भ और संस्कृति के व्यापक स्थानांतरण की सृजनात्मक प्रक्रिया है। 'अनुवाद' की व्युत्पत्ति संस्कृत की धातु 'वद्' और उपसर्ग 'अनु' से हुई है, जिसका अर्थ है- कहे हुए का अनुसरण करते हुए पुन: कथन करना, जबकि अंग्रेजी 'Translation' लैटिन शब्द Transferre से विकसित हुआ है, जिसका आशय एक ओर से दूसरी ओर अर्थ का ले जाना है। भारतीय परंपरा में अनुवाद 'अनुवचन' और 'अनुवाक' के रूप में मौखिक पुनरुक्ति से जुड़ा रहा। आधुनिक अनुवाद अध्ययनों में इसे भाषा, अर्थ और संदर्भ के त्रिकोणीय संयोजन के रूप में समझा गया है। यूजीन नाइडा ने अनुवाद को निकटतम प्राकृतिक समतुल्य की प्रक्रिया बताते हुए अर्थ को प्राथमिक और शैली को द्वितीय स्थान दिया। कैटफर्ड ने इसे भाषिक प्रतिस्थापन माना, जबकि न्यूमार्क ने इसे शिल्प और अर्थ-संचरण का संतुलन बताया। भारतीय विद्वान- आचार्य शुक्ल, द्विवेदी, नामवर

सिंह, नगेंद्र, भोलानाथ तिवारी तथा के.के. गोस्वामी- अनुवाद को भावानुवाद, सांस्कृतिक उपयुक्तता, संरचनात्मक पुनर्गठन और अर्थ-समतुल्यता पर आधारित रचनात्मक कार्य मानते हैं। अनुवाद का व्यापक अर्थ केवल भाषाई अंतरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें प्रतीकों और माध्यमों के बीच रूपांतरण भी शामिल है- जैसे कहानी का नाटक, कविता का नृत्य या गीत का चित्रात्मक प्रस्तुतीकरण, जिसे रोमन याकोब्सन ''अंतर प्रतीकात्मक अनुवाद'' कहते हैं। उनके अनुसार अनुवाद तीन प्रकार का होता है- अंत:भाषिक (एक ही भाषा में पुनर्प्रस्तुति), अंतरभाषिक (दो भाषाओं के बीच रूपांतरण) और अंतर प्रतीकात्मक (भाषा से अन्य माध्यमों में रूपांतरण)। अनुवाद का सीमित संदर्भ दो भाषाओं के मध्य अर्थ-संचरण तक केंद्रित है, जिसमें समतुल्यता,सांस्कृतिक अनुकूलन और प्रसंग-निष्ठता महत्वपूर्ण होते हैं। अनुवाद की प्रक्रिया में भाषा उसकी भौतिक संरचना प्रदान करती है, अर्थ उसकी आत्मा है, और संदर्भ उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक विद्रसनीयता का आधार बनता है। सफल अनुवाद वही है जो मूल पाठ की संवेदना, उद्देश्य और प्रभाव को लक्ष्यभाषा में इस प्रकार प्रस्तुत कर सके कि पाठक को अनूदित पाठ में मूल रचना की अनुभूति मिले। इस प्रकार अनुवाद केवल भाषिक क्रिया नहीं, बल्कि दो भाषाओं, संस्कृतियों और विचार-परंपराओं के बीच सेतु का कार्य करते हुए ज्ञान, अनुभव और सांस्कृतिक संवाद को व्यापक बनाता है।

K1.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर अनुवाद शब्द संस्कृत धातु वद् तथा उपसर्ग अनु से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है- कथन का अनुसरण करते हुए उसे नई भाषा में पुन: प्रस्तुत करना।

प्रश्न 2 का उत्तर अनुवाद में 'स्थानांतरण' का अर्थ किसी भाषा के अर्थ, भाव और सांस्कृतिक संकेतों को दूसरी भाषा में उपयुक्त रूप में पहुँचाना है।

प्रश्न 3 का उत्तर यूजीन नाइडा की दृष्टि की विशेषता 'डायनेमिक इक्विवैलेंस' है, जहाँ अनुवाद का उद्देश्य मूल जैसा ही प्रभाव लक्षित पाठक पर उत्पन्न करना है।

प्रश्न 4 का उत्तर भारतीय विद्वान अनुवाद को अर्थ-संप्रेषण, संरचनात्मक पुनर्गठन और सांस्कृतिक उपयुक्तता के संतुलित संयोजन के रूप में समझते हैं।

प्रश्न 5 का उत्तर सिसरो अर्थकेलिएअर्थ अनुवाद का समर्थन करते हैं, जबकि होरेस मूल कृति की आत्मा और भाव को सुरक्षित रखने पर अधिक बल देते हैं।

प्रश्न 6 का उत्तर अनुवाद को रचनात्मक सह-यात्रा, सांस्कृतिक सेतु और बहुभाषिक चिंतन के रूप में देखा जाता है जो मूल भाव को नए संदर्भ में जीवंत बनाता है।

प्रश्न 7 का उत्तर अनुवाद मुख्यत: भाषा-स्तर का अंतरण है जबकि रूपांतरण में भाषा के साथ-साथ माध्यम, विधा और सांस्कृतिक ढाँचे का भी परिवर्तन शामिल होता है।

प्रश्न 8 का उत्तर उन्होंने अंत:भाषिक (intra-lingual), अंतरभाषिक (inter-lingual) और अंतरप्रतीकात्मक (inter-semiotic) अनुवाद बताये हैं।

प्रश्न 9 का उत्तर नाइडा ने डायनेमिक इक्विवैलेंस पर जोर दिया-यानी लक्षित भाषी पर वही प्रभाव उत्पन्न करना जो स्रोतभाषी पर होता है।

प्रश्न 10 का उत्तर अनुवाद की सफलता भाषा (form), अर्थ (meaning) और संदर्भ (context) के त्रैतीय संतुलन पर निर्भर करती है।

O1.11 अधिक जानकारी के लिए पढ़ें

- Nida, e. A. (1964). Toward a science of translating. Leiden: Brill.
- catford, J. c. (1965). A linguistic theory of translation. Oxford: Oxford University Press.
- Newmark, P. (1988). A textbook of translation. New York: Prentice Hall.
- Jakobson, R. (1959). On linguistic aspects of translation. In R. Brower (ed.), On translation (L.L. 232-239). Harvard University Press.
- Venuti, L. (1995). The translators invisibility: A history of translation. London: Routledge.
- शुक्ल, आनन्दकुमार. (2015). आचार्य रामचंद्रशुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी-लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद- सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली-राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद-सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद-लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीशकुमार. (2014). ई-अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली-वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीशकुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली- ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान-सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली-किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद- किताब महल।

M1.12अभ्यास प्रश्न

(क)संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. अनुवाद' शब्द किस संस्कृत धातु से निर्मित है?
2. अंग्रेजी शब्द 'Translation' की व्युत्पत्ति किन लैटिन शब्दों से हुई है?
3. अनुवाद के संदर्भ में 'स्थानांतरण' का क्या मुख्य भाव निहित है?
4. यूजीन नाइडा किस प्रकार की समतुल्यता पर विशेष बल देते हैं?
5. जे.सी. कैटफर्ड अनुवाद को किस प्रकार की प्रक्रिया मानते हैं?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. भारतीय परंपरा में 'अनुवचन' शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में होता था?
2. 'अनुवाद' शब्द की उत्पत्ति और उससे जुड़े विभिन्न पारंपरिक पर्यायों पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
3. अनुवाद' और 'रूपांतरण' के बीच अंतर को उपयुक्त उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
4. अनुवाद को संप्रेषण प्रक्रिया के रूप में समझते हुए इसकी बहुस्तरीय संरचना का वर्णन कीजिए।
5. अनुवाद के व्यापक और सीमित संदर्भों में अंतर को स्पष्ट कीजिए तथा उदाहरण सहित समझाइए।
6. अंतरभाषिक अनुवाद में आने वाली भाषिक और सांस्कृतिक चुनौतियों की विवेचना कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 2 अनुवाद का महत्व एवं अनुवादक के गुण

2.1 उद्देश्य
2.2 प्रस्तावना
2.3 अनुवाद का महत्व
    2.3.1 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व
    2.3.2 विश्व साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में अनुवाद का महत्व
    2.3.3 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व
    2.3.4 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व
    2.3.5 सांस्कृतिक समन्वय और विकास में अनुवाद का महत्व
    2.3.6 प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद का महत्व
    2.3.7 पर्यटन क्षेत्र में अनुवाद का महत्व
    2.3.8जनसंचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व
    2.3.9 व्यवसाय और रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व
2.4 अनुवादक के गुण
2.5 सारांश
2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
2.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें
2.8 अभ्यास प्रश्न

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- अनुवाद के महत्वको समझेंगे तथा विभिन्न क्षेत्रों में उसकी आवश्यकता से परिचित होंगे।
- शिक्षा, विश्व साहित्य और भारतीय साहित्य के अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद की भूमिका का वर्णन करेंगे।
- तुलनात्मक साहित्य तथा सांस्कृतिक समन्वय और विकासमें अनुवाद के योगदान को स्पष्ट करेंगे।
- प्रशासन, पर्यटन, जनसंचार और व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में अनुवाद के उपयोग की पहचान होगा।
- एक अच्छे अनुवादक के आवश्यक गुणोंको जानेंगे।

2.2 प्रस्तावना

अनुवाद आज के वैश्विक और बहुभाषी समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली प्रक्रिया है। विद्व के विभिन्न देशों, भाषाओं और संस्कृतियों के बीच विचारों, ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान मुख्यत: अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पाता है। प्रत्येक भाषा अपने समाज की सांस्कृतिक परंपराओं, साहित्यिक धरोहरों और ज्ञान-विज्ञान को अपने भीतर संजोए रहती है। जब इन ज्ञान-संपदाओं को अन्य भाषाओं के पाठकों तक पहुँचाने की आवश्यकता होती है, तब अनुवाद एक सशक्त माध्यम के रूप में सामने आता है। अनुवाद केवल भाषाई परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विभिन्न संस्कृतियों, समाजों और विचारधाराओं को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण सेतु है। भारतीय संदर्भ में अनुवाद का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि भारत बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। यहाँ अनेक भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं, जिनमें विभिन्न प्रकार का साहित्य, ज्ञान और अनुभव संचित है। इन भाषाओं के बीच पारस्परिक समझ और सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय साहित्य की समृद्ध

परंपरा को देश के विभिन्न भाषाई समुदायों तक पहुँचाने में अनुवाद का विशेष योगदान रहा है, विश्व साहित्य की महान कृतियाँ भी अनुवाद के माध्यम से भारतीय पाठकों तक पहुँची हैं, जिससे ज्ञान और साहित्य की व्यापक समझ विकसित हुई है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुवाद का विशेष महत्व है। आज विभिन्न विषयों का ज्ञान अलग-अलग भाषाओं में उपलब्ध है। अनुवाद के माध्यम से वैज्ञानिक, तकनीकी, साहित्यिक और सामाजिक विषयों से संबंधित सामग्री को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है, जिससे अधिक से अधिक लोग ज्ञान अर्जित कर सकें। शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और ज्ञान के प्रसार में अनुवाद एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। विश्व साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में भी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न देशों की साहित्यिक परंपराओं, विचारधाराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित होते हैं। भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है। भारत की विविध भाषाओं में रचित उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों को जब अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित किया जाता है, तब वे व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचती हैं। इससे न केवल साहित्य का प्रसार होता है, बल्कि विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद भी स्थापित होता है। तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद एक अनिवार्य उपकरण के रूप में कार्य करता है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन तभी संभव है जब उन कृतियों का अनुवाद उपलब्ध हो।

अनुवाद सांस्कृतिक समन्वय और विकास की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विभिन्न संस्कृतियों के विचार, परंपराएँ और जीवन-मूल्य जब एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचते हैं, तो समाज में व्यापक दृष्टिकोण और सहिष्णुता का विकास होता है। अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित कर उन्हें एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य करता है।

अनुवाद का कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण और उत्तरदायित्वपूर्ण होता है। एक अनुवादक को केवल दो भाषाओं का ज्ञान ही नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे दोनों भाषाओं की संस्कृति, संदर्भ और अभिव्यक्ति-शैली का भी गहरा ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए एक सफल अनुवादक मंस अनेक गुणों का होना आवश्यक है, जैसे-भाषा पर अधिकार, विषय का ज्ञान, संवेदनशीलता, सृजनात्मकता तथा सटीकता। इसके साथ ही अनुवादक का यह दायित्व भी होता है कि वह मूल पाठ के अर्थ, भाव और उद्देश्य को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए उसे लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करे।

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के महत्व को विभिन्न क्षेत्रों जैसे शिक्षा, विश्व साहित्य, भारतीय साहित्य, तुलनात्मक साहित्य, सांस्कृतिक समन्वय आदि के संदर्भ में समझाया गया है। साथ ही एक अच्छे अनुवादक के आवश्यक गुणों पर भी विस्तार से चर्चा की जाएगी, जिससे अनुवाद की प्रक्रिया और उसकी उपयोगिता को समग्र रूप से समझा जा सके।

2.3 अनुवाद का महत्व

अनुवाद के महत्व और उसकी प्रासंगिकता की चर्चा करते समय यह आवश्यक हो जाता है कि इस विषय का गहराई से अध्ययन किया जाए। वर्तमान समय में अनुवाद केवल दो भाषाओं और दो संस्कृतियों के बीच विचारों के आदान-प्रदान का साधन मात्र नहीं रह गया है, बल्कि यह ज्ञान, संस्कृति, समाज और इतिहास को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। आज अनुवाद के माध्यम से विभिन्न समाजों, संस्कृतियों, परंपराओं और विचारधाराओं के बीच संवाद स्थापित किया जा रहा है। अनुवाद वैद्रिक स्तर पर भाषाई और सांस्कृतिक दूरी को कम करने का कार्य करता है।

आधुनिक समय में अनुवाद अध्ययन का क्षेत्र भी अत्यंत विस्तृत हो गया है। पहले जहाँ अनुवाद को केवल भाषाई परिवर्तन की एक साधारण प्रक्रिया माना जाता था, वहीं आज इसे एक स्वतंत्र अध्ययन-विषय के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। अनुवाद के माध्यम से केवल साहित्यिक कृतियों का ही नहीं, बल्कि इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, विज्ञान और संस्कृति से संबंधित ज्ञान का भी व्यापक प्रसार हो रहा है। इसी कारण अनुवाद अध्ययन (Translation Studies) आज एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक अनुशासन के रूप में विकसित हो चुका है। आज अनुवाद के माध्यम से विभिन्न शोषित समाजों, जातियों, उपनिवेशवाद तथा समाज के हाशिए पर स्थित वर्गों के इतिहास और अनुभवों का भी अध्ययन किया जा रहा है। अनेक भाषाओं में उपलब्ध साहित्य और ऐतिहासिक दस्तावेज़ जब अनूदित होकर अन्य

भाषाओं में पहुँचते हैं, तब उन समाजों की वास्तविक स्थिति, संघर्ष और सांस्कृतिक पहचान के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त होती है। अनुवाद केवल ज्ञान के प्रसार का साधन ही नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और समानता की स्थापना में भी सहायक सिद्ध होता है।

अनुवाद का महत्व शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यंत व्यापक है। शिक्षा के माध्यम से ज्ञान का प्रसार तभी संभव हो सकता है जब विभिन्न विषयों की सामग्री अधिक से अधिक भाषाओं में उपलब्ध हो। अनुवाद के माध्यम से विज्ञान, तकनीक, साहित्य, इतिहास और समाजशास्त्र जैसे विषयों का ज्ञान विभिन्न भाषाओं में पहुँचाया जाता है। इससे विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं और शिक्षा अधिक प्रभावी तथा सुगम बनती है। अनुवाद शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और ज्ञान के व्यापक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

विश्व साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में भी अनुवाद का विशेष महत्व है। विद्र की विभिन्न भाषाओं में रचित महान साहित्यिक कृतियाँ जब अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषाओं में उपलब्ध होती हैं, तब पाठकों को विभिन्न देशों की साहित्यिक परंपराओं, विचारधाराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने का अवसर मिलता है। इसी प्रकार भारतीय साहित्य के अध्ययन में भी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक कृतियों को एक-दूसरे तक पहुँचाने में अनुवाद का विशेष योगदान रहा है।

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद एक अनिवार्य साधन के रूप में कार्य करता है। विभिन्न भाषाओं के साहित्य की तुलना तभी संभव है जब उन कृतियों का अनुवाद उपलब्ध हो। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न साहित्यिक परंपराओं, शैलियों और विषयों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। इससे साहित्य की व्यापक समझ विकसित होती है और विभिन्न संस्कृतियों के बीच साहित्यिक संवाद स्थापित होता है।

सांस्कृतिक समन्वय और विकास की दृष्टि से भी अनुवाद अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के विचार, मान्यताएँ, जीवन-मूल्य और परंपराएँ एक-दूसरे तक पहुँचती हैं। इससे समाज में व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है और विभिन्न संस्कृतियों के बीच पारस्परिक समझ तथा सहयोग की भावना को बल मिलता है। अनुवाद सांस्कृतिक एकता और वैद्रिक समझ को विकसित करने का एक महत्वपूर्ण साधन है।स्पष्ट है कि आधुनिक युग में अनुवाद का महत्व बहुआयामी हो गया है। यह केवल भाषाई रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, शिक्षा, समाज और संस्कृति के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला माध्यम है। इसलिए अनुवाद के अध्ययन और उसके विभिन्न आयामों को समझना आज के समय की एक आवश्यक आवश्यकता बन गई है।

2.3.1 शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व अत्यंत स्पष्ट और व्यापक है। किसी भी देश के लोगों को अन्य देशों के ज्ञान-विज्ञान, शोध तथा बौद्धिक उपलब्धियों से परिचित कराने में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्र के विभिन्न भागों में उत्पन्न ज्ञान और विचार जब दूसरी भाषाओं में अनूदित होते हैं, तभी वे व्यापक समाज तक पहुँच पाते हैं। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न देशों के वैज्ञानिक, साहित्यिक और शैक्षणिक ज्ञान का आदान-प्रदान संभव हो पाता है। इसके अतिरिक्त, अनुवाद प्राचीन ज्ञान और साहित्य तक पहुँचने का भी एक प्रभावी माध्यम है। अनेक प्राचीन ग्रंथ, विचार और शोध ऐसे हैं जो उन भाषाओं में उपलब्ध हैं जिनका आज सामान्य प्रयोग कम हो गया है। ऐसे में अनुवाद इन महत्वपूर्ण स्रोतों तक पहुँचने का मार्ग प्रशस्त करता है। प्राचीन लेखकों और विचारकों की रचनाएँ आज हम मुख्यत: अनुवाद के माध्यम से ही पढ़ और समझ पाते हैं। अनुवाद ज्ञान की परंपरा को सुरक्षित रखने और उसे नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य करता है।

शिक्षा के माध्यम की दृष्टि से भी अनुवाद का महत्व अत्यंत व्यापक है, विशेष रूप से उन देशों में जहाँ शिक्षा एक से अधिक भाषाओं में दी जाती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में यह आवश्यकता और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। यहाँ विभिन्न प्रादेशिक भाषाएँ शिक्षा का माध्यम हैं। हिन्दी और अंग्रेज़ी के अतिरिक्त उड़िया, बांग्ला, असमिया, तमिल, तेलुगु आदि अनेक भाषाओं में विद्यार्थी विद्यालय स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक अध्ययन करते हैं। ऐसी स्थिति

में पाठ्यसामग्री को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराने के लिए अनुवाद की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है। अनुवाद के माध्यम से पाठ्यसामग्री का स्तर समान बनाए रखना संभव होता है तथा शैक्षणिक सामग्री को अपेक्षाकृत कम समय में विभिन्न भाषाओं में तैयार किया जा सकता है।भाषा-शिक्षण की प्रक्रिया में भी अनुवाद का विशेष महत्व है। जब कोई विद्यार्थी नई भाषा सीखता है, तो उसे अपनी मातृभाषा के साथ तुलना करते हुए उस भाषा को समझने में सुविधा होती है। इस प्रक्रिया में अनुवाद का उपयोग एक प्रभावी शिक्षण-विधि के रूप में किया जाता है। विद्यार्थी अपनी मातृभाषा और नई भाषा के बीच अनुवाद के अभ्यास के माध्यम से दोनों भाषाओं की संरचना, व्याकरण और प्रयोग को अधिक स्पष्ट रूप से समझ पाता है।लगातार अभ्यास के द्वारा विद्यार्थी धीरे-धीरे उस नई भाषा में दक्षता प्राप्त कर लेता है और उसे स्वतंत्र रूप से बोलने तथा लिखने में सक्षम हो जाता है। अनुवाद न केवल भाषा-अधिगम को सरल बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों में भाषायी दक्षता और अभिव्यक्ति-क्षमता के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए कहा जा सकता है कि शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान के प्रसार, भाषा-अधिगम और पाठ्यसामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करने में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है।

2.3.2 विश्व साहित्य के अध्ययन और अध्यापन में अनुवाद का महत्व

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद भारतीय बुद्धिजीवियों का संपर्क पश्चिमी विचारधारा और साहित्य से व्यापक रूप में हुआ। इससे पहले भी सूफी संतों और विद्वानों ने अरब देशों की दार्शनिक अभिव्यक्तियों को भारतीय साहित्य से जोड़ने का प्रयास किया था, किंतु अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण और विद्व साहित्य के प्रति व्यापक रुचि का विकास मुख्यत: यूरोपीय शक्तियों के आगमन के बाद ही संभव हुआ। प्रारंभ में ईसाई धर्म के प्रचार के उद्देश्य से तथा बाद में शैक्षिक और प्रशासनिक कार्यों की आवश्यकता के कारण यूरोपीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में अनुवाद का कार्य आरंभ हुआ। धीरे-धीरे यह विचार भी प्रचलित होने लगा कि जिस भारतीय भाषा में कुशल अनुवादकों की कमी होगी, वहाँ नए और मौलिक ग्रंथों का विकास भी सीमित रह जाएगा। परिणामस्वरूप उत्तम और मानक अनुवादों को विशेष महत्व दिया जाने लगा। इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप हिन्दी सहित अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं में अंग्रेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में संचित ज्ञान, साहित्य और कला का अनुवाद होने लगा।

उन्नीसवीं शताब्दी में इस दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए गए। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने सन् 1880 में विलियम शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक Merchant of Venice का हिन्दी अनुवाद 'दुर्लभ बंधु' शीर्षक से किया। इसी प्रकार श्रीधर पाठक ने सन् 1886 में ओलिवर गोल्डस्मिथ की काव्य-कृति The Hermit का हिन्दी अनुवाद 'एकांतवासी योगी' के नाम से प्रस्तुत किया। इन अनुवादों ने भारतीय पाठकों को विश्व साहित्य की महान कृतियों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पिछले लगभग डेढ़ सौ वर्षों के दौरान अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में किए गए अनुवादों के कारण भारतीय लेखकों, पाठकों और अध्येताओं का संबंध अंतरराष्ट्रीय साहित्य से अधिक सुदृढ़ हुआ है। वास्तव में यह अनुवाद का ही प्रभाव है कि विद्व साहित्य का अध्ययन और अध्यापन भारतीय भाषाओं में संभव हो सका। अनुवाद के माध्यम से ही भारतीय पाठक टॉल्स्टॉय के उपन्यासों, शेक्सपियर के नाटकों और विद्व के अनेक महान साहित्यकारों की कृतियों से परिचित हो पाए हैं।

अल्बेयर कामू, जाँ-पॉल सार्त्र और सैमुएल बेकेट जैसे विचारकों तथा पाब्लो नेरूदा और नादिन गॉर्डिमर जैसे साहित्यकारों की रचनाएँ भी भारतीय पाठकों तक अनुवाद के माध्यम से पहुँची हैं। इन अनुवादों ने न केवल पाठकों की रुचि को अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक अनुभवों से समृद्ध किया है, बल्कि अध्ययन और अनुसंधान के नए आयाम भी प्रस्तुत किए हैं। विद्व साहित्य का अध्ययन हमें अतीत और वर्तमान के वैद्विक अनुभवों से परिचित कराता है। संसार की विभिन्न भाषाओं में विविध विधाओं में रचित साहित्य का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों और अध्येताओं के लिए अनुवाद अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। वास्तव में यह कहना उचित होगा कि अनुवाद के बिना विद्व साहित्य का अध्ययन और अध्यापन संभव ही नहीं है।

अनुवाद के कारण ही विश्व साहित्य का समग्र स्वरूप विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध हो पाया है। उदाहरण के लिए, संस्कृत नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् का अनुवाद पढ़कर जर्मन कवि गोएथे अत्यंत प्रभावित हुए थे। अनुवाद के

माध्यम से ही आर्थर शोपेनहावर और टी. एस. इलियट जैसे विद्वानों के सामने भारतीय उपनिषदों का ज्ञान पहुँचा। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद ने न केवल साहित्यिक आदान-प्रदान को संभव बनाया है, बल्कि विश्व के विभिन्न सांस्कृतिक और बौद्धिक परंपराओं के बीच सेतु का कार्य भी किया है।अत: यह कहा जा सकता है कि अनुवाद ने विद्व साहित्य के अध्ययन और अध्यापन को सरल, व्यापक और समृद्ध बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2.3.3 भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

भारतीय साहित्य का इतिहास विश्व की प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक परंपराओं में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारत की अनेक भाषाओं और बोलियों में चिंतन और सृजन की एक लंबी और समृद्ध परंपरा विकसित होती रही है। भारत जैसे बहुभाषी देश में विभिन्न भाषाओं में साहित्य का विशाल भंडार उपलब्ध है। किंतु भारतीय साहित्य का अर्थ केवल अलग-अलग भाषाओं में लिखी गई रचनाओं का संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि यह भारत की बहुआयामी सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक अनुभवों का समन्वित रूप भी है। आज साहित्य के इतिहास को केवल किसी एक भाषा जैसे हिन्दी, बांग्ला, मराठी या तेलुगु की साहित्यिक उपलब्धियों के आधार पर पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता। भारतीय साहित्य की वास्तविक पहचान तभी संभव है जब उसे समग्र भारतीय साहित्य की व्यापक परंपरा के संदर्भ में देखा जाए। उदाहरण के लिए, यदि केवल सूरदास की चर्चा की जाए तो यह पर्याप्त नहीं होगा; उनके साथ गुजरात के नरसी मेहता, तेलुगु के मोत्तन, उड़िया के जगन्नाथ दास, असमिया के शंकरदेव, कन्नड़ के पुरंदरदास और बांग्ला के चंडीदास जैसे कृष्णभक्त कवियों की रचनाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक होगा। तभी भारतीय भक्ति साहित्य की व्यापकता और विविधता का सही आकलन किया जा सकता है।

जब हिन्दी में छायावादी काव्यधारा का विकास हो रहा था, उस समय बांग्ला, मलयालम, पंजाबी, सिंधी, उर्दू, गुजराती, तेलुगु और मराठी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में भी भावप्रधान और सौंदर्यपरक काव्य का सृजन हो रहा था। किंतु यदि कोई पाठक मलयालम भाषा से परिचित नहीं है तो उसके लिए कुमारन आसन की कविताओं से जुड़ पाना कठिन होगा। इसी प्रकार जो व्यक्ति मराठी भाषा नहीं जानता, वह विजय तेंदुलकर के नाटकों और कुसुमाग्रज की कविताओं का पूरा आनंद नहीं ले सकता। जो हिन्दी से परिचित नहीं है, वह प्रेमचंद की कहानियों और हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य से भी अनभिज्ञ रह जाएगा।

स्पष्ट है कि केवल भाषा-ज्ञान के आधार पर भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक परंपराओं से परिचित होना संभव नहीं है। ऐसी स्थिति में अनुवाद इस असंभव कार्य को संभव बनाने का माध्यम बनता है। अनुवाद के द्वारा विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे की भाषाओं में उपलब्ध कराया जाता है, जिससे पाठक अपनी ही भाषा में अन्य भाषाओं की साहित्यिक उपलब्धियों का परिचय प्राप्त कर सकते हैं। अनुवाद ज्ञान और साहित्य के आदान-प्रदान का सशक्त साधन बन जाता है।अनुवाद के कारण ही भारतीय साहित्य की विविध कृतियाँ व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच सकी हैं। तुलसीदास और कंबन, प्रेमचंद और शरतचंद्र, कबीर और वेमना, मीरा और आंडाल, कालिदास और वाल्मीकि, भारतेंदु और नर्मद, दिनकर और इकबाल, वृंदावनलाल वर्मा और हरि नारायण आप्टे, उमाशंकर जोशी और अज्ञेय जैसे अनेक महान रचनाकारों की कृतियाँ देश के विभिन्न भागों के पाठकों तक अनुवाद के माध्यम से पहुँची हैं। यही कारण है कि ये साहित्यकार किसी एक भाषा या क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गए, बल्कि पूरे देश के साहित्यिक परिदृश्य का हिस्सा बन गए। अनुवाद के कारण ही भारतीय साहित्य की अमूल्य उपलब्धियाँ भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से मुक्त होकर व्यापक स्तर पर प्रसारित हो सकी हैं। उदाहरण के लिए, वल्लल केवल मलयालम भाषा के कवि भर नहीं रह गए, रवीन्द्रनाथ ठाकुर केवल बांग्ला साहित्य के रचनाकार नहीं माने जाते, कबीर केवल हिन्दी के कवि नहीं हैं और ग़ालिब भी केवल उर्दू के शायर नहीं रह जाते। अनुवाद के माध्यम से इन सभी साहित्यकारों की रचनाएँ देश के विभिन्न भाषाई समुदायों तक पहुँची हैं और उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की है।

आज भारतीय साहित्य के समग्र इतिहास का अध्ययन भी अधिक लोकप्रिय हो गया है। सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और अनुसंधान अनुवाद के बिना संभव नहीं है। अनुवाद ने भारतीय साहित्य के समग्र अध्ययन और अध्यापन को व्यापक और सरल बनाया है। वास्तव में भारतीय साहित्य की विविधता और समग्रता को

समझने का पूरा प्रयास अनुवाद पर ही आधारित है। अनुवाद भारतीय साहित्य के विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच संवाद स्थापित करता है और साहित्यिक अध्येताओं को एक-दूसरे के निकट लाने का कार्य करता है। इसलिए भारतीय साहित्य के अध्ययन और उसके व्यापक मूल्यांकन में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य मानी जाती है।

2.3.4 तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्व

विश्व में एकता और सांस्कृतिक समन्वय स्थापित करने के प्रयासों में तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन एक महत्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। तुलना की प्रवृत्ति ने मानव के ज्ञान और अनुभव को प्रत्येक क्षेत्र में विस्तार प्रदान किया है। साहित्य के क्षेत्र में भी तुलनात्मक अध्ययन एक ऐसी विशिष्ट विधि है, जिसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं के बीच संबंधों को समझा जा सकता है। इस पद्धति के द्वारा साहित्य की अनेक ऐसी विशेषताएँ सामने आती हैं, जो सामान्य अध्ययन से स्पष्ट नहीं हो पातीं। तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य विभिन्न भाषाओं और साहित्यिक कृतियों के बीच पारस्परिक संबंधों को उजागर करना है। यह अध्ययन अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है तथा विभिन्न साहित्यिक धाराओं के बीच साम्य और भिन्नताओं को स्पष्ट करता है। तुलनात्मक अध्ययन विविधता में निहित एकता के भाव को भी सामने लाता है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

प्रो.जी. गोपीनाथनके अनुसार एक अच्छे अनुवादक के लिए मुख्य रूप से तीन अपेक्षाएँ आवश्यक होती हैं(क) स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर पर्याप्त अधिकार, (ख) विषय का समुचित ज्ञान, तथा (ग) मूल लेखक के भावों और दृष्टिकोण के प्रति सहानुभूति।

इसी प्रकार डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भी एक अच्छे अनुवादक के लिए कुछ आवश्यक गुण बताए हैं। उनके अनुसार अनुवादक को (क) स्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए, (ख) लक्ष्य भाषा का विषयानुसार उचित और प्रभावी ज्ञान होना चाहिए, तथा (ग) संबंधित विषय का पर्याप्त ज्ञान होना भी आवश्यक है।

जब दो भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है, तब यह अनुभव होता है कि भिन्न-भिन्न भाषाओं में व्यक्त विचार और भावधाराएँ मूलत: एक ही सांस्कृतिक और मानवीय चेतना को अलग-अलग रूपों में अभिव्यक्त करती हैं। उदाहरण के लिए सूरदास और नरसी मेहता की कृष्णभक्ति, रामचरित मानस और कृतिवास रामायण, भारतेंदु और वीरशालिंगम, हिन्दी और मराठी उपन्यास परंपरा, दिनकर और इक़बाल, फणीद्रनाथ 'रेणु' और सतीनाथ भादुड़ी, हिन्दी और पंजाबी संत काव्य, केशवदास और श्रीनाथ, हिन्दी और कन्नड़ भक्ति आंदोलन, महादेवी वर्मा और बालमणि अम्मा जैसे अनेक साहित्यकारों और कृतियों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित होने वाली साहित्यिक धारणाएँ और विचारधाराएँ मूलत: एक समान सांस्कृतिक प्रवाह से जुड़ी हुई हैं। किंतु इस निष्कर्ष तक पहुँच पाना अनुवाद के बिना संभव नहीं होता। वास्तव में अनुवाद ही तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का आधार है। अनुवाद के माध्यम से एक भाषा का पाठक दूसरी भाषा के साहित्य से परिचित हो पाता है और इस प्रकार विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक उपलब्धियाँ व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचती हैं। यदि अनुवाद की सुविधा उपलब्ध न होती, तो हिन्दी भाषी पाठक शरतचंद्र, तुकाराम, वेमना, अकबर इलाहाबादी, बसवेद्वर, के. वी. पुट्टप्पा, ज्योतिन्द्र दवे, खांडेकर आदि अनेक भारतीय साहित्यकारों की कृतियों से परिचित नहीं हो पाते। अन्य भारतीय भाषाओं के पाठक भी हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा से अनभिज्ञ रह जाते। इसलिए अनुवाद विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे के निकट लाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अनुवाद के प्रसार ने तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन को राष्ट्रीय सीमाओं से आगे बढ़ाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा दिया है। परिणामस्वरूप भारत के कबीर और फ्रांस के राबले, हिन्दी के प्रेमचंद और रूस के मैक्सिम गोर्की, अज्ञेय और टी. एस. इलियट, निराला और एजरा पाउंड, जयशंकर प्रसाद और विलियम शेक्सपियर जैसे साहित्यकारों के बीच

तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सका है। ऐसे अध्ययन अनुवाद की उपलब्धता के कारण ही शोध और ज्ञान के नए क्षेत्रों को विकसित करने में सहायक बने हैं। तुलनात्मक अध्ययन का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह भी है कि इससे विभिन्न भाषाओं के प्रति उत्पन्न संकीर्णता और श्रेष्ठता का भ्रम समाप्त होता है। जब विभिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक भाषा के साहित्य में अपनी-अपनी विशेषताएँ और सीमाएँ होती हैं और सभी साहित्य मानवीय अनुभवों की अभिव्यक्ति के विविध रूप हैं। अनुवाद के माध्यम से ही विभिन्न भाषाओं और देशों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन संभव हो पाया है। अनुवाद ने तुलनात्मक अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है तथा मानव ज्ञान के सीमित क्षेत्र को विस्तृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

2.3.5 सांस्कृतिक समन्वय और विकास में अनुवाद का महत्व

संस्कृति अपने व्यापक अर्थ में मानव सभ्यता की उपलब्धियों का सामूहिक रूप है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, मनुष्य की श्रेष्ठ साधनाओं का ही दूसरा नाम संस्कृति है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में अनेक भाषाओं, धर्मों और परंपराओं का समन्वय देखने को मिलता है। इसी कारण भारतीय संस्कृति का स्वरूप मिश्रित और समन्वयात्मक बन गया है। विभिन्न विचारधाराओं, जीवन-शैलियों और परंपराओं को अपने भीतर समाहित करते हुए भारतीय संस्कृति ने एक विशिष्ट एकता का रूप धारण किया है। इस विविधता में निहित एकता ही भारतीय सांस्कृतिक जीवन की प्रमुख विशेषता है। इस समन्वयात्मक सांस्कृतिक चेतना के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों की साहित्यिक तथा वैचारिक परंपराएँ एक-दूसरे तक पहुँची हैं। इससे देश के अलग-अलग भागों में विकसित विचारों, साहित्य और सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी पूरे समाज को मिलती रही है। राष्ट्रीय स्तर पर विचारों और अभिव्यक्तियों की दिशा को समझने में भी अनुवाद सहायक सिद्ध हुआ है। मध्यकालीन पुनर्जागरण से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय संस्कृति की यह समन्वयात्मक प्रवृत्ति लगातार विकसित होती रही है। आर्य और अनार्य, देशी और विदेशी संस्कृतियों के मेल से वर्तमान भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है। इस व्यापक सांस्कृतिक विरासत को समझने और उसे एक-दूसरे तक पहुँचाने में अनुवाद ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अनुवाद के माध्यम से भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं, जीवन-मूल्यों और विचारधाराओं का आदान-प्रदान संभव हुआ है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुवाद भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मक चेतना को मजबूत करने वाला एक प्रभावी माध्यम है। इसके द्वारा देश के विभिन्न भागों में फैली सांस्कृतिक धरोहर और जीवन-मूल्यों को समझने तथा उन्हें व्यापक समाज तक पहुँचाने में सहायता मिलती है।

2.3.6 प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद का महत्व

भारत की प्रशासनिक व्यवस्था का ढाँचा काफी हद तक ब्रिटिश शासन से प्राप्त हुआ है। उस समय बनाए गए अधिकांश नियम-कानून और प्रशासनिक कार्य अंग्रेज़ी भाषा में होते थे, इसलिए अधिकारियों और कर्मचारियों को अंग्रेज़ी में काम करने की आदत पड़ गई। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया, फिर भी यह प्रावधान रखा गया कि जब तक सभी सरकारी अधिकारी और कर्मचारी हिन्दी में दक्ष नहीं हो जाते, तब तक अंग्रेज़ी का प्रयोग सह-राजभाषा के रूप में किया जा सकता है। इसी कारण वर्तमान में प्रशासनिक कार्यों में द्विभाषिक व्यवस्था प्रचलित है। नए नियम-कानून, आदेश, परिपत्र, समझौते और रिपोर्ट आदि प्राय: अंग्रेज़ी में तैयार किए जाते हैं और उनका हिन्दी में अनुवाद किया जाता है। इस प्रकार अनुवाद प्रशासनिक कार्यों की एक आवश्यक प्रक्रिया बन गया है। सरकारी कार्यालयों के साथ-साथ सार्वजनिक संस्थानों, निगमों, कंपनियों और बैंकों को भी राजभाषा नीति के अनुसार अपने कार्यों में अनुवाद करना पड़ता है। इसके अलावा केंद्र और राज्य सरकारों के बीच, विशेषकर गैर-हिन्दी भाषी राज्यों के संदर्भ में, प्रशासनिक कार्यों के लिए भी अनुवाद की आवश्यकता होती है। प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का मुख्य महत्व यह है कि वर्तमान द्विभाषिक व्यवस्था में यह एक अनिवार्य प्रक्रिया बन गया है।

2.3.7 पर्यटन क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

आज के समय में पर्यटन को एक महत्वपूर्ण उद्योग का दर्जा प्राप्त हो गया है, इसलिए इस क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। पर्यटन का संबंध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों से होता है, जिसमें यात्रा, आवास, मनोरंजन, मार्गदर्शन तथा पर्यटन स्थलों से संबंधित जानकारी और प्रचार-प्रसार शामिल होते हैं। पर्यटन क्षेत्र में लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के अनुवाद की आवश्यकता होती है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए परिवहन सेवाओं, होटलों और यात्री निवासों में अनुवादकों की आवश्यकता पड़ती है। इसके साथ ही पर्यटन मार्गदर्शकों (गाइड) को भी विभिन्न भाषाओं में पर्यटन स्थलों से संबंधित जानकारी देनी होती है। पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटन स्थलों से संबंधित पुस्तिकाएँ, सूचना-पट्ट और अन्य सामग्री कई भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती हैं। रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी आवश्यक सूचनाएँ अलग-अलग भाषाओं में प्रदर्शित या प्रसारित की जाती हैं, जिससे पर्यटकों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

वास्तव में पर्यटन उद्योग काफी हद तक अनुवाद पर आधारित है। आधुनिक संचार माध्यमों जैसे इंटरनेट, पॉडकास्ट, ऑडियो-टेक्स्ट और ऑडियो-वीडियो सामग्री के माध्यम से भी पर्यटन संबंधी जानकारी विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती है, जिससे इसका प्रचार और प्रसार अधिक व्यापक और सरल हो गया है।

2.3.8 जनसंचार माध्यमों में अनुवाद का महत्व

जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। आधुनिक तकनीकी आविष्कारों और संचार साधनों ने विश्व को सूचना के व्यापक नेटवर्क से जोड़ दिया है। पत्रकारिता, विज्ञापन, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कंप्यूटर, टेलीफोन और उपग्रह जैसी नई संचार तकनीकों ने लोगों तक तेजी से जानकारी पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जनसंचार माध्यमों के अंतर्गत प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों आते हैं और इनकी कार्य-प्रणाली में अनुवाद की भूमिका अनिवार्य होती है। विश्व के विभिन्न भागों से प्राप्त सूचनाओं को पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक उनकी भाषा में पहुँचाने के लिए अनुवाद का सहारा लिया जाता है। समाचार एजेंसियाँ कुछ प्रमुख भाषाओं में समाचार उपलब्ध कराती हैं, जिन्हें अखबार, रेडियो और टेलीविजन अपनी आवश्यकता के अनुसार अनुवादित करके प्रसारित करते हैं।

समाचारों के अलावा सूचनाओं, विज्ञापनों और संदेशों का भी विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में जनसंचार माध्यमों को अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार और महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करनी पड़ती है, इसलिए इन माध्यमों की व्यवस्था काफी हद तक अनुवाद पर आधारित होती है। कई कार्यक्रमों में लिखित अनुवाद के साथ-साथ त्वरित या मौखिक अनुवाद भी किया जाता है।

आज सूचना क्रांति के दौर में पारंपरिक माध्यमों के साथ-साथसोशल मीडिया, इंटरनेट, ब्लॉग और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्मके प्रसार ने भी अनुवाद की आवश्यकता और उपयोगिता को और अधिक बढ़ा दिया है।

2.3.9 व्यवसाय और रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्व

व्यवसाय और रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद का महत्वअत्यंत व्यापक है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, उद्योग और तकनीकी विकास में विभिन्न भाषाओं के बीच जानकारी के आदान-प्रदान के लिए अनुवाद आवश्यक होता है। किसी भी उद्योग से संबंधित नई तकनीकी या औद्योगिक जानकारी जब किसी अन्य भाषा में उपलब्ध होती है, तो उसके प्रभावी उपयोग के लिए उसे अपनी भाषा में अनूदित करना जरूरी हो जाता है। इसी कारण बड़े औद्योगिक संस्थान नई खोजों, तकनीकी जानकारियों और अनुसंधानों का शीघ्र अनुवाद करवाते हैं, ताकि उनका उपयोग उद्योगों में किया जा सके। इसके अतिरिक्त कंपनियाँ अपने उत्पादों को विभिन्न देशों या क्षेत्रों के बाजारों में बेचने के लिए जो प्रचार-सामग्री तैयार करती हैं, उसे भी कई भाषाओं में अनुवादित किया जाता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

1. अनुवाद का सामान्य अर्थ क्या है?
2. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्व है?
3. भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद क्यों आवश्यक है?
4. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद की क्या भूमिका है?
5. एक अच्छे अनुवादक के दो प्रमुख गुण लिखिए।

आज भले ही अंग्रेज़ी का व्यापक उपयोग हो रहा है, फिर भी निर्माता अपने उत्पादों की जानकारी उन लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं जो अंग्रेज़ी नहीं जानते। इसलिए अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय बाजार के लिए तैयार की गई प्रचार-सामग्री और उत्पाद-विवरण को अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है।दवाइयों और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के साथ दी जाने वाली जानकारी-पत्रक भी अक्सर कई भाषाओं में छपे होते हैं, ताकि विभिन्न भाषाओं के उपभोक्ता उन्हें आसानी से समझ सकें। इस प्रकार व्यवसाय और रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2.4 अनुवादक के गुण

अनुवाद एक अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण और सृजनात्मक कार्य है। इसमें केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होता, बल्कि एक भाषा में निहित भाव, अर्थ, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों को दूसरी भाषा में सही रूप में प्रस्तुत करना होता है। इसलिए एक सफल अनुवादक में कई प्रकार के गुण और योग्यताएँ होना आवश्यक है। यदि अनुवादक इन गुणों से युक्त हो, तो वह मूल पाठ के आशय को बिना किसी विकृति के लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर सकता है। अनुवादक के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं-

1. स्रोत और लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान

एक अनुवादक के लिए सबसे आवश्यक गुण यह है कि उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का गहन ज्ञान हो। स्रोत भाषा वह होती है जिससे अनुवाद किया जा रहा है और लक्ष्य भाषा वह होती है जिसमें अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है। यदि अनुवादक को दोनों भाषाओं की व्याकरण, शब्दावली, वाक्य संरचना और शैली का पर्याप्त ज्ञान होगा तभी वह मूल पाठ के भाव और अर्थ को सही ढंग से व्यक्त कर पाएगा। भाषा के गहरे ज्ञान के बिना अनुवाद में त्रुटियाँ होने की संभावना अधिक रहती है।

2. विषय का पर्याप्त ज्ञान

अनुवादक को जिस विषय का अनुवाद करना है, उस विषय की भी जानकारी होनी चाहिए। जैसे- यदि वह वैज्ञानिक, तकनीकी, कानूनी या साहित्यिक पाठ का अनुवाद कर रहा है, तो उस क्षेत्र की मूलभूत समझ आवश्यक है। विषय का ज्ञान होने से अनुवादक सही शब्दों और अवधारणाओं का चयन कर सकता है और अनुवाद अधिक सटीक तथा विश्रसनीय बनता है।

3. अर्थ-बोध की क्षमता

अनुवादक में मूल पाठ के भाव और आशय को समझने की क्षमता होनी चाहिए। कई बार शब्दों का शाब्दिक अर्थ अलग होता है और उनका वास्तविक आशय अलग होता है। ऐसे में अनुवादक को यह समझना होता है कि लेखक का उद्देश्य क्या है और वह क्या कहना चाहता है। जब अनुवादक सही अर्थ को समझ लेता है, तभी वह उसे लक्ष्य भाषा में सही रूप में प्रस्तुत कर सकता है।

4. उपयुक्त शब्द-चयन की क्षमता

अनुवाद का एक महत्वपूर्ण गुण सही शब्दों का चयन करना है। अनुवादक को यह समझना चाहिए कि किसी विशेष संदर्भ में कौन-सा शब्द अधिक उपयुक्त रहेगा। यदि शब्दों का चयन सही नहीं होगातो अनुवाद का अर्थ बदल सकता है या वह अस्वाभाविक लग सकता है। इसलिए अनुवादक को समृद्ध शब्द-भंडार और शब्दों के सही प्रयोग की

जानकारी होना आवश्यक है।

5. भाषा-शैली और अभिव्यक्ति की दक्षता

अनुवादक को भाषा की शैली और अभिव्यक्ति का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। हर प्रकार के पाठ की अपनी शैली होती है- जैसे साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक या पत्रकारिता शैली। अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि लक्ष्य भाषा में वही शैली बनी रहे। इससे अनुवाद अधिक स्वाभाविक और प्रभावी बनता है।

6. सांस्कृतिक समझ

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती, बल्कि वह संस्कृति से भी जुड़ी होती है। इसलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होना चाहिए। कई बार किसी भाषा के मुहावरे, कहावतें या सांस्कृतिक संकेत सीधे दूसरी भाषा में नहीं आते। ऐसे में अनुवादक को उपयुक्त सांस्कृतिक समकक्ष ढूँढना पड़ता है ताकि मूल भाव बना रहे।

7. धैर्य और सावधानी

अनुवाद का कार्य अत्यंत सावधानी और धैर्य की माँग करता है। इसमें छोटी-सी गलती भी अर्थ को बदल सकती है या गलत संदेश दे सकती है। इसलिए अनुवादक को प्रत्येक वाक्य और शब्द को ध्यानपूर्वक पढ़ना और समझना चाहिए। धैर्य के साथ किया गया अनुवाद अधिक सटीक और प्रभावी होता है।

8. अनुसंधान और संदर्भ खोजने की क्षमता

कई बार अनुवाद करते समय ऐसे शब्द या अवधारणाएँ सामने आती हैं जिनके बारे में अनुवादक को तुरंत जानकारी नहीं होती। ऐसे में उसे शब्दकोश, संदर्भ पुस्तकों, इंटरनेट या अन्य स्रोतों की सहायता से सही जानकारी प्राप्त करनी होती है। इसलिए एक अच्छे अनुवादक में अनुसंधान करने की क्षमता भी होनी चाहिए।

9. निरंतर अध्ययन और अभ्यास

अनुवाद एक ऐसा कौशल है जो निरंतर अभ्यास और अध्ययन से विकसित होता है। एक अच्छा अनुवादक हमेशा नई शब्दावली सीखने, विभिन्न प्रकार के पाठ पढ़ने और अपने अनुवाद कौशल को सुधारने का प्रयास करता है। लगातार अभ्यास से उसकी भाषा पर पकड़ मजबूत होती जाती है।

10. निष्पक्षता और निष्ठा

अनुवादक को मूल पाठ के प्रति ईमानदार और निष्पक्ष होना चाहिए। उसे अपने व्यक्तिगत विचारों या भावनाओं को अनुवाद में शामिल नहीं करना चाहिए। उसका मुख्य उद्देश्य मूल लेखक के विचारों और संदेश को सही रूप में प्रस्तुत करना होना चाहिए।

2.5 सारांश

- उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अनुवाद आज के वैश्विक और बहुभाषी समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह केवल भाषाओं के बीच शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि विभिन्न समाजों, संस्कृतियों और ज्ञान-परंपराओं के बीच संवाद स्थापित करने का सशक्त माध्यम है। शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को व्यापक स्तर पर विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है। इसी प्रकार विश्व साहित्य और भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद विभिन्न साहित्यिक कृतियों को नए पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है, जिससे साहित्यिक आदान-प्रदान और समझ का विस्तार होता है।
- तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद विशेष रूप से सहायक सिद्ध होता है, क्योंकि इसके माध्यम से विभिन्न भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं का तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो पाता है। इसके साथ ही सांस्कृतिक समन्वय और विकास में भी अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह विभिन्न संस्कृतियों को एक-दूसरे के निकट लाने और पारस्परिक समझ विकसित करने में सहायक होता है।व्यावहारिक जीवन के अनेक क्षेत्रोंजैसे प्रशासन, पर्यटन, जनसंचार माध्यम तथा व्यवसाय और रोजगारमें भी अनुवाद की उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। इन क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं के लोगों तक जानकारी, सेवाएँ और संदेश पहुँचाने के लिए अनुवाद अनिवार्य बन

जाता है। इन सभी कार्यों को प्रभावी ढंग से संपन्न करने के लिए एक सक्षम और कुशल अनुवादक की आवश्यकता होती है। इसलिए अनुवादक में भाषा का गहन ज्ञान, विषय की समझ, उचित शब्द-चयन, सांस्कृतिक बोध, धैर्य और सतत अभ्यास जैसे गुण होना आवश्यक है। अनुवाद ज्ञान के प्रसार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक-आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है, जो आधुनिक समय में विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने का कार्य करता है।

K2.6 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर- अनुवाद का अर्थ है किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और सूचनाओं को दूसरी भाषा में उसी अर्थ और उद्देश्य के साथ प्रस्तुत करना। यह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि भाव, शैली और संदर्भ को भी सुरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति करना है।

प्रश्न 2 का उत्तर- शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान, शोध और शैक्षणिक सामग्री को अन्य भाषाओं के विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाता है। इससे विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं और शिक्षा अधिक सरल तथा प्रभावी बनती है।

प्रश्न 3 का उत्तर- भारत बहुभाषी देश है जहाँ अनेक भाषाओं में साहित्य रचा गया है। सभी भाषाएँ हर व्यक्ति नहीं जानता, इसलिए विभिन्न भाषाओं के साहित्य को एक-दूसरे तक पहुँचाने के लिए अनुवाद आवश्यक होता है। इससे भारतीय साहित्य की विविधता और समग्रता को समझने में सहायता मिलती है।

प्रश्न 4 का उत्तर- जनसंचार माध्यमों में अनुवाद के द्वारा विद्द के विभिन्न भागों से प्राप्त समाचार, सूचनाएँ और संदेश अलग-अलग भाषाओं में लोगों तक पहुँचाए जाते हैं। इससे अधिक से अधिक लोग अपनी भाषा में जानकारी प्राप्त कर पाते हैं।

प्रश्न 5 का उत्तर- 1. स्रोत और लक्ष्य भाषा का अच्छा ज्ञान।

2. विषय का पर्याप्त ज्ञान तथा सही शब्द-चयन की क्षमता।

2.7 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- शुक्ल, आनन्द कुमार. (2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद: सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2014). ई-अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली: किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
- मिश्र, शिवकुमार. (2012). भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
- शास्त्री, रमेशचंद्र. (2013). संस्कृत साहित्य और भारतीय अनुवादपरंपरा. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
- वर्मा, कृष्णदत्त. (2016). भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का अनुवाद-बोध. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

M2.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. अनुवाद का क्या महत्व है?
2. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका संक्षेप में लिखिए।

3. विश्व साहित्य के अध्ययन में अनुवाद क्यों आवश्यक है?
4. जनसंचार माध्यमों में अनुवाद का क्या महत्व है?
5. एक अच्छे अनुवादक के दो प्रमुख गुण लिखिए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. अनुवाद के महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
2. शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका और आवश्यकता का विवेचन कीजिए।
3. भारतीय साहित्य के अध्ययन में अनुवाद के महत्व को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
4. तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अनुवाद की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. एक अच्छे अनुवादक के गुणों का विस्तार से विवेचन कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 3 अनुवाद में लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा की धारणा

3.1 उद्देश्य
3.2 प्रस्तावना
3.3 अनुवाद में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से तात्पर्य
3.4 मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा और भाषिक युग्म : अनुवाद की आधारभूत संकल्पनाएँ
3.5 स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के परिप्रेक्ष्य में समतुल्यता तथा व्यतिरेकी विश्लेषण
3.6 स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संदर्भ में संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका
3.7 सारांश
3.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेख)
3.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें
3.10 अभ्यास प्रश्न

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप–

- अनुवाद के संदर्भ में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अर्थ, स्वरूप तथा उनके पारस्परिक संबंध के विषय में जानेंगे।
- अनुवाद की प्रक्रिया में स्त्रोत भाषा की भूमिका तथा उससे प्राप्त होने वाली मूल अभिव्यक्ति के महत्व को समझ सकेंगे।
- लक्ष्य भाषा की प्रकृति, उसकी संरचना तथा पाठक के अनुरूप अर्थ संप्रेषण के सिद्धांतों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में भाव, आशय और सांस्कृतिक संदर्भों को सुरक्षित रखने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
- अनुवाद करते समय भाषागत भिन्नताओं, शैली और अभिव्यक्ति की चुनौतियों के बारे में परिचित होंगे।
- अनुवाद में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संतुलन तथा प्रभावी संप्रेषण के सिद्धांतों का सम्यक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

3.2प्रस्तावना

भाषा मानव के विचारों, भावनाओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। जब किसी भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में उसी भाव और अर्थ के साथ प्रस्तुत किया जाता है, तो इस प्रक्रिया को अनुवाद कहा जाता है। अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, बल्कि यह दो भाषाओं और दो संस्कृतियों के बीच सेतु का कार्य करता है। इस प्रक्रिया में दो प्रमुख भाषाएँ महत्वपूर्ण होती हैं–स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा। स्त्रोत भाषा वह भाषा होती है जिसमें मूल पाठ या मूल विचार व्यक्त किए गए होते हैं, जबकि लक्ष्य भाषा वह भाषा होती है जिसमें उन विचारों को अनूदित करके प्रस्तुत किया जाता है।

अनुवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवादक स्त्रोत भाषा के भाव, आशय और संदर्भ को कितनी अच्छी तरह समझता है तथा उन्हें लक्ष्य भाषा में किस प्रकार स्वाभाविक और प्रभावी रूप में व्यक्त करता है। इसलिए स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा को समझना अनुवाद अध्ययन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। इन दोनों भाषाओं की संरचना, शैली, व्याकरण और सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्नता होती है, जिसके कारण अनुवादक को विशेष सावधानी और समझ की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के संदर्भ में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के तात्पर्य तथा उनकी मूल अवधारणा पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इसके अंतर्गत स्त्रोत भाषा की विशेषताओं, उसकी भूमिका और अनुवाद प्रक्रिया में उसके महत्व का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही लक्ष्य भाषा की प्रकृति, उसके प्रयोग और पाठकों के अनुरूप अर्थ संप्रेषण

की आवश्यकता पर भी विचार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में भाव, आशय और सांस्कृतिक तत्वों को सुरक्षित रखते हुए अनुवाद करने की प्रक्रिया और उससे जुड़ी चुनौतियों का भी विवेचन किया जाएगा। इस प्रकार यह इकाई विद्यार्थियों को अनुवाद की मूलभूत अवधारणाओं तथा स्त्रोत और लक्ष्य भाषा के संबंध को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

3.3अनुवाद में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से तात्पय

भाषा का मूल उद्देश्य विचारों, अनुभवों और सूचनाओं का आदान-प्रदान करना है। जब कोई व्यक्ति अपनी बात किसी अन्य व्यक्ति तक पहुँचाता है, तब वह सम्प्रेषण की प्रक्रिया में भाग लेता है। अनुवाद भी इसी सम्प्रेषण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इसके माध्यम से एक भाषा में व्यक्त विचारों, ज्ञान और सूचनाओं को दूसरी भाषा के पाठकों या श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है। इस प्रकार अनुवाद भाषाओं के बीच उपस्थित बाधाओं को कम करता है और विभिन्न भाषिक समुदायों के बीच संवाद को संभव बनाता है। यदि किसी ज्ञान, विचार या सूचना को केवल एक भाषा तक सीमित रखा जाए, तो उस भाषा को न जानने वाले लोग उससे वंचित रह जाते हैं। ऐसी स्थिति को भाषिक अवरोध कहा जा सकता है। इस अवरोध को दूर करने का सबसे प्रभावी साधन अनुवाद ही है। इसी कारण अनुवाद को सम्प्रेषण के विस्तार का एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है।

अनुवाद की प्रक्रिया का सम्बन्ध एक साथ दो भाषाओं से होता है, इसलिए इसे द्विभाषिक क्रिया कहा जाता है। इस पूरी प्रक्रिया का संचालन अनुवादक करता है। मूल पाठ का लेखक अथवा अनूदित पाठ का पाठक इस क्रिया में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं लेते। अनुवादक स्त्रोत भाषा में उपलब्ध पाठ को समझकर उसे दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है। इस प्रक्रिया में 'पाठ' शब्द का प्रयोग लिखित और मौखिक दोनों प्रकार की सामग्री के लिए किया जाता है। जिस भाषा में मूल सामग्री लिखी या कही गई होती है, उसे स्त्रोत भाषा कहा जाता है और जिस भाषा में उस सामग्री को रूपांतरित किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है। स्त्रोत भाषा को कई बार मूल भाषा भी कहा जाता है, क्योंकि रचना का मूल रूप उसी भाषा में तैयार होता है।

कई बार अनुवाद सीधे मूल भाषा से नहीं किया जाता। ऐसी स्थिति में अनुवाद किसी अन्य अनूदित भाषा के माध्यम से किया जाता है। जब किसी पाठ का अनुवाद मूल भाषा के स्थान पर किसी दूसरी अनूदित भाषा से किया जाता है, तो उस मध्यवर्ती भाषा को सेतु भाषा कहा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद को सामान्यत: 'अनुवाद का अनुवाद' कहा जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी फ्रांसीसी रचना का पहले अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ हो और फिर अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद किया जाए, तो अंग्रेज़ी यहाँ सेतु भाषा का कार्य करेगी। चाहे अनुवाद मूल भाषा से किया जाए या सेतु भाषा के माध्यम से, अनुवादक का मुख्य उद्देश्य स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच अर्थ की समानता स्थापित करना होता है। इस समानता को अनुवाद सिद्धान्त में 'समतुल्यता' कहा जाता है।

अनुवाद की प्रक्रिया में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच सम्बन्ध को भाषिक युग्म कहा जाता है। उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी-हिन्दी, हिन्दी-मराठी या तमिल-अंग्रेज़ी जैसे युग्म अनुवाद कार्य में प्रयुक्त होते हैं। किसी भी अनुवाद में यही भाषिक युग्म सम्प्रेषण की आधारभूत संरचना तैयार करते हैं। इस दृष्टि से अनुवाद का पूरा ढाँचा स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा, मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा और समतुल्यता जैसे तत्वों के परस्पर सम्बन्ध पर आधारित होता है।

स्त्रोत भाषा

अनुवाद की प्रक्रिया में जिस भाषा में मूल सामग्री उपलब्ध होती है, उसे स्त्रोत भाषा कहा जाता है। यह वही भाषा होती है जिसमें लेखक ने अपनी रचना तैयार की होती है या वक्ता ने अपने विचार व्यक्त किए होते हैं। उदाहरण के लिए यदि अंग्रेज़ी में लिखे गए किसी लेख का हिन्दी में अनुवाद किया जाता है, तो अंग्रेज़ी स्त्रोत भाषा होगी। इसी प्रकार यदि हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाए, तो हिन्दी स्त्रोत भाषा मानी जाएगी। स्पष्ट है कि स्त्रोत भाषा का निर्धारण अनुवाद की दिशा के अनुसार होता है।

अनुवादक के लिए स्त्रोत भाषा का अच्छा ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। उसे न केवल शब्दों के अर्थ समझने

चाहिए, बल्कि उस भाषा की व्याकरणिक संरचना, शैली, सांस्कृतिक संदर्भ और भावगत संकेतों को भी ठीक प्रकार से ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए। यदि अनुवादक स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को सही ढंग से समझ ही न सके, तो वह उनका उपयुक्त अनुवाद नहीं कर पाएगा। इसलिए अनुवाद प्रक्रिया का पहला चरण स्त्रोत भाषा में निहित अर्थ का सही बोध प्राप्त करना होता है।

सामान्यत: स्त्रोत भाषा वही होती है जिसमें मूल रचना तैयार की जाती है। जब अनुवाद सीधे इसी मूल भाषा से किया जाता है, तो उसे प्रत्यक्ष अनुवाद कहा जाता है। प्रत्यक्ष अनुवाद में मूल पाठ के साथ सीधा सम्बन्ध बना रहता है, इसलिए इसे अधिक विद्रसनीय माना जाता है।

लक्ष्य भाषा

जिस भाषा में स्त्रोत भाषा की सामग्री को प्रस्तुत किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है। यह वह भाषा होती है जिसमें अनुवादक मूल पाठ के विचारों और भावों को पुन: व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए यदि अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद किया जा रहा है, तो हिन्दी लक्ष्य भाषा होगी। इसी प्रकार यदि हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जाए, तो अंग्रेज़ी लक्ष्य भाषा बन जाती है।

लक्ष्य भाषा का ज्ञान भी अनुवादक के लिए उतना ही आवश्यक है जितना स्त्रोत भाषा का। अनुवादक को लक्ष्य भाषा की व्याकरण, शब्दावली, शैली और अभिव्यक्ति के ढंग पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए, ताकि वह स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को स्वाभाविक और प्रभावी रूप में प्रस्तुत कर सके। लक्ष्य भाषा में अनुवाद इस प्रकार होना चाहिए कि वह पाठकों को सहज और स्पष्ट लगे।

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा में अनुवादक की दक्षता

अनुवाद के सन्दर्भ में अक्सर यह कहा जाता है कि अनुवादक को स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। वास्तव में यह कथन सही भी है, परन्तु दोनों भाषाओं में दक्षता की प्रकृति समान नहीं होती। स्त्रोत भाषा का ज्ञान मुख्यत: अर्थ ग्रहण करने के लिए आवश्यक होता है, जबकि लक्ष्य भाषा का ज्ञान उस अर्थ को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए आवश्यक होता है।

अर्थ ग्रहण करने की अपेक्षा अभिव्यक्ति की क्षमता अधिक उन्नत स्तर की भाषा दक्षता मानी जाती है। इसलिए सामान्यत: किसी भी अनुवादक की अभिव्यक्ति क्षमता एक भाषा में अधिक विकसित होती है। वही भाषा उसके लिए लक्ष्य भाषा बन जाती है। साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में तो यह नियम और भी स्पष्ट रूप से लागू होता है, क्योंकि साहित्य में शैली, भाव और सांस्कृतिक संकेतों को सटीक रूप से व्यक्त करना आवश्यक होता है।

उदाहरण के रूप में भारत की स्थिति को देखा जा सकता है। यहाँ बहुत से लोग अंग्रेज़ी को समझ लेते हैं, परन्तु अंग्रेज़ी में अपनी बात पूरी सहजता और स्पष्टता के साथ व्यक्त कर पाना अपेक्षाकृत कठिन होता है। इसके विपरीत हिन्दी या अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति अधिक स्वाभाविक होती है। इसलिए अंग्रेज़ी से हिन्दी या अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने वाले लोगों की संख्या अधिक मिलती है, जबकि हिन्दी से अंग्रेज़ी में अनुवाद करने वाले अपेक्षाकृत कम होते हैं। विशेष रूप से साहित्यिक अनुवाद में लक्ष्य भाषा पर गहरी पकड़ अनिवार्य होती है। ऐसा अनुवादक ही सफल साहित्यिक अनुवाद कर सकता है जो लक्ष्य भाषा को लगभग मातृभाषा की तरह जानता हो।

इस प्रकार अनुवाद की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवादक स्त्रोत भाषा को ठीक प्रकार से समझे और लक्ष्य भाषा में उसे प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सके। स्त्रोत भाषा में अर्थ का सही बोध और लक्ष्य भाषा में सटीक अभिव्यक्ति—इन दोनों के संतुलन से ही एक सफल और सार्थक अनुवाद संभव हो पाता है।

3.4मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा और भाषिक युग्म: अनुवाद की आधारभूत संकल्पनाएँ

अनुवाद की प्रक्रिया में कुछ मूलभूत तत्व अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, जिनके बिना अनुवाद को ठीक प्रकार से समझा नहीं जा सकता। इनमें प्रमुख रूप से मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा तथा भाषिक युग्म शामिल हैं। ये सभी तत्व अनुवाद की

संरचना और उसके कार्य-व्यवहार को स्पष्ट करते हैं।

मूलपाठ

जिस सामग्री का किसी दूसरी भाषा में रूपान्तरण किया जाता है उसे मूलपाठ कहा जाता है। यह शब्द विशेष रूप से अनुवाद की प्रक्रिया में प्रयुक्त होता है। मूलपाठ का आकार निश्चित नहीं होता; यह अत्यन्त छोटा भी हो सकता है और बहुत बड़ा भी।

उदाहरण के लिए, कभी-कभी मूलपाठ केवल एक शब्द का होता है, जैसे entrance (प्रवेश), Exit (निकास), Enquiry (पूछताछ), bilet (शौचालय) आदि। इसी प्रकार congratulations (बधाई) जैसे शब्द भी छोटे मूलपाठ के उदाहरण हैं।

इससे बड़ा मूलपाठ शब्द-समूह या पदबन्ध के रूप में भी मिलता है, जैसे rrival and Departure (आगमन और प्रस्थान), Complaints Book (शिकायत पुस्तिका), No Entry (प्रवेश वर्जित), Railway Museum (रेल संग्रहालय), Veterinary Doctor (पशु चिकित्सक) आदि।

कुछ सूचनाएँ पूर्ण वाक्य के रूप में भी दी जाती हैं, जैसे-

- In case of any problem please contact the manager. (किसी समस्या की स्थिति में प्रबंधक से संपर्क करें।)
- Inconvenience caused is regretted. (आपको हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।)
- Road Closed. (सड़क बंद है।)
- This way please. (कृपया इस ओर आएँ।)

मूलपाठ का आकार अनुच्छेद, लेख, रिपोर्ट या यहाँ तक कि पूरी पुस्तक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए किसी उपन्यास, नाटक, शोध-ग्रंथ या कहानी-संग्रह का अनुवाद भी मूलपाठ पर आधारित होता है। इस प्रकार मूलपाठ का विस्तार अत्यन्त लघु से लेकर अत्यधिक विस्तृत रूप तक हो सकता है।

अनूदित पाठ

जब मूलपाठ को किसी अन्य भाषा में रूपान्तरित किया जाता है तो उस रूप को अनूदित पाठ कहा जाता है। यह मूलपाठ का बिल्कुल यथावत प्रतिरूप नहीं होता, क्योंकि दोनों भाषाओं की संरचना, व्याकरण और शब्दावली में भिन्नता होती है। इसी कारण अनूदित पाठ में कुछ परिवर्तन स्वाभाविक रूप से दिखाई देते हैं।

उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी और हिन्दी के वाक्यों में यह अंतर स्पष्ट देखा जा सकता है—

स्त्रोत भाषा (English)

1. He has gone home.
2. I am going home.

लक्ष्य भाषा (Hindi)

1. वह घर चला गया है।
2. मैं घर जा रहा/रही हूँ।

पहले वाक्य में अंग्रेज़ी में लिंग की सूचना ।द सर्वनाम के माध्यम से मिलती है, जबकि हिन्दी में यह जानकारी क्रिया गया के माध्यम से व्यक्त होती है। दूसरे वाक्य में अंग्रेज़ी में लिंग स्पष्ट नहीं होता, परन्तु हिन्दी में जा रहा / जा रही के रूप में यह स्पष्ट हो जाता है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी देखे जा सकते हैं—

- She is reading a book. → वह पुस्तक पढ़ रही है।
- They have finished the work. → उन्होंने काम पूरा कर लिया है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि मूलपाठ और अनूदित पाठ में कुछ अंतर होना स्वाभाविक है। अनूदित पाठ का निर्माता

अनुवादक होता है, किन्तु वह उस कृति का मूल रचनाकार नहीं होता। कृति का रचनाकार वही लेखक होता है जिसने मूलपाठ की रचना की है। इसलिए अनुवादक का दायित्व है कि वह अनुवाद करते समय अर्थ, भाव और सन्दर्भ की प्रामाणिकता बनाए रखे ताकि मूल रचनाकार के विचारों का सही रूप में संप्रेषण हो सके।

मूलपाठ और अनूदित पाठ का सम्बन्ध

मूलपाठ और अनूदित पाठ के बीच संबंध प्रत्यक्ष नहीं बल्कि लक्ष्य भाषा के माध्यम से स्थापित होता है। मूलपाठ स्त्रोत भाषा में लिखा जाता है और अनुवाद के बाद वही सामग्री लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत होती है। इस प्रक्रिया में दोनों पाठों के बीच एक प्रकार का अप्रत्यक्ष सम्बन्ध बनता है।

उदाहरण के लिए यदि कोई अंग्रेज़ी कहानी हिन्दी में अनूदित की जाती है तो अंग्रेज़ी मूलपाठ और हिन्दी अनूदित पाठ का सम्बन्ध हिन्दी भाषा के माध्यम से स्थापित होता है। यही कारण है कि दोनों पाठों में पूर्ण समानता नहीं होती, बल्कि अर्थ और भाव की समानता अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।

सेतु भाषा

कई बार अनुवाद सीधे मूल भाषा से नहीं किया जाता, बल्कि किसी तीसरी भाषा के माध्यम से किया जाता है। ऐसी भाषा को सेतु भाषा कहा जाता है। सेतु भाषा के माध्यम से किया गया अनुवाद अप्रत्यक्ष अनुवाद कहलाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी रूसी उपन्यास का हिन्दी अनुवाद सीधे रूसी से न होकर पहले अंग्रेज़ी में हुआ हो और फिर अंग्रेज़ी से हिन्दी में किया गया हो, तो यहाँ अंग्रेज़ी सेतु भाषा कहलाएगी।

भारतीय भाषाओं में भी यह स्थिति देखने को मिलती है। कई बार तमिल, बांग्ला या मराठी की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद सीधे मूल भाषा से न होकर पहले अंग्रेज़ी या हिन्दी के माध्यम से किया जाता है। इसी प्रकार संस्कृत, फारसी या जर्मन कृतियों के हिन्दी अनुवाद भी प्रायः अंग्रेज़ी के आधार पर किए गए हैं।

उदाहरण के रूप में—

- लियो टॉल्स्टॉय के उपन्यासों का हिन्दी अनुवाद कई बार अंग्रेज़ी संस्करणों के आधार पर हुआ है।
- मक्सीम गोर्की की रचनाओं का भी हिन्दी रूपान्तरण अंग्रेज़ी माध्यम से किया गया।
- फारसी कवि उमर खैयाम की रुबाइयों के हिन्दी अनुवाद अंग्रेज़ी अनुवाद के आधार पर किए गए हैं।

इस प्रकार सेतु भाषा अनुवाद की प्रक्रिया को सरल बनाती है, परन्तु इसके कारण मूलपाठ और अंतिम अनूदित पाठ के बीच दूरी भी बढ़ सकती है।

भाषिक युग्म और भाषिक दक्षता

अनुवाद जिन दो भाषाओं के बीच किया जाता है उन्हें भाषिक युग्म कहा जाता है। उदाहरण के लिए-

- अंग्रेज़ी - हिन्दी
- हिन्दी - अंग्रेज़ी
- हिन्दी - मलयालम
- बांग्ला - हिन्दी

इन युग्मों में पहली भाषा स्त्रोत भाषा और दूसरी लक्ष्य भाषा होती है। कुछ अनुवादक केवल एक दिशा में अनुवाद करते हैं, जैसे अंग्रेज़ी से हिन्दी। ऐसे अनुवादकों को एकदिश अनुवादक कहा जा सकता है।

दूसरी ओर कुछ अनुवादक दोनों भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम होते हैं, जैसे अंग्रेज़ी से हिन्दी और हिन्दी से अंग्रेज़ी। ऐसे अनुवादकों को द्विदिश अनुवादक कहा जाता है।

भाषिक युग्म का चयन मुख्य रूप से अनुवादक की भाषिक दक्षता पर निर्भर करता है। जिस भाषा में वह अपने विचारों को सहज रूप से व्यक्त कर सकता है, वही उसके लिए उपयुक्त लक्ष्य भाषा बनती है। सामान्यतः अनुवादक एक ही लक्ष्य भाषा में अधिक दक्षता प्राप्त करते हैं और उसी दिशा में अधिक कार्य करते हैं।

अनुवाद की प्रक्रिया को समझने के लिए मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा तथा भाषिक युग्म की संकल्पनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। मूलपाठ अनुवाद का आधार होता है, जबकि अनूदित पाठ उसी का दूसरी भाषा में प्रस्तुत रूप है। सेतु भाषा

अनुवाद की मध्यस्थ भाषा के रूप में कार्य करती है और भाषिक युग्म यह निर्धारित करते हैं कि अनुवाद किन भाषाओं के बीच किया जा रहा है। इन सभी तत्वों की समुचित समझ से ही अनुवाद की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और सटीक बनाया जा सकता है।

Wअपनी प्रगति जांचे

प्रश्न 1 अनुवाद क्या है?

प्रश्न 2 स्रोत भाषा से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 3 लक्ष्य भाषा किसे कहते हैं?

प्रश्न 4 सेतु भाषा क्या होती है?

प्रश्न 5 मूलपाठ और अनूदित पाठ में क्या अंतर है?

प्रश्न 6 भाषिक युग्म से क्या अभिप्राय है?

3.5 स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के परिप्रेक्ष्य में समतुल्यता तथा व्यतिरेकी विश्लेषण

अनुवाद का कार्य मूलत: दो भाषाओं के बीच अर्थ के स्थानांतरण से संबंधित होता है। इनमें से जिस भाषा में मूल पाठ लिखा होता है उसे स्रोत भाषा कहा जाता है और जिस भाषा में उस पाठ का रूपांतरण किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है। अनुवाद की सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि स्रोत भाषा में व्यक्त विचार, भाव और आशय लक्ष्य भाषा में किस सीमा तक स्वाभाविक और सटीक रूप में व्यक्त हो पाए हैं। इस संदर्भ में समतुल्यता की संकल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

समतुल्यता का तात्पर्य यह है कि स्रोत भाषा के पाठ में निहित अभिप्रेत अर्थ को लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव और उद्देश्य के साथ व्यक्त किया जाए। यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है। यदि अनुवादक केवल स्रोत भाषा के शब्दों को ही आधार बनाकर लक्ष्य भाषा में शब्द रख देता है, तो अनुवाद शाब्दिक बन जाता है और उसका अर्थ कई बार अस्पष्ट या अस्वाभाविक हो सकता है। इसलिए अनुवाद में शब्दों से अधिक महत्व उनके द्वारा व्यक्त किए जाने वाले भाव और आशय को दिया जाता है।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति, संरचना और अभिव्यक्ति शैली प्राय: भिन्न होती है। इसलिए अनुवादक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति स्वाभाविक बनी रहे और उस पर स्रोत भाषा का अनावश्यक प्रभाव न पड़े। साथ ही यह भी आवश्यक है कि मूलपाठ का भाव और उद्देश्य सुरक्षित रहे। इस प्रकार अनुवाद में मूलपाठ और अनूदित पाठ के बीच एक संतुलन स्थापित करना पड़ता है। इस संतुलन को स्थापित करने में अनुवादक का विवेक, अनुभव और भाषिक दक्षता अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संबंध में यह भी देखा जाता है कि अनुवाद में मूलपाठ और अनूदित पाठ के बीच दूरी कम भी हो सकती है और अधिक भी। कभी-कभी दोनों के बीच संरचनात्मक समानता बहुत अधिक होती है, जबकि कई बार लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य को पूरी तरह रूपांतरित करना पड़ता है। इसी आधार पर अनुवाद को तीन प्रकारों में विभाजित किया जाता है-न्यूनतम दूरी, मध्यम दूरी और अधिकतम दूरी।

1.स्रोत भाषा से न्यूनतम दूरी वाले अनुवाद

इस प्रकार के अनुवाद में स्रोत भाषा के वाक्य और लक्ष्य भाषा के वाक्य के बीच संरचनात्मक समानता अधिक होती है। केवल भाषा बदलती है, पर अर्थ और वाक्यक्रम लगभग समान रहता है। उदाहरण—

He has gone home.

वह घर चला गया है।

I am very hungry.

मुझे बहुत भूख लगी है।

Relief material has been sent to quake-affected areas.

भूकम्प से प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री भेज दी गई है।

Drugs and nutrients in our food can sometimes bind together to form compounds that the body cannot absorb.

हमारे भोजन में उपस्थित औषधीय और पोषक तत्व कभी-कभी मिलकर ऐसे यौगिक बना लेते हैं जिन्हें शरीर अवशोषित नहीं कर पाता।

We can easily determine the size of objects in daily use with an ordinary measuring scale.

दैनिक उपयोग की वस्तुओं का आकार साधारण माप-पट्टी की सहायता से आसानी से निर्धारित किया जा सकता है।

इसी प्रकार-

The sun rises in the east.

सूर्य पूर्व दिशा में उगता है।

She is reading a book.

वह एक पुस्तक पढ़ रही है।

इन उदाहरणों में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के वाक्यों में अंतर बहुत कम है, इसलिए इन्हें न्यूनतम दूरी के उदाहरण माना जाता है।

2.स्त्रोत भाषा से मध्यम दूरी वाले अनुवाद

कुछ परिस्थितियों में स्त्रोत भाषा की अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक बनाने के लिए वाक्य संरचना में परिवर्तन करना पड़ता है। ऐसे अनुवादों में मूलपाठ और अनूदित पाठ के बीच मध्यम स्तर की दूरी दिखाई देती है। उदाहरण-

Ever since the Italian astronomer Giovanni Schiaparelli described certain lines on Mars as 'canals', human curiosity about life on the Red Planet has remained high.

इटली के खगोलविज्ञानी जियोवानी स्कियापरेली ने जब मंगल ग्रह पर दिखाई देने वाली कुछ रेखाओं को 'नहर' कहा, तभी से इस लाल ग्रह पर जीवन की संभावना के प्रति मानव की जिज्ञासा बनी हुई है।

A combination of seven effective herbs. It cures cough and fever caused by cold and is also useful in sore throat.

यह सात प्रभावी जड़ी-बूटियों का मिश्रण है, जो सर्दी-जुकाम से होने वाली खाँसी और बुखार में लाभकारी है तथा गले की खराश में भी उपयोगी है।

इसी प्रकार-

Education is the key to success.

सफलता प्राप्त करने का प्रमुख साधन शिक्षा है।

The meeting was postponed due to heavy rain.

भारी वर्षा के कारण बैठक को स्थगित कर दिया गया।

इन उदाहरणों में अर्थ समान रहता है, परंतु लक्ष्य भाषा की संरचना के अनुसार वाक्य में परिवर्तन दिखाई देता है।

3.स्त्रोत भाषा से अधिकतम दूरी वाले अनुवाद

कभी-कभी लक्ष्य भाषा की स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए वाक्य को इस प्रकार बदलना पड़ता है कि मूल और अनूदित वाक्य में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। उदाहरण—

Ramesh was the last person to come.

सबसे अंत में रमेश आया।

Real quality that sà¿eaks.

गुणवत्ता जो स्वयं अपनी पहचान कराती है।

In 1999 we organized an expedition to Kachchh in Gujarat because the weather was expected to be clear, but unfortunately clouds and rain spoiled our à¿lans.

सन् 1999 में हमने गुजरात के कच्छ क्षेत्र में एक अभियान आयोजित किया क्योंकि वहाँ मौसम साफ रहने की संभावना थी, किंतु दुर्भाग्यवश बादलों और वर्षा के कारण हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो सका।

इसी प्रकार-

Time and tide wait for none.

समय किसी के लिए नहीं रुकता।

Out of sight, out of mind.

आँखों से दूर तो मन से भी दूर।

रूढ़ अभिव्यक्तियाँ और कहावतें

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच कभी-कभी औपचारिक समानता बिल्कुल नहीं रहती, फिर भी अर्थ की दृष्टि से पूर्ण समतुल्यता बनी रहती है। यह स्थिति विशेष रूप से मुहावरों और कहावतों में देखी जाती है। उदाहरण—

Ladies and Gentlemen!

भाइयों और बहनों!

Good Night!

शुभ रात्रि!

Barking dogs seldom bite.

जो अधिक गरजते हैं, वे प्राय: नुकसान नहीं पहुँचाते।

Make hay while the sun shines.

समय रहते अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि अनुवाद में मूल उद्देश्य स्त्रोत भाषा के आशय को लक्ष्य भाषा में प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करना है।

व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद का पारस्परिक संबंध

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के अध्ययन में व्यतिरेकी विश्लेषण का विशेष महत्व है। व्यतिरेकी विश्लेषण का उद्देश्य दो भाषाओं की संरचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना होता है। अनुवाद में स्त्रोत भाषा के कथन को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित किया जाता है, जबकि व्यतिरेकी विश्लेषण में दोनों भाषाओं की व्याकरणिक और संरचनात्मक विशेषताओं की तुलना की जाती है।

भाषा की संरचना मुख्यत: चार स्तरों पर आधारित होती है-ध्वनि, रूप, वाक्य और शब्द। इनमें रूप, वाक्य और शब्द अर्थ व्यक्त करने वाले प्रमुख तत्व हैं। रूप और वाक्य भाषा की व्याकरणिक संरचना से संबंधित होते हैं, जबकि शब्द अर्थबोध का साधन होते हैं। व्यतिरेकी विश्लेषण के माध्यम से यह समझा जाता है कि स्त्रोत भाषा की संरचना लक्ष्य भाषा में किस प्रकार व्यक्त होती है।

उदाहरण

He has come.

वह आ गया है।

She has come.

वह आ गई है।

इन वाक्यों में अंग्रेज़ी (स्त्रोत भाषा) में लिंगभेद द्धद्द और ह्यद्धद्द सर्वनामों से व्यक्त होता है, जबकि हिंदी (लक्ष्य भाषा) में वही भेद क्रिया के रूप गया और गई से प्रकट होता है।

एक अन्य उदाहरण–

Is this your book?

क्या यह तुम्हारी किताब है?

यहाँ अंग्रेज़ी में प्रश्न बनाने के लिए वाक्यक्रम बदल दिया जाता है, जबकि हिंदी में क्या शब्द का प्रयोग करके प्रश्नवाचकता व्यक्त की जाती है।

इसी प्रकार–

Please come in.

अंदर आइए।

Please sit here.

यहाँ बैठिए।

इन उदाहरणों में अंग्रेज़ी के please का भाव हिंदी में क्रिया के शिष्ट रूप आइए और बैठिए के माध्यम से व्यक्त हो जाता है।

समान स्तर पर भी अंतर

He narrated everything in detail.

उसने सब कुछ विस्तार से बताया।

We will go there tomorrow.

हम वहाँ कल जाएँगे।

यहाँ दोनों भाषाओं में भविष्यत् काल का प्रयोग है, किंतु अंग्रेज़ी का will go विश्लेषित रूप है, जबकि हिंदी का जाएँगे संश्लेषित रूप है।

स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच संरचनात्मक तथा अभिव्यक्तिगत भिन्नताएँ स्वाभाविक होती हैं। इन भिन्नताओं को समझे बिना किया गया अनुवाद प्राय: शाब्दिक और अस्वाभाविक हो जाता है। व्यतिरेकी विश्लेषण के माध्यम से अनुवादक यह समझ सकता है कि स्त्रोत भाषा की किसी अभिव्यक्ति का लक्ष्य भाषा में समकक्ष रूप किस स्तर पर उपलब्ध है—शब्द, रूप या वाक्य।समतुल्यता, व्यतिरेकी विश्लेषण और स्त्रोत–लक्ष्य भाषा का संबंध अनुवाद की प्रक्रिया को अधिक वैज्ञानिक और प्रभावी बनाता है। इन्हीं के समन्वय से अनुवाद स्वाभाविक, अर्थपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण बन पाता है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

अनुवाद अध्ययन में मूल्यांकन, पुनरीक्षण और समीक्षा जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से अनूदित पाठ की गुणवत्ता, संप्रेषणीयता और प्रयोजन-सिद्धि का परीक्षण किया जाता है जिससे अनुवाद को केवल अभ्यास नहीं बल्कि विश्लेषणात्मक अध्ययन के रूप में समझा जाता है।

2.6स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संदर्भ में संस्कृति के विकास में अनुवाद की भूमिका

किसी भी समाज या राष्ट्र की संस्कृति के विकास में भाषा और साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक मान्यताओं को व्यक्त करता है। साहित्य इन मान्यताओं को स्थायी रूप प्रदान करता है और समाज के नैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मानकों की स्थापना में सहायक होता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं है, बल्कि मानव चेतना और

सांस्कृतिक पहचान की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है।

संस्कृति और भाषा का संबंध अत्यंत घनिष्ठ होता है। भाषा संस्कृति को अभिव्यक्त भी करती है और उसे संरक्षित भी करती है। किसी भी समाज के रीति-रिवाज, विद्वास, परम्पराएँ और जीवन-मूल्य भाषा तथा साहित्य के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं। इसी कारण जब भाषाओं का विकास होता है तो संस्कृति का भी विकास होता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य करता है, क्योंकि अनुवाद के माध्यम से एक भाषा और संस्कृति के विचार दूसरी भाषा और संस्कृति तक पहुँचते हैं। इस संदर्भ में अनुवाद की प्रक्रिया में दो भाषाएँ प्रमुख होती हैं-स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा। स्त्रोत भाषा वह भाषा होती है जिसमें मूल पाठ लिखा या कहा गया होता है, जबकि लक्ष्य भाषा वह भाषा होती है जिसमें उस पाठ का अनुवाद किया जाता है।

संस्कृतियों के संपर्क और भाषायी परिवर्तन

इतिहास में अनेक बार विभिन्न संस्कृतियों का आपसी संपर्क हुआ है। जब दो संस्कृतियाँ एक-दूसरे के निकट आती हैं तो भाषा उनके बीच संवाद स्थापित करने का कार्य करती है। इस प्रक्रिया में एक भाषा दूसरी भाषा को प्रभावित करती है और दोनों के स्वरूप में परिवर्तन होने लगता है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके परिणामस्वरूप भाषाएँ समय के साथ विकसित होती रहती हैं।

भारत के इतिहास में इसका स्पष्ट उदाहरण मुसलमानों के आगमन के बाद देखने को मिलता है। जब अरब और मध्य एशिया के लोगों का भारत से संपर्क हुआ तो भारतीय संस्कृति और इस्लामी संस्कृति का परस्पर आदान-प्रदान आरम्भ हुआ। उस समय अरबी और फारसी भाषाएँ प्रशासन और विद्या की प्रमुख भाषाएँ थीं। परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में अरबी और फारसी शब्दों का प्रवेश हुआ। साथ ही संस्कृत, प्राकृत और हिंदी के ग्रंथों का फारसी में तथा फारसी ग्रंथों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने लगा।

इसी सांस्कृतिक और भाषायी संपर्क के परिणामस्वरूप एक नई भाषा-रूप का विकास हुआ जिसे आगे चलकर उर्दू के नाम से जाना गया। प्रारम्भिक काल में हिंदी और उर्दू में अंतर मुख्यत: शब्दावली के आधार पर था—उर्दू में फारसी-अरबी शब्दों का प्रभाव अधिक था, जबकि हिंदी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता था। समय के साथ दोनों भाषाएँ अलग-अलग साहित्यिक परंपराओं के साथ विकसित हुईं।

यूरोपीय संपर्क और भाषायी प्रभाव

सोलहवीं शताब्दी से भारत का संपर्क यूरोपीय देशों से बढ़ने लगा। पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेज व्यापारी भारत आए और धीरे-धीरे यहाँ अपने उपनिवेश स्थापित किए। इस संपर्क का प्रभाव भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा। हिंदी में अंग्रेजी, पुर्तगाली और फ्रांसीसी भाषाओं के अनेक शब्द प्रचलित हुए, जैसे—अलमारी (पुर्तगाली), कमीज़ (अरबी-फारसी मार्ग से), टेबल, स्कूल, स्टेशन आदि।

इस काल में संस्कृत और हिंदी के अनेक ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया और यूरोपीय साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने लगा। उदाहरण के लिए कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद होने से भारतीय साहित्य को विद्-स्तर पर पहचान मिली।

उन्नीसवीं शताब्दी में राजा लक्ष्मण सिंह ने संस्कृत के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् का हिंदी अनुवाद किया। उस समय हिंदी साहित्य की भाषा के रूप में ब्रजभाषा का प्रयोग प्रचलित था, इसलिए उन्होंने अपने अनुवाद में ब्रजभाषा का प्रयोग किया किंतु आधुनिक काल में यदि उसी कृति का अनुवाद किया जाए तो संभवत: खड़ी बोली हिंदी को माध्यम बनाया जाएगा, क्योंकि आज यही हिंदी साहित्य की प्रमुख भाषा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद की भाषा भी समय के साथ बदलती रहती है।

भाषाओं के विकास और अनुवाद की आवश्यकता

विद् की अनेक भाषाओं के इतिहास में यह देखा गया है कि समय के साथ भाषा का स्वरूप बदलता रहता है। उदाहरण के लिए प्राचीन ग्रीक भाषा में लिखे गए होमर के महाकाव्यों को आधुनिक ग्रीक भाषा में समझना आज के पाठकों के लिए कठिन हो सकता है। इसी प्रकार अंग्रेजी भाषा का स्वरूप भी मध्यकालीन काल में चॉसर और शेक्सपियर के समय से लेकर आज तक बहुत बदल चुका है। इसलिए पुराने साहित्य को आधुनिक पाठकों तक पहुँचाने

के लिए उसका नए भाषा-रूप में अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है।

अंग्रेजी भाषा के विद्व्यापी प्रसार के कारण उसके अनेक रूप विकसित हुए हैं—ब्रिटिश अंग्रेजी, अमेरिकी अंग्रेजी, ऑस्ट्रेलियाई अंग्रेजी आदि। भारत में प्रयुक्त अंग्रेजी भी इनसे भिन्न रूप में विकसित हुई है जिसे अक्सर भारतीय अंग्रेजी कहा जाता है। इसी कारण जब भारतीय भाषाओं का अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता है तो कभी-कभी भाषा की शैली विदेशी पाठकों के लिए भिन्न या अपरिचित प्रतीत होती है।

संस्कृति के विकास में अनुवाद का महत्व

भाषा और साहित्य संस्कृति की अभिव्यक्ति के प्रमुख माध्यम हैं। चूँकि अनुवाद के माध्यम से एक भाषा का साहित्य दूसरी भाषा तक पहुँचता है, इसलिए अनुवाद को संस्कृति के विकास और प्रसार का महत्वपूर्ण साधन माना जा सकता है। इतिहास में लगभग सभी सभ्यताओं में मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के साहित्य का अनुवाद होता रहा है। एक भाषा की रचना दूसरी भाषा में, फिर तीसरी भाषा में पहुँचती है और इस प्रकार सांस्कृतिक आदान-प्रदान का क्रम निरंतर चलता रहता है।

मौखिक साहित्य का अनुवाद

संस्कृति के प्रसार में मौखिक साहित्य की विशेष भूमिका होती है। लोककथाएँ, पहेलियाँ, कहावतें, लोकगीत और लोरियाँ जैसी रचनाएँ एक भाषा से दूसरी भाषा में बिना किसी औपचारिक अनुवाद के ही प्रचलित हो जाती हैं। सामाजिक संपर्क के माध्यम से लोग एक-दूसरे की भाषा को समझने लगते हैं और मौखिक अनुवाद के माध्यम से लोक साहित्य का प्रसार होता रहता है।

उदाहरण के लिए पंचतंत्र और जातक कथाएँ पहले संस्कृत और पालि भाषाओं में प्रचलित थीं, परंतु समय के साथ उनका अनुवाद फारसी, अरबी, लैटिन और अनेक यूरोपीय भाषाओं में हुआ। इसी प्रकार कई भारतीय लोककथाएँ दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों तक पहुँचीं और वहाँ की स्थानीय संस्कृतियों के अनुसार परिवर्तित रूप में विकसित हुईं।

लिखित अनुवाद और सांस्कृतिक विस्तार

लिखित अनुवाद का इतिहास भी अत्यंत प्राचीन है। भारत के बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद पहली शताब्दी ईस्वी से ही प्रारम्भ हो गया था। परिणामस्वरूप चीन, जापान और कोरिया जैसे देशों में बौद्ध धर्म तथा भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ।

इसी प्रकार तिब्बत में संस्कृत और पालि के हजारों ग्रंथों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया गया। इन अनुवादों के कारण तिब्बती भाषा में एक समृद्ध साहित्यिक परंपरा विकसित हुई। दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों—जैसे थाईलैंड, कंबोडिया, इंडोनेशिया और लाओस—में भी भारतीय ग्रंथों के अनुवाद के माध्यम से भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति का प्रभाव पहुँचा।

पश्चिम एशिया में भी अनुवाद का एक महत्वपूर्ण आंदोलन हुआ। अब्बासी खलीफाओं के काल में संस्कृत के गणित, चिकित्सा, खगोल विज्ञान और राजनीति से संबंधित ग्रंथों का अरबी में अनुवाद किया गया। भारतीय अंक पद्धति इसी माध्यम से अरब देशों में पहुँची और वहाँ से यूरोप तक फैल गई। प्रसिद्ध विद्वान अल-बिरूनी ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन और अनुवाद में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आधुनिक युग में अनुवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान

आज संचार और परिवहन के साधनों के विकास के कारण विद्व पहले की तुलना में अधिक निकट आ गया है। इंटरनेट, टेलीविजन, फिल्म, साहित्य और शिक्षा के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का आदान-प्रदान तेजी से बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

उदाहरण के लिए आज विद्व के अनेक देशों में भारतीय योग, आयुर्वेद और दर्शन से संबंधित ग्रंथों का अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जा रहा है। दूसरी ओर भारतीय समाज में भी पश्चिमी साहित्य, विज्ञान और तकनीकी ज्ञान का प्रवेश अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है।

स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच स्थापित होने वाला अनुवाद केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं है, बल्कि

वह संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का माध्यम है। अनुवाद के द्वारा विभिन्न समाजों के विचार, ज्ञान, साहित्य और सांस्कृतिक मूल्य एक-दूसरे तक पहुँचते हैं। इस प्रकार अनुवाद न केवल भाषा और साहित्य के विकास में सहायक है, बल्कि विद्व की विभिन्न संस्कृतियों के पारस्परिक विकास और समृद्धि का भी एक महत्वपूर्ण आधार है।

23.7 सारांश

- इस इकाई में अनुवाद अध्ययन के महत्वपूर्ण पक्ष स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। अनुवाद की प्रक्रिया में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और सूचनाओं को दूसरी भाषा में प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जाता है। स्रोत भाषा वह भाषा होती है जिसमें मूल पाठ या सामग्री लिखी जाती है, जबकि लक्ष्य भाषा वह भाषा होती है जिसमें उस सामग्री का अनुवाद किया जाता है। अनुवादक का मुख्य कार्य यह होता है कि वह स्रोत भाषा के भाव, आशय और अर्थ को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करे।
- इस इकाई में मुख्य विषय के रूप में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की चर्चा की गई है। इसके साथ-साथ अनुवाद से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण अवधारणाओं जैसे मूल पाठ, अनूदित पाठ, मूल भाषा, सेतु भाषा, समतुल्यता मात्रिका युग्म और भाषिक दक्षता आदि विषयों को भी स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की पृष्ठभूमि में समझाया गया है। सामान्यत: स्रोत भाषा को मूल भाषा माना जाता है, किंतु कई बार अनुवाद सीधे मूल भाषा से न होकर किसी अन्य भाषा के माध्यम से किया जाता है। ऐसी स्थिति में उस मध्यस्थ भाषा को सेतु भाषा कहा जाता है। इसलिए अनुवाद के अध्ययन में सेतु भाषा की अवधारणा को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।
- अनुवाद की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवादक स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच किस प्रकार की समतुल्यता स्थापित कर पाता है। समतुल्यता का अर्थ है कि अनूदित पाठ में वही अर्थ, भाव और प्रभाव बना रहे जो मूल पाठ में निहित है। यदि अनुवादक दोनों भाषाओं की संरचना, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए समुचित समतुल्यता स्थापित कर लेता है, तो अनुवाद प्रभावी और सफल माना जाता है। इस प्रकार इस इकाई के माध्यम से स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा तथा अनुवाद प्रक्रिया में उनकी महत्ता को स्पष्ट किया गया है, जो अनुवाद की गुणवत्ता और अनुवादक की दक्षता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

K3.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेख)

प्रश्न 1 का उत्तर: किसी एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और सूचनाओं को दूसरी भाषा में उसी अर्थ और भाव के साथ प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को अनुवाद कहा जाता है।

प्रश्न 2 का उत्तर: जिस भाषा में मूल पाठ या सामग्री लिखी या कही गई होती है, उसे स्रोत भाषा कहा जाता है।

प्रश्न 3 का उत्तर: जिस भाषा में स्रोत भाषा की सामग्री का अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है।

प्रश्न 4 का उत्तर: जब अनुवाद सीधे मूल भाषा से न होकर किसी तीसरी भाषा के माध्यम से किया जाता है, तो उस मध्यवर्ती भाषा को सेतु भाषा कहा जाता है।

प्रश्न 5 का उत्तर: मूलपाठ वह सामग्री है जो मूल भाषा में लिखी जाती है, जबकि अनूदित पाठ उसी सामग्री का दूसरी भाषा में किया गया रूपांतरण होता है।

प्रश्न 6 का उत्तर: अनुवाद जिन दो भाषाओं के बीच किया जाता है, उन्हें भाषिक युग्म कहा जाता है, जैसे अंग्रेज़ी-हिन्दी या हिन्दी-अंग्रेज़ी।

O3.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- शुक्ल, आनन्द कुमार. (2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद: सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2014). अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली: किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
- मिश्र, शिवकुमार. (2012). भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
- शास्त्री, रमेशचंद्र. (2013). संस्कृत साहित्य और भारतीय अनुवादपरंपरा. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
- वर्मा, कृष्णदत्त. (2016). भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का अनुवाद-बोध. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

M3.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट कीजिए।

2.अनुवाद की प्रक्रिया में स्त्रोत भाषा की भूमिका पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

3. लक्ष्य भाषा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता को संक्षेप में समझाइए।

4.अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों को सुरक्षित रखना क्यों आवश्यक है ?

5.अनुवाद की गुणवत्ता निर्धारित करने में भाषिक दक्षता की क्या भूमिका है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.अनुवाद में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अवधारणा को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

2.मूलपाठ, अनूदित पाठ, सेतु भाषा और भाषिक युग्म की संकल्पनाओं का विस्तार से विवेचन कीजिए।

3.स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के परिप्रेक्ष्य में समतुल्यता तथा व्यतिरेकी विश्लेषण की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

4.अनुवाद के माध्यम से संस्कृति के विकास में स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की भूमिका पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

5.अनुवाद की सफलता के लिए स्त्रोत भाषा की समझ और लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति के महत्व का विवेचन कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 4 अनुवाद के संबंध में पाश्चात्य सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

4.1.उद्देश्य
4.2प्रस्तावना
4.3 प्राचीन विश्व में अनुवाद परंपरा
4.4मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा
4.5 मध्यकालीन पश्चिम सिद्धांत
4.6 औपचारिक अनुवाद परंपरा
4.7 आधुनिक युग में अनुवाद (19वीं-20 वीं शताब्दी)
4.8 अमेरिकी अनुवाद परंपरा एवं आधुनिक अनुवाद सिद्धांत
4.9 कनाडाई अनुवाद परंपरा और सिद्धांत
4.10 सारांश
4.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
4.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें
4.13 अभ्यास प्रश्न

4.1. उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन से आप

- पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों की मूल अवधारणा और विकास की पृष्ठभूमि के विषय में जानेंगे।
- प्रमुख पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतकारों के विचारों और उनके योगदान को समझ सकेंगे।
- पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों में समतुल्यता, निष्ठा और अभिव्यक्ति के महत्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- अनुवाद के संदर्भ में शब्दानुवाद और भावानुवाद की अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- पाश्चात्य विचारकों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद के विभिन्न दृष्टिकोणों और सिद्धांतों से परिचित होंगे।
- पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों के आधार पर अनुवाद की गुणवत्ता और प्रभावशीलता के मानकों को समझ सकेंगे।

4.2 प्रस्तावना

अनुवाद भाषा और संस्कृति के बीच सेतु का कार्य करता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक भाषा में व्यक्त विचारों, भावों और ज्ञान को दूसरी भाषा में प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जाता है। विद्र के विभिन्न देशों में अनुवाद की परंपरा बहुत प्राचीन रही है और समय के साथ इसके सिद्धांतों का भी विकास हुआ है। विशेष रूप से पाश्चात्य देशों में अनुवाद को एक महत्वपूर्ण बौद्धिक और साहित्यिक क्रिया के रूप में स्वीकार किया गया तथा अनेक विद्वानों ने इसके स्वरूप, उद्देश्य और पद्धति पर गहन विचार प्रस्तुत किए। इन्हीं विचारों के आधार पर अनुवाद के अनेक पाश्चात्य सिद्धांत विकसित हुए, जिन्होंने अनुवाद अध्ययन को एक स्वतंत्र और व्यवस्थित अनुशासन के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों में अनुवाद की प्रकृति, उसके उद्देश्य, अनुवादक की भूमिका तथा स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के संबंधों पर विशेष रूप से विचार किया गया है। इन सिद्धांतों में यह प्रश्न प्रमुख रहा है कि अनुवाद करते समय मूल पाठ के प्रति निष्ठा कितनी होनी चाहिए और लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति कितनी स्वाभाविक होनी चाहिए। इसी संदर्भ में शब्दानुवाद और भावानुवाद की अवधारणाएँ भी महत्वपूर्ण मानी गई हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने यह स्पष्ट करने का

प्रयास किया कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है बल्कि यह अर्थ, भाव और सांस्कृतिक संदर्भों को एक भाषा से दूसरी भाषा में संप्रेषित करने की जटिल प्रक्रिया है।

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के संबंध में पाश्चात्य सिद्धांतों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अंतर्गत प्रमुख पाश्चात्य विचारकों द्वारा प्रतिपादित अनुवाद संबंधी दृष्टिकोणों और सिद्धांतों का परिचय दिया जाएगा। साथ ही अनुवाद में निष्ठा, समतुल्यता, अभिव्यक्ति और संप्रेषणीयता जैसे महत्वपूर्ण तत्वों पर भी चर्चा की जाएगी। इस इकाई के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि पाश्चात्य सिद्धांतों ने अनुवाद के स्वरूप और उसकी कार्यप्रणाली को किस प्रकार प्रभावित किया है तथा अनुवाद की गुणवत्ता और प्रभावशीलता के निर्धारण में इन सिद्धांतों की क्या भूमिका रही है।

4.3 प्राचीन विश्व में अनुवाद परंपरा

प्राचीन विश्व में अनुवाद की परंपरा मानव सभ्यता के बौद्धिक इतिहास की एक मूलभूत और अनिवार्य प्रक्रिया रही है। जैसे ही मानव समाज ने सीमित भौगोलिक दायरे से बाहर निकलकर अन्य समुदायों, भाषाओं और संस्कृतियों से संपर्क स्थापित किया, वैसे ही संप्रेषण की जटिल समस्या सामने आई है। भाषाओं में व्यक्त विचार नियमों, धार्मिक विस्वास और ज्ञान-परंपराओं को समझने तथा अपनाने के लिए अनुवाद अपरिहार्य हो गया। इस प्रकार अनुवाद प्रारंभ में किसी साहित्यिक कला या सैद्धांतिक अनुशासन के रूप में नहीं, बल्कि प्रशासनिक, धार्मिक, व्यापारिक और शैक्षिक आवश्यकता के रूप में विकसित हुआ। धीरे-धीरे यह व्यावहारिक आवश्यकता एक संगठित परंपरा में परिवर्तित हुई, जिसने ज्ञान के संरक्षण, विस्तार और अंत:सांस्कृतिक संवाद को संभव बनाया।

प्राचीन सभ्यताओं- जैसे सुमेर, अक्कादी, बेबीलोन, मिस्र, यूनान और रोममें उपलब्ध अनुवाद-साक्ष्य यह सिद्ध करते हैं कि अनुवाद केवल भाषा-परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं था, बल्कि सत्ता, संस्कृति और ज्ञान के हस्तांतरण का प्रभावी साधन भी था। इन सभ्यताओं में अनुवाद का स्वरूप भिन्न-भिन्न रहा किंतु उसका केंद्रीय उद्देश्य समान था- अर्थ और ज्ञान को एक भाषिक-सांस्कृतिक व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था तक पहुँचाना। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि अनुवाद प्राचीन विद्र में सभ्यता-निर्माण की प्रक्रिया का अभिन्न अंग था।

(1) सुमेर-अक्कादी परंपरा: द्विभाषिकता से अनुवाद की स्थापना

प्राचीन सुमेर सभ्यता (आधुनिक इराक क्षेत्र) को विश्व की पहली नगरीय सभ्यता माना जाता है। यहाँ ईसा-पूर्व तीसरी सहस्राब्दी में सुमेरी और अक्कादी भाषाओं का सहअस्तित्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सुमेरी भाषा धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़ी थी जबकि अक्कादी एक सेमेटिक भाषा थी, जिसने धीरे-धीरे प्रशासनिक और राजकीय भाषा का स्वरूप ग्रहण कर लिया। इस द्विभाषिक स्थिति ने अनुवाद की आवश्यकता को जन्म दिया और अनुवाद को एक संगठित गतिविधि के रूप में विकसित किया।

सुमेर-अक्कादी सभ्यता में अनुवाद के सबसे प्राचीन और ठोस प्रमाण द्विभाषिक शब्दकोशों, व्याकरणिक â¢Ø5¥ ðÚâ×ææèÚÂæ5 (parallel texts) के रूप में प्राप्त होते हैं। मिट्टी की पट्टिकाओं पर एक ही पाठ को सुमेरी और अक्कादी- दोनों भाषाओं में अंकित किया जाता था। इनका उद्देश्य केवल संप्रेषण नहीं था, बल्कि लिपिकारों (scribes) को भाषिक प्रशिक्षण देना भी था। प्रसिद्ध Edubba (scribal schools) में छात्रों को एक भाषा से दूसरी भाषा में पाठ रूपांतरित करने का अभ्यास कराया जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद यहाँ एक शैक्षिक अनुशासन के रूप में विकसित हुआ।

धार्मिक स्तुतियाँ, देवताओं के लिए रचित मंत्र, Temple Hymns, प्रशासनिक आदेश, भूमि-लेख, करसंबंधी दस्तावेज और विधि-सूत्र-इन सभी का द्विभाषिक रूप उपलब्ध है। उदाहरण के लिए, सुमेरी धार्मिक ग्रंथ ymns to Inanna का अक्कादी अनुवाद यह दर्शाता है कि जब सुमेरी भाषा धीरे-धीरे बोलचाल से विलुप्त होने लगी, तब अक्कादी अनुवादों के माध्यम से सुमेरी ज्ञान-परंपरा को संरक्षित किया गया। इस प्रकार अनुवाद ज्ञान-संरक्षण (preservation of knowledge) का सशक्त माध्यम बना।

इस चरण में अनुवाद मुख्यत: अर्थप्रधान (sense-oriented) था। शाब्दिक समानता की अपेक्षा कार्यात्मक और सांस्कृतिक समतुल्यता पर अधिक बल दिया गया। आधुनिक अनुवादसिद्धांत में जिसे functional equivalence

कहा जाता है, उसकी प्रारंभिक झलक यहाँ मिलती है। यही प्रवृत्ति आगे चलकर बेबीलोन और मिस्र जैसी सभ्यताओं में और अधिक विकसित रूप में दिखाई देती है।

(2) बेबीलोन सभ्यता: विधि, विज्ञान और व्याख्यात्मक अनुवाद

बेबीलोन सभ्यता में अनुवाद की परंपरा सुमेर से प्राप्त विरासत का विकसित और विस्तारित रूप थी। यहाँ अनुवाद का क्षेत्र केवल धार्मिक या शैक्षिक न रहकर विधिक, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों तक फैल गया। बेबीलोन की प्रसिद्ध Code of Hammurabi (ईसापूर्व 18वीं शताब्दी) इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। यह विधिसंहिता केवल एक भाषा तक सीमित नहीं रही, बल्कि विभिन्न भाषिक समुदायों तक इसके नियमों और अवधारणाओं को पहुँचाने के लिए अनुवाद और व्याख्या की आवश्यकता पड़ी।

बेबीलोन में खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा और ज्योतिष से संबंधित अनेक ग्रंथों का अनुवाद हुआ। Astronomical Diaries, गणनात्मक तालिकाएँ और चिकित्सा-ग्रंथ- इन सभी में सुमेरी और अक्कादी दोनों भाषाओं का प्रयोग मिलता है। प्रसिद्ध चिकित्सा ग्रंथ Diagnostic Handbook (Sakikkû) के अंश द्विभाषिक रूप में उपलब्ध हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि वैज्ञानिक ज्ञान के संरक्षण और विकास में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

बेबीलोन की अनुवाद परंपरा की एक विशिष्ट विशेषता यह थी कि यहाँ अनुवाद केवल लिखित प्रक्रिया नहीं था, बल्कि मौखिक-लिखित संयुक्त परंपरा के रूप में विकसित हुआ। शिक्षण संस्थानों में शिक्षक पहले मौखिक व्याख्या करते थे और फिर छात्रों से उसका लिखित रूपांतरण कराया जाता था। इससे अनुवाद व्याख्यात्मक (interpretative) स्वरूप ग्रहण करता गया। यह परंपरा आगे चलकर यूनानी दार्शनिक विमर्श की आधारभूमि बनी, जहाँ अर्थ और संदर्भ को प्राथमिकता दी गई। यह भी उल्लेखनीय है कि बेबीलोन में अनुवाद को सत्ता और प्रशासन से जोड़कर देखा गया। विधि-संहिताओं और शाही आदेशों का अनुवाद यह सुनिश्चित करता था कि शासन की नीतियाँ विभिन्न भाषिक समुदायों तक समान रूप से पहुँच सकें। इस प्रकार अनुवाद यहाँ सामाजिक नियंत्रण और प्रशासनिक समन्वय का साधन बन गया।

(3) प्राचीन मिस्र: प्रशासन, कूटनीति और दुभाषियों की भूमिका

प्राचीन मिस्र में अनुवाद की परंपरा मुख्यत: प्रशासनिक, कूटनीतिक और साम्राज्यवादी आवश्यकताओं से जुड़ी हुई थी। मिस्र का साम्राज्य नूबिया, सीरिया, फिलिस्तीन और एशिया माइनर तक फैला हुआ था, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और जातीय समुदाय विद्यमान थे। इस बहुभाषिक परिस्थिति में शासन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए अनुवाद और दुभाषियों की भूमिका अनिवार्य हो गई। मिस्र में दुभाषियों (interpreters) का एक संगठित वर्ग पाया जाता है, जो राजदरबार, सैन्य अभियानों और व्यापारिक गतिविधियों में सक्रिय था। शिलालेखों और अभिलेखों से संकेत मिलता है कि ये दुभाषिये केवल भाषा-ज्ञान तक सीमित नहीं थे, बल्कि सांस्कृतिक मध्यस्थ की भूमिका भी निभाते थे। वे विभिन्न समुदायों के सांस्कृतिक संकेतों और परंपराओं को समझकर संप्रेषण को संभव बनाते थे। मिस्र में अनुवाद के सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण Amarna Letters (ईसा-पूर्व 14वीं शताब्दी) हैं। ये पत्र मिस्र और पश्चिम एशिया के शासकों के बीच राजनयिक संवाद के दस्तावेज हैं, जो मुख्यत: अक्कादी भाषा में लिखे गए हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि अक्कादी उस समय अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक भाषा (lingua franca) बन चुकी थी। यहाँ अनुवाद का उद्देश्य पूर्णत: व्यावहारिक था- सटीक, स्पष्ट और प्रभावी संप्रेषण।

(4) प्राचीन यूनान और रोम: अनुवाद की वैचारिक परिणति

प्राचीन यूनान में अनुवाद की स्थिति अपेक्षाकृत जटिल रही। यूनानी सभ्यता अपनी भाषा, दर्शन और साहित्य को श्रेष्ठ मानती थी, जिसके कारण प्रारंभिक काल में विदेशी ग्रंथों के अनुवाद सीमित रहे। फिर भी, Septuagint-हिब्रू बाइबिल का ग्रीक अनुवाद, यूनानी अनुवाद इतिहास की एक निर्णायक घटना है। यह अनुवाद सामूहिक और संस्थागत प्रयास था तथा इसमें अर्थप्रधान दृष्टि को अपनाया गया।

यूनानी दर्शन में प्लेटोऔर अरस्तूने भाषा, अर्थ और अनुकरण (mimesis) पर जो विचार प्रस्तुत किए, वे अनुवाद-विमर्श की आधारभूमि बने। इन विचारों का प्रभाव रोमन अनुवादपरंपरा में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्राचीन

रोम में अनुवाद ने सैद्धांतिक परिपक्वता प्राप्त की। Cicero और Horace जैसे विद्वानों ने अनुवाद को word-for-word के बजाय sense-for-sense प्रक्रिया माना। Cicero का प्रसिद्ध कथन-

I did not translate as an interpreter, but as an orator.

आधुनिक अनुवाद-सिद्धांतों की आधारशिला माना जाता है। इस प्रकार प्राचीन विद्र में अनुवाद की यात्रा व्यावहारिक आवश्यकता से आरंभ होकर सैद्धांतिक विमर्श तक पहुँचती है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

प्राचीन और मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद ने ज्ञान-संरक्षण, बौद्धिक उत्तराधिकार और अंतर-सांस्कृतिक संवाद की निरंतरता सुनिश्चित की, जिसके माध्यम से यूनानी-रोमन, अरबी-इस्लामी और ईसाई बौद्धिक परंपराएँ परस्पर जुड़ीं और आधुनिक यूरोपीय दर्शन, विज्ञान तथा शिक्षा की आधारभूमि निर्मित हुई।

4.4 मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा

मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा मानव बौद्धिक इतिहास की उन सर्वाधिक निर्णायक प्रक्रियाओं में से एक है, जिसके बिना आधुनिक यूरोप की बौद्धिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक संरचना की कल्पना नहीं की जा सकती। सामान्यत: पाँचवीं शताब्दी से पंद्रहवीं शताब्दी तक फैला यह काल लंबे समय तक अंधकारयुग कहलाता रहा, क्योंकि इसे रोमन साम्राज्य के पतन के बाद राजनीतिक अस्थिरता, सांस्कृतिक ह्रास और बौद्धिक जड़ता का काल माना गया। किंतु आधुनिक इतिहासकारों और अनुवादअध्ययन के विद्वानों ने यह स्पष्ट किया है कि यह धारणा एकांगी है। वास्तव में, मध्यकाल ज्ञान के लोप का नहीं, बल्कि ज्ञान के संरक्षण, स्थानांतरण और पुनर्संयोजन का काल था और इस पूरी प्रक्रिया का केंद्रीय माध्यम अनुवाद रहा। अनुवाद के दृष्टिकोण से मध्यकाल एक ऐसा संक्रमणकाल था जिसमें प्राचीन यूनानी-रोमन ज्ञान, ईसाई धर्मशास्त्र, अरबी-इस्लामी बौद्धिक परंपरा और नवोदित यूरोपीय भाषाएँ एक-दूसरे के संपर्क में आईं। इस संवाद ने न केवल ज्ञान को सुरक्षित रखा, बल्कि उसे नए सांस्कृतिक संदर्भों में पुन: अर्थवान भी बनाया। इसलिए मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद को केवल भाषिक गतिविधि नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और बौद्धिक सेतु के रूप में देखना अधिक उचित है।

(1) रोमन साम्राज्य के पतन के बाद अनुवाद की स्थिति

476 ई. में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के साथ ही यूरोप का राजनीतिक और प्रशासनिक ढाँचा बिखर गया। नगरों का पतन हुआ, शिक्षा के सार्वजनिक केंद्र समाप्त होने लगे और शास्त्रीय यूनानी-लैटिन परंपरा संकट में पड़ गई। इस परिस्थिति में चर्च और मठ ही ऐसे संस्थान थे, जिन्होंने ज्ञान की निरंतरता बनाए रखी। परिणामस्वरूप, अनुवाद और ग्रंथसंरक्षण की जिम्मेदारी मुख्यत: इन्हीं संस्थानों पर आ गई।

इस काल में यूनानी भाषा का प्रत्यक्ष ज्ञान पश्चिमी यूरोप में लगभग लुप्त हो गया। इसलिए अनुवाद का उद्देश्य यूनानी ग्रंथों को नए सिरे से लाना नहीं, बल्कि उपलब्ध लैटिन ज्ञान को सुरक्षित रखना था। मठों में लिपिकार धार्मिक ग्रंथों, बाइबिल, संतों के जीवन-चरित और धर्मशास्त्रीय टिप्पणियों की नकल करते थे। यह प्रक्रिया अनुवाद से अधिक transmission थी, किंतु इसके माध्यम से ज्ञान का प्रवाह बना रहा।

यहाँ अनुवाद की प्रमुख विशेषता थी- धार्मिक शुद्धता। शब्दानुवाद को प्राथमिकता दी जाती थी, ताकि किसी प्रकार का वैचारिक विचलन न हो। इस कारण अनुवाद स्वतंत्र सृजन न होकर नियंत्रित प्रक्रिया बना रहा।

(2) ईसाई चर्च और अनुवाद का संबंध

मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की दिशा, स्वरूप और सीमा को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली संस्था कैथोलिक चर्च थी। रोमन साम्राज्य के पतन (476 ई.) के बाद जब राजनीतिक सत्ता विखंडित हो गई, तब चर्च ही एकमात्र ऐसी संस्था थी जिसने पूरे यूरोप में संगठित रूप बनाए रखा। परिणामस्वरूप, ज्ञान, शिक्षा, संस्कृति और धर्म- सभी क्षेत्रों में चर्च की केंद्रीय भूमिका स्थापित हो गई। इस स्थिति में अनुवाद न तो एक स्वतंत्र बौद्धिक गतिविधि रह

सका और न ही पूर्णत: निषिद्ध हुआ; बल्कि वह प्रोत्साहन और नियंत्रण के द्वंद्व में विकसित हुआ। यही द्वंद्व मध्यकालीन ईसाई अनुवाद परंपरा की मूल विशेषता है।

(i)चर्च द्वारा अनुवाद को प्रोत्साहन

ईसाई धर्म का मूल आधार पवित्र ग्रंथोंविशेषत: बाइबिलपर टिका हुआ था। चूँकि ईसाई धर्म का प्रसार रोमन साम्राज्य से आगे यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा था, इसलिए यह आवश्यक हो गया कि धर्मग्रंथ लोगों की समझ की भाषा में उपलब्ध हों। प्रारंभिक काल में लैटिन पूरे पश्चिमी ईसाई जगत की धार्मिक और शैक्षिक भाषा बनी। इसी कारण चर्च ने लैटिन में अनुवाद को प्रोत्साहन दिया।

बाइबिल, धर्मशास्त्रीय ग्रंथ, संतों के जीवन-चरित (hagiographies), उपदेश-संग्रह (sermons) और धार्मिक विधानों का अनुवाद एवं प्रतिलिपिकरण मठों और चर्च-विद्यालयों में बड़े पैमाने पर किया गया। इस प्रक्रिया का उद्देश्य केवल ग्रंथों की उपलब्धता नहीं था, बल्कि ईसाई सिद्धांतों की एकरूप व्याख्या सुनिश्चित करना भी था। इस दृष्टि से अनुवाद चर्च के लिए धर्म-प्रचार और वैचारिक नियंत्रण का साधन बन गया।

(ii) चर्च द्वारा अनुवाद पर नियंत्रण

जहाँ एक ओर चर्च ने अनुवाद को आवश्यक माना, वहीं दूसरी ओर उसने उस पर कठोर निगरानी भी रखी। चर्च को यह भय था कि यदि ग्रंथों का अनियंत्रित या स्वतंत्र अनुवाद किया गया, तो धार्मिक भ्रांतियाँ (heresies) फैल सकती हैं। इसी कारण चर्च ने यह तय किया कि-

- कौनसे ग्रंथ अनुवादित होंगे
- किस भाषा में अनुवाद होगा
- कौन व्यक्ति अनुवाद करने का अधिकारी होगा

इस नियंत्रण का सबसे स्पष्ट उदाहरण बाइबिल के जनभाषा (vernacular) अनुवादों के प्रति चर्च का विरोध है। मध्यकाल के अधिकांश समय तक चर्च का मत था कि बाइबिल का अध्ययन केवल प्रशिक्षित पादरियों द्वारा लैटिन में ही किया जाना चाहिए। जनसाधारण के लिए बाइबिल का अनुवाद धार्मिक सत्ता को चुनौती देने वाला माना गया।

(iii) सेंट जेरोम और बाइबिल अनुवाद

सेंट जेरोम (Saint Jerome, 347-420 ई.) को मध्यकालीन पाश्चात्य अनुवाद परंपरा की आधारशिला माना जाता है। उनका वास्तविक नाम यूसिबियस हिरोनिमस था। वे न केवल एक महान धर्मशास्त्री थे बल्कि एक कुशल भाषाविद् और अनुवादक भी थे। उन्होंने हिब्रू, ग्रीक और लैटिन भाषाओं का गहन अध्ययन किया, जो उस युग में अत्यंत दुर्लभ माना जाता था। सेंट जेरोम का सबसे महत्वपूर्ण योगदान बाइबिल का लैटिन अनुवाद है, जिसे वल्गेट (Vulgate) कहा जाता है।

जेरोम से पूर्व बाइबिल के अनेक लैटिन अनुवाद प्रचलित थे, जिन्हें सामूहिक रूप से ओल्ड लैटिन वर्ज़न कहा जाता है। ये अनुवाद न केवल भाषिक दृष्टि से असंगत थे, बल्कि अर्थ की दृष्टि से भी अनेक त्रुटियों से युक्त थे। इसी स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से रोमन चर्च ने सेंट जेरोम को एक प्रामाणिक और मानकीकृत लैटिन अनुवाद तैयार करने का कार्य सौंपा। जेरोम ने इस कार्य के लिए मूल हिब्रू और ग्रीक ग्रंथों का सहारा लिया, जो उस समय एक साहसिक और क्रांतिकारी कदम था, क्योंकि अधिकांश अनुवाद पहले से उपलब्ध ग्रीक सेप्टुआजिंट पर आधारित होते थे।

सेंट जेरोम की अनुवाद-दृष्टि उनके प्रसिद्ध कथन में स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है—

I translate not word for word, but sense for sense.

(मैं शब्द प्रति शब्द अनुवाद नहीं करता, बल्कि भाव का अनुवाद करता हूँ।) यह कथन अनुवाद सिद्धांत के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है। जेरोम का मानना था कि यदि अनुवाद केवल शब्दों तक सीमित रहेगा, तो वह अर्थ और भाव को विकृत कर सकता है। उदाहरणस्वरूप, हिब्रू भाषा में अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक पद ऐसे हैं, जिनका शाब्दिक अनुवाद लैटिन में अर्थहीन या भ्रामक हो सकता है। ऐसे में जेरोम ने भावानुवाद को प्राथमिकता दी, जिससे पाठ अधिक बोधगम्य और प्रभावी बन सका।

हालाँकि यह भी सत्य है कि चर्च की कठोर धार्मिक संरचना के कारण व्यवहार में अक्सर शब्दानुवाद पर बल दिया जाता था, विशेषत: धर्मसिद्धांत से जुड़े अंशों में। स्वयं जेरोम को भी कई बार आलोचना का सामना करना पड़ा, क्योंकि कुछ लोगों ने उन पर पवित्र ग्रंथों के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया। फिर भी, जेरोम ने यह स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य धर्मग्रंथ की आत्मा को सुरक्षित रखना है, न कि केवल उसके शब्दों को।

वल्गेट अनुवाद का प्रभाव अत्यंत व्यापक रहा। यह लगभग एक हजार वर्षों तक पश्चिमी ईसाई जगत में आधिकारिक बाइबिल के रूप में स्वीकार किया गया। मध्यकालीन यूरोप में शिक्षा, धर्म, दर्शन और साहित्य पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। बाद में पुनर्जागरण काल में मार्टिन लूथर, जॉन विक्लिफ और अन्य अनुवादकों ने जेरोम की भावानुवाद की अवधारणा से प्रेरणा ली।

(3) मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था और अनुवाद

मध्यकालीन यूरोप में शिक्षा व्यवस्था का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में हुआ, जिसकी शुरुआत मठों (monasteries) से होकर कैथेड्रल स्कूलों तक पहुँची और अंतत: विद्गविद्यालयों के रूप में संस्थागत हुई। इस संपूर्ण विकासक्रम में अनुवाद शिक्षा का केंद्रीय आधार बना रहा, क्योंकि ज्ञान की अधिकांश सामग्री उस भाषा में उपलब्ध नहीं थी, जिसमें शिक्षण कार्य संपन्न होता था। इस प्रकार अनुवाद केवल सहायक गतिविधि न होकर ज्ञान-अर्जन की अनिवार्य पूर्वशर्त बन गया।

प्रारंभिक मध्यकाल में शिक्षा का केंद्र मठ थे, जहाँ भिक्षु धार्मिक प्रशिक्षण के साथ-साथ पढ़ना-लिखना सिखाते थे। मठीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धार्मिक कर्मकांड और धर्मशास्त्र की समझ विकसित करना था। इन मठों में लैटिन को शिक्षा और ज्ञान की भाषा के रूप में अपनाया गया। किंतु धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान के अनेक स्रोत यूनानी, अरबी और हिब्रू भाषाओं में उपलब्ध थे। परिणामस्वरूप, इन ग्रंथों को शिक्षा में सम्मिलित करने के लिए उनका लैटिन अनुवाद आवश्यक हो गया।

9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच कैथेड्रल स्कूलों का उदय हुआ, जो चर्चों से संबद्ध उच्च शिक्षा के केंद्र थे। इन स्कूलों ने शिक्षा को अपेक्षाकृत व्यापक और व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। व्याकरण, तर्कशास्त्र (logic), वक्तृत्व (rhetoric), अंकगणित, ज्यामिति, खगोलशास्त्र और संगीत जैसे विषयों का अध्ययन होने लगा। इन विषयों के लिए प्रयुक्त ग्रंथ विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध थे, जबकि शिक्षण माध्यम लैटिन था। इस अंतर को पाटने का कार्य अनुवाद ने किया। इस प्रकार अनुवाद शैक्षिक पाठ्यक्रम का मौन आधार बन गया।

12वीं और 13वीं शताब्दी में पेरिस, बोलोन्या और ऑक्सफोर्ड जैसे विद्गविद्यालयों की स्थापना के साथ शिक्षा का स्वरूप और अधिक अकादमिक हो गया। विद्गविद्यालयों में दर्शन, धर्मशास्त्र, विधि और चिकित्सा जैसे विषयों का व्यवस्थित अध्ययन आरंभ हुआ। यहाँ अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया, क्योंकि पाठ्यक्रम में सम्मिलित अधिकांश दार्शनिक ग्रंथ मूलत: यूनानी या अरबी भाषा में रचित थे।विशेष रूप से अरस्तू (Aristotle) के ग्रंथों का प्रभाव उल्लेखनीय है। उनकी कृतियाँ-Metaphysics, ethics, Politics और Organonयूरोपीय दर्शन की रीढ़ बन गईं। किंतु ये ग्रंथ सीधे यूनानी स्रोतों से उपलब्ध नहीं थे। पहले इनका अरबी में अनुवाद हुआ और फिर स्पेन तथा सिसिली के माध्यम से लैटिन में अनूदित किया गया। उदाहरण के लिए, Organon के लैटिन अनुवाद ने मध्यकालीन विद्गविद्यालयों में तर्कशास्त्र के अध्ययन को एक नया आधार प्रदान किया। इसी प्रकार Ethics ने नैतिक दर्शन को धार्मिक विमर्श से बाहर निकालकर तर्कसंगत विश्लेषण की दिशा दी।

अनुवाद के बिना यह दार्शनिक पुनरुत्थान संभव नहीं था। विद्गविद्यालयों में अनुवादित ग्रंथों पर टीकाएँ (commentaries) लिखी गईं, जिनमें थॉमस एक्विनास जैसे विद्वानों ने अरस्तू और ईसाई धर्मशास्त्र के बीच समन्वय स्थापित किया। इससे स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन शिक्षा में अनुवाद केवल ज्ञान के हस्तांतरण का साधन नहीं था, बल्कि नए बौद्धिक विमर्श के निर्माण का माध्यम भी था।

(4) अरबी-इस्लामी विद्ग और अनुवाद की भूमिका

मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा को समझने के लिए अरबी-इस्लामी विद्ग के योगदान को केंद्रीय महत्व देना अनिवार्य है। 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच इस्लामी सभ्यता ज्ञान, विज्ञान और संस्कृति का वैद्गिक केंद्र

बनकर उभरी। इस काल में अनुवाद केवल भाषांतरण की प्रक्रिया नहीं था, बल्कि ज्ञान के संरक्षण, विस्तार और नवाचार का माध्यम था। यूनानी, फारसी और भारतीय ज्ञान-परंपराओं को अरबी भाषा में आत्मसात कर इस्लामी विद्वानों ने उन्हें नई बौद्धिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जिसका प्रभाव आगे चलकर पूरे यूरोप पर पड़ा।

इस संदर्भ में Bayt al-Hikma (हाउस ऑफ़ विज़डम) का विशेष महत्व है। बग़दाद स्थित यह संस्थान अब्बासी ख़लीफ़ाओं, विशेषत: अल-मामून के संरक्षण में विकसित हुआ। यहाँ व्यवस्थित रूप से यूनानी, फारसी और भारतीय ग्रंथों का अरबी में अनुवाद कराया गया। हिप्पोक्रेट्स और गैलेन के चिकित्सा ग्रंथ, यूक्लिड की Elements, टॉलेमी की Almagest, तथा प्लेटो और अरस्तू के दार्शनिक ग्रंथ अरबी में अनूदित होकर न केवल संरक्षित हुए, बल्कि उनकी व्याख्या और टीकाएँ भी लिखी गईं। उदाहरण के लिए, अरस्तू के दर्शन को अल-फ़ाराबी और इब्न-सीना (अविसेना) ने नई दार्शनिक व्याख्या दी, जिससे वह इस्लामी दर्शन का अभिन्न अंग बन गया।

अरबी-इस्लामी अनुवाद परंपरा की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि अनुवाद को रचनात्मक प्रक्रिया माना जाता था। अनुवादक केवल शब्दानुवाद तक सीमित नहीं रहते थे, बल्कि मूल ग्रंथ की अवधारणाओं को स्पष्ट करते हुए उसमें नए विचार जोड़ते थे। इब्न-रुश्द (एवेरोएस) द्वारा अरस्तू पर लिखी गई टीकाएँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन टीकाओं ने बाद में यूरोपीय दार्शनिकों-विशेषत: थॉमस एक्विनासको गहराई से प्रभावित किया।

इस्लामी विद्द में तैयार हुआ यह विशाल ज्ञान-कोष बाद में यूरोप तक पहुँचा। यह प्रक्रिया प्राय: द्विस्तरीय अनुवाद के रूप में हुई Greek $\rightarrow$ Arabic $\rightarrow$ Latin अर्थात् यूनानी ग्रंथ पहले अरबी में अनूदित हुए और फिर अरबी से लैटिन में पहुँचे। यही प्रक्रिया पश्चिमी यूरोप के बौद्धिक पुनर्जागरण की आधारशिला बनी। गणित में अल-ख़ूवारिज़्मी के ग्रंथों के माध्यम से बीजगणित (Algebra) यूरोप पहुँची, जबकि चिकित्सा में इब्न-सीना की canon of Medicine सदियों तक यूरोपीय विद्द्विद्यालयों में पढ़ाई जाती रही।

इस परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण यूरोपीय केंद्र टोलेडो अनुवाद आंदोलन (12वीं शताब्दी) था। स्पेन का टोलेडो नगर ईसाई, मुस्लिम और यहूदी विद्वानों के सहयोग का प्रतीक बन गया। यहाँ अनुवाद एक सामूहिक प्रयास था, जिसमें बहुभाषी विद्वान मिलकर कार्य करते थे। इस आंदोलन के प्रमुख अनुवादक Gerard of Cremona थे, जिन्होंने अरबी से लैटिन में 70 से अधिक ग्रंथों का अनुवाद किया। टॉलेमी की Almagest और अरस्तू की Physics जैसे ग्रंथों के लैटिन अनुवाद यूरोप में विज्ञान और दर्शन के अध्ययन को नई दिशा देते हैं।

tअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1 प्राचीन विद्द में अनुवाद की आवश्यकता किन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारणों से उत्पन्न हुई? सुमेर-अक्कादी परंपरा के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2 मध्यकालीन पश्चिम में ईसाई चर्च ने अनुवाद को किस प्रकार प्रोत्साहित भी किया और नियंत्रित भी किया? सेंट जेरोम के योगदान के आलोक में विवेचना कीजिए।

प्रश्न 3 अरबी-इस्लामी विद्वानों द्वारा किए गए अनुवादों ने मध्यकालीन यूरोप के बौद्धिक विकास को कैसे प्रभावित किया? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(6) अनुवाद और राजनीति

मध्यकाल में अनुवाद को राजकीय संरक्षण भी मिला। शार्लमेन के शासनकाल में अनुवाद और शिक्षा को सांस्कृतिक पुनरुत्थान का माध्यम बनाया गया। लैटिन को मानकीकृत किया गया और शैक्षिक सुधारों के अंतर्गत अनुवाद कार्य को बढ़ावा दिया गया। शार्लमेन के शासनकाल में लैटिन भाषा को मानकीकृत करने का प्रयास किया गया, ताकि प्रशासन, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में एकरूपता स्थापित की जा सके। इस उद्देश्य से शास्त्रीय लैटिन ग्रंथों का संपादन, पुनर्लेखन और अनुवाद कराया गया, जिससे भाषा की अशुद्धियों को दूर कर उसे संप्रेषण के योग्य बनाया जा सके। मठों और गिरजाघरों को शिक्षा के केंद्र के रूप में विकसित किया गया, जहाँ धर्मग्रंथों के साथ-साथ दर्शन, इतिहास, व्याकरण और तर्कशास्त्र से संबंधित ग्रंथों का अनुवाद और अध्ययन किया जाता था। इस प्रक्रिया में अनुवाद केवल ज्ञान के संरक्षण का माध्यम नहीं रहा, बल्कि सत्ता द्वारा नियंत्रित बौद्धिक गतिविधि का रूप लेता गया।

कैरोलिंजियन पुनर्जागरण के अंतर्गत अनुवाद कार्य का मुख्य लक्ष्य शास्त्रीय विरासत को ईसाई दृष्टिकोण के अनुरूप ढालना था। यूनानी और रोमन ग्रंथों का चयनात्मक अनुवाद किया गया, जिससे वे शासक वर्ग और पादरियों की वैचारिक आवश्यकताओं के अनुकूल हों। इस प्रकार अनुवाद एक वैचारिक छँटनी की प्रक्रिया बन गया, जिसमें वही ज्ञान संरक्षित और प्रसारित हुआ, जो राजनीतिक और धार्मिक सत्ता के हितों को सुदृढ़ करता था। परिणामस्वरूप ज्ञान की उपलब्धता सीमित वर्ग तक केंद्रित रही और सामान्य जनता इससे काफी हद तक वंचित रही।

मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की यह राजनीति सत्ता, भाषा और ज्ञान के आपसी संबंध को स्पष्ट रूप से उजागर करती है। अनुवाद के माध्यम से न केवल सांस्कृतिक एकरूपता स्थापित की गई, बल्कि शासन की वैधता को भी बौद्धिक आधार प्रदान किया गया। इस दृष्टि से अनुवाद एक निष्पक्ष भाषिक प्रक्रिया न होकर सत्ता-संरचना का अभिन्न अंग बन गया, जिसने मध्यकालीन यूरोप की राजनीतिक और सांस्कृतिक दिशा को गहराई से प्रभावित किया।

(7) मध्यकालीन अनुवाद की प्रमुख विशेषताएँ

मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- मध्यकालीन पश्चिम की अनुवाद परंपरा कुछ विशिष्ट विशेषताओं के माध्यम से पहचानी जाती है, जो उस युग की धार्मिक, बौद्धिक और सामाजिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई थीं। सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि अनुवाद का केंद्र मुख्यत: धार्मिक और दार्शनिक ग्रंथ थे। बाइबिल, धर्मशास्त्र, संतों की रचनाएँ तथा यूनानी दार्शनिकों के ग्रंथविशेषकर अरस्तू और प्लेटो- अनुवाद गतिविधियों के प्रमुख विषय बने। साहित्यिक या लौकिक कृतियों की अपेक्षा ज्ञान और आस्था से जुड़े ग्रंथों को अधिक महत्व दिया गया।
- इस काल में लैटिन भाषा की केंद्रीय भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। लैटिन न केवल चर्च की भाषा थी, बल्कि शिक्षा, प्रशासन और बौद्धिक विमर्श की भी प्रमुख माध्यम थी। अधिकांश अनुवाद लैटिन में ही किए गए, जिससे ज्ञान का प्रसार सीमित शिक्षित वर्ग तक ही केंद्रित रहा। इसके परिणामस्वरूप जनभाषाओं में अनुवाद अपेक्षाकृत कम हुए।
- मध्यकालीन अनुवाद में शब्दानुवाद और अर्थानुवाद के बीच निरंतर द्वंद्व बना रहा। एक ओर चर्च धार्मिक ग्रंथों में शब्दश: अनुवाद पर ज़ोर देता था ताकि मूल पाठ की पवित्रता बनी रहे, वहीं सेंट जेरोम जैसे विद्वान अर्थानुवाद (sense for sense) के पक्षधर थे। यह द्वंद्व पूरे मध्यकालीन अनुवाद-विचार को दिशा देता रहा।
- एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता चर्च और राजनीतिक सत्ता का नियंत्रण था। अनुवाद स्वतंत्र बौद्धिक गतिविधि न होकर धार्मिक संस्थाओं के अधीन था। कौन-सा ग्रंथ अनूदित होगा और कैसे- इस पर चर्च की स्वीकृति आवश्यक थी, जिससे अनुवाद वैचारिक अनुशासन का माध्यम भी बन गया।

(8) मध्यकालीन अनुवाद-विचार शब्द और अर्थ के बीच संतुलन

मध्यकालीन पश्चिम में यद्यपि अनुवाद को लेकर कोई सुव्यवस्थित और स्वतंत्र अनुवाद-सिद्धांत विकसित नहीं हुआ था, फिर भी अनुवाद की व्यावहारिक प्रक्रिया में कुछ स्पष्ट वैचारिक प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आती हैं। इस काल में अनुवाद मुख्यत: धार्मिक, दार्शनिक और शैक्षिक आवश्यकताओं से प्रेरित था, जिसके कारण अनुवादक निरंतर इस प्रश्न से जूझते रहे कि मूल पाठ के शब्दों के प्रति निष्ठावान रहा जाए या उसके निहित अर्थ और भाव को प्राथमिकता दी जाए। इसी संदर्भ में शब्द और अर्थ के बीच संतुलन का प्रश्न मध्यकालीन अनुवाद-विचार का केंद्रीय विषय बन जाता है।

मध्यकालीन अनुवाद परंपरा में पहली प्रमुख प्रवृत्ति शब्द प्रति शब्द अनुवाद की रही। विशेषकर बाइबिल और अन्य धार्मिक ग्रंथों के अनुवाद में यह मान्यता प्रबल थी कि प्रत्येक शब्द ईश्वरीय है और उसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन धर्मविरोधी माना जा सकता है। इसलिए चर्च के नियंत्रण में होने वाले अनुवादों में शब्दानुवाद को अधिक सुरक्षित और विश्वसनीय पद्धति समझा गया। इस प्रवृत्ति का परिणाम यह हुआ कि कई अनुवाद भाषाई दृष्टि से जटिल, कृत्रिम और कठिन हो गए, किंतु धार्मिक शुद्धता के दृष्टिकोण से उन्हें स्वीकार्यता मिली।

दूसरी प्रवृत्ति अर्थ-प्रधान अनुवाद की थी, जिसका वैचारिक आधार सेंट जेरोम जैसे विद्वानों के विचारों में मिलता है। जेरोम का प्रसिद्ध कथन- मैं शब्द का नहीं, अर्थ का अनुवाद करता हूँ, इस प्रवृत्ति का प्रतिनिधि सूत्र माना जाता है।

अर्थ-प्रधान अनुवाद में मूल पाठ के भाव, संदर्भ और आशय को लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करने पर बल दिया गया। यह प्रवृत्ति विशेषत: दार्शनिक, वैज्ञानिक और शैक्षिक ग्रंथों के अनुवाद में अधिक प्रभावी रही, जहाँ विचारों की स्पष्टता शब्दों की अक्षरश: नकल से अधिक महत्वपूर्ण थी।

तीसरी प्रवृत्ति व्याख्यात्मक अनुवाद की रही, जिसमें अनुवादक केवल अनुवाद तक सीमित न रहकर पाठ की व्याख्या, टिप्पणी और स्पष्टीकरण भी जोड़ता था। अरबी-इस्लामी विद्वानों और बाद में लैटिन अनुवादकों द्वारा अपनाई गई यह पद्धति ज्ञान के संप्रेषण को सरल और व्यापक बनाने में सहायक सिद्ध हुई। इस प्रकार के अनुवादों ने मूल ग्रंथों को नए सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भों में पुन: अर्थवान बनाया।

8.5 मध्यकालीन पश्चिम सिद्धांत

पश्चिम में अनुवाद की परंपरा को केवल भाषिक या साहित्यिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि सत्ता, राजनीति, धर्म और ज्ञान-नियंत्रण से गहराई से जुड़ी प्रक्रिया के रूप में विवेचित करता है। मध्ययुगीन यूरोप में अनुवाद ज्ञान के साधारण हस्तांतरण तक सीमित नहीं था, बल्कि वह वैचारिक प्रभुत्व, धार्मिक आधिपत्य और प्रशासनिक एकता के निर्माण का सशक्त माध्यम था। प्रस्तुत लेखन उपलब्ध पाठ्य-सामग्री (ब्लॉक-3) तथा प्रदत्त चित्रों में निहित विषय-वस्तु के अनुरूप है, किंतु पूर्णत: अपने शब्दों में, उदाहरणों और विद्वानों के प्रमाणिक उद्धरणों सहित तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य अनुवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, कार्य-पद्धतियों, प्रमुख अनुवादकों, सिद्धांतकारों तथा उन संस्थागत ढाँचों को क्रमबद्ध, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत करना है, जिनके माध्यम से मध्यकालीन पाश्चात्य अनुवाद-परंपरा विकसित हुई।

1. अनुवाद, सत्ता और ज्ञान का संबंध

मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद का इतिहास सत्ता-संरचना के इतिहास से अविभाज्य है। पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात यूरोप राजनीतिक रूप से विखंडित हो गया था। विभिन्न स्थानीय शासक, सामंती शक्तियाँ और चर्च अपनी-अपनी सत्ता को वैध ठहराने के प्रयास में लगे थे। ऐसी स्थिति में शासन की वैधता, प्रशासनिक एकरूपता और धार्मिक अनुशासन के लिए एक साझा भाषा और वैचारिक ढाँचे की आवश्यकता महसूस की गई। लैटिन ने इस आवश्यकता की पूर्ति की और अनुवाद के माध्यम से इसे शिक्षा, प्रशासन और धर्म की मानक भाषा के रूप में स्थापित किया गया। अनुवाद यहाँ किसी तटस्थ बौद्धिक गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि सत्ता के केंद्रीकरण और वैचारिक नियंत्रण के उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ। यह तय किया जाने लगा कि किन ग्रंथों का अनुवाद किया जाएगा, किन विचारों को संरक्षित किया जाएगा और किन्हें त्याग दिया जाएगा। ज्ञान का चयन सत्ता के हितों के अनुरूप किया गया। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप शास्त्रीय यूनानी-रोमी विरासत का ईसाईकरण हुआ और वही ज्ञान 'स्वीकार्य' माना गया, जो चर्च और राजसत्ता की वैचारिक आवश्यकताओं के अनुकूल था। इस प्रकार अनुवाद ज्ञान के लोकतंत्रीकरण के बजाय उसके नियंत्रण और सीमांकन का माध्यम बन गया।

2. शार्लमेन और कैरोलिंजियन पुनर्जागरण

शार्लमेन (742-814 ई.) का शासनकाल मध्यकालीन पाश्चात्य अनुवादइतिहास में एक निर्णायक मोड़ प्रस्तुत करता है। उनके काल में विकसित बौद्धिक-सांस्कृतिक आंदोलन को 'कैरोलिंजियन पुनर्जागरण' कहा जाता है। शार्लमेन का उद्देश्य केवल साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार नहीं था, बल्कि एक ऐसे सांस्कृतिक और बौद्धिक ढाँचे का निर्माण करना था, जो उनके विशाल साम्राज्य को वैचारिक रूप से एकीकृत कर सके। इसके लिए शिक्षा, लिपिक-प्रशिक्षण और अनुवाद को विशेष संरक्षण दिया गया।

लैटिन भाषा के मानकीकरण हेतु व्याकरण, वर्तनी, वाक्य-विन्यास और शब्दावली पर विशेष ध्यान दिया गया। प्राचीन लैटिन ग्रंथों का पुनर्लेखन, संपादन और अनुवाद कराया गया ताकि भाषा की अशुद्धियाँ दूर हों और वह प्रशासन व शिक्षा के लिए उपयुक्त बन सके। मठ और गिरजाघर अध्ययन-केन्द्र बने, जहाँ बाइबिल के साथ-साथ व्याकरण, तर्कशास्त्र, इतिहास और दर्शन के ग्रंथों का अनुवादसंपादन किया गया। इस पूरी प्रक्रिया में अनुवाद एक अनुशासित, नियंत्रित और सत्ता-संरक्षित गतिविधि के रूप में विकसित हुआ, जिसमें 'अर्थ' की व्याख्या सत्ता-समर्थित

विद्वानों द्वारा निर्धारित की जाती थी।

3. रोम और ग्रीक परंपरा: सेंट जेरोम

अनुवाद सिद्धांत के क्षेत्र में सेंट जेरोम (345-420 ई.) का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे बाइबिल के प्रामाणिक लैटिन अनुवाद Vulgate के लिए प्रसिद्ध हैं। जेरोम पहले विद्वान माने जाते हैं जिन्होंने अनुवाद की पद्धति पर स्पष्ट वैचारिक वक्तव्य दिया। उनका प्रसिद्ध कथन–I translate not word for word, but sense for sense मध्यकालीन अनुवाद–विमर्श का आधार बन गया।

जेरोम का मानना था कि सामान्य साहित्यिक ग्रंथों में भावानुवाद अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इससे मूल आशय पाठकों तक सहज रूप में पहुँचता है। किंतु धार्मिक ग्रंथों के संदर्भ में वे शब्दानुशासन के पक्षधर थे, क्योंकि वहाँ प्रत्येक शब्द को दैवीय महत्व प्राप्त है। इस प्रकार जेरोम ने शब्दानुवाद और भावानुवाद के बीच एक व्यावहारिक संतुलन स्थापित किया, जिसने आने वाली शताब्दियों तक अनुवाद सिद्धांत को प्रभावित किया।

4. बोएथियस : संक्रमण काल का बौद्धिक सेतु

बोएथियस (480–524 ई.) को प्राचीन यूनानी–रोमन बौद्धिक परंपरा और मध्यकालीन ईसाई यूरोप के बीच एक महत्वपूर्ण बौद्धिक सेतु माना जाता है। ऐसे समय में, जब पश्चिमी यूरोप में ग्रीक भाषा का ज्ञान लगभग समाप्तप्राय हो रहा था, बोएथियस ने ग्रीक दर्शन को लैटिन भाषा के माध्यम से सुरक्षित रखने का ऐतिहासिक कार्य किया। उनका उद्देश्य केवल अनुवाद करना नहीं था, बल्कि अरस्तू और प्लेटो की तर्क–पद्धति तथा दार्शनिक चिंतन को ईसाई यूरोप की बौद्धिक संरचना में समाहित करना था। उनकी प्रसिद्ध कृति Consolation of Philosophy मध्यकालीन यूरोप की सर्वाधिक पठित दार्शनिक पुस्तकों में रही। यह ग्रंथ स्वयं अनुवाद नहीं है, किंतु इसमें प्रयुक्त दार्शनिक अवधारणाएँ ग्रीक दर्शन की अनूदित और रूपांतरित परंपरा को दर्शाती हैं। बोएथियस ने अरस्तू के Categories और On Interpretation जैसे ग्रंथों का लैटिन अनुवाद एवं व्याख्या की, जिससे तर्कशास्त्र (Logic) मध्यकालीन शिक्षा का आधार बना। बोएथियस की अनुवाद दृष्टि में शब्द–सटीकता, तार्किक स्पष्टता और वैचारिक अनुशासन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वे मानते थे कि दर्शन में अर्थ–विकृति गंभीर बौद्धिक भ्रांति को जन्म दे सकती है। उदाहरण के लिए, अरस्तू की तर्क–पद्धति का उनका अनुवाद इस प्रकार किया गया कि वह ईसाई धर्मशास्त्र के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सके।

5. मठ, स्क्रिप्टोरियम और अनुवाद की संस्थाएँ

मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद की प्रक्रिया मुख्यत: मठों और उनके scriptoria (लेखन–कक्षों) से संचालित होती थी। ये संस्थाएँ केवल धार्मिक साधना के केंद्र नहीं थीं, बल्कि ज्ञान–संरक्षण और ग्रंथ–संप्रेषण की प्रमुख इकाइयाँ भी थीं। जब रोमन साम्राज्य का पतन हो चुका था और राजनीतिक अस्थिरता व्याप्त थी, तब मठों ने बौद्धिक स्थिरता प्रदान की। Scriptoria में भिक्षु सामूहिक रूप से पांडुलिपियों की नकल, संपादन और अनुवाद का कार्य करते थे। अनुवाद यहाँ एक अनुशासित, संस्थागत और नियंत्रित प्रक्रिया थी। उदाहरणस्वरूप, बाइबिल, चर्च फादर्स के ग्रंथ, संत ऑगस्टीन और जेरोम की रचनाएँ प्राथमिकता से अनूदित और प्रतिलिपित की जाती थीं। इसके अतिरिक्त, सीमित मात्रा में दार्शनिक और वैज्ञानिक ग्रंथों का भी अनुवाद हुआ। ग्रंथ–चयन पर चर्च का कठोर नियंत्रण था। वही ग्रंथ अनूदित होते थे जो धार्मिक, नैतिक अथवा वैचारिक रूप से स्वीकार्य हों। इस कारण अनुवाद एक प्रकार से ज्ञान के द्वारपाल (Gatekeeper of Knowledge) की भूमिका निभाता था। सामान्य जनता इन ग्रंथों तक नहीं पहुँच सकती थी; ज्ञान मुख्यत: पादरी वर्ग और शासक अभिजात्य तक सीमित था। इस संस्थागत ढाँचे ने अनुवाद को स्थायित्व तो दिया, किंतु रचनात्मक स्वतंत्रता को सीमित भी किया। फिर भी, यह कहना अनुचित नहीं होगा कि यदि मठीय परंपरा न होती, तो प्राचीन ज्ञान का बड़ा भाग नष्ट हो गया होता। अत: मध्यकालीन अनुवाद की संस्थागत प्रकृति को संरक्षण और नियंत्रण– दोनों दृष्टियों से समझना आवश्यक है।

6. केसियस और डायोनिसियस एक्सिगुअस

केसियस (Cassiodorus, 480–550 ई.) और डायोनिसियस एक्सिगुअस (Dionysius Exiguus) मध्यकालीन अनुवाद परंपरा के दो ऐसे विद्वान हैं, जिन्होंने अनुवाद को केवल धार्मिक कर्म नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद का माध्यम

बनाया। केसियस ने Vivariuum नामक अध्ययनकेंद्र की स्थापना की, जहाँ ग्रीक और लैटिन ग्रंथों के अध्ययन, अनुवाद और संरक्षण पर विशेष बल दिया गया। केसियस का उद्देश्य था- ग्रीक बौद्धिक परंपरा और लैटिन ईसाई संस्कृति के बीच सेतु स्थापित करना। उन्होंने भिक्षुओं को भाषिक शिक्षा देने पर ज़ोर दिया ताकि वे अनुवाद के माध्यम से ज्ञान-संरक्षण कर सकें। उनके प्रयासों से अनुवाद एक व्यवस्थित बौद्धिक गतिविधि के रूप में विकसित हुआ। डायोनिसियस एक्सिगुअस का योगदान मुख्यत: कैनन-लॉ और धार्मिक प्रशासन से जुड़ा है। उन्होंने यूनानी चर्च नियमों का लैटिन अनुवाद किया, जिससे पश्चिमी चर्च में विधिक एकरूपता स्थापित हुई। उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान ईसा-संवत (Anno Domini) की गणनापद्धति का प्रचलन है, जो आज भी वैदिक समय गणना का आधार है। इन दोनों विद्वानों के कार्य यह दर्शाते हैं कि अनुवाद केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं था, बल्कि प्रशासनिक मानकीकरण, कालगणना और संस्थागत व्यवस्था का भी माध्यम बना। इस प्रकार अनुवाद मध्यकालीन समाज के बौद्धिक और प्रशासनिक ढाँचे का अभिन्न अंग सिद्ध हुआ।

7. दांते अलिघिएरी : भाषा, काव्य और अनुवाद

दांते अलिघिएरी (1265-1321) मध्यकालीन यूरोप के महान कवि होने के साथ-साथ भाषा और अनुवाद पर गहन चिंतन करने वाले विचारक भी थे। उनकी रचना Convivio में भाषा, अर्थ और अभिव्यक्ति की जटिलताओं पर महत्वपूर्ण विचार मिलते हैं। दांते का मानना था कि काव्य का अनुवाद अत्यंत कठिन है, क्योंकि कविता केवल अर्थ नहीं, बल्कि ध्वनि, लय और सांस्कृतिक संवेदना का समन्वय होती है।उनका प्रसिद्ध कथन-anything harmonized through the bond of the transmuted from its idiom into another without losing all its sweetness and harmony

इस बात को स्पष्ट करता है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में काव्य का स्थानांतरण करते समय उसकी सौंदर्यात्मक आत्मा नष्ट हो जाती है। दांते स्वयं लैटिन के स्थान पर इतालवी (वर्नाक्युलर) भाषा में Divine comedy की रचना करके यह सिद्ध करते हैं कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान भी है। इस दृष्टि से उनका चिंतन अनुवाद की सीमाओं और संभावनाओं- दोनों को रेखांकित करता है। दांते की अनुवाद-दृष्टि आधुनिक साहित्यिक अनुवाद सिद्धांतों से जुड़ती है, जहाँ यह स्वीकार किया जाता है कि हर अनुवाद आंशिक होता है और मूल की पूर्ण पुनर्रचना संभव नहीं। इस प्रकार दांते का योगदान अनुवाद के सौंदर्यशास्त्रीय विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

8. रोजर बेकन : पद्धति और वैज्ञानिक अनुवाद

रोजर बेकन (1220-1292) मध्यकालीन यूरोप के उन विद्वानों में से थे जिन्होंने अनुवाद को वैज्ञानिक और पद्धतिगत दृष्टि से देखा। वे मानते थे कि त्रुटिपूर्ण अनुवाद ज्ञान को विकृत कर देता है और वैज्ञानिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। इसलिए उन्होंने अनुवादक की भाषिक दक्षता, स्रोत-ज्ञान और सांस्कृतिक समझ पर विशेष बल दिया। बेकन का मत था कि अनुवादक को केवल शब्दज्ञान नहीं, बल्कि विषयवस्तु का भी गहन ज्ञान होना चाहिए। उदाहरणस्वरूप, यदि कोई गणित या चिकित्सा ग्रंथ का अनुवाद कर रहा है, तो उसे उस विषय की मूल अवधारणाओं से परिचित होना अनिवार्य है। अरबी से लैटिन में हुए कई वैज्ञानिक अनुवादों की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि गलत अनुवादों ने यूरोप में भ्रांत धारणाएँ फैलाईं। उनका दृष्टिकोण आधुनिक वैज्ञानिक अनुवाद और तकनीकी अनुवाद का पूर्वाभास देता है। बेकन के अनुसार, सही अनुवाद ज्ञान-विकास का आधार है, जबकि गलत अनुवाद बौद्धिक पतन का कारण बन सकता है। इस प्रकार वे अनुवाद को एक गंभीर बौद्धिक उत्तरदायित्व के रूप में देखते हैं।

9. लियोनार्दो ब्रूनी और मानवतावाद

लियोनार्दो ब्रूनी (1374-1444) पुनर्जागरण काल के मानवतावादी अनुवाद-दृष्टि के प्रमुख प्रवर्तक माने जाते हैं। उन्होंने अनुवाद को केवल शब्दांतरण नहीं, बल्कि लेखक की शैली, भाव और अभिव्यक्ति को पुनर्सृजित करने की प्रक्रिया माना। उनके अनुसार, एक आदर्श अनुवादक को साहित्यिक संवेदनशीलता और भाषिक कौशल- दोनों से संपन्न होना चाहिए। ब्रूनी ने अरस्तू और प्लेटो के ग्रंथों का लैटिन अनुवाद करते समय यह ध्यान रखा कि मूल लेखक की शैली और लय बनी रहे। वे मध्यकालीन कठोर शब्दानुवाद की परंपरा से हटकर शैली-प्रधान अनुवाद का समर्थन करते हैं। यह दृष्टि आधुनिक साहित्यिक अनुवाद के अत्यंत निकट है। मानवतावाद के प्रभाव से अनुवाद में रचनात्मकता

और स्वतंत्रता आई। ब्रूनी का कार्य यह दर्शाता है कि अनुवाद सांस्कृतिक पुनर्जागरण का शक्तिशाली माध्यम बन सकता है।

10. एतिएन दोले : सिद्धांत और विवाद

एतिएन दोले (1509–1546) को आधुनिक अनुवाद सिद्धांत का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने अनुवाद के पाँच सिद्धांत प्रतिपादित किए–

- लेखक के भाव और आशय की स्पष्ट समझ
- स्रोत और लक्ष्य भाषा का गहन ज्ञान
- शब्दश: अनुवाद से परहेज
- लक्ष्य भाषा की सहजता
- अनावश्यक अलंकरण से बचाव

दोले का दृष्टिकोण अत्यंत आधुनिक है, किंतु धार्मिक विवादों के कारण उन्हें गंभीर दंड सहना पड़ा। यह तथ्य दर्शाता है कि अनुवाद केवल भाषिक नहीं, बल्कि वैचारिक और राजनीतिक क्रिया भी है। उनका योगदान यह सिद्ध करता है कि अनुवाद सिद्धांत का विकास संघर्ष और विमर्श के माध्यम से हुआ है। दोले के विचार आज भी अनुवादअध्ययन की आधारशिला बने हुए हैं।

11. अल्फ्रेड द ग्रेट (Alfred the Great, 871–899)

अल्फ्रेड द ग्रेट को मध्यकालीन इंग्लैंड में अनुवाद को सामाजिक पुनर्निर्माण से जोड़ने वाला पहला शासक माना जाता है। उनके समय में लैटिन शिक्षा केवल पादरी वर्ग तक सीमित थी, जिससे सामान्य जनता ज्ञान से वंचित थी। अल्फ्रेड ने इस स्थिति को सांस्कृतिक पतन के रूप में देखा और अनुवाद को इसका समाधान माना। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि ज्ञान तब तक जीवित नहीं रह सकता, जब तक वह जनभाषा में न पहुँचे। इसी विचार के अंतर्गत उन्होंने Pastoral Care (Gregory the Great), Consolation of Philosophy (Boethius) और ecclesiastical History (Bede) जैसे ग्रंथों का अनुवाद या अनुवादप्रायोजन किया। इन अनुवादों में उन्होंने शाब्दिक निष्ठा से अधिक अर्थ की सहजता पर बल दिया। अल्फ्रेड की अनुवाद दृष्टि का महत्व इस तथ्य में है कि उन्होंने अनुवाद को केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्जागरण का साधन माना। पुरानी अंग्रेजी को ज्ञान–भाषा बनाकर उन्होंने भाषा, संस्कृति और सत्ता—तीनों को एक सूत्र में बाँध दिया।

12. जॉन वाइक्लिफ (John Wycliffe, c. 1320–1384)

जॉन वाइक्लिफ का योगदान मध्यकालीन अनुवाद इतिहास में अत्यंत क्रांतिकारी माना जाता है। उन्होंने बाइबिल को अंग्रेज़ी में अनूदित कर यह स्थापित किया कि धार्मिक ज्ञान पर चर्च का एकाधिकार नहीं होना चाहिए। वाइक्लिफ का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति ईद्गर के वचन को सीधे अपनी भाषा में समझने का अधिकारी है। उनके नेतृत्व में बाइबिल का जो अनुवाद हुआ, वह मुख्यत: लैटिन Vulgate पर आधारित था। यद्यपि यह अनुवाद शब्द प्रधान था, फिर भी इसका सामाजिक प्रभाव अत्यंत व्यापक रहा। चर्च ने इसे सत्ता के लिए चुनौती माना और वाइक्लिफ को विधर्मी घोषित किया। वाइक्लिफ की परंपरा में अनुवाद को एक सामूहिक और नैतिक उत्तरदायित्व के रूप में देखा गया। उनके अनुयायियों द्वारा संशोधन, तुलना और सत्यापन की प्रक्रिया यह दर्शाती है कि मध्यकाल में भी अनुवाद एक सुविचारित पद्धति के अंतर्गत किया जा रहा था।

3. अल्फोंसो X (Alfonso X, 1221–1284)

अल्फोंसो को स्पेन में अनुवाद को संस्थागत स्वरूप देने वाला महान संरक्षक माना जाता है। उनके शासनकाल में टोलेडो अनुवाद केंद्र ज्ञान–विनिमय का वैद्गिक मंच बन गया, जहाँ अरबी, हिब्रू और लैटिन ग्रंथों का अनुवाद स्पेनिश में हुआ। अल्फोंसो का दृष्टिकोण यह था कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि ज्ञान की पुनर्व्याख्या है। इसी कारण उन्होंने अनुवाद के साथ–साथ टीका, व्याख्या और संदर्भ जोड़ने की परंपरा को प्रोत्साहित किया। उनकी नीति ने आधुनिक यूरोपीय भाषाओं को बौद्धिक गरिमा प्रदान की। अल्फोंसो के प्रयास यह सिद्ध करते हैं कि मध्यकाल में अनुवाद बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और वैज्ञानिक प्रक्रिया बन चुका था।

4. मार्टिन लूथर (Martin Luther, 1483-1546)

मार्टिन लूथर के साथ अनुवाद धार्मिक सुधार का सशक्त माध्यम बन गया। उन्होंने बाइबिल का जर्मन अनुवाद कर यह सिद्ध किया कि धार्मिक ग्रंथ तभी प्रभावी होते हैं, जब वे जनता की भाषा में हों। लूथर का अनुवाद सिद्धांत स्पष्ट रूप से अर्थप्रधान और जनोन्मुख था। वे कहते थे कि अनुवादक को यह देखना चाहिए कि साधारण व्यक्ति उस भाषा में कैसे बोलता है। इसी कारण उन्होंने मुहावरों, लोकभाषा और सरल वाक्यरचना को अपनाया। लूथर के अनुवाद ने न केवल जर्मन भाषा को मानक रूप दिया, बल्कि यह भी दिखाया कि अनुवाद सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली उपकरण हो सकता है।

4.5 औपचारिक अनुवाद परंपरा

1. बाइबिल अनुवाद और औपचारिक परंपरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पश्चिमी विद्र में औपचारिक अनुवाद की परंपरा का वास्तविक और संगठित आरंभ बाइबिल के अनुवादों से माना जाता है। यह परंपरा केवल भाषिक आवश्यकता का परिणाम नहीं थी, बल्कि धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से गहराई से जुड़ी हुई थी। प्राचीन काल में मिस्र विशेषकर अलेक्ज़ेंड्रिया जैसे नगरों में यहूदियों की बड़ी जनसंख्या निवास करती थी, जिनकी दैनिक और बौद्धिक भाषा ग्रीक थी, जबकि वे हिब्रू भाषा से अनभिज्ञ थे। ऐसी स्थिति में धार्मिक ग्रंथों की समझ उनके लिए कठिन हो गई थी। इसी व्यावहारिक और धार्मिक आवश्यकता ने बाइबिल के अनुवाद को जन्म दिया।

Ŝĝ æÂß úÎ ê Ú Ù¥ ðÚÙ ëà Ú Ù à à æ Ø è · Ô Õ è ¿ Ù ¥ ðÇ Å Ù Å Ù à æ Ø Ô · Ô » ¥ ¤ ¥ Ù ß â è ç ¤ » ° , çÁ Ù × ð Septuagint (सेप्तुआगिंत) सर्वाधिक प्रसिद्ध हुआ। परंपरा के अनुसार यह अनुवाद ई.पू. 270 के आसपास सत्तर विद्वानों द्वारा ईद्रीय प्रेरणा से सत्तर दिनों में पूरा किया गया। यद्यपि आधुनिक विद्वान इस कथा को प्रतीकात्मक मानते हैं, फिर भी इसमें निहित यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है कि अनुवाद को ईद्रीय और आधिकारिक मान्यता प्राप्त थी। Septuagint ने यह स्थापित किया कि अनुवाद केवल शब्दपरिवर्तन नहीं, बल्कि धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक निरंतरता का माध्यम भी हो सकता है।

2. रोमन युग में ग्रीक से लैटिन अनुवाद की परंपरा

बाइबिल अनुवादों के पश्चात पश्चिमी परंपरा में ग्रीक साहित्य के लैटिन अनुवादों का क्रम आरंभ हुआ। ई.पू. 240 में लिवियस एंड्रोनिकस (Livius Andronicus) ने होमर के महाकाव्य Odyssey का लैटिन पद्यानुवाद प्रस्तुत किया। यह कार्य रोमन साहित्य के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक माना जाता है, क्योंकि इसके माध्यम से यूनानी महाकाव्य परंपरा रोमन सांस्कृतिक चेतना में प्रविष्ट हुई।

इसके पश्चात नेवियस (Naevius) और एन्नियस (ennius) ने अनेक ग्रीक नाटकों और काव्यग्रंथों का लैटिन में अनुवाद किया। सिसरो (Cicero) ने प्लेटो के Protagoras सहित कई दार्शनिक ग्रंथों का अनुवाद किया। सिसरो का मत विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें वे कहते हैं कि वे शब्द प्रति शब्द (verbum e verbo) नहीं, बल्कि भाव (sense for sense) का अनुवाद करते हैं। यह दृष्टि आगे चलकर मध्यकाल और पुनर्जागरण काल की अनुवाद-चिंतन परंपरा का मूल आधार बनी।

3. मध्ययुग धार्मिक प्रभुत्व और लैटिन अनुवाद

मध्ययुग में पश्चिमी यूरोप में अनुवाद की गतिविधियाँ मुख्यत: धार्मिक ग्रंथों तक सीमित हो गईं। इस काल में लैटिन चर्च, शिक्षा और प्रशासन की प्रमुख भाषा बन चुकी थी। 'वेनरेबल बेडे' (Venerable Bede) द्वारा सन् 735 में जॉन के Gospel का अनुवाद इस धार्मिक अनुवाद परंपरा का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

इस युग में अधिकांश अनुवाद कठिन, विद्वतापूर्ण लैटिन में किए जाते थे, जिसके कारण सामान्य जनता इनसे दूर रही। अनुवाद यहाँ जन-संप्रेषण का माध्यम न होकर धार्मिक अनुशासन और वैचारिक नियंत्रण का साधन बन गया। इसके बावजूद, इन्हीं प्रयासों से धार्मिक और ऐतिहासिक ग्रंथों का संरक्षण संभव हो पाया।

4. तोलेदो विद्यालय और बहुभाषिक अनुवाद आंदोलन

बारहवीं शताब्दी तक आते-आते स्पेन का तोलेदो नगर पश्चिमी अनुवाद परंपरा का प्रमुख केंद्र बन गया। ग्यारहवीं शताब्दी में बिशप डॉन राइमुंडो के संरक्षण में यहाँ अनुवादकों के लिए एक विद्यालय स्थापित किया गया। इस विद्यालय में अरबी और यहूदी विद्वानों की रचनाओं का लैटिन में अनुवाद किया गया।

तोलेदो के अनुवाद आंदोलन ने अरस्तू, गैलेन तथा अन्य प्राचीन दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के ग्रंथों को पश्चिमी यूरोप तक पहुँचाया। इन अनुवादों के बिना यूरोपीय विद्विविद्यालयों का बौद्धिक विकास असंभव था। इस प्रकार अनुवाद ने मध्ययुगीन यूरोप में ज्ञान के नए द्वार खोले और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुदृढ़ किया।

5. पुनर्जागरण युग: अनुवाद का स्वर्ण-काल

पुनर्जागरण युग को अनुवाद का स्वर्ण-काल कहा जाता है। इस काल से पहले अनुवाद मुख्यत: धार्मिक ग्रंथों तक सीमित था, किंतु पुनर्जागरण में अनुवादकों का ध्यान जन-रुचि और मानववादी विषयों की ओर आकृष्ट हुआ। ग्रीक और लैटिन की प्राचीन कृतियों के व्यापक अनुवाद किए गए। कई विद्वानों का मत है कि इस काल में रोम ग्रीक से लैटिन में अनुवाद करने की एक 'फैक्ट्री' जैसा बन गया था।

6. मार्टिन लूथर और अनुवाद की नई दृष्टि

इस युग का सबसे महत्वपूर्ण नाम मार्टिन लूथर है, जिन्होंने सन् 1522 में New Testament का जर्मन भाषा में अनुवाद किया। लूथर के अनुवाद ने न केवल धार्मिक चेतना को बदला, बल्कि जर्मन भाषा को भी नई पहचान दी। उन्होंने अनुवाद की दो धाराओं- शब्दानुवाद और भावानुवाद में से भावानुवाद को अधिक महत्व दिया। उनका उद्देश्य था कि सामान्य जन बिना किसी कठिनाई के धर्मग्रंथों को समझ सकें।

इसी संदर्भ में फ्रांस के विद्वान एतिएन दोले (Étienne Dolet, 1509-1546) का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अनुवादक को मूल लेखक के 'कथ्य' के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित करना चाहिए। यद्यपि उनके विचारों का रूढ़िवादी वर्ग ने विरोध किया, फिर भी उनके सिद्धांत आधुनिक अनुवाद सिद्धांतों की आधारशिला माने जाते हैं।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

आधुनिक पश्चिमी संदर्भ में अनुवाद एक सैद्धांतिक, वैचारिक और सांस्कृतिक हस्तक्षेप के रूप में विकसित हुआ, जहाँ अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं ने पाठक केंद्रितता, अनुवादक की दृश्यता, सांस्कृतिक राजनीति और बहुभाषिक सह-अस्तित्व जैसे प्रश्नों को केंद्र में रखकर अनुवाद अध्ययन को एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित किया।

4.6 आधुनिक युग में अनुवाद (19वीं-20वीं शताब्दी)

उन्नीसवीं शताब्दी का आरंभ पाश्चात्य अनुवाद परंपरा में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है। इस काल में अनुवाद केवल ज्ञान-संचरण का साधन न रहकर साहित्यिक सृजन और बौद्धिक संवाद का माध्यम बन गया। दांते की Divine Comedy का कैरी द्वारा किया गया अंग्रेज़ी अनुवाद (1805-1812) तथा कॉलरिज द्वारा शिलर की रचना Wallenstein का अनुवाद (1800) इस युग के आरंभिक मील के पत्थर माने जाते हैं। यद्यपि इन अनुवादों की संख्या कम नहीं थी, फिर भी उस समय एक धारणा प्रचलित थी कि केवल वही रचनाएँ अनुवाद योग्य हैं जो स्वयं में 'महान' हों-इस विचार को अंग्रेज़ी उक्ति Nothing worth translating can be translated के रूप में अभिव्यक्त किया गया।

मैथ्यू अर्नोल्ड (1822-1888) ने अनुवाद को लेकर गंभीर आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत की। उनके अनुसार किसी भी साहित्यिक कृति में 'कथ्य' और 'रूप' समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं; अत: अनुवादक को मूल रचना की भाव-भूमि, शैली और बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए। अर्नोल्ड का मत था कि अनुवाद का

वास्तविक पाठक एक विशिष्ट शिक्षित वर्ग होता है, न कि सामान्य जन; इसलिए अनुवाद में सरलता के नाम पर मूल रचना की गरिमा से समझौता नहीं किया जाना चाहिए। उनके इस दृष्टिकोण ने उन्नीसवीं शताब्दी की अनुवादपरंपरा को गहराई प्रदान की।

इस शताब्दी में फ़िट्ज़ेराल्ड (1809–1883) द्वारा फ़ारसी कवि उमर ख़य्याम की Rubaiyat का अंग्रेजी अनुवाद विशेष रूप से चर्चित हुआ। फ़िट्ज़ेराल्ड ने शाब्दिक निष्ठा के बजाय सर्जनात्मक रूपांतरण को अपनाया, जिसके कारण यह अनुवाद मूल फ़ारसी काव्य से काफ़ी भिन्न प्रतीत होता है। कुछ आलोचकों, जैसे जॉन पेन, ने इसे 'साहित्यिक रूपांतरण' कहा, जबकि अन्य विद्वानों ने इसकी काव्यात्मक सफलता को स्वीकार किया। उल्लेखनीय है कि फ़िट्ज़ेराल्ड ने ख़य्याम की रुबाइयों के अनेक रूपांतरण प्रस्तुत किए और 1859 में प्रकाशित संस्करण को सर्वाधिक मान्यता मिली। इससे यह स्पष्ट होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी में अनुवाद और पुनर्सृजन के बीच की रेखा धुंधली हो गई थी।

बीसवीं शताब्दी में अनुवाद को एक स्वतंत्र साहित्यिक और अकादमिक विधा के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। इस काल में अनुवाद के सिद्धांतों पर व्यवस्थित चिंतन आरंभ हुआ और भाषाविज्ञान, नृविज्ञान, साहित्य-समालोचना तथा सांस्कृतिक अध्ययन जैसे क्षेत्रों से इसका गहरा संबंध स्थापित हुआ। अनुवाद की संख्या ही नहीं, बल्कि उसके विषयक्षेत्र और भाषिक दायरे में भी अभूतपूर्व विस्तार हुआ। इस शताब्दी में मैक्स मूलर द्वारा संपादित The Sacred Books of the east जैसी परियोजनाओं ने अनुवाद को वैदृिक सांस्कृतिक संवाद का साधन बना दिया। बाइबिल, वेद, उपनिषद, बौद्ध और कन्फ्यूशियस परंपरा के ग्रंथों के अनुवाद ने यह सिद्ध किया कि अनुवाद केवल पश्चिमी साहित्य तक सीमित नहीं रहा। भारत, चीन, जापान और अरब विद्र के ग्रंथों के अनुवादों ने पाश्चात्य बौद्धिक जगत की दृष्टि का विस्तार किया। बीसवीं शताब्दी में जेम्स जॉयस, टी.एस. एलियट, एजरा पाउंड जैसे रचनाकारों ने अनुवाद को सर्जनात्मक अभ्यास के रूप में अपनाया। पाउंड द्वारा चीनी कविता के अनुवाद (Cathay, 1915) यह दर्शाते हैं कि अनुवाद के माध्यम से नई काव्य-शैलियाँ भी जन्म ले सकती हैं। इसी काल में ई.एम. फॉर्स्टर, सैमुअल बेकट और अल्बेयर कामू के अनुवादों ने आधुनिक विद्र-साहित्य की अवधारणा को सुदृढ़ किया। सैद्धांतिक स्तर पर, बीसवीं शताब्दी में अनुवाद अध्ययन एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में विकसित हुआ। डब्ल्यू.जे. हचिन्स (W. J. Hutchins) जैसे विद्वानों ने मशीन अनुवाद और मानवीय अनुवाद की सीमाओं पर विचार किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि अनुवाद केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक पुनर्निर्माण भी है।

4.7 अमेरिकी अनुवाद परंपरा एवं आधुनिक अनुवाद सिद्धांत

अमेरिकी अनुवाद परंपरा का विकास केवल भाषिक आवश्यकता के कारण नहीं हुआ, बल्कि यह अमेरिका के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास, प्रवासन, बहुभाषिकता और वैदृिक राजनीति से गहराई से जुड़ा हुआ है। यूरोप के विभिन्न देशों से आए प्रवासियों ने अपने साथ अपनी भाषाएँ, साहित्यिक स्मृतियाँ और सांस्कृतिक मूल्य भी लाए। परिणामस्वरूप अमेरिका आरंभ से ही एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक समाज के रूप में विकसित हुआ। इस संदर्भ में अनुवाद ने एक सेतु का कार्य किया- एक ओर यूरोपीय साहित्य को अमेरिकी पाठकों तक पहुँचाने का, और दूसरी ओर अमेरिकी सांस्कृतिक पहचान को गढ़ने का।

1. अमेरिकी समाज और अनुवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अमेरिका में अंग्रेजी का प्रभुत्व धीरे-धीरे स्थापित हुआ, किंतु यह प्रभुत्व पूर्णतः एकभाषिक नहीं था। उन्नीसवीं शताब्दी तक जर्मन, फ़्रेंच और स्पेनिश भाषाओं में भी साहित्यिक गतिविधियाँ सक्रिय थीं। जर्मन दार्शनिकों- कांत, हेगेल और गोएथेकी रचनाओं के अंग्रेजी अनुवादों ने अमेरिकी बौद्धिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। इसी प्रकार फ़्रेंच साहित्य और दर्शन के अनुवादों ने अमेरिकी अकादमिक परंपरा को समृद्ध किया।

अनुवाद यहाँ केवल 'विदेशी साहित्य' को समझने का माध्यम नहीं था, बल्कि यह उस प्रक्रिया का हिस्सा था जिसके द्वारा अमेरिका स्वयं को एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में स्थापित कर रहा था। उदाहरणस्वरूप, होमर के Iliad और Odyssey के अंग्रेजी अनुवाद अमेरिकी शिक्षाप्रणाली का अभिन्न अंग बने, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शास्त्रीय

परंपरा को अमेरिकी चेतना में किस प्रकार आत्मसात किया गया।

2. पाठ्यक्रम, बाजार और अनुवाद का चयन

अमेरिकी अनुवाद परंपरा की एक प्रमुख विशेषता यह है कि अनूदित ग्रंथों का चयन अक्सर विद्विद्यालयी पाठ्यक्रमों और प्रकाशन-बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप किया गया। अमेरिकी विद्विद्यालयों में 'World Literature' और 'Comparative Literature' के अंतर्गत जिन कृतियों को पढ़ाया गया, वे प्राय: उन्हीं भाषाओं से चुनी गईं जिनकी सांस्कृतिक प्रतिष्ठा पहले से स्थापित थी।

यहाँ उदाहरणस्वरूप यूरोपीय क्लासिक्स-दांते की Divine Comedy, सर्वांतेस का Don Quixote, गोएथे का Faust का उल्लेख किया जा सकता है, जिनके अनुवाद बार-बार प्रकाशित हुए। इसके विपरीत एशियाई, अफ्रीकी और आदिवासी साहित्य अपेक्षाकृत देर से और सीमित रूप में अनूदित हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद का चयन किसी तटस्थ साहित्यिक मानदंड पर आधारित नहीं था, बल्कि वह सांस्कृतिक शक्ति संतुलन से संचालित था।

3. आधुनिक अनुवाद सिद्धांत और अमेरिकी चिंतन

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमेरिका में अनुवाद अध्ययन एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में उभरा। इस दौर में यह स्वीकार किया जाने लगा कि अनुवाद केवल भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह विचारधारात्मक, सांस्कृतिक और राजनीतिक हस्तक्षेप भी है।

लॉरेंस वेन्यूटी (Lawrence Venuti) ने इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Translator's Invisibility में वेन्यूटी यह तर्क देते हैं कि अमेरिकी परंपरा में 'अच्छा अनुवाद' वही माना जाता है जो इतना सहज हो कि पाठक यह भूल जाए कि वह एक अनूदित पाठ पढ़ रहा है। वे इसे अनुवादक की 'अदृश्यता' (invisibility) कहते हैं।

वेन्यूटी के अनुसार यह अदृश्यता समस्यापूर्ण है, क्योंकि इससे स्रोत-संस्कृति की भिन्नता मिट जाती है और लक्ष्यभाषा की संस्कृति को सार्वभौमिक मान लिया जाता है। उदाहरणस्वरूप, जब किसी फ्रेंच या लैटिन अमेरिकी उपन्यास का अनुवाद इस प्रकार किया जाता है कि वह पूरी तरह अमेरिकी बोलचाल और सांस्कृतिक संदर्भों में ढल जाए, तब मूल संस्कृति की विशिष्टता पाठक तक नहीं पहुँच पाती।

4.स्थानीयकरण और विदेशीकरण

वेन्यूटी ने अनुवाद की दो प्रमुख रणनीतियों की चर्चा की- स्थानीयकरण और विदेशीकरण। स्थानीयकरण वह प्रक्रिया है जिसमें विदेशी पाठ को लक्ष्यसंस्कृति के अनुरूप ढाल दिया जाता है, ताकि पाठक को कोई भाषिक या सांस्कृतिक असुविधा न हो। इसके विपरीत विदेशीकरण में अनुवादक जानबूझकर कुछ विदेशी तत्वों को बनाए रखता है, जिससे पाठक को यह अनुभव हो कि वह किसी अन्य संस्कृति के पाठ से गुजर रहा है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी जापानी उपन्यास में पारंपरिक खान-पान या सामाजिक संबोधनों का उल्लेख है, तो स्थानीयकरण की रणनीति अपनाने वाला अनुवादक उन्हें अमेरिकी समकक्ष शब्दों से बदल सकता है। जबकि विदेशीकरण अपनाने वाला अनुवादक उन्हीं जापानी शब्दों को बनाए रखेगा और आवश्यक होने पर व्याख्या देगा। वेन्यूटी के अनुसार दूसरी रणनीति सांस्कृतिक विविधता को अधिक सम्मान देती है।

5. एंद्रे लेफेवर और ''पुनर्लेखन'' की अवधारणा

अमेरिकी अनुवाद-चिंतन में एंद्रे लेफेवर (André Lefevere) का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेफेवर के अनुसार अनुवाद मूल पाठ का साधारण प्रतिरूप नहीं, बल्कि उसका 'पुनर्लेखन' (rewriting) होता है। यह पुनर्लेखन उस समय की विचारधारा, काव्यशास्त्र और सत्ता-संरचनाओं से प्रभावित होता है।

लेफेवर ने यह स्पष्ट किया कि साहित्यिक इतिहास में जो कृतियाँ 'महान' मानी जाती हैं, उनका स्वरूप भी अनुवादों और पुनर्लेखनों के माध्यम से निर्मित होता है। उदाहरणस्वरूप, शेक्सपियर की वैद्विक प्रतिष्ठा में उनके अनुवादों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवादों ने शेक्सपियर को एक 'विद्व-लेखक' के रूप में स्थापित किया।

6. अमेरिकी परिप्रेक्ष्य में अनुवाद और सांस्कृतिक राजनीति

अमेरिका में अनुवाद का संबंध केवल साहित्य से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक राजनीति से भी रहा है। शीतयुद्ध के दौर में सोवियत और पूर्वी यूरोपीय साहित्य के अनुवादों को विशेष महत्व दिया गया, क्योंकि वे राजनीतिक और वैचारिक दृष्टि से प्रासंगिक थे। इसी प्रकार लैटिन अमेरिकी साहित्य के अनुवादोंविशेषत: 'मैजिक रियलिज़्म'ने अमेरिकी पाठकों के बीच नई साहित्यिक रुचि विकसित की।

4.8 कनाडाई अनुवाद परंपरा और सिद्धांत

कनाडा की अनुवाद परंपरा को समझना केवल भाषाओं के इतिहास को जानना नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संरचना को समझना है जिसमें अनुवाद एक संघर्षशील बौद्धिक अभ्यास के रूप में विकसित हुआ। कनाडा विद् के उन विरले देशों में से है जहाँ अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी- दोनों भाषाएँ संवैधानिक रूप से मान्य हैं। यह द्विभाषिकता केवल प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि कनाडाई समाज की ऐतिहासिक स्मृति, सांस्कृतिक अस्मिता और सत्ता-संबंधों की आधारशिला है। परिणामस्वरूप, कनाडा में अनुवाद को मात्र भाषिक रूपांतरण न मानकर पहचान, राजनीति और सांस्कृतिक विमर्श से जुड़ी प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। यूरोप या अमेरिका की तुलना में कनाडा में अनुवाद की भूमिका अधिक जटिल है, क्योंकि यहाँ अनुवाद का उद्देश्य केवल दूसरी भाषा को समझना नहीं, बल्कि दो समानांतर सांस्कृतिक समुदायों- अंग्रेज़ी और फ्रांसीसी के बीच संवाद, टकराव और सह-अस्तित्व को संभव बनाना है। इस कारण कनाडाई अनुवाद परंपरा में न तो पूर्ण निष्ठा का आदर्श स्वीकार किया गया, और न ही अनुवादक की अदृश्यता को मूल्य माना गया।

(i) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्रशासन से साहित्य तक

कनाडा में अनुवाद की परंपरा उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्पष्ट रूप से उभरती है। प्रारंभिक दौर में अनुवाद मुख्यत: प्रशासनिक और धार्मिक आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ था। ब्रिटिश शासन की विरासत के कारण अधिकांश सरकारी दस्तावेज अंग्रेजी में तैयार होते थे और उनका फ्रांसीसी में अनुवाद किया जाता था। इस चरण में अनुवाद एकतरफ़ा था- अंग्रेजी स्रोत भाषा और फ्रांसीसी लक्ष्य भाषा। परंतु साहित्यिक अनुवाद ने इस एकतरफ़ा संरचना को चुनौती दी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि साहित्यिक अनुवाद केवल सूचना का हस्तांतरण नहीं, बल्कि संस्कृति की व्याख्या और पुनर्संरचना है। फ्रांसीसी कनाडाई साहित्य को अंग्रेजी में अनूदित करने का उद्देश्य अंग्रेजी भाषी समाज को फ्रांसीसी कनाडाई जीवन-अनुभव, मूल्य-बोध और ऐतिहासिक पीड़ा से परिचित कराना था।

Pamphile Lemay जैसे अनुवादकों के कार्यों में यह प्रयास दिखाई देता है कि अनुवाद के माध्यम से अन्य समुदाय की सामाजिक छवि को सम्मानजनक और अर्थपूर्ण रूप में प्रस्तुत किया जाए।

(ii) अनुवाद और राष्ट्रीय पहचान का प्रश्न

कनाडाई अनुवाद परंपरा का केंद्रीय प्रश्न राष्ट्रीय और भाषायी पहचान से जुड़ा हुआ है। फ्रांसीसी कनाडाई समाज लंबे समय तक स्वयं को अंग्रेज़ी प्रभुत्व के अधीन अनुभव करता रहा। इसलिए अनुवाद को केवल सांस्कृतिक सेतु नहीं, बल्कि सत्ता संबंधों की अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया। बीसवीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते यह स्पष्ट हो गया कि अनुवाद कभी भी तटस्थ नहीं होता। जब फ्रांसीसी कृतियों का अंग्रेजी में अनुवाद किया जाता है, तब यह प्रश्न उभरता है कि- क्या अनुवाद मूल संस्कृति की विशिष्टता को बनाए रख रहा है या वह उसे अंग्रेजी सांस्कृतिक ढाँचे में ढाल रहा है? यहीं से यह विचार जन्म लेता है कि अनुवाद केवल समानता का साधन नहीं, बल्कि कभी-कभी असमानता को उजागर करने का माध्यम भी होता है। यही दृष्टि कनाडाई अनुवाद को उत्तर औपनिवेशिक विमर्श से जोड़ती है।

(iii) क्यूबेक आंदोलन और अनुवाद की नई चेतना

1960 और 1970 के दशकों में क्यूबेक में विकसित सांस्कृतिक-राजनीतिक आंदोलन ने अनुवाद की दिशा को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। इस दौर में भाषा को केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व का आधार माना गया। क्यूबेक साहित्य में प्रयुक्त Joual- जो शहरी श्रमिक वर्ग की बोलचाल की भाषा थी, मानक फ्रांसीसी से भिन्न थी और उसमें अंग्रेजी शब्दों का मिश्रण भी था।

Joual का अनुवाद अत्यंत चुनौतीपूर्ण था, क्योंकि-

शाब्दिक अनुवाद सांस्कृतिक अर्थ को नष्ट कर देता,

और अत्यधिक परिष्कृत अनुवाद उसकी सामाजिक सच्चाई को मिटा देता।

Philip Stratford के अनुवादों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि Joual की सामाजिक ऊर्जा को अंग्रेजी में किसी समतुल्य रूप में प्रस्तुत किया जाए, न कि उसे सुधार दिया जाए।यह दृष्टि अनुवाद को एक सांस्कृतिक हस्तक्षेप बना देती है।

(iv) पुनःस्थानीयकरण और अनुवाद

कनाडाई अनुवाद सिद्धांत में Annie Brisset का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने अनुवाद को Reterritorialising Operation कहा- अर्थात् ऐसी प्रक्रिया जिसमें कोई कृति नए सांस्कृतिक भू-क्षेत्र में पुनः स्थापित होती है। उनके अनुसार अनुवाद मूल कृति की नकल नहीं, बल्कि उसका नया सामाजिक-वैचारिक पुनर्लेखन है। क्यूबेक में किए गए कई अनुवाद इस बात का प्रमाण हैं कि अनुवाद दूसरे को समझने के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को पुष्ट करने का साधन भी बन सकता है।

(v) स्त्रीवादी अनुवाद सिद्धांत : कनाडा का वैद्रिक योगदान

कनाडा का सबसे विशिष्ट योगदान स्त्रीवादी अनुवाद सिद्धांत है, जो विशेष रूप से क्यूबेक की स्त्रीवादी लेखिकाओं और अनुवादकों से जुड़ा है। Luise von Flotow के अनुसार, स्त्रीवादी अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसमें अनुवादक जानबूझकर भाषा में स्त्री की उपस्थिति को स्पष्ट करता है। यह अदृश्य अनुवादक की पारंपरिक धारणा का विरोध करता है। स्त्रीवादी अनुवाद की प्रमुख रणनीतियाँ हैं-Supplementing, Prefacing and Footnoting, और Hijacking। Nicole Brossard की रचनाओं के अनुवादों में यह स्पष्ट दिखता है कि स्त्री-अनुभव को केंद्र में रखने के लिए अंग्रेजी भाषा की पारंपरिक संरचनाओं को बदला गया।

(vi) अनुवादक की दृश्यता और कनाडाई विशेषता

Sherry Simon के अनुसार, कनाडाई अनुवाद परंपरा में अनुवादक को सह-लेखक की भूमिका दी जाती है। अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी वैचारिक स्थिति स्पष्ट करे और निष्पक्षता का भ्रम न बनाए। यही कारण है कि कनाडाई अनुवाद परंपरा अमेरिकी पाठक-केंद्रित परंपरा से भिन्न है।

कनाडाई अनुवाद में-

भाषायी विचलन बनाए रखे जाते हैं,

सांस्कृतिक अजनबियत को मूल्य माना जाता है,

और अनुवाद को राजनीतिक-सांस्कृतिक संवाद के रूप में देखा जाता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1 मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में अनुवाद की क्या भूमिका थी ? कैथेड्रल स्कूलों और विद्यविद्यालयों के संदर्भ में उत्तर दीजिए।

प्रश्न 2 आधुनिक युग (19वीं-20वीं शताब्दी) में अनुवाद की भूमिका में क्या परिवर्तन आए ? साहित्यिक और सैद्धांतिक दृष्टि से विवेचना कीजिए।

प्रश्न 3 अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त तुलनात्मक उल्लेख कीजिए।

24.9 सारांश

- प्रस्तुत इकाई में पाश्चात्य अनुवाद परंपरा के ऐतिहासिक विकास का क्रमबद्ध और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद केवल भाषिक रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि ज्ञान,

संस्कृति, सत्ता और वैचारिक संरचनाओं के हस्तांतरण का सशक्त माध्यम रहा है। प्राचीन विद्र में सुमेर-अक्कादी, बेबीलोन, मिस्र, यूनान और रोम की सभ्यताओं में अनुवाद ने प्रशासन, धर्म और विज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मध्यकालीन पश्चिम में अनुवाद ने प्राचीन ज्ञान को संरक्षित रखते हुए ईसाई धर्मशास्त्र, अरबी-इस्लामी विद्वत्ता और यूरोपीय शिक्षा व्यवस्था के बीच सेतु का कार्य किया। चर्च, मठों और विद्रविद्यालयों के माध्यम से अनुवाद एक संस्थागत गतिविधि के रूप में विकसित हुआ, जहाँ शब्द और अर्थ के बीच संतुलन का प्रश्न केंद्रीय रहा। आधुनिक युग में अनुवाद ने औपचारिक और सैद्धांतिक रूप ग्रहण किया तथा साहित्यिक सृजन, सांस्कृतिक संवाद और वैद्रिक ज्ञान-विनिमय का माध्यम बना। अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं ने पाठक-केंद्रितता, पुनर्लेखन, अनुवादक की दृश्यता, सांस्कृतिक राजनीति और स्त्रीवादी अनुवाद सिद्धांत जैसे आधुनिक विमर्शों को जन्म दिया। इस प्रकार यह इकाई अनुवाद को एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सैद्धांतिक प्रक्रिया के रूप में समग्र दृष्टि से समझने का अवसर प्रदान करती है।

K4.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : प्राचीन विद्र में अनुवाद की आवश्यकता विभिन्न सभ्यताओं के पारस्परिक संपर्क, प्रशासनिक व्यवस्था, धार्मिक संप्रेषण और ज्ञान-संरक्षण से उत्पन्न हुई। सुमेर-अक्कादी परंपरा में द्विभाषिक समाज की स्थिति ने अनुवाद को संगठित गतिविधि का रूप दिया। सुमेरी और अक्कादी भाषाओं में समानांतर पाठ, शब्द-सूचियाँ और लिपिकार-विद्यालय इस बात के प्रमाण हैं कि अनुवाद शिक्षा और ज्ञान-संरक्षण का माध्यम था।

प्रश्न 2 का उत्तर : मध्यकालीन पश्चिम में ईसाई चर्च ने अनुवाद को धर्म-प्रचार और धार्मिक एकरूपता के लिए आवश्यक माना, इसलिए लैटिन में धर्मग्रंथों के अनुवाद को प्रोत्साहन दिया गया। साथ ही चर्च ने अनुवाद पर कठोर नियंत्रण भी रखा, जिससे विधर्मिता से बचा जा सके। सेंट जेरोम द्वारा किया गया बाइबिल का लैटिन अनुवाद (Vulgate) इस परंपरा का केंद्रीय उदाहरण है, जिसमें उन्होंने शब्दानुवाद और भावानुवाद के बीच संतुलन स्थापित किया।

प्रश्न 3 का उत्तर : अरबी-इस्लामी विद्वानों द्वारा यूनानी, फारसी और भारतीय ग्रंथों के अरबी अनुवादों ने मध्यकालीन यूरोप के बौद्धिक विकास को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। अरस्तू, गैलेन, यूक्लिड और टॉलेमी के ग्रंथ अरबी से लैटिन में अनूदित होकर यूरोपीय विद्रविद्यालयों तक पहुँचे। टोलेडो अनुवाद आंदोलन और Gerard of Cremona जैसे विद्वानों के कार्यों ने विज्ञान, दर्शन और चिकित्सा के क्षेत्र में यूरोप को नई दिशा दी।

प्रश्न 4 का उत्तर : मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में अनुवाद ज्ञान-अर्जन का अनिवार्य शर्त था। मठों, कैथेड्रल स्कूलों और बाद में विद्रविद्यालयों में शिक्षण की भाषा लैटिन थी, जबकि ज्ञान-स्रोत यूनानी और अरबी में उपलब्ध थे। इसलिए अनुवाद के माध्यम से दार्शनिक, वैज्ञानिक और धार्मिक ग्रंथों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया। विशेषत: अरस्तू के ग्रंथों के अनुवादों ने मध्यकालीन विद्रविद्यालयी शिक्षा को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।

प्रश्न 5 का उत्तर : उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में अनुवाद की भूमिका में गुणात्मक परिवर्तन आए। अनुवाद केवल धार्मिक या शास्त्रीय गतिविधि न रहकर साहित्यिक सृजन और अकादमिक अनुशासन के रूप में विकसित हुआ। इस काल में अनुवादसिद्धांतों का विकास हुआ और संप्रेषण, पाठकउन्मुखता तथा सांस्कृतिक संदर्भ पर बल दिया गया। फ़ि्ज़ेराल्ड, मैथ्यू अर्नोल्ड और आधुनिक अनुवाद परियोजनाओं ने अनुवाद को वैद्रिक सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बनाया।

प्रश्न 6 का उत्तर : अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं में मूलभूत अंतर दृष्टिगोचर होता है। अमेरिकी परंपरा में पाठक-केंद्रितता, सहजता और अनुवादक की 'अदृश्यता' पर बल दिया गया, जबकि कनाडाई परंपरा में द्विभाषिकता, सांस्कृतिक राजनीति और अनुवादक की 'दृश्यता' को महत्व मिला। कनाडा में स्त्रीवादी और उत्तर-औपनिवेशिक अनुवाद सिद्धांतों का विशेष विकास हुआ।

O4.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Bassnett, Susan. (2002). Translation Studies. London: Routledge.
- Newmark, Peter. (1988). A Textbook of Translation. London: Prentice Hall.
- Venuti, Lawrence. (1995). The Translator's Invisibility: A History of Translation. London: Routledge.
- Lefevere, André. (1992). Translation, Rewriting and the Manià¿ulation of Literary Fame. London: Routledge.
- Steiner, George. (1998). After Babel: Aspects of Language and Translation. Oxford: Oxford University Press.
- Nida, eugene A. (1964). Toward a Science of Translating. Leiden: E. J. Brill.
- Simon, Sherry. (1996). Gender in Translation: Cultural Identity and the Politics of Transmission. London: Routledge.
- Mukherjee, Sujit. (1994). Translation as Discovery and Other essays. Hyderabad: Orient Longman.
- Niranjana, Tejaswini. (1992). Siting Translation: History, Post-Structuralism, and the Colonial Context. Berkeley: University of California Press.
- Trivedi, Harish. (2007). Colonial Transactions: english Literature and India. Calcutta: Papyrus.

M4.12 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. प्राचीन विद्र में अनुवाद की आवश्यकता किन परिस्थितियों में उत्पन्न हुई ?
2. सुमेर-अक्कादी सभ्यता में द्विभाषिकता ने अनुवाद को कैसे प्रोत्साहित किया ?
3. बेबीलोन सभ्यता में विधि और विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की क्या भूमिका रही ?
4. प्राचीन मिस्र में दुभाषियों (interpreters) का क्या महत्व था ?
5. सेप्टुआजिंट (Septuagint) को प्राचीन अनुवाद इतिहास में क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है ?
6. रोमन काल में सिसरो के अनुवाद-विचार का मूल तात्पर्य क्या था ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. सुमेर, बेबीलोन और मिस्र सभ्यताओं के संदर्भ में प्राचीन विद्र की अनुवाद परंपरा की भूमिका का सम्यक निरूपण कीजिए।
2. मध्यकालीन पश्चिम में ईसाई चर्च और अनुवाद के संबंध को सेंट जेरोम के योगदान के आलोक में आलोचनात्मक विश्लेषण दीजिए।
3. अरबी-इस्लामी विद्वानों द्वारा यूनानी ग्रंथों के अनुवादों का मध्यकालीन यूरोप के बौद्धिक विकास पर प्रभाव उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
4. मध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था में कैथेड्रल स्कूलों और विद्रविद्यालयों के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका का तथ्यपरक विवरण प्रस्तुत कीजिए।

5. उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में अनुवाद की भूमिका में आए परिवर्तनों को साहित्यिक और सैद्धांतिक दृष्टि से विश्लेषणात्मक रूप में निरूपित कीजिए।
6. अमेरिकी और कनाडाई अनुवाद परंपराओं की प्रमुख विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करें।

*** ***** ***

इकाई 5 अनुवाद के सम्वन्ध में भारतीय सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

5.1 उद्देश्य
5.2 प्रस्तावाना
5.3 भारतीय अनुवाद की प्रारंभिक चिंतनधारा
5.4 प्राचीन भारत का राजकाज और अनुवाद चिंतन
5.5 मुगलकालीन अनुवाद चिन्तक
5.6 देशीय अनुवाद चिन्तक की कुछ आतंरिक धाराएं
5.7 सारांश
5.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
5.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें
5.10 अभ्यास प्रश्न

5.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप –

- भारतीय परंपरा में अनुवाद की अवधारणा और विकास को समझ सकेंगे।
- भारतीय अनुवाद-चिंतन में निहित भाषिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टियों को पहचान सकेंगे।
- पाश्चात्य और भारतीय अनुवाद-दृष्टियों के बीच के मौलिक अंतर को स्पष्ट कर सकेंगे।
- भारतीय संदर्भ में अनुवाद को सृजनात्मक और पुनर्रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में समझ सकेंगे।
- भारतीय अनुवाद परंपरा में अर्थ, भाव और संदर्भ की भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

5.2 प्रस्तावाना

भारतीय बौद्धिक परंपरा में अनुवाद का इतिहास अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रहा है। भारत में अनुवाद को केवल भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे ज्ञान, संस्कृति और परंपरा के निरंतर प्रवाह का माध्यम माना गया है। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल और आधुनिक युग तक भारतीय चिंतनधारा में अनुवाद के विविध रूप देखने को मिलते हैं- जैसे भाष्य, टीका, अनुकरण, रूपांतरण और पुनर्सृजन। इन सभी रूपों में मूल उद्देश्य अर्थ और भाव को सुरक्षित रखते हुए उसे नए भाषिक और सांस्कृतिक संदर्भ में जीवंत बनाए रखना रहा है। भारतीय अनुवाद-चिंतन में 'मूल' और 'अनुवाद' के बीच कठोर विभाजन नहीं मिलता। यहाँ अनुवाद को एक सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसमें अनुवादक को पाठ के भाव, आशय और सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इसी कारण भारतीय परंपरा में रामायण, महाभारत और पुराणों के अनेक भाषिक रूपांतर देखने को मिलते हैं, जिन्हें स्वतंत्र साहित्यिक कृतियों के रूप में मान्यता प्राप्त है।

इस इकाई में भारतीय अनुवाद-चिंतन की इसी विशिष्ट दृष्टि का अध्ययन किया जाएगा, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि भारतीय संदर्भ में अनुवाद न तो यांत्रिक प्रक्रिया है और न ही केवल भाषिक अभ्यास, बल्कि वह सांस्कृतिक, दार्शनिक और सृजनात्मक संवाद का एक सशक्त माध्यम है।

5.3 भारतीय अनुवाद की प्रारंभिक चिंतनधारा

भारतीय अनुवाद की प्रारंभिक चिंतनधारा का विकास किसी एक काल, ग्रंथ या सिद्धांत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि

यह भारतीय ज्ञान-परंपरा के दीर्घ ऐतिहासिक क्रम में क्रमशः निर्मित हुई। प्राचीन भारत में अनुवाद को आधुनिक अर्थों में केवल भाषांतरण नहींमानागया, बल्कि उसे अर्थ-व्याख्या, भाव-विस्तार और ज्ञान-संप्रेषण की प्रक्रिया के रूप में देखा गया। इसी कारण भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य, टीका, व्याख्या तथा विवेचन के बीच स्पष्ट विभाजन नहीं मिलता।

वैदिक साहित्य के संदर्भ में यह चिंतन विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद जैसे ग्रंथों के मंत्र सामान्य जन के लिए सहज नहीं थे, इसलिए उसके अर्थ को स्पष्ट करने हेतु ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषदों की रचना हुई। यह प्रक्रिया शब्द प्रति शब्द अनुवाद न होकर तात्पर्य और दार्शनिक आशय की व्याख्या थी। उदाहरणस्वरूप, शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ-विधियों और मंत्रों के अर्थ का जो विस्तार मिलता है, वह मूल वैदिक वाक्यों का भाषिक अनुवाद नहीं, बल्कि उनके सांस्कृतिक और दार्शनिक अर्थ का पुनर्पाठ है। यही प्रवृत्ति भारतीय अनुवाद-चिंतन की आधारशिला मानी जा सकती है। भाष्य-परंपरा इस चिंतन को और अधिक सुदृढ़ करती है। आचार्य सायण द्वारा वेदों पर रचित भाष्य इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सायण का कार्य केवल वैदिक शब्दों का पर्याय प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि उन्होंने मंत्रों के अर्थ को तत्कालीन बौद्धिक, धार्मिक और सामाजिक संदर्भ में समझाने का प्रयास किया। इसी प्रकार पतंजलि के महाभाष्य में व्याकरणिक सूत्रों की जो व्याख्या मिलती है, वह भाषा-संरचना के साथ-साथ अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया को भी स्पष्ट करती है। यहाँ अनुवाद और व्याख्या एक दूसरे से अलग नहीं दिखाई देते। दर्शन-ग्रंथों में भी यही प्रवृत्ति देखने को मिलती है। शंकराचार्य, वाचस्पति मिश्र और कुमारिल भट्ट जैसे आचार्यों ने उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और अन्य दार्शनिक ग्रंथों पर जो भाष्य लिखे, वे मूल ग्रंथ के शब्दों को ज्यों का त्यों रखने की अपेक्षा उनके तात्विक आशय को स्पष्ट करने पर केंद्रित थे। उदाहरण के लिए ब्रह्मसूत्र पर शंकराचार्य का भाष्य केवल सूत्रों का अनुवाद नहीं है, बल्कि अद्वैत वेदांत की दार्शनिक स्थापना का माध्यम भी है। इस प्रकार अनुवाद यहाँ वैचारिक परंपरा के विस्तार का साधन बन जाता है। महाकाव्य-परंपरा में भारतीय अनुवाद चिंतन का एक भिन्न रूप सामने आता है। रामायण और महाभारत जैसी कृतियाँ केवल संस्कृत तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों में पुनः रची गईं। इन पुनर्रचनाओं में कथा-संरचना को सुरक्षित रखते हुए भाषा, भाव और सांस्कृतिक परिवेश को स्थानीय संदर्भों के अनुसार ढाला गया। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि भारतीय परंपरा में अनुवाद को सृजनात्मक स्वतंत्रता के साथ स्वीकार किया गया। यहाँ मूल पाठ की निष्ठा का अर्थ शब्दानुकरण नहीं, बल्कि कथा और मूल्य-संरचना की निरंतरता था। बौद्ध और जैन साहित्य में भी प्रारंभिक अनुवाद-चिंतन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पालि और प्राकृत भाषाओं में रचित ग्रंथों का संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में रूपांतरण इस उद्देश्य से किया गया कि धार्मिक और नैतिक सिद्धांत अधिक व्यापक समाज तक पहुँच सकें। बौद्ध आगमों के विभिन्न भाषिक संस्करण इस बात का प्रमाण हैं कि अर्थ-संप्रेषण को शब्द-संरचना से अधिक महत्व दिया गया। यहाँ अनुवाद का उद्देश्य दार्शनिक बोध और आचार-संहिता को जनसामान्य के लिए ग्राह्य बनाना था।

5.4 प्राचीन भारत का शासन-प्रणालीऔर अनुवाद चिंतन

प्राचीन भारत की शासन-प्रणाली का स्वरूप केवल राजनीतिक सत्ता के संचालन तक सीमित नहीं था, बल्कि वह ज्ञान, धर्म और सामाजिक व्यवस्था के संरक्षण तथा प्रसार से गहराई से जुड़ी हुई थी। इस बहुआयामी शासन-व्यवस्था में अनुवाद एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में उभरता है, जिसके माध्यम से राज्य की नीतियाँ, धार्मिक सिद्धांत और नैतिक अवधारणाएँ विविध भाषायी समुदायों तक पहुँचाई जाती थीं। बहुभाषिक समाज में शासन के प्रभावी संचालन के लिए यह आवश्यक था कि ज्ञान और आदेश केवल एक अभिजात भाषा तक सीमित न रहें, बल्कि जनभाषाओं में भी संप्रेषित हों।

मौर्यकालीन शासन में यह प्रवृत्ति विशेष रूप से दिखाई देती है। सम्राट अशोक के शिलालेख, जो ब्राह्मी, खरोष्ठी और अन्य लिपियों में उत्कीर्ण किए गए, इस तथ्य का प्रमाण हैं कि शासन ने भाषा और लिपि के माध्यम से व्यापक जनसमुदाय से संवाद स्थापित किया। धम्मलेख केवल राजनीतिक घोषणाएँ नहीं थे, बल्कि नैतिक उपदेशों का ऐसा रूपांतरण थे, जिसमें मूल बौद्ध अवधारणाओं को सरल, जनसुलभ भाषा में प्रस्तुत किया गया। यहाँ अनुवाद

शब्दानुवाद न होकर भाव और नीति के स्तर पर किया गया संप्रेषण था।

गुप्तकाल में शासन और अनुवादचिंतन का संबंध विद्वत् परंपरा के माध्यम से और अधिक सुदृढ़ हुआ। इस काल में मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति और नारद स्मृति जैसे धर्मशास्त्रीय ग्रंथों की टीकाएँ और व्याख्याएँ तैयार की गईं। मेधातिथि की मनुस्मृति-टीका इसका प्रमुख उदाहरण है, जहाँ मूल श्लोकों के अर्थ को समकालीन सामाजिक और प्रशासनिक संदर्भों के अनुरूप स्पष्ट किया गया। यह प्रक्रिया शासन की न्यायिक और नैतिक आवश्यकताओं से जुड़ी हुई थी और इसे व्याख्यात्मक अनुवाद के रूप में देखा जा सकता है।

राजदरबारों में अनुवाद-चिंतन की भूमिका केवल धर्मशास्त्रों तक सीमित नहीं रही। अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ, जिन्हें कौटिल्य से जोड़ा जाता है, शासन, कूटनीति और प्रशासनिक नीति का आधार बने। इस ग्रंथ की विभिन्न टीकाएँ और व्याख्याएँ यह दर्शाती हैं कि प्रशासनिक ज्ञान को विभिन्न संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया गया। शासन की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुसार अर्थ और नीति को स्पष्ट करना अनुवादचिंतन का ही एक रूप था।

प्राचीन भारत में अंतरराज्यीय और अंतरसांस्कृतिक संपर्क भी अनुवादचिंतन को प्रोत्साहित करने वाले तत्व रहे। विदेशी दूतों, यात्रियों और विद्वानों के आगमन से शासन को बाहरी संस्कृतियों के साथ संवाद स्थापित करना पड़ा। चीनी यात्रियों फाह्यान और ह्वेनसांग के यात्रा-वृत्तांत इस बात के उदाहरण हैं कि कैसे भारतीय ज्ञान, प्रशासनिक व्यवस्था और धार्मिक विचारों को अन्य भाषाओं में समझाया और रूपांतरित किया गया। इन विवरणों में अनुवाद केवल भाषिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक व्याख्या का माध्यम बन गया।

बौद्ध शासन-संरक्षण के अंतर्गत अनुवाद की परंपरा को विशेष प्रोत्साहन मिला। त्रिपिटक साहित्य का पालि और संस्कृत से चीनी तथा तिब्बती भाषाओं में अनुवाद इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण उदाहरण है। कुमारजीव द्वारा किए गए अनुवादों में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि मूल बौद्ध अवधारणाओं को लक्ष्य संस्कृति की बौद्धिक संरचना के अनुरूप ढाला गया। यह कार्य शासन के संरक्षण और समर्थन के बिना संभव नहीं था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राज्य और अनुवादचिंतन परस्पर संबद्ध थे।

जैन परंपरा में भी शासन और अनुवादचिंतन का घनिष्ठ संबंध दिखाई देता है। आगम साहित्य की प्राकृत भाषा से संस्कृत और आगे चलकर अपभ्रंश तथा आधुनिक भाषाओं में व्याख्या की गई। तत्वार्थसूत्र और उसकी टीकाएँ- जैसे उमास्वाति की परंपरा- इस बात का उदाहरण हैं कि धार्मिक-दार्शनिक ज्ञान को व्यापक समाज तक पहुँचाने के लिए अनुवाद और व्याख्या को अनिवार्य माना गया। यह प्रक्रिया शासन द्वारा संरक्षित धार्मिक संस्थानों के माध्यम से संचालित होती रही।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

भारतीय परंपरा में अनुवाद को केवल भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसे ज्ञान, संस्कृति और भाव के सतत प्रवाह का माध्यम माना गया है। यहाँ अनुवाद भाष्य, टीका, व्याख्या, रूपांतरण और पुनर्सृजन जैसी विविध प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुआ, जिनका उद्देश्य मूल ग्रंथ के तात्विक आशय और सांस्कृतिक संदर्भ को नए भाषिक परिवेश में जीवंत बनाए रखना रहा है।

5.5 मुगलकालीन अनुवाद चिन्तक

भारतीय अनुवाद परंपरा के इतिहास में मुगलकाल एक ऐसे निर्णायक मोड़ के रूप में उभरता है, जहाँ अनुवाद केवल भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण की प्रक्रिया न रहकर शासन, संस्कृति, धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान और सामाजिक संरचना के बीच सक्रिय संवाद का सशक्त माध्यम बन गया। इस काल में अनुवाद को न तो केवल साहित्यिक अभ्यास के रूप में देखा गया और न ही उसे सीमित रूप से भाषायी कौशल तक बाँधा गया, बल्कि उसे वैचारिक समन्वय, सांस्कृतिक आत्मसातीकरण और सभ्यताओं के पारस्परिक संवाद के उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया। मुगल शासकों की बहुभाषिक दृष्टि, विद्वानों के प्रति संरक्षण की नीति और भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपरा

के प्रति जिज्ञासा ने अनुवाद को संस्थागत और वैचारिक आधार प्रदान किया। संस्कृत, फारसी, अरबी, तुर्की, हिंदी और अनेक क्षेत्रीय भाषाओं के बीच हुए अनुवादों ने भारतीय ज्ञान को न केवल देश के भीतर व्यापक बनाया, बल्कि उसे ईरान, मध्य एशिया और अरब जगत तक पहुँचाकर वैदिक बौद्धिक संवाद का हिस्सा बनाया।

मुगल शासन की स्थापना के साथ ही फारसी भाषा भारत में प्रशासन, इतिहास और साहित्य की प्रमुख भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। फारसी के राजभाषा बनने से यह अनिवार्य हो गया कि भारतीय प्रशासन, सामाजिक संरचना, धार्मिक परंपराओं और स्थानीय ज्ञान को फारसी भाषा में रूपांतरित किया जाए। यह अनुवाद केवल प्रशासनिक सुविधा के लिए नहीं था, बल्कि शासन की वैधता, सांस्कृतिक समझ और जनता से संवाद के लिए भी आवश्यक था। दूसरी ओर, भारत आने वाले सूफी संतों, यात्रियों और विद्वानों के लिए भारतीय दार्शनिक ग्रंथ, महाकाव्य और लोककथाएँ अत्यंत आकर्षण का विषय बनीं। उन्होंने इन ग्रंथों को समझने और अपनी सांस्कृतिक परंपरा के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इसी प्रक्रिया में अनुवाद एक द्विपक्षीय संवाद के रूप में विकसित हुआ, जहाँ एक ओर भारतीय ज्ञान फारसी और अरबी में गया, तो दूसरी ओर इस्लामी, ईरानी और तुर्की ज्ञान परंपराएँ संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में पहुँचीं।

सम्राट अकबर (1542–1605) का शासनकाल मुगलकालीन अनुवाद परंपरा का स्वर्णयुग माना जाता है। अकबर ने अनुवाद को केवल विद्वानों की बौद्धिक रुचि का विषय नहीं रहने दिया, बल्कि उसे राज्य-नीति का हिस्सा बनाया। उन्होंने सांस्कृतिक समन्वय और धार्मिक सहिष्णुता को अपने शासन का आधार बनाया और इसी उद्देश्य से 'मकतबख़ाना' नामक अनुवाद विभाग की स्थापना की। यह विभाग भारतीय इतिहास में संगठित और राज्य-प्रायोजित अनुवाद गतिविधियों का पहला सुव्यवस्थित उदाहरण माना जाता है। मकतबख़ाना में संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान फारसी जानने वाले विद्वानों के साथ मिलकर कार्य करते थे, जिससे अनुवाद एक सामूहिक और संवादात्मक प्रक्रिया बन गया।

अकबर के आदेश पर जिन ग्रंथों का अनुवाद कराया गया, उनमें महाभारत, रामायण, अथर्ववेद, गीता, पंचतंत्र और योगवाशिष्ठ प्रमुख हैं। महाभारत का फारसी अनुवाद 'रज़्मनामा' शीर्षक से हुआ, जो मुगलकालीन अनुवाद चिंतन का श्रेष्ठ उदाहरण है। इस अनुवाद में केवल कथा का रूपांतरण नहीं किया गया, बल्कि युद्ध, धर्म, नीति और सामाजिक मूल्यों की भारतीय अवधारणाओं को फारसी सांस्कृतिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया। इसी प्रकार रामायण के अनुवाद में मर्यादा, आदर्श शासन और नैतिक मूल्यों को इस्लामी और फारसी नैतिक दृष्टि के अनुरूप ढालने का प्रयास किया गया। अकबरकालीन अनुवादों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि वे शब्दानुवाद पर आधारित नहीं थे। अनुवादकों ने भावानुवाद, अनुकूलन और सांस्कृतिक आत्मसातीकरण को प्राथमिकता दी। भारतीय मिथकों, प्रतीकों और दार्शनिक अवधारणाओं को यथावत रखने के बजाय उन्हें लक्ष्य भाषा और संस्कृति के अनुरूप प्रस्तुत किया गया। इससे अनुवाद एक प्रकार का पुनर्सृजन बन गया। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि मुगलकालीन अनुवाद चिंतन आधुनिक अर्थों में 'अनुवाद बनाम रूपांतरण' की बहस से कहीं अधिक व्यापक था, जहाँ अनुवाद को सृजनात्मक और वैचारिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया। अकबर के दरबार में अनेक विद्वान अनुवाद कार्य से जुड़े हुए थे, जिनमें अबुल फ़ज़ल, अब्दुल क़ादिर बदायूँनी, फैज़ी और मुल्ला अब्दुल क़ादिर प्रमुख हैं।

अबुल फ़ज़ल अकबर के सबसे विद्वसनीय दरबारी विद्वान थे। उनकी रचनाएँ अकबरनामा और आइन-ए-अकबरी प्रत्यक्ष अनुवाद न होते हुए भी भारतीय प्रशासन, समाज, धर्म और संस्कृति का फारसी भाषा में सृजनात्मक रूपांतरण प्रस्तुत करती है। इसमें भारतीय सामाजिक संरचना, जाति-व्यवस्था, धार्मिक विविधता और प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तृत विवरण मिलता है, जो फारसी पाठकों के लिए भारत को समझने का माध्यम बना। अब्दुल क़ादिर बदायूँनी ने रामायण और अथर्ववेद का फारसी अनुवाद किया। यद्यपि उनका दृष्टिकोण कई बार आलोचनात्मक रहा, फिर भी उनके अनुवाद भारतीय धार्मिक ग्रंथों की संरचना और विषयवस्तु को फारसी पाठकों के सामने लाने में सफल रहे। फैज़ी अकबरकालीन अनुवाद परंपरा के सबसे सृजनशील विद्वानों में गिने जाते हैं। उन्होंने योगवाशिष्ठ और महाभारत के अनुवाद में दार्शनिक गहराई और काव्यात्मक संवेदना का सुंदर समन्वय किया, जिससे अनुवाद एक साहित्यिक कृति के रूप में उभरा।

जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में अनुवाद गतिविधियाँ जारी रहीं, हालाँकि उनका स्वरूप अकबरकाल की तुलना में कुछ अधिक व्यावहारिक हो गया। इस काल में ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, चिकित्सा और ज्योतिषीय ग्रंथों के अनुवाद पर विशेष ध्यान दिया गया। बृहत्संहिता जैसे ग्रंथों का फारसी अनुवाद इस बात का प्रमाण है कि भारतीय खगोल और ज्योतिष ज्ञान को मध्य एशिया और ईरान तक पहुँचाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस दौर में अनुवाद चिंतन सत्ता और ज्ञान के संबंध को स्पष्ट करता है, जहाँ ज्ञान को शासन की प्रभावशीलता से जोड़ा गया।

मुगलकालीन अनुवाद परंपरा में दारा शिकोह का योगदान अत्यंत विशिष्ट और वैचारिक रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने उपनिषदों का फारसी अनुवाद 'सिर्र-ए-अकबर' शीर्षक से कराया। इस ग्रंथ में दाराशिकोह ने वेदांत दर्शन और सूफी चिंतन के बीच साम्य स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने उपनिषदों को इस्लामी रहस्यवाद की भाषा में प्रस्तुत करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया कि विभिन्न धार्मिक परंपराओं का मूल उद्देश्य एक ही सत्य की खोज है। यह अनुवाद धार्मिक सहिष्णुता और दार्शनिक संवाद का एक दुर्लभ उदाहरण है, जो मुगलकालीन अनुवाद चिंतन की गहराई को दर्शाता है। औरंगजेब के शासनकाल में धार्मिक नीति अपेक्षाकृत कठोर हो गई, जिसके कारण अनुवाद गतिविधियों में कुछ कमी अवश्य आई, किंतु यह परंपरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई। इस काल में इस्लामी विधि, कुरान, हदीस और फ़िक़्ह से संबंधित ग्रंथों के अनुवाद को प्राथमिकता दी गई। इसके साथ-साथ कुछ भारतीय ग्रंथों के अनुवाद भी होते रहे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद मुगल शासन की बौद्धिक संरचना का अभिन्न अंग बना रहा।

मुगलकालीन अनुवाद चिंतन की प्रमुख विशेषता उसकी बहुभाषिकता है। संस्कृत, फारसी, अरबी, तुर्की और हिंदी के बीच हुए अनुवादों ने भाषाई सीमाओं को तोड़ा। दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता अनुकूलन और आत्मसातीकरण है, जिसमें मूल ग्रंथों को लक्ष्य भाषा और संस्कृति के अनुरूप ढाला गया। इस काल के अनुवादकों ने भाषा को केवल संप्रेषण का साधन नहीं माना, बल्कि उसे सांस्कृतिक सेतु के रूप में देखा। अनुवाद के माध्यम से भारतीय दर्शन, मिथक, विज्ञान और सामाजिक संरचना को एक नए बौद्धिक परिवेश में प्रस्तुत किया गया।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. भारतीय परंपरा में अनुवाद को केवल भाषांतरण न मानकर किस व्यापक दृष्टि से देखा गया है? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. भाष्य, टीका और व्याख्या को भारतीय अनुवादचिन्तन का अभिन्न अंग क्यों माना जाता है?

प्रश्न 3. प्राचीन भारत की शासन-प्रणाली में अनुवाद की क्या भूमिका रही है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5.6 देशीय अनुवाद चिन्तक की कुछ आतंरिक धाराएं

भारतीय अनुवाद-परंपरा का विकास केवल विदेशी भाषाओं या बाह्य सांस्कृतिक संपर्कों की देन नहीं है, बल्कि उसकी जड़ें भारतीय समाज, संस्कृति, लोकजीवन और बौद्धिक परंपरा के भीतर अत्यंत गहराई तक फैली हुई है। भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक समाज में विचारों, ज्ञान और अनुभूतियों का संप्रेषण सदैव किसी न किसी रूप में भाषिक रूपांतरण से जुड़ा रहा है। यही कारण है कि देशीय अनुवादचिन्तन का स्वरूप मूलतः आंतरिक आवश्यकताओं, सामाजिक संरचनाओं और सांस्कृतिक निरंतरता से प्रेरित रहा। यहाँ अनुवाद को केवल एक तकनीकी या भाषिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद, सांस्कृतिक आत्मसातीकरण और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का माध्यम माना गया।

देशीय अनुवाद-चिन्तक से आशय उन विद्वानों, कवियों, संतों और विचारकों से है जिन्होंने विदेशी प्रभाव से स्वतंत्र रहते हुए, या उसके समानांतर, भारतीय भाषाओं के बीच अर्थ, भाव और सांस्कृतिक मूल्यों के संप्रेषण की सुदीर्घ परंपरा को विकसित किया। इन चिन्तकों की अनुवाद-दृष्टि शास्त्रीय कठोरता और शब्दानुकरणात्मक निष्ठा से अधिक लोकस्वीकृति, भावात्मक संप्रेषण और सामाजिक उपयोगिता पर आधारित रही। परिणामस्वरूप भारतीय अनुवादपरंपरा में अनुवाद, टीका, भाष्य, व्याख्या, पुनर्कथन, रूपांतरण और पुनर्सृजन के बीच कठोर सीमाएँ नहीं खींची गईं, बल्कि

उन्हें एक ही वैचारिक प्रवाह की विविध अभिव्यक्तियों के रूप में स्वीकार किया गया।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

भारतीय अनुवादचिन्तन की विशेषता इसकी सृजनात्मक और आत्मसाती दृष्टि है, जिसमें अनुवादक को भाव, संदर्भ और लोकबोध के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इस परंपरा मंक शब्दानुकरण की अपेक्षा अर्थ, अनुभूति और सांस्कृतिक साम्य को अधिक महत्व दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप रामायण, महाभारत और अन्य ग्रंथों के अनेक भाषिक रूपांतर स्वतंत्र साहित्यिक कृतियों के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

भारतीय अनुवादचिन्तन की सबसे प्राचीन और सुदृढ़ आंतरिक धारा भाष्य-परंपरा से जुड़ी हुई है। भारतीय दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों की संरचना सूत्रात्मक, सांकेतिक और अत्यंत संक्षिप्त होने के कारण उनकी सम्यक् समझ के लिए भाष्य को अनिवार्य माना गया। शंकराचार्य, रामानुजाचार्य और माध्वाचार्य द्वारा रचित उपनिषद्-भाष्य, गीता-भाष्य और ब्रह्मसूत्र-भाष्य वस्तुत: अनुवादात्मक विवेचन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यद्यपि ये भाष्य उसी संस्कृतभाषामें लिखे गए, फिर भी वे मूल ग्रंथ के गूढ़ और संक्षिप्त कथनों को समकालीन बौद्धिक संदर्भ में अर्थानुवाद के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

यहाँ अनुवाद का उद्देश्य शब्द-रूपांतरण नहीं, बल्कि अर्थ-विस्तार और बोध-स्पष्टता है। उदाहरणस्वरूप, शंकराचार्य द्वारा तत्वमसि जैसे महावाक्यों की व्याख्या केवल भाषिक अनुवाद नहीं, बल्कि अद्वैत वेदांत के दार्शनिक ढाँचे के भीतर उसका पुन: अर्थ निर्धारण है। इस परंपरा में अनुवाद को ज्ञान-संप्रेषण का साधन माना गया, न कि केवल भाषिक स्थानांतरण की प्रक्रिया। भाष्य-परंपरा के समानांतर देशीय अनुवादचिन्तन की दूसरी सशक्त धारा लोकभाषाओं में किए गए अनुवादों से जुड़ी हुई है। जब संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा जनसामान्य की पहुँच से दूर होती गई, तब संत-कवियों और लोककवियों ने ज्ञान, धर्म और दर्शन को लोकभाषाओं में रूपांतरित किया। यह प्रक्रिया अनुवाद और रूपांतरण के बीच स्थित दिखाई देती है, जहाँ मूल ग्रंथ की कथा और भाव संरक्षित रहते हैं, किंतु भाषा, शैली और सांस्कृतिक संकेत लोकानुकूल बना दिए जाते हैं। तुलसीदास कृत रामचरितमानस इस प्रवृत्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है। वाल्मीकि रामायण का यह अवधी रूपांतरण न तो शाब्दिक अनुवाद है और न ही पूर्णत: स्वतंत्र मौलिक रचना, बल्कि यह भावानुवाद और सांस्कृतिक आत्मसातीकरण का अद्वितीय नमूना है। तुलसीदास ने रामकथा को भारतीय लोकमानस, नैतिक मूल्यों और सामाजिक आदर्शों के अनुरूप ढालते हुए प्रस्तुत किया। इसी प्रकार सूरदास द्वारा भागवत पुराण की कथाओं का ब्रजभाषा में काव्यात्मक रूपांतरण भी देशीय अनुवादचिन्तन की इसी धारा का प्रतिनिधित्व करता है। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि लोकभाषा आधारित अनुवाद में लक्ष्य भाषा के पाठकों की संवेदना और सांस्कृतिक अपेक्षाओं को सर्वोपरि रखा गया। भक्ति आंदोलन ने देशीय अनुवादचिन्तन को और अधिक व्यापक तथा जनोन्मुख बनाया। इस आंदोलन के संतों ने धार्मिक ग्रंथों और दार्शनिक अवधारणाओं को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अनुवाद, रूपांतरण और पुनर्सृजन को माध्यम बनाया। कबीर, नामदेव, रैदास और मीराबाई की वाणी में शास्त्रीय ग्रंथों की अवधारणाएँ प्रत्यक्ष अनुवाद के रूप में नहीं, बल्कि लोकबोध में ढली हुई अनुभूतियों के रूप में उपस्थित हैं। कबीर के दोहों में उपनिषदों और योग-दर्शन की गूढ़ अवधारणाएँ भावात्मक पुनर्सृजन के रूप में सामने आती हैं। यहाँ अनुवाद का उद्देश्य पाठ की शुद्धता या संरचनात्मक समानता नहीं, बल्कि अनुभूति की संप्रेषणीयता है। इस प्रकार भक्तिकालीन अनुवादचिन्तन ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की सशक्त प्रक्रिया बन जाता है। देशीय अनुवादचिन्तन की एक महत्वपूर्ण आंतरिक धारा कथात्मक साहित्य से भी जुड़ी है। पंचतंत्र, हितोपदेश और कथासरित्सागर जैसे ग्रंथों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में पुनर्कथन और रूपांतरण इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि भारतीय परंपरा में कथा को स्थिर पाठ नहीं, बल्कि चलायमान सांस्कृतिक इकाई माना गया। पंचतंत्र की कथाएँ संस्कृत से प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में पहुँचते-पहुँचते परिवेश, पात्रों और कथानक के स्तर पर परिवर्तित होती रहीं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि देशीय अनुवादचिन्तन में अनुवाद को एक जीवित परंपरा माना गया, जो समय और समाज के साथ स्वयं को रूपांतरित करती रहती है।

भारतीय नाट्य और काव्य परंपरा में भी अनुवादचिन्तन की आंतरिक धाराएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

संस्कृत नाटकों के प्राकृत और लोकभाषा रूपांतरण, तथा बाद में आधुनिक भारतीय भाषाओं में उनके अनुवाद, इस परंपरा की निरंतरता को दर्शाते हैं। कालिदास के अभिज्ञानशाकुंतलम् के विभिन्न भाषाई रूपांतरण इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन अनुवादों में मूल काव्यात्मक सौंदर्य को सुरक्षित रखते हुए भाषा और संस्कृति के अनुरूप परिवर्तन किए गए। इससे यह स्पष्ट होता है कि देशीय अनुवादचिन्तन में काव्यात्मक समतुल्यता को शब्दगत समानता से अधिक महत्व दिया गया।

आधुनिक काल में देशीय अनुवादचिन्तन ने नए सामाजिक और वैचारिक संदर्भ ग्रहण किए। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने अनुवाद को सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना और साहित्यिक विकास के उपकरण के रूप में देखा। भारतेंदु के नाट्य और गद्य अनुवाद समकालीन सामाजिक समस्याओं और सांस्कृतिक पुनर्जागरण से जुड़े हुए हैं। प्रेमचंद के अनुवाद-कर्म में यह दृष्टि स्पष्ट है कि वे अनुवाद को यथार्थबोध और मानवीय संवेदना के प्रसार का माध्यम मानते थे। देशीय अनुवादचिन्तन की एक अन्य महत्वपूर्ण धारा आत्मसातीकरण की है। इसमें अनुवादक मूल पाठ को लक्ष्य संस्कृति में इस प्रकार समाहित करता है कि वह विदेशी या बाह्य प्रतीत न हो। रामकथा के विभिन्न क्षेत्रीय संस्करण- कंबन रामायण (तमिल), कृतिवास रामायण (बंगाली) और अन्य लोक रूपांतरण- इस आत्मसातीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं। देशीय अनुवादपरंपरा केवल साहित्य तक सीमित नहीं रही। आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष और खगोल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान का अनुवाद हुआ। चरक संहिता और सुश्रुत संहिता की विभिन्न भाषाई व्याख्याएँ इस तथ्य को प्रमाणित करती हैं कि अनुवाद को व्यावहारिक ज्ञान के प्रसार का साधन माना गया।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में भारतीय भाषाओं के बीच परस्पर अनुवाद की प्रवृत्ति और अधिक सशक्त हुई। बंगला, हिंदी, मराठी, तमिल और उर्दू साहित्य का पारस्परिक अनुवाद देशीय अनुवादचिन्तन की आधुनिक धारा को रेखांकित करता है। रवींद्रनाथ ठाकुर की रचनाओं के विभिन्न भारतीय भाषाओं में हुए अनुवाद इस सांस्कृतिक संवाद के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। समकालीन समय में देशीय अनुवाद चिन्तन डिजिटल माध्यमों, शिक्षा व्यवस्था और बहुभाषिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित हो रहा है। आज अनुवाद केवल साहित्यिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक संवाद और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का सशक्त माध्यम बन चुका है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4. मुगलकालीन अनुवाद परंपरा की दो प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

प्रश्न 5. देशीय अनुवादचिन्तन में लोकभाषा और आत्मसातीकरण को विशेष महत्व क्यों दिया गया है?

25.7 सारांश

- इस इकाई में भारतीय अनुवादपरंपरा की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि का समग्र अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि भारत में अनुवाद की अवधारणा केवल भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह ज्ञान, संस्कृति, धर्म और सामाजिक मूल्यों के निरंतर प्रवाह का एक सृजनात्मक माध्यम रही है। वैदिक काल से प्रारंभ होकर भाष्य, टीका और व्याख्या की परंपरा के माध्यम से अनुवादचिन्तन विकसित हुआ, जिसमें अर्थ और भाव को शब्दानुकरण से अधिक महत्व दिया गया।प्राचीन भारत की शासन-प्रणाली में अनुवाद का उपयोग जनसंचार, नैतिक उपदेश और प्रशासनिक व्यवस्था के प्रसार के लिए किया गया, जिसका उदाहरण अशोक के शिलालेखों और धर्मशास्त्रीय ग्रंथों की टीकाओं में मिलता है। मुगलकाल में अनुवाद को संस्थागत स्वरूप प्राप्त हुआ, जहाँ अकबर, दाराशिकोह जैसे शासकों और विद्वानों ने संस्कृत, फारसी और अन्य भाषाओं के बीच ज्ञान-संवाद को प्रोत्साहित किया। इकाई में देशीय अनुवादचिन्तकों की आंतरिक धाराओं- भाष्य परंपरा, लोकभाषा आधारित रूपांतरण, भक्ति आंदोलन, कथात्मक साहित्य और आत्मसातीकरण का भी विश्लेषण किया गया है। समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि भारतीय अनुवादपरंपरा

एक जीवंत, बहुभाषिक और सांस्कृतिक संवाद पर आधारित सृजनात्मक प्रक्रिया रही है।

K5.8 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भारतीय परंपरा में अनुवाद को केवल भाषाओं के बीच शब्दों के स्थानांतरण के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और भाव के संप्रेषण की सृजनात्मक प्रक्रिया के रूप में समझा गया है। इस विषय की विस्तृत चर्चा हेतु इकाई 4 का प्रस्तावना एवं प्रारंभिक चिंतनधारा वाला खंड देखें।

प्रश्न 2 का उत्तर : भारतीय अनुवादचिन्तन में भाष्य, टीका और व्याख्या को अनुवाद का अभिन्न रूप माना गया है, क्योंकि इनके माध्यम से मूल ग्रंथ के अर्थ, आशय और दार्शनिक निहितार्थ को स्पष्ट किया जाता है। संबंधित विवेचन के लिए भाष्य-परंपरा से जुड़ा अंश अवलोकनीय है।

प्रश्न 3 का उत्तर : प्राचीन भारत की शासन-प्रणाली में अनुवाद का उपयोग प्रशासनिक आदेशों, नैतिक उपदेशों और धार्मिक सिद्धांतों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए किया गया। अशोक के शिलालेख इसका प्रमुख उदाहरण हैं। इस संदर्भ की विस्तारपूर्वक जानकारी इकाई 4.3 में उपलब्ध है।

प्रश्न 4 का उत्तर : मुगलकालीन अनुवाद परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ बहुभाषिकता और सांस्कृतिक आत्मसातीकरण हैं, जिनके माध्यम से भारतीय और इस्लामी बौद्धिक परंपराओं के बीच संवाद स्थापित हुआ। विस्तृत विवेचन हेतु मुगलकालीन अनुवाद चिन्तक वाला खंड देखें।

प्रश्न 5 का उत्तर : देशीय अनुवादचिन्तन में लोकभाषा और आत्मसातीकरण को इसलिए विशेष महत्व दिया गया, क्योंकि इससे ज्ञान जनसामान्य तक सहज रूप में पहुँच सका और अनुवाद सामाजिक रूप से स्वीकार्य बना। इस विषय पर स्पष्टता के लिए देशीय अनुवादचिन्तन की आंतरिक धाराओं वाला भाग सहायक होगा।

K5.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- शुक्ल, आनन्द कुमार. (2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद: सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2014). ई-अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली: किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
- मिश्र, शिवकुमार. (2012). भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
- शास्त्री, रमेशचंद्र. (2013). संस्कृत साहित्य और भारतीय अनुवाद परंपरा. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
- वर्मा, कृष्णदत्त. (2016). भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का अनुवाद-बोध. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

M5.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. भारतीय परंपरा में अनुवाद को किन वैकल्पिक रूपोंजैसे- भाष्य, टीका या व्याख्यासे जोड़ा गया है?
2. वैदिक काल में अनुवाद का मुख्य उद्देश्य क्या माना जाता था?
3. भारतीय अनुवादचिन्तन में शब्दानुवाद की अपेक्षा किस तत्व को अधिक महत्व दिया गया है?
4. लोकभाषाओं में किए गए अनुवादों की प्रमुख विशेषता क्या है?
5. भक्ति आंदोलन ने भारतीय अनुवाद-बोध को किस प्रकार प्रभावित किया?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. भारतीय परंपरा में भाष्य और अनुवाद के अंतर्संबंध की अवधारणा को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करें।
2. रामायण और महाभारत के विभिन्न भाषिक रूपांतरणों के आधार पर भारतीय अनुवादचिंतन की प्रमुख विशेषताओं का समग्र विवेचन दीजिये।
3. प्राचीन भारत की शासन-प्रणाली में अनुवाद की भूमिका और उसके प्रयोजनात्मक महत्व का आलोचनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।
4. मुगलकालीन अनुवाद परंपरा को सांस्कृतिक संवाद के व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास कीजिए।
5. दाराशिकोह के अनुवाद-कर्म को भारतीय अनुवाद-चिंतन की दृष्टि से मूल्यांकनात्मक विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत करें।
6. देशीय अनुवादचिंतन की प्रमुख आंतरिक धाराओं की प्रकृति और दिशा का विश्लेषणात्मक परिचय दें।

*** ***** ***

इकाई 6 अनुवाद का क्षेत्र

इकाई की रूप रेखा

6.1 उद्देश्य
6.2 प्रस्तावना
6.3 अनुवाद का विस्तृत संसार और उसका वैद्रिक महत्व
6.4 अनुवाद का क्षेत्र
6.4.1 प्रशासनिक साहित्य और अनुवाद
6.4.2 बैंकिंग और अनुवाद
6.4.3 विधि साहित्य और अनुवाद
6.4.4 मीडिया और अनुवाद
6.4.5 सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद
6.4.6 तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
6.4.7 शिक्षा और अनुवाद
6.4.8 पर्यटन और अनुवाद
6.5 सारांश
6.7 प्रगति विवरण(केवल रूपरेखा)
6.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें
6.9 अभ्यास प्रश्न

6.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से-

- अनुवाद के विविध क्षेत्रों जैसे साहित्य, प्रशासन, विज्ञान तथा तकनीक में उसके प्रयोग के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, कविता और नाटक आदि के अनुवाद की प्रकृति से परिचित होंगे।
- प्रशासनिक तथा सरकारी कार्यों में अनुवाद के महत्व और उसकी उपयोगिता के बारे में जानेंगे।
- विज्ञान और तकनीकी विषयों के अनुवाद की विशेषताओं तथा उसकी आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- मीडिया, पत्रकारिता और संचार के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका के बारे में ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- वर्तमान समय में अनुवाद के बढ़ते क्षेत्र और रोजगार की संभावनाओं के बारे में जान सकेंगे।

6.2 प्रस्तावना

अनुवाद आधुनिक समय में भाषा, संस्कृति और ज्ञान के आदान-प्रदान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान, साहित्य और विचारों को व्यापक समाज तक पहुँचाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक भाषा में रचित साहित्य, विज्ञान, तकनीक, प्रशासन तथा अन्य क्षेत्रों की जानकारी को दूसरी भाषा में उपलब्ध कराने के कारण ही विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित हो पाता है। इसी कारण आज के वैद्रिक परिवेश में अनुवाद का क्षेत्र निरंतर विस्तृत होता जा रहा है और इसका महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

अनुवाद के माध्यम से न केवल साहित्यिक कृतियों का प्रसार होता है, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी

जानकारी, प्रशासनिक कार्य तथा मीडिया और संचार के क्षेत्र में भी इसका व्यापक उपयोग होता है। साहित्यिक अनुवाद के द्वारा विभिन्न भाषाओं की कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ और नाटक व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचते हैं। इसी प्रकार वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों के अनुवाद के माध्यम से नई खोजों और आविष्कारों की जानकारी समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाई जाती है। प्रशासनिक कार्यों, सरकारी नीतियों और विभिन्न दस्तावेजों के संप्रेषण में भी अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त पत्रकारिता, विज्ञापन और जनसंचार के क्षेत्र में भी अनुवाद की आवश्यकता निरंतर बढ़ती जा रही है।

प्रस्तुत इकाई 'अनुवाद का क्षेत्र में अनुवाद के विभिन्न आयामों और उसके व्यापक प्रयोगों पर विचार किया जाएगा। इस इकाई के अंतर्गत अनुवाद के प्रमुख क्षेत्रों जैसे साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक-तकनीकी तथा मीडिया से संबंधित अनुवाद की प्रकृति और विशेषताओं पर चर्चा की जाएगी। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि वर्तमान समय में अनुवाद किस प्रकार ज्ञान के प्रसार और भाषाओं के पारस्परिक संबंध को सुदृढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इस प्रकार यह इकाई अनुवाद के विविध क्षेत्रों और उसकी उपयोगिता को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

6.3 अनुवाद का विस्तृत संसार और उसका वैद्रिक महत्व

अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है और समय के साथ निरंतर विस्तार प्राप्त करता जा रहा है। प्रारंभिक काल में इसका उपयोग मुख्यत: धर्मग्रंथों को जनसाधारण की भाषा में प्रस्तुत करने के लिए किया गया था। यह स्थिति केवल एक क्षेत्र या देश तक सीमित नहीं थी, बल्कि विद्र की लगभग सभी भाषाओं में इसी प्रकार की प्रवृत्ति देखी गई। धीरे-धीरे अनुवाद का दायरा बढ़ने लगा और साहित्य की विभिन्न विधाओं को लोकभाषाओं में रूपांतरित किया जाने लगा। यह प्रक्रिया केवल एक देश तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैद्रिक स्तर पर फैल गई। परिणामस्वरूप साहित्य ने भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए महाद्वीपों तक अपना विस्तार किया और वैद्रिक स्वरूप ग्रहण करने लगा।

विचारों, भावनाओं और चेतना के प्रसार में अनुवाद ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने सीमाओं को तोड़ते हुए मानवता को जोड़ने का कार्य किया। आज हम वेद, उपनिषद और ब्राह्मण ग्रंथों को अनुवाद के माध्यम से समझ पाते हैं; अन्यथा वैदिक व्याकरण की जटिलता के कारण उन्हें आत्मसात करना सरल नहीं होता। पाणिनी के व्याकरण को समझना भी सहज नहीं है। समय-समय पर गीता, भागवत, महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है, जिससे उनके कथानकों में नई-नई व्याख्याएँ और भावनात्मक विस्तार जुड़ते रहे हैं। इस प्रक्रिया ने हमारी संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों को निरंतर नवीन ऊर्जा प्रदान की है।

आज भी यह परंपरा जारी है। इन अमर ग्रंथों का अनुवाद लगातार हो रहा है। पश्चिमी जगत में बाइबल के अनुवाद के लिए हजारों संस्थाएँ और असंख्य लोग कार्यरत हैं। इसके परिणामस्वरूप ईसाई धर्म में विविध मत और विचारधाराएँ विकसित हुई हैं, यद्यपि मूल ईद्रर चेतना एक ही है। इसी प्रकार कुरान की मूल भाषा प्रत्येक मुसलमान के लिए पवित्र है, परंतु उसका संदेश तभी स्पष्ट होता है जब उसे अपनी भाषा में समझा जाए। कुरान की आयतों का वास्तविक अर्थ तभी जीवन में उतरता है जब व्यक्ति उसे समझकर आचरण में लाता है। यही वह बिंदु है जहाँ अनुवाद की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है।

ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में भी अनुवाद का एक विशिष्ट महत्व है। यह केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम नहीं, बल्कि वैज्ञानिक प्रगति का वाहक भी है। एक भाषा में उपलब्ध ज्ञान को दूसरी भाषाओं में पहुँचाने का कार्य अनुवाद ही करता है। विद्र के किसी भी कोने में कोई नई खोज या विचार उत्पन्न हो, अनुवाद के माध्यम से वह शीघ्र ही अन्य क्षेत्रों तक पहुँच जाता है। कोई भी एक भाषा इतनी विशाल नहीं हो सकती कि वह समस्त ज्ञान का भार वहन कर सके, चाहे वह अंग्रेजी हो या चीनी।

रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इंटरनेट, मोबाइल तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में अनुवाद किसी न किसी रूप में अनिवार्य बन चुका है। पत्र-पत्रिकाएँ और अन्य सूचना माध्यम भी अनुवाद के बिना अधूरे रह जाते हैं। आज के समय में सूचनाओं का आदान-प्रदान अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है—जो कार्य पहले दिनों में होता था, वह अब कुछ ही क्षणों में संभव है। हजारों लोगों का कार्य अब सीमित संसाधनों से पूरा हो जाता है।

अंतर-प्रांतीय स्तर पर अनुवाद का इतिहास प्राचीन है, परंतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका व्यापक उपयोग अपेक्षाकृत नया है। आज विधानसभाओं, संसदों और संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर अनुवाद के बिना कार्य संभव नहीं है। यह मांग भी उठ रही है कि भारतीयों की आवाज वैद्रिक मंचों पर हिंदी में सुनी जाए, जिसे अन्य भाषाओं में अनुवादित कर विद्र तक पहुँचाया जा सके। यद्यपि कुछ लोग हिंदी के महत्व को लेकर मतभेद रखते हैं, फिर भी अनुवाद की उपयोगिता से कोई इंकार नहीं कर सकता।

व्यापार, शिक्षा, पर्यटन, प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी और राजनीति जैसे सभी क्षेत्रों में अनुवाद अनिवार्य हो चुका है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की नींव भी अनुवाद पर ही टिकी हुई है। वैस्वीकरण को वास्तविक अर्थों में साकार करने में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विविधताओं को जोड़कर समानता का बोध कराता है और विद्र को एक सूत्र में बाँधता है।

आज संचार माध्यमों की गति निरंतर बढ़ रही है और परिवहन के साधन अधिक सुलभ, विद्रसनीय तथा तीव्र हो रहे हैं। इससे आपसी समझ, परिचय, प्रेम और सौहार्द्र को बढ़ावा मिल रहा है। अनुवाद इस प्रक्रिया का आधार स्तंभ है। पहले जब कोई लड़की विवाह के बाद ससुराल जाती थी, तो उसे नई भाषा और परिवेश में ढलने में समय लगता था, परंतु अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। शिक्षा, शोध और विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति नए स्थानों पर जाकर अनुवाद के माध्यम से भाषा और संस्कृति को शीघ्र समझ लेता है।

एक व्यक्ति सभी भाषाएँ नहीं सीख सकता, परंतु अनुवाद के माध्यम से वह विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान तक पहुँच सकता है। सिनेमा भी अब तेजी से अनूदित होकर विद्रभर में प्रसारित हो रहा है। मशीन अनुवाद के आगमन से इस क्षेत्र में और अधिक विस्तार हो रहा है। यद्यपि भाषाई संरचनाओं और व्याकरण की जटिलताओं के कारण कुछ बाधाएँ हैं, फिर भी निरंतर प्रयासों से इन चुनौतियों का समाधान खोजा जा रहा है।

ज्ञान को भाषा की सीमाओं में बाँधकर नहीं रखा जा सकता। आज विद्र के लिए अनुवाद योग्य सामग्री का निर्माण व्यापक स्तर पर हो रहा है। इससे वैस्वीकरण केवल आर्थिक प्रक्रिया न रहकर सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक और सामाजिक आयामों को भी समाहित करेगा। मशीन अनुवाद इस प्रक्रिया को और तीव्र करेगा। हम साहित्यिक विधाओं- कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक-के अनुवाद को ही बड़ी उपलब्धि मानते रहे हैं, परंतु जीवन के असंख्य अन्य क्षेत्र भी अनुवाद की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान अनुवाद के माध्यम से विस्व मंच पर पहुँचेगा, तब मानवता का वास्तविक स्वरूप सामने आएगा। विस्व बंधुत्व की भावना प्रबल होगी और भारत की प्राचीन संकल्पना कृण्वेहो विद्रमार्यम् तथा ओड़िया कवि भीम भोई की भावना जगत उद्धार हो सार्थक रूप में साकार हो सकेगी

6.4 अनुवाद के विविध क्षेत्र

6.4.1 प्रशासनिक साहित्य और अनुवाद

प्रशासनिक साहित्य से आशय उन लिखित दस्तावेजों से है, जिसके माध्यम से शासन, प्रशासन और सार्वजनिक संस्थाएँ अपने कार्यों, नीतियों और निर्णयों को लागू करती हैं। इसमें सरकारी आदेश, कार्यालयीन पत्राचार, नियमावली, परिपत्र, अधिसूचनाएँ, निविदाएँ, प्रतिवेदन, अनुबंध और जनसूचनाएँ सम्मिलित हैं। चूँकि प्रशासन का उद्देश्य जनता तक स्पष्ट, सटीक और प्रभावी संप्रेषण करना होता है, इसलिए प्रशासनिक साहित्य में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। बहुभाषी समाज में अनुवाद के बिना प्रशासनिक संचार अधूरा और असमान हो सकता है।

प्रशासनिक अनुवाद का मुख्य उद्देश्य किसी एक भाषा में निर्मित प्रशासनिक पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि उसका आशय, कानूनी वैधता और औपचारिक स्वर यथावत बना रहे। इस प्रकार के अनुवाद में भाषा की शुद्धता, पारिभाषिक शब्दावली की एकरूपता और वाक्य-विन्यास की स्पष्टता अनिवार्य होती है। साहित्यिक अनुवाद की तुलना में प्रशासनिक अनुवाद में सृजनात्मक स्वतंत्रता सीमित होती है, क्योंकि यहाँ अर्थ में किंचित् भी परिवर्तन भ्रम, विवाद या कानूनी समस्या उत्पन्न कर सकता है।

प्रशासनिक साहित्य के अनुवाद के अनेक व्यावहारिक उदाहरण मिलते हैं। उदाहरणस्वरूप, किसी राज्य सरकार की

रोजगार योजना से संबंधित दिशा-निर्देशों का हिंदी से अंग्रेजी अथवा अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद, नगर निगम द्वारा जारी भवन निर्माण नियमावली का द्विभाषी प्रकाशन, या चुनाव आयोग की मतदाता सूचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रशासनिक अनुवाद के अंतर्गत आता है। इसी प्रकार आरटीआई अधिनियम से संबंधित प्रपत्रों, सरकारी वेबसाइटों की सामग्री, तथा जनहित घोषणाओं का अनुवाद भी प्रशासनिक साहित्य का महत्वपूर्ण भाग है।

प्रशासनिक साहित्य की भाषा

प्रशासनिक साहित्य की भाषा एक विशिष्ट और औपचारिक भाषारूप है, जिसका प्रयोग शासन, प्रशासन और सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है। इस भाषा का प्रमुख उद्देश्य भावाभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सूचना, आदेश और निर्णय को स्पष्ट, सटीक तथा निर्विवाद रूप में प्रस्तुत करना होता है। प्रशासनिक भाषा में व्यक्तिगत भावनाओं या कल्पनात्मकता के लिए स्थान नहीं होता, बल्कि वस्तुनिष्ठता, संक्षिप्तता और स्पष्टता को प्राथमिकता दी जाती है। इसी कारण यह भाषा सामान्य साहित्यिक भाषा से भिन्न स्वरूप ग्रहण करती है।

प्रशासनिक भाषा का एक महत्वपूर्ण गुण उसकी निर्देशात्मकता और औपचारिकता है। इसमें प्रयुक्त वाक्य प्राय: निरपेक्ष और संस्थागत होते हैं। प्रथम पुरुष का प्रयोग बहुत कम होता है और आदेश अथवा सूचना को अप्रत्यक्ष ढंग से व्यक्त किया जाता है। उदाहरणस्वरूप प्रशासनिक साहित्य में निम्नलिखित प्रकार के वाक्य प्रचलित हैं-

English → Hindi उदाहरण

Submitted for approval-अनुमोदन हेतु प्रस्तुत

Matter is under examination-प्रकरण परीक्षणाधीन है

This may be treated as urgent-इसे तात्कालिक माना जाए

Please ensure compliance-कृपया अनुपालन सुनिश्चित करें

Decision will be communicated separately-निर्णय पृथक रूप से सूचित किया जाएगा

इस प्रकार के वाक्यों में भाषा संक्षिप्त, स्पष्ट और औपचारिक होती है। प्रशासनिक साहित्य की भाषा में पारिभाषिक शब्दावली का भी विशेष स्थान होता है। विधि, वित्त और प्रशासन से संबंधित शब्दों का प्रयोग निश्चित अर्थों में किया जाता है, जिससे भ्रम की कोई संभावना न रहे। साथ ही, वाक्यरचना सरल और सीधी होती है, ताकि पाठक तुरंत आशय ग्रहण कर सके। प्रशासनिक अनुवाद में इन विशेषताओं को बनाए रखना अनिवार्य होता है, क्योंकि अर्थ में किंचित् भी परिवर्तन प्रशासनिक या कानूनी जटिलता उत्पन्न कर सकता है।

6.4.2 बैंकिंग और अनुवाद

बैंकिंग व्यवस्था आधुनिक आर्थिक जीवन का एक अनिवार्य अंग है। भारत में बैंकिंग प्रणाली का विकास ऐतिहासिक रूप से पश्चिमी मॉडल के प्रभाव में हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप बैंकिंग से संबंधित अधिकांश संकल्पनाएँ और शब्दावली अंग्रेजी भाषा में विकसित हुई है। स्वतंत्रता के पश्चात् जब हिंदी को राजभाषा के रूप में प्रशासनिक और सार्वजनिक कार्यों में स्थान मिला, तब बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और भी अधिक स्पष्ट हो गई। बैंक आम जनता से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं, इसलिए बैंकिंग भाषा का सरल, स्पष्ट और बोधगम्य होना आवश्यक है। इसी आवश्यकता ने बैंकिंग अनुवाद को एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित किया।

बैंकिंग अनुवाद मुख्यत: दो स्तरों पर कार्य करता है- एक ओर उच्च स्तरीय प्रशासनिक और नीतिगत भाषा होती है, और दूसरी ओर ग्राहककेंद्रित जनभाषा। बैंकिंग से जुड़े नियम, परिपत्र, वार्षिक प्रतिवेदन, ऋण नीतियाँ और निर्देश प्राय: औपचारिक भाषा में अनूदित किए जाते हैं, जबकि पासबुक, आवेदनपत्र, सूचनापट्ट, एटीएम निर्देश और ग्राहक सेवाओं से संबंधित सामग्री अपेक्षाकृत सरल भाषा में प्रस्तुत की जाती है। ऐसे में अनुवादक को न केवल भाषा का, बल्कि बैंकिंग प्रणाली, प्रक्रियाओं और पारिभाषिक शब्दावली का भी समुचित ज्ञान होना आवश्यक होता है।

बैंकिंग अनुवाद में कई शब्द ऐसे होते हैं जिसके अर्थ अत्यंत सूक्ष्म होते हैं और इसलिए गलत अनुवाद भ्रम या आर्थिक हानि का कारण बन सकता है। उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित अंग्रेजी-हिंदी उदाहरण देखे जा सकते हैं-

english → Hindi उदाहरण

English → Hindi उदाहरण

Fixed Deposit-सावधि जमा

Overdraft Facility–अधिव्यय सुविधा

Rate of Interest is subject to change–ब्याज दर में परिवर्तन संभव है

Account is dormant– खाता निष्क्रिय है

Minimum balance must be maintained–न्यूनतम शेष राशि बनाए रखना अनिवार्य है

इसी प्रकार कुछ शब्दों के लिए एक से अधिक हिंदी विकल्प प्रचलन में मिलते हैं, जैसे Subsidy के लिए अनुदान, आर्थिक सहायता या सरकारी सहायता। ऐसी स्थिति में अनुवादक को संदर्भ के अनुसार उपयुक्त शब्द का चयन करना होता है।

बैंकिंग अनुवाद की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें अंग्रेजी के अनेक शब्द ज्योंकेत्यों स्वीकार कर लिए गए हैं, जैसे– चेक, ड्राफ्ट, लोन, एटीएम, क्रेडिटकार्ड आदि। वहीं कुछ शब्दों के हिंदी रूप भी प्रचलित हैं, जैसे– जमा, निकासी, शेष राशि, लेन–देन। अनुवादक की दक्षता इसी में निहित होती है कि वह संदर्भ, पाठक–वर्ग और प्रयोजन के अनुसार सही शब्द और अभिव्यक्ति का चयन करे।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.अनुवाद का क्षेत्र प्रारंभिक काल में मुख्यत: किस उद्देश्य के लिए प्रयोग किया जाता था ?

प्रश्न 2. विचारों और भावनाओं के प्रसार में अनुवाद की क्या भूमिका है ?

प्रश्न 3. ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद का क्या महत्व है ?

प्रश्न 4. प्रशासनिक साहित्य से क्या अभिप्राय है ?

प्रश्न 5. प्रशासनिक अनुवाद में किन बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है ?

प्रश्न 6. बैंकिंग अनुवाद में अनुवादक के लिए किन बातों का ज्ञान आवश्यक होता है ?

6.4.3विधि साहित्य और अनुवाद

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में शासन–प्रशासन और न्यायिक व्यवस्था को जनभाषा से जोड़ने की आवश्यकता को गंभीरता से अनुभव किया गया। इसी संदर्भ में विधि साहित्य में हिंदी के प्रयोग और उसके अनुवाद की आवश्यकता सामने आई। विधि साहित्य से तात्पर्य उन ग्रंथों,अधिनियमों, नियमों, निर्णयों और कानूनी दस्तावेजों से है, जिसके माध्यम से न्यायिक व्यवस्था संचालित होती है। चूँकि भारत की विधिक परंपरा मुख्यत: अंग्रेज़ी भाषा में विकसित हुई है, इसलिए हिंदी में विधि साहित्य के अनुवाद को एक चुनौतीपूर्ण किंतु आवश्यक कार्य माना जाता है।

विधि साहित्य और अनुवाद के क्षेत्र में मुख्यत: निम्नलिखित बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है—

(1) विधिक शब्दावली का निर्माण और मानकीकरण– विधि साहित्य के अनुवाद में सबसे महत्वपूर्ण कार्य विधिक शब्दावली का सटीक चयन और मानकीकरण है। किसी भी विधिक शब्द का अर्थ निश्चित और एकार्थक होना चाहिए, क्योंकि उसमें थोड़ी–सी अस्पष्टता भी न्यायिक भ्रम उत्पन्न कर सकती है। उदाहरणस्वरूप—

English → Hindi उदाहरण

Jurisdiction →अधिकारक्षेत्र

Liability →दायित्व

Bail granted →जमानत प्रदान की गई

Case is dismissed →वाद खारिज किया गया

इन शब्दों में अर्थ की स्पष्टता अनिवार्य होती है।

(2) विधिक भाषा की औपचारिकता और वस्तुनिष्ठता- विधि साहित्य की भाषा अत्यंत औपचारिक, तटस्थ और वस्तुनिष्ठ होती है। इसमें भावनात्मक या अलंकारिक भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता। वाक्य-रचना प्रायः लंबी और संरचित होती है, जिससे आशय पूर्ण रूप से स्पष्ट हो सके। उदाहरणस्वरूप—

The petition is hereby rejected

याचिका एतद्द्वारा निरस्त की जाती है।

The accused shall be produced before the court

अभियुक्त को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

(3) विधिक अनुवाद में अनुवादक की भूमिका-विधि साहित्य का अनुवाद करने वाला व्यक्ति केवल भाषांतर करने वाला नहीं होता, बल्कि उसे विधिक ज्ञान, प्रक्रिया और संदर्भ की भी गहरी समझ होनी चाहिए। अनुवादक को यह ज्ञात होना चाहिए कि किसी शब्द या वाक्य का कानूनी प्रभाव क्या है। उदाहरण के लिए charge, convictionऔर sentenceजैसे शब्दों का सामान्य अर्थ से भिन्न विधिक अर्थ होता है-

Charge framed → आरोप निर्धारित किया गया

Conviction recorded → दोषसिद्धि दर्ज की गई

(4) विधि साहित्य के अनुवाद से जुड़ी समस्याएँ-विधि साहित्य के अनुवाद में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। प्रमुख समस्या यह है कि कई अंग्रेजी विधिक शब्दों के लिए हिंदी में पूर्णतः समतुल्य शब्द उपलब्ध नहीं होते। ऐसी स्थिति में या तो पारिभाषिक शब्दों का सहारा लिया जाता है या व्याख्यात्मक अनुवाद किया जाता है। उदाहरणस्वरूप—

Contempt of Court → न्यायालय की अवमानना

Stay order → स्थगन आदेश

इन शब्दों का गलत प्रयोग न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है।

6.4.4 मीडिया और अनुवाद

(1) विभिन्न पत्रों की अपनी भाषा- मीडिया जगत में प्रत्येक समाचार पत्र, टीवी चैनल और डिजिटल मंच की अपनी विशिष्ट भाषिक पहचान होती है। यह पहचान उसके पाठक-वर्ग, वैचारिक दृष्टिकोण और प्रस्तुति शैली से निर्मित होती है। उदाहरणस्वरूप, राष्ट्रीय स्तर के प्रतिष्ठित समाचार पत्र गंभीर, संतुलित और औपचारिक भाषा का प्रयोग करते हैं, जबकि लोकप्रिय समाचार पत्रों की भाषा अधिक सरल, संवादात्मक और आम बोलचाल के निकट होती है। मीडिया अनुवादक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह उस माध्यम की भाषा-परंपरा को समझे, जिसके लिए अनुवाद किया जा रहा है। यदि किसी लोकप्रिय पत्र के लिए अत्यधिक क्लिष्ट और संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग किया जाए, तो पाठक उससे जुड़ नहीं पाता। इसी प्रकार गंभीर पत्रों में अत्यधिक अनौपचारिक भाषा विद्रूसनीयता को प्रभावित कर सकती है। इसलिए मीडिया अनुवाद में केवल अर्थ का स्थानांतरण नहीं, बल्कि माध्यम के अनुरूप भाषाशैली का चयन भी अनिवार्य होता है।

English → Hindi उदाहरण

The Prime Minister addressed the nation

प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित किया

Local residents expressed strong resentment

स्थानीय निवासियों ने तीव्र नाराज़गी व्यक्त की

(2) संक्षिप्तता पर बल- मीडिया भाषा की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी संक्षिप्तता है। समाचारों में स्थान और समय दोनों सीमित होते हैं, इसलिए कम शब्दों में अधिक सूचना देना आवश्यक होता है। मीडिया अनुवादक को लंबे, जटिल और व्याख्यात्मक वाक्यों को संक्षिप्त, स्पष्ट और प्रभावी रूप में ढालना पड़ता है। विशेष रूप से समाचार शीर्षकों में

संक्षेप का अत्यधिक महत्व होता है, क्योंकि वही पाठक का ध्यान आकर्षित करते हैं। किंतु इस प्रक्रिया में यह सावधानी आवश्यक है कि संक्षिप्तता के कारण समाचार का मूल अर्थ नष्ट न हो। कई बार शब्दों की अत्यधिक कटौती से समाचार भ्रमपूर्ण भी हो सकता है। अत: मीडिया अनुवाद में संक्षेप और अर्थ-सुरक्षा के बीच संतुलन बनाए रखना एक महत्वपूर्ण कौशल माना जाता है।

English → Hindi उदाहरण

Cabinet clears major reform bill

कैबिनेट ने बड़े सुधार विधेयक को मंजूरी दी

Fire breaks out in factory

कारखाने में आग लगी

(3) विभिन्न विषयों के अनुसार भाषा- मीडिया में प्रस्तुत विषय अत्यंत विविध होते हैं- राजनीति, अर्थव्यवस्था, खेल, अपराध, विज्ञान, शिक्षा और मनोरंजन। प्रत्येक विषय की भाषा-प्रकृति अलग होती है। राजनीतिक समाचारों में संतुलित और तथ्यात्मक भाषा आवश्यक होती है, ताकि निष्पक्षता बनी रहे। आर्थिक समाचारों में तकनीकी और पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है, जबकि खेल समाचारों में उत्साह, गति और भावनात्मक शब्दों की प्रधानता रहती है। मनोरंजन समाचारों की भाषा अपेक्षाकृत हल्की, आकर्षक और संवादात्मक होती है। मीडिया अनुवादक को विषय की प्रकृति के अनुसार भाषाशैली में परिवर्तन करना पड़ता है। यदि खेल समाचार को अत्यधिक औपचारिक भाषा में प्रस्तुत किया जाए, तो उसका प्रभाव कम हो जाता है। इस प्रकार विषयानुसार भाषा का चयन मीडिया अनुवाद की सफलता का प्रमुख आधार है।

English → Hindi उदाहरण

Sensex records sharp decline

सेंसेक्स में तेज गिरावट दर्ज

Team clinches thrilling victory

टीम ने रोमांचक जीत हासिल की

(4) सोशल मीडिया की भाषा- सोशल मीडिया ने मीडिया अनुवाद को एक नया और जटिल आयाम प्रदान किया है। सोशल मीडिया की भाषा पारंपरिक मीडिया से भिन्न होती है- यह अधिक अनौपचारिक, संक्षिप्त और प्रभावपरक होती है। यहाँ पाठक का ध्यान कुछ ही सेकंड के लिए होता है, इसलिए संदेश तुरंत समझ में आने वाला और आकर्षक होना चाहिए। सोशल मीडिया अनुवाद में शब्दश: अनुवाद प्राय: प्रभावहीन हो जाता है,इसलिए भावानुकूल और संदर्भानुसार अनुवाद अधिक उपयुक्त माना जाता है। हैशटैग, संक्षिप्त वाक्य और लोकप्रिय शब्दों का प्रयोग सोशल मीडिया भाषा की विशेषता है। अनुवादक को यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि संदेश सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हो और गलत अर्थ न उत्पन्न करे।

English → Hindi उदाहरण

Breaking : Big announcement coming soon!

ब्रेकिंग: जल्द होगा बड़ा ऐलान!

Stay tuned for live updates

लाइव अपडेट के लिए जुड़े रहें

(5)विज्ञापन की भाषा- सोशल मीडिया के विस्तार के साथ विज्ञापन की भाषा ने एक नया और प्रभावशाली रूप ग्रहण किया है। आज फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब, एक्स(ट्विटर) और अन्य डिजिटल मंचों पर विज्ञापन केवल उत्पाद की जानकारी देने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे उपभोक्ता की भावनाओं, रुचियों और आकांक्षाओं को सीधे संबोधित करते हैं। सोशल मीडिया विज्ञापन की भाषा अत्यंत संक्षिप्त, आकर्षक और प्रभावकेंद्रित होती है, क्योंकि यहाँ दर्शक का ध्यान बहुत कम समय के लिए उपलब्ध होता है। इसी कारण विज्ञापन में छोटे वाक्य, प्रभावशाली शब्द, प्रश्नात्मक शैली

और प्रेरक अभिव्यक्तियों का प्रयोग अधिक होता है।

सोशल मीडिया विज्ञापनों के अनुवाद में शब्दशः अनुवाद प्रायः प्रभावहीन हो जाता है। अनुवादक को लक्ष्यभाषा और संस्कृति के अनुरूप संदेश को पुनः गढ़ना पड़ता है, ताकि विज्ञापन का आकर्षण बना रहे। कई बार मूल भाषा के मुहावरे, स्लोगन या शब्द-खेल को लक्ष्यभाषा में समान प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इसके अतिरिक्त, हैशटैग, कॉल-टू-एक्शन और ब्रांड पहचान को बनाए रखना भी आवश्यक होता है।

English → Hindi उदाहरण

experience the future today!

आज ही भविष्य का अनुभव करें!

Limited time offer - Shop now!

सीमित समय के लिए ऑफ़र - अभी खरीदें!

Join millions who trust us

लाखों लोगों की पसंद पर भरोसा करें

6.4.5सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

सृजनात्मक साहित्य वह क्षेत्र है जिसमें भाषा केवल सूचना का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह अनुभूति, संवेदना, कल्पना और सौंदर्य-बोध की वाहक बन जाती है। इसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गीत, लोककथाएँ तथा मुहावरे-लोकोक्तियाँ सम्मिलित होती हैं। इस प्रकार के साहित्य का अनुवाद अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यहाँ अनुवाद का लक्ष्य केवल अर्थांतरण नहीं, बल्कि भावांतरण होता है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को लेखक की कल्पनाशीलता, भाव-प्रवणता, सांस्कृतिक संदर्भ और भाषिक सौंदर्य को लक्ष्यभाषा में नए रूप में जीवित करना होता है। नीचे इसके प्रमुख रूपों की विस्तार से चर्चा की जा रही है।

(क) काव्यानुवाद (Poetry Translation)

कविता का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य में सबसे कठिन कार्य माना जाता है। कविता केवल शब्दों का समूह नहीं होता, बल्कि उसमें लय, छंद, प्रतीक, बिंब, भाव और सांस्कृतिक संकेत निहित होते हैं। जब कविता का अनुवाद किया जाता है, तो शब्दों के साथ-साथ इन सभी तत्वों को भी लक्ष्यभाषा में समायोजित करना पड़ता है। कई बार मूल कविता का शाब्दिक अनुवाद भाव को नष्ट कर देता है, इसलिए काव्यानुवाद में अनुवादक को रचनात्मक स्वतंत्रता लेनी पड़ती है। इस प्रक्रिया में अनुवादक लगभग सह-रचनाकार की भूमिका निभाता है। काव्यानुवाद में सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि स्रोतभाषा की काव्यात्मक लय और सौंदर्य लक्ष्यभाषा में किस सीमा तक सुरक्षित रखा जा सकता है। कई बार छंद का त्याग कर भाव को बचाना पड़ता है, तो कभी भाव की रक्षा हेतु शब्द-संरचना को परिवर्तित करना आवश्यक हो जाता है। श्रेष्ठ काव्यानुवाद वही माना जाता है जिसमें पाठक को यह अनुभूति हो कि कविता मूलतः उसी भाषा में रची गई हो।

काव्यानुवाद के क्षेत्र में हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे विद्वान और रचनाकार हुए हैं जिन्होंने अन्य भाषाओं की कविताओं का भावानुकूल और सृजनात्मक अनुवाद किया है। इन अनुवादों में मूल कविता के भाव, बिंब और संवेदना को हिंदी में नए काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। हिंदी काव्यानुवाद की परंपरा न केवल भारतीय भाषाओं से, बल्कि अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं से भी समृद्ध हुई है।

हिंदी में काव्यानुवाद के क्षेत्र में हरिवंश राय बच्चन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अंग्रेजी कवि एडवर्ड फ़िट्ज़ेराल्ड द्वारा अनूदित फारसी कवि उमर ख़य्याम की Rubaiyat का हिंदी रूपांतरण 'उमर ख़य्याम की रुबाइयाँ' शीर्षक से किया। यह अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद है, जिसमें जीवन-दर्शन, नश्वरता और आनंद-बोध को हिंदी काव्य-परंपरा के अनुरूप ढाला गया है।

निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) ने संस्कृत और बंगला काव्य परंपरा से प्रेरित होकर अनेक काव्यांशों का सृजनात्मक अनुवाद किया। उनका अनुवाद कर्म यह दर्शाता है कि काव्यानुवाद में कवि का होना एक अतिरिक्त योग्यता

बन जाता है। अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) ने अंग्रेजी और यूरोपीय आधुनिक कविता के अनेक उदाहरणों का हिंदी में अनुवाद किया। उनकी कृति 'अरी ओ करुणा प्रभामय' में अनूदित कविताएँ यह प्रमाणित करती हैं कि आधुनिक बिंब और प्रतीक हिंदी में भी उसी प्रभाव के साथ व्यक्त किए जा सकते हैं। विदेशी काव्य के हिंदी अनुवाद में रघुवीर सहाय द्वारा रूसी कवियों–विशेषत: मायाकोव्स्कीकी कविताओं के अनुवाद अत्यंत चर्चित हैं। इन अनुवादों में क्रांतिकारी चेतना और सामाजिक विद्रोह की भावना को हिंदी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। केदारनाथ सिंह और मुक्तिबोध ने भी विद्र कविता से चयनित कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया। मुक्तिबोध के अनुवादों में दार्शनिक गहराई और वैचारिक जटिलता का सफल संप्रेषण दिखाई देता है। भारतीय भाषाओं के संदर्भ में रवींद्रनाथ ठाकुर की बंगला कविताओं का हिंदी में काव्यानुवाद अत्यंत व्यापक है। उनकी कृति गीतांजलि का हिंदी अनुवाद अनेक कवियों द्वारा किया गया, जिनमें महादेवी वर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन अनुवादों में अध्यात्म, मानवता और करुणा की भावना को हिंदी में सहज रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

Œ æ¼ÚÞæ¢ ¥ »ÞÁè → हिंदी)

The woods are lovely, dark and deep

वन रमणीय हैं, घने और गहन

Hope is the thing with feathers

आशा वह पंछी है, जिसके पंख होते हैं

My heart leaps up when I behold

मेरा हृदय उल्लास से भर उठता है

Time holds me green and dying

समय मुझे हरा–भरा भी रखता है और मुरझाता भी

I wandered lonely as a cloud

मैं बादल–सा एकाकी भटकता रहा

The child is father of the man

बालक ही मनुष्य का निर्माता होता है

इन उदाहरणों में शब्द नहीं, बल्कि भाव, बिंब और अनुभूति का रूपांतरण प्रमुख है।

(ख) कथा साहित्य का अनुवाद (Story & Novel Translation)

कथा साहित्य, जिसमें कहानी और उपन्यास सम्मिलित हैं–का अनुवाद अत्यंत जटिल कार्य है। इसमें केवल कथानक ही नहीं, बल्कि पात्र–निर्माण, संवाद, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और लेखक की दृष्टि भी अंतर्निहित होती है। अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि कथा का प्रवाह, पात्रों की स्वाभाविकता और वातावरण की विद्रसनीयता लक्ष्यभाषा में बनी रहे। स्रोतभाषा में प्रयुक्त सामाजिक संकेत, सांस्कृतिक प्रतीक या लोकाचार कई बार लक्ष्यभाषा में सीधे उपलब्ध नहीं होते। ऐसी स्थिति में अनुवादक को भाव–साम्य के आधार पर समतुल्य अभिव्यक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। यही कारण है कि कथा साहित्य का अनुवाद केवल भाषिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूपांतरण की प्रक्रिया भी है।

कथा साहित्य का अनुवाद सृजनात्मक अनुवाद का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल क्षेत्र है। कथा साहित्य में केवल घटनाओं का क्रम ही नहीं होता, बल्कि उसमें पात्रों का मनोविज्ञान, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक संदर्भ, भाषिक बनावट और लेखक की वैचारिक दृष्टि समाहित रहती है। कहानी और उपन्यास के अनुवाद में अनुवादक को केवल भाषा का रूपांतरण नहीं करना होता, बल्कि मूल रचना के संपूर्ण वातावरण और भावभूमि को लक्ष्यभाषा में पुन: स्थापित करना पड़ता है। इसी कारण कथा साहित्य का अनुवाद भावानुवाद, सांस्कृतिक रूपांतरण और सृजनात्मक विवेक की माँग करता है।

हिंदी साहित्य में कथाअनुवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। प्रेमचंद की अनेक कहानियों और उपन्यासों

का अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी कृतियाँ 'गोदान', 'निर्मला', 'कफन' और 'पूस की रात' अंग्रेजी में Godaan, Nirmala और The Shroud जैसे शीर्षकों से अनूदित हुई है। इन अनुवादों में भारतीय ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता और मानवीय संवेदना को वैद्रिक पाठकों तक पहुँचाया गया। अंग्रेजी से हिंदी कथा-अनुवाद के क्षेत्र में राधाकृष्ण प्रकाशन और नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अनुवादों का विशेष योगदान रहा है। लियो टॉलस्टॉय की कहानियाँ और उपन्यास- War and Peace, Anna Kareninaका हिंदी अनुवाद 'युद्ध और शांति' तथा 'अन्ना कैरेनिना' के रूप में हुआ, जिसमें अनुवादकों में कमलेद्वर और अन्य विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इन अनुवादों ने रूसी समाज, नैतिक द्वंद्व और मानवीय संघर्ष को हिंदी पाठकों के लिए सुलभ बनाया। रवींद्रनाथ ठाकुर की बांग्ला कहानियों और उपन्यासों का हिंदी अनुवाद कथा-अनुवाद की उत्कृष्ट परंपरा का उदाहरण है। उनकी कहानियाँ जैसे 'काबुलीवाला', 'पोस्टमास्टर' और उपन्यास 'गोरा' का हिंदी अनुवाद विभिन्न अनुवादकों द्वारा किया गया, जिसमें मानवीय करुणा और सांस्कृतिक आत्मीयता को सुरक्षित रखा गया। आधुनिक कथा साहित्य में अलबर्ट कामू के उपन्यास The Stranger का हिंदी अनुवाद 'अजनबी', तथा जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास Animal Farm का हिंदी रूपांतरण 'पशु-फार्म' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन अनुवादों में राजनीतिक व्यंग्य और दार्शनिक अर्थवत्ता को हिंदी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भारतीय भाषाओं के बीच कथा-अनुवाद के क्षेत्र में उड़िया, मराठी, तमिल और मलयालम साहित्य से हिंदी में हुए अनुवाद भी महत्वपूर्ण हैं। उड़िया लेखक फणीद्वरनाथ रेणु की कथात्मक शैली से प्रेरित होकर कई क्षेत्रीय कथाओं का हिंदी अनुवाद हुआ, जिससे बहुभाषिक भारतीय जीवन का समग्र चित्र उभरता है।

उदाहरण (अंग्रेजी → हिंदी)

He felt like a fish out of water → वह स्वयं को बिल्कुल असहज महसूस कर रहा था

She broke down in tears → वह फूट-फूटकर रो पड़ी

Life had taught him hard lessons → जीवन ने उसे कड़े सबक सिखा दिए थे

The city never slept → वह शहर कभी सोता नहीं था

He carried the burden of memories → वह स्मृतियों का बोझ ढो रहा था

Her silence spoke volumes → उसकी चुप्पी बहुत कुछ कह गई

(ग) नाट्यानुवाद

नाटक का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य का एक विशिष्ट क्षेत्र है, क्योंकि नाटक केवल पाठ्य नहीं, बल्कि मंचीय प्रस्तुति से जुड़ा होता है। अत: नाट्यानुवाद में संवादों की सहजता, बोलचाल की स्वाभाविकता और मंचीय प्रभाव को प्राथमिकता दी जाती है। यदि संवाद कृत्रिम या अत्यधिक साहित्यिक हो जाए, तो नाटक का प्रभाव समाप्त हो जाता है। नाट्यानुवाद में अनुवादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि संवाद बोलने योग्य हो, दर्शकों को तुरंत समझ में आए और नाटकीय तनाव बनाए रखे। इसके लिए स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की रंगमंचीय परंपराओं का ज्ञान आवश्यक है।

नाट्यानुवाद सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद का एक विशिष्ट और जटिल क्षेत्र है, क्योंकि नाटक केवल पाठ्य साहित्य नहीं होता, बल्कि वह मंचीय प्रस्तुति से भी गहराई से जुड़ा होता है। नाटक का अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल शब्दों और वाक्यों का रूपांतरण नहीं करना होता, बल्कि संवादों की नाटकीयता, पात्रों की बोलचाल, मंचीय प्रभाव और दर्शक की संवेदना को भी ध्यान में रखना पड़ता है। यदि अनुवादित संवाद मंच पर बोलने में बनावटी या अस्वाभाविक लगे, तो नाटक का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इसलिए नाट्यानुवाद को प्राय: पुन:रचना के निकट माना जाता है। नाट्यानुवाद में संवादों की सहजता और संप्रेषणीयता सर्वोपरि होती है। स्रोत भाषा के सांस्कृतिक संकेत, सामाजिक व्यवहार और हास्य-बोध को लक्ष्यभाषा में समतुल्य प्रभाव के साथ प्रस्तुत करना अनुवादक की सबसे बड़ी चुनौती होती है। कई बार शब्दश: अनुवाद के स्थान पर भावानुकूल अनुवाद अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। यही कारण है कि सफल नाट्यानुवाद वही माना जाता है, जिसमें दर्शक यह अनुभव न करे कि वह किसी अनूदित नाटक को देख या पढ़ रहा है। हिंदी में नाट्यानुवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। विलियम शेक्सपीयर के नाटकों का हिंदी में व्यापक अनुवाद हुआ है। Hamlet का हिंदी रूप 'हैमलेट', Macbethका 'मैकबेथ', तथा King Lear का 'किंग लियर'

शीर्षक से अनुवाद विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया है। इन अनुवादों में शेक्सपीयर की त्रासदी, मानवीय द्वंद्व और दार्शनिक गहराई को हिंदी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भारतीय संदर्भ में संस्कृत नाटकों का हिंदी नाट्यानुवाद भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुंतलम् और विक्रमोर्वशीयम् के हिंदी अनुवादों ने संस्कृत नाट्य-परंपरा को आधुनिक हिंदी पाठकों और दर्शकों तक पहुँचाया। इसी प्रकार भास और शूद्रक के नाटकों के हिंदी अनुवाद भी नाट्यानुवाद की समृद्ध परंपरा को दर्शाते हैं। आधुनिक हिंदी रंगमंच में गिरीश कर्नाड के नाटकों- तुगलक, हयवदनके अन्य भाषाओं में तथा अन्य भाषाओं के नाटकों के हिंदी में हुए अनुवाद उल्लेखनीय हैं। मोहन राकेश द्वारा किए गए कुछ नाट्य रूपांतरण और अनुवाद भी मंचीय दृष्टि से अत्यंत सफल माने जाते हैं।

उदाहरण (अंग्रेजी-हिंदी)

All the world's a stage → सारा संसार एक रंगमंच है

What's done cannot be undone → जो हो चुका, वह बदला नहीं जा सकता

To be or not to be → होना या न होना

Truth will prevail → अंतत: सत्य की ही विजय होती है

Silence is more powerful than words → मौन शब्दों से अधिक प्रभावशाली होता है

Enough is enough! → बहुत हुआ, अब बस!

(घ) मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद

मुहावरे और लोकोक्तियाँ किसी भी भाषा की सांस्कृतिक और भाषिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग होती हैं। ये केवल शब्द-समूह नहीं, बल्कि किसी समाज के अनुभव, जीवन-दृष्टि, ऐतिहासिक स्मृति और सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति होती हैं। सृजनात्मक साहित्य में इसका विशेष महत्व होता है, क्योंकि इसके माध्यम से ही भाषा सजीव, प्रभावशाली और भावपूर्ण बनती है। इसी कारण मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद सृजनात्मक अनुवाद की सबसे चुनौतीपूर्ण प्रक्रियाओं में गिना जाता है।

मुहावरों और लोकोक्तियों का शाब्दिक अनुवाद प्राय: अर्थहीन या हास्यास्पद हो जाता है, क्योंकि वास्तविक अर्थ शब्दों में न होकर सांकेतिक भाव में निहित होता है। इसलिए अनुवादक को लक्ष्यभाषा में ऐसे मुहावरे या अभिव्यक्तियाँ खोजनी पड़ती हैं, जो मूल मुहावरे के समान भाव और प्रभाव उत्पन्न कर सके। यदि लक्ष्यभाषा में समतुल्य मुहावरा उपलब्ध न हो, तो भावार्थ के माध्यम से अर्थ स्पष्ट करना उचित माना जाता है। इस प्रक्रिया में अनुवादक की भाषिक दक्षता के साथ-साथ सांस्कृतिक समझ भी अत्यंत आवश्यक होती है।

मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद में यह भी ध्यान रखना पड़ता है कि वे संदर्भानुसार प्रयुक्त हों। एक ही मुहावरा अलग-अलग संदर्भों में भिन्न प्रभाव उत्पन्न कर सकता है। अत: अनुवादक को कथा, संवाद या काव्य की स्थिति के अनुसार उपयुक्त विकल्प चुनना पड़ता है। सफल अनुवाद वही माना जाता है, जिसमें पाठक यह अनुभव करे कि अभिव्यक्ति स्वाभाविक है और वह लक्ष्यभाषा की अपनी ही रचना प्रतीत होती है।

उदाहरण (हिंदी-अंग्रेजी)

दाल में कुछ काला है → Something is fishy

नाक कट जाना → To lose oneÓs honour

ऊँट के मुँह में जीरा → drop in the ocean

हाथ पर हाथ धरे बैठना → To sit idle

आँखों में धूल झोंकना → To pull the wool over someoneÓs eyes

नौ दो ग्यारह होना → To disappear suddenly

6.4.6तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद

तुलनात्मक साहित्य एक आधुनिक, बहुआयामी और अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक अनुशासन है, जिसके अंतर्गत दो या दो से अधिक भाषाओं, संस्कृतियों, राष्ट्रों अथवा साहित्यिक परंपराओं में रचित कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन केवल विषय-वस्तु, कथानक या शैली की समानता-असमानता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इसके माध्यम से मानव सभ्यता के साझा अनुभव, सांस्कृतिक अंतर्संबंध, ऐतिहासिक प्रभाव और वैचारिक प्रवाह को समझने का प्रयास किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य साहित्य को राष्ट्रीय सीमाओं से मुक्त कर उसे वैद्रिक परिप्रेक्ष्य में देखना है। तुलनात्मक साहित्य का सबसे सशक्त आधार अनुवाद है। अनुवाद के बिना किसी भी भाषा का साहित्य दूसरी भाषा के पाठकों तक नहीं पहुँच सकता। यदि साहित्य केवल अपनी मूल भाषा तक सीमित रह जाए, तो उसका तुलनात्मक अध्ययन असंभव हो जाता है। इसी कारण कहा जाता है कि तुलनात्मक साहित्य अनुवाद के कंधों पर खड़ा होता है। अनुवाद ही वह सेतु है, जो विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ता है।

¥ ´»ýÁè×ð ëÜÙæ× · ¤âæ¢ÇÙ · ¤Comparative Literatureकहा जाता है। Comparative शब्द लैटिन भाषा के comparareसे निकला है, जिसका अर्थ है- साथ रखकर देखना, तुलना करना या मूल्यांकन करना। इस प्रकार Comparative Literatureका अभिप्राय हुआ- विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों में रचित साहित्य का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन। पश्चिमी साहित्यिक परंपरा में यह अनुशासन उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड में विकसित हुआ। प्रारंभ में इसका उद्देश्य यूरोपीय साहित्यिक परंपराओं- जैसे फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी साहित्यके बीच प्रभाव और अंतर्संबंधों का अध्ययन करना था, किंतु बाद में इसका विस्तार एशियाई, अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी साहित्य तक हुआ।

भारतीय संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य का विकास अनुवाद के माध्यम से ही संभव हुआ। रामायण और महाभारत के संस्कृत से प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा विदेशी भाषाओं में हुए अनुवाद तुलनात्मक साहित्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। तुलसीदास की रामचरितमानस, कंबन की कंब रामायण और वाल्मीकि की रामायण के तुलनात्मक अध्ययन से भाषा, संस्कृति और दृष्टिकोण के अंतर को समझा गया। इसी प्रकार महाभारत के विभिन्न भाषाई रूपों की तुलना से भारतीय समाज की विविध मानसिकता सामने आती है। कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुंतलम् का अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं में अनुवाद होने से भारतीय काव्य-सौंदर्य और रससिद्धांत का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ। गोएथे जैसे पाश्चात्य कवियों ने कालिदास की प्रशंसा की, जो भारतीय और यूरोपीय साहित्यिक संवाद का प्रमाण है। आधुनिक युग में प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों के अंग्रेजी, रूसी और अन्य भाषाओं में हुए अनुवादों के माध्यम से भारतीय यथार्थवाद की तुलना टॉलस्टॉय और दोस्तोएव्स्की के यथार्थवाद से की गई। रवींद्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि के अंग्रेजी अनुवाद ने उन्हें वैद्रिक साहित्य में प्रतिष्ठित किया और भारतीय आध्यात्मिक चेतना को पश्चिम से जोड़ा। उसी प्रकार निराला और महादेवी वर्मा की कविता के अनुवादों से भारतीय छायावाद की तुलना पाश्चात्य रोमांटिसिज़्म से की गई।

दूसरी ओर, शेक्सपीयर के नाटकों के हिंदी अनुवाद जैसे- हैमलेट, मैकबेथ और ओथेलोने भारतीय रंगमंच और कथा परंपरा को समृद्ध किया। टॉलस्टॉय, जेम्स जॉयस और गेब्रियल गार्सिया मार्केज़ के हिंदी अनुवादों ने भारतीय पाठकों को आधुनिकतावाद और जादुई यथार्थवाद से परिचित कराया।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यिक रूपांतरण में मुख्य रूप से तीन प्रकार की प्रक्रिया होती है:

1. पाठगत रूपांतरण - इसमें एक साहित्यिक विधा को दूसरी विधा में परिवर्तित किया जाता है। उदाहरण के लिए, उपन्यास से नाटक, कहानी से कविता, या कविता से गद्य का रूपांतरण। यह प्रक्रिया मौलिक अर्थ और संरचना को बनाए रखते हुए साहित्यिक शैली के अनुरूप होती है।

2. माध्यमगत रूपांतरण -इसमें साहित्यिक पाठ को नए माध्यम में प्रस्तुत करने के लिए उसके रूप और संरचना में

अनुकूलन किया जाता है। उदाहरण स्वरूप, उपन्यास या कहानी को ऐसे ढंग से प्रस्तुत करना कि वह नए पाठकों या विद्यार्थियों के लिए सहज और रोचक लगे।

3. संयुक्त रूपांतरण – इसमें पाठगत और माध्यमगत दोनों प्रकार के रूपांतरण शामिल होते हैं। यह प्रक्रिया मौलिक पाठ की भावनाओं और संदेश को बनाए रखते हुए उसे नए दृष्टिकोण और सांस्कृतिक संदर्भ में पुनर्निर्मित करती है।

6.4.7शिक्षा और अनुवाद

शिक्षा और अनुवाद का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। ज्ञान का अधिकांश भंडार विद्र की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है, जबकि शिक्षार्थी प्राय: अपनी मातृभाषा या सीमित भाषिक दायरे में ही अध्ययन करते हैं। ऐसी स्थिति में अनुवाद वह सेतु बनता है, जिसके माध्यम से वैद्रिक ज्ञान को स्थानीय भाषाओं में सुलभ कराया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का उद्देश्य केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होता, बल्कि जटिल अवधारणाओं, सिद्धांतों और ज्ञान-संरचनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि वे शिक्षार्थियों के लिए बोधगम्य बन सके।

प्राचीन काल से ही शिक्षा में अनुवाद की भूमिका रही है। भारत में वेद, उपनिषद, बौद्ध और जैन ग्रंथों का विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद किया गया, जिससे ज्ञान सीमित वर्ग तक न रहकर व्यापक समाज तक पहुँचा। आधुनिक काल में विज्ञान, गणित, चिकित्सा, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों की पुस्तकें मुख्यत: अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। इनका हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने से उच्च शिक्षा का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ है।

शिक्षा में अनुवाद का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र पाठ्यपुस्तक अनुवाद है। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय संस्थाएँ विद्यालयी एवं विद्रविद्यालयी पाठ्यक्रमों के लिए अनूदित सामग्री उपलब्ध कराती हैं। इसके अतिरिक्त, ई-लर्निंग, ऑनलाइन कोर्स, शोध-पत्र, और डिजिटल शैक्षिक सामग्री का अनुवाद आज के समय में अत्यंत आवश्यक हो गया है। इससे बहुभाषी समाज में समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित होते हैं।

उदाहरण

Theory of Relativity → सापेक्षता का सिद्धांत

Child Psychology → बाल मनोविज्ञान

environmental Studies → पर्यावरण अध्ययन

Indian Constitution → भारतीय संविधान

Introduction to Sociology → समाजशास्त्र का परिचय

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि शिक्षा में अनुवाद ज्ञान-विस्तार, समावेशन और बौद्धिक समानता का सशक्त माध्यम है।

6.4.8 पर्यटन और अनुवाद

वैश्वीकरण के वर्तमान युग में पर्यटन एक प्रमुख उद्योग के रूप में उभरा है, और इस क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। पर्यटन मूलत: विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और देशों के लोगों को जोड़ने का माध्यम है। जब पर्यटक किसी नए देश या क्षेत्र में जाते हैं, तो भाषा उनके अनुभव को सहज या जटिल-दोनों में से कोई भी हो सकती है। ऐसे में अनुवाद पर्यटन को सुगम, सुरक्षित और आकर्षक बनाने का कार्य करता है।

पर्यटन क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनेक स्तरों पर होता है- पर्यटन पुस्तिकाओं, यात्रा मार्गदर्शिकाओं, होटल विवरणों, ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी, संग्रहालयों के विवरण, वेबसाइटों, मोबाइल ऐप्स और संकेत-पट्टों में। यदि ये सभी सूचनाएँ केवल स्थानीय भाषा में हों, तो विदेशी पर्यटकों के लिए उनका उपयोग सीमित रह जाता है। अनुवाद के माध्यम से इन्हें बहुभाषी रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे पर्यटन का विस्तार होता है।

इसके अतिरिक्त, मौखिक अनुवाद (व्याख्या) भी पर्यटन का महत्वपूर्ण अंग है। टूर गाइड, होटल कर्मचारी, एयरपोर्ट स्टाफ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजक पर्यटकों से संवाद स्थापित करने के लिए अनुवाद और

व्याख्या का सहारा लेते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन और ऐतिहासिक पर्यटन में सही और संवेदनशील अनुवाद विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इससे किसी देश की संस्कृति और विरासत की सही छवि प्रस्तुत होती है।

उदाहरण

Welcome to Incredible India → अतुल्य भारत में आपका स्वागत है

World Heritage Site → विश्व धरोहर स्थल

Tourist Information Centre → पर्यटक सूचना केंद्र

Entry Ticket → प्रवेश टिकट

Guided Tour Available → मार्गदर्शित भ्रमण उपलब्ध है

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि पर्यटन में अनुवाद केवल सुविधा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद और आर्थिक विकास का भी सशक्त माध्यम है।

26.5 सारांश

- अनुवाद का क्षेत्र इकाई में अनुवाद की व्यापकता और उसके विभिन्न प्रयोग क्षेत्रों पर विचार किया गया है। वर्तमान समय में अनुवाद केवल भाषाओं के बीच शब्दों के रूपांतरण तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह ज्ञान, संस्कृति और विचारों के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। इस इकाई में यह स्पष्ट किया गया है कि अनुवाद के माध्यम से एक भाषा में उपलब्ध ज्ञान को दूसरी भाषा के पाठकों तक सरलता से पहुँचाया जा सकता है, जिससे विभिन्न भाषाई समुदायों के बीच समझ और संवाद को बढ़ावा मिलता है।
- इस इकाई में अनुवाद के प्रमुख क्षेत्रों जैसे साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक-तकनीकी तथा मीडिया से संबंधित अनुवाद की चर्चा की गई है। साहित्यिक अनुवाद के अंतर्गत विभिन्न भाषाओं में रचित कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ और नाटकों को अन्य भाषाओं में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को समझाया गया है, जिससे विभिन्न भाषाओं के साहित्य का व्यापक प्रसार संभव हो पाता है। प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद का महत्व सरकारी नीतियों, दस्तावेजों और सूचनाओं को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराने के संदर्भ में देखा गया है।
- इसके अतिरिक्त विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है, क्योंकि नई खोजों और तकनीकी जानकारियों को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाने में अनुवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मीडिया और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अनुवाद के माध्यम से समाचार, विचार और सूचनाएँ व्यापक स्तर पर प्रसारित होती हैं। इस प्रकार यह इकाई अनुवाद के विविध क्षेत्रों तथा उसकी उपयोगिता को समझने में सहायक सिद्ध होती है और यह बताती है कि अनुवाद आधुनिक समाज में ज्ञान के प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है।

K6.7 प्रगति विवरण(केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : प्रारंभिक काल में अनुवाद का उपयोग मुख्यत: धर्मग्रंथों को जनसाधारण की भाषा में प्रस्तुत करने के लिए किया जाता था, जिससे लोग उन्हें आसानी से समझ सकें।

प्रश्न 2 का उत्तर : अनुवाद विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच विचारों, भावनाओं और चेतना के आदान-प्रदान का माध्यम बनकर मानवता को जोड़ने का कार्य करता है।

प्रश्न 3 का उत्तर : अनुवाद के माध्यम से एक भाषा में उपलब्ध वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को दूसरी भाषाओं में पहुँचाया जाता है, जिससे नई खोजों और विचारों का व्यापक प्रसार संभव होता है।

प्रश्न 4 का उत्तर : प्रशासनिक साहित्य उन लिखित दस्तावेजों को कहा जाता है जिनके माध्यम से शासन और प्रशासन अपने आदेश, नीतियाँ, नियम तथा सूचनाएँ जनता तक पहुँचाते हैं।

प्रश्न 5 का उत्तर : प्रशासनिक अनुवाद में भाषा की शुद्धता, पारिभाषिक शब्दावली की एकरूपता, स्पष्टता तथा मूल अर्थ और कानूनी वैधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

प्रश्न 6 का उत्तर : बैंकिंग अनुवाद में अनुवादक को भाषा के साथ-साथ बैंकिंग प्रणाली, प्रक्रियाओं और पारिभाषिक शब्दावली का समुचित ज्ञान होना आवश्यक होता है।

O6.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- शुक्ल, आनन्द कुमार. (2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद: सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2014). ई-अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली: किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
- मिश्र, शिवकुमार. (2012). भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
- शास्त्री, रमेशचंद्र. (2013). संस्कृत साहित्य और भारतीय अनुवादपरंपरा. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
- वर्मा, कृष्णदत्त. (2016). भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का अनुवाद-बोध. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

M6.9अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1.तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद से आप क्या समझते है ?

2.मुहावरे और लोकोक्तियों का सृजनात्मक साहित्य में क्या महत्व है ?

3.विधिक शब्दावली के तीन उदाहरण लिखिए।

4.बैंकिंग अनुवाद कितने स्तरों पर कार्य करता है ?

5.ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद की क्या भूमिका है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.प्रशासनिक साहित्य के अनुवाद की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए तथा यह स्पष्ट कीजिए कि प्रशासनिक अनुवाद में भाषा की स्पष्टता और शुद्धता क्यों आवश्यक होती है।

2.बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता और महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए। साथ ही बैंकिंग अनुवाद में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

3.विधि साहित्य के अनुवाद की प्रकृति और उसकी प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए। विधिक अनुवाद में अनुवादक की भूमिका और जिम्मेदारी पर भी प्रकाश डालिए।

4.मीडिया अनुवाद की भाषा-शैली की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए समाचार, शीर्षक और सोशल मीडिया में अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

5.सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की प्रकृति का विवेचन कीजिए तथा काव्यानुवाद, कथानुवाद और नाट्यानुवाद की विशेषताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6. अनुवाद का विस्तृत संसार और उसका वैद्रिक महत्व को अपने शब्दों में लिखिए 7

*** ***** ***

इकाई 7 अनुवाद के प्रकार

इकाई की रूप रेखा

7.1उद्देश्य
7.2प्रस्तावना
7.3 अनुवाद के प्रकार: विद्वानों के विविध विचार
7.3.1पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतकारों की विचारधारा
7.3.2भारतीय अनुवाद सिद्धांतकारों की विचारधारा
7.4 अनुवाद के प्रमुख प्रकार
7.4.1 शाब्दिक अनुवाद
7.4.2 भावानुवाद
7.4.3छायानुवाद
7.4.4रूपान्तरण
7.4.5अनुसृजन
7.4.6पुनर्सृजन
7.4.7 नवलेखन
7.4.8 टीकानुवाद
7.4.9सारानुवाद
7.4.10आशु अनुवाद
7.4.11 पुनः अनुवाद
7.4.12लिप्यंकन
7.4.13लिप्यंतरण
7.5 सारांश
7.7 प्रगति विवरण(केवल रूपरेखा)
7.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें
7.9अभ्यास प्रश्न

7.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- अनुवाद की अवधारणा तथा उसके विभिन्न प्रकारों का परिचय प्राप्त होगा।
- साहित्यिक और गैर-साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप तथा उनके अंतर की जानकारी होगी।
- शब्दानुवाद और भावानुवाद की विशेषताओं तथा उनके प्रयोग के बारे में ज्ञान प्राप्त होगा।
- काव्यानुवाद, कथानुवाद और नाट्यानुवाद जैसे साहित्यिक अनुवाद के रूपों को जानेंगे।
- प्रशासनिक, तकनीकी और वैज्ञानिक अनुवाद की प्रकृति तथा उपयोगिता की जानकारी होगी।
- अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के प्रयोग और उनकी उपयुक्तता को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

7.2प्रस्तावना

अनुवाद भाषा के माध्यम से विचारों, भावों और ज्ञान को एक भाषा से दूसरी भाषा में संप्रेषित करने की महत्वपूर्ण

प्रक्रिया है। यह केवल शब्दों का स्थानांतरण नहीं, बल्कि मूल पाठ के अर्थ, भाव और उद्देश्य को लक्ष्य भाषा में यथासंभव सटीक और प्रभावपूर्ण रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है। अनुवाद की प्रक्रिया विविध परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न रूपों में विकसित हुई है, जिसके कारण इसके अनेक प्रकार सामने आए हैं। अनुवाद के प्रकारों का निर्धारण सामान्यत: भाषा-प्रयोग, अभिव्यक्ति की शैली और अनुवाद के उद्देश्य के आधार पर किया जाता है। इस संदर्भ में शब्दानुवाद, शाब्दिक अनुवाद और भावानुवाद जैसे प्रमुख प्रकारों का विशेष महत्व माना जाता है। शब्दानुवाद में मूल पाठ के प्रत्येक शब्द को लक्ष्य भाषा में यथासंभव समान शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, जबकि भावानुवाद में मूल रचना के भाव, आशय और प्रभाव को अधिक महत्व दिया जाता है। शाब्दिक अनुवाद में शब्दों और वाक्य संरचना के निकट रहते हुए अनुवाद करने का प्रयास किया जाता है।

इनके अतिरिक्त सांस्कृतिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद, वैधानिक अनुवाद तथा मशीन अनुवाद जैसे आधुनिक प्रकार भी विकसित हुए हैं। प्रत्येक प्रकार की अपनी विशेष पद्धति और आवश्यकताएँ होती हैं, जिनके अनुसार अनुवादक को भाषा, विषय-वस्तु और संदर्भ का सावधानीपूर्वक ध्यान रखना पड़ता है।

इस प्रकार अनुवाद के प्रकार अनुवाद की विविधता और उसकी जटिलता को स्पष्ट करते हैं। प्रस्तुत इकाई में इन विभिन्न प्रकारों की विशेषताओं और उनके स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाएगा, जिससे अनुवाद की प्रक्रिया को अधिक व्यवस्थित और प्रभावी रूप में समझा जा सके।

7.3 अनुवाद के प्रकार विद्वानों के विविध विचार

अनुवाद के प्रकारों पर विचार करते समय यह स्पष्ट होता है कि विद्वभर के अनुवाद कार्य से जुड़े हुए विद्वानों ने अपनी-अपनी दृष्टियों और भाषाई अनुभवों के आधार पर इसे अलग-अलग रूपों में परिभाषित किया है। हर विद्वान ने अनुवाद को समझने का अपना विशिष्ट दृष्टिकोण विकसित किया, जिससे उसकी प्रकृति, विधियाँ तथा श्रेणियाँ अनेक आयामों में विस्तृत हुई। चूँकि अनुवादशास्त्र एक निरंतर विकसित होता अनुशासन है, इसलिए सभी विचारधाराओं का समग्र विश्लेषण यहाँ करना न तो आवश्यक है और न ही संभव। अत: इस इकाई में हम केवल उन प्रतिनिधि अनुवाद-चिंतकों की अवधारणाओं का संक्षेप परिचय दे रहे हैं, जिनके सिद्धांत अनुवाद अध्ययन के विकास में मील के पत्थर माने जाते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद-विमर्श को नई दिशा देने वाले प्रमुख नामों में यूजीन नाइडा, रोमन जैकब्सन, पीटर न्यूमार्क, जे. सी. कैटफ़र्ड, विनयडर्बलने, तथा आंद्रे लेफेवेर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों ने अनुवाद को कभी भाषिक समतुल्यता के आधार पर, कभी सांस्कृतिक स्थानांतरण के दृष्टिकोण से, कभी संचार प्रक्रिया के रूप में और कभी शक्ति-संरचना तथा पाठ-उत्पादन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया। इनकी अवधारणाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि अर्थ-व्यवस्था, सांस्कृतिक प्रणालियों और संप्रेषण की प्रभावशीलता से जुड़ी बहुआयामी प्रक्रिया है। इन्हीं के समानांतर भारतीय पृष्ठभूमि में भी कई महत्वपूर्ण विद्वानों ने अनुवाद के प्रकारों को लेकर महत्वपूर्ण मत प्रस्तुत किए हैं। विशेष रूप से डॉ. भोलानाथ तिवारी और डॉ. नगेंद्र द्वारा प्रतिपादित अभिमत भारतीय अनुवाद-परंपरा की सांस्कृतिक गहराई और भाषिक विविधता को रेखांकित करते हैं। इन दोनों विद्वानों ने भारतीय भाषाओं की संरचना, साहित्यिक परंपरा, अर्थ-संप्रेषण की सूक्ष्मताओं तथा सांस्कृतिक प्रतीकों के आधार पर अनुवाद के स्वरूपों और वर्गीकरण को स्पष्ट किया है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

अनुवाद-विमर्श भाषा, संस्कृति और विचारों के पारस्परिक संवाद का बौद्धिक क्षेत्र है। यह केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों के रूपांतरण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अर्थ, भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक संकेतों के संतुलित संप्रेषण पर केंद्रित होता है। अनुवाद-विमर्श के अंतर्गत अनुवाद की प्रकृति, उद्देश्य, प्रक्रिया, सीमाएँ और संभावनाएँ विचार का विषय बनती हैं। इसमें यह भी देखा जाता है कि अनुवाद किस प्रकार ज्ञान के प्रसार, साहित्यिक आदान-

प्रदान और वैद्रिक संवाद को संभव बनाता है। आधुनिक संदर्भ में अनुवाद-विमर्श सत्ता, पहचान, सांस्कृतिक वर्चस्व और भाषिक विविधता जैसे प्रश्नों से भी जुड़ गया है, जिससे अनुवाद एक स्वतंत्र और बहुआयामी अध्ययनक्षेत्र के रूप में स्थापित होता है।

7.3.1पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतकारों की विचारधरा

अनुवादविज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले विद्वान यूजीन ए. नाइडा ने अनुवाद को अर्थ-संचार की दृष्टि से वर्गीकृत किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अनुवादक कभी शब्दों के निकट रहता है, कभी संदेश के भाव के निकट और कभी उन स्थितियों में उपयुक्त विकल्प खोजता है, जहाँ लक्ष्य भाषा में सीधे समकक्ष उपलब्ध नहीं होते। उनकी विचारधारा के अनुसार अनुवाद के तीन प्रमुख स्वरूप उभरते हैं-

(1) शाब्दिक अनुवाद, जिसमें मूल पाठ के शब्द और संरचना को यथासंभव सुरक्षित रखा जाता है;

(2) भावानुवाद, जिसमें शब्दों की बजाय अर्थ और संवेदना को प्राथमिकता दिया जाता है; तथा

(3) पर्याय के आधार पर अनुवाद, जिसमें अभिप्रेत अर्थ को लक्ष्यभाषा में उपयुक्त समानार्थक अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक रोमन जैकोब्सन ने अनुवाद को भाषा और संकेतप्रणाली के व्यापक परिप्रेक्ष्य में परखा है। मैं यहाँ उनके वर्गीकरण का संक्षेप प्रस्तुत करता हूँ-

(1) अंत:भाषिक अनुवाद, जिसमें एक ही भाषा के भीतर अर्थ को अन्य रूप में व्यक्त किया जाता है;

(2) अंतरभाषिक अनुवाद, जिसमें किसी एक भाषा के संदेश को किसी दूसरी भाषा में रूपांतरित होता है; तथा

(3) अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद, जिसमें भाषिक संदेश का परिवर्तन किसी अन्य कला-माध्यम या प्रतीक-प्रणाली में किया जाता है।

7.3.2 भारतीय अनुवाद सिद्धांतकारों की विचारधारा-

अनुवाद के प्रकारों के संबंध में भारतीय अनुवादचिंतन अत्यंत समृद्ध, सुव्यवस्थित और बहुस्तरीय रहा है। भारतीय भाषिक एवं साहित्यिक परंपरा में अनुवाद को किसी यांत्रिक शब्दस्थानांतरण की प्रक्रिया न मानकर एक सृजनात्मक, बौद्धिक और सांस्कृतिक कर्म के रूप में समझा गया है। प्राचीन काल से ही भारत में अनुवाद का उद्देश्य मूल ग्रंथ के केवल शब्दों को बचाना नहीं, बल्कि उसके अर्थ, भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक चेतना को दूसरी भाषा में पुन:जीवित करना रहा है। इसी व्यापक दृष्टिकोण के कारण भारतीय अनुवाद चिंतकों ने अनुवाद के प्रकारों का वर्गीकरण कई स्तरों पर किया है। इस संदर्भ में डॉ. भोलानाथ तिवारी और डॉ. नगेंद्र द्वारा प्रस्तुत अनुवादवर्गीकरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण माने जाते हैं, क्योंकि इसके माध्यम से अनुवाद को केवल तकनीकी क्रिया न मानकर उसके स्वरूप, उद्देश्य, विषयवस्तु और प्रयोजन को समग्र दृष्टि से समझने का प्रयास किया गया है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद के प्रकारों का विवेचन चार प्रमुख आधारों पर किया है। उनका पहला आधार गद्यत्व-पद्यत्व है, जिसके अंतर्गत गद्य का गद्य में, पद्य का पद्य में तथा पद्य का गद्य में अनुवाद जैसे भेद आते हैं। यह विभाजन भाषा की संरचना और उसकी अभिव्यक्तिपद्धति को केंद्र में रखता है। दूसरा आधार साहित्यिक विधा से संबंधित है, जिसमें कथा साहित्य, काव्य, नाटक, निबंध आदि के अनुवाद अलग-अलग श्रेणियों में रखे जाते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी का मत है कि प्रत्येक विधा की अपनी रूपात्मक और सौंदर्यात्मक विशेषताएँ होती हैं, अत: उनके अनुवाद में समान रणनीति नहीं अपनाई जा सकती। तीसरा आधार विषय का है, जिसके अंतर्गत धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, तकनीकी आदि अनुवाद सम्मिलित होते हैं। विषय के अनुसार भाषा, शब्दावली और अभिव्यक्ति की जटिलताएँ परिवर्तित होती रहती हैं। चौथा और अत्यंत महत्वपूर्ण आधार अनुवाद की प्रकृति है, जिसमें शाब्दिक, भावात्मक, रूपात्मक, मुक्त तथा अनुकूलित अनुवाद जैसे प्रकार आते हैं। इस आधार पर डॉ. तिवारी अनुवाद को एक रचनात्मक पुनर्निर्माण प्रक्रिया के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं, न कि शब्दों की प्रतिकृति के रूप में।

वहीं दूसरी ओर, डॉ. नगेंद्र अनुवाद के प्रकार को और भी अधिक विस्तृत तथा विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार अनुवाद का वर्गीकरण किसी एक आधार तक सीमित नहीं किया जा सकता, क्योंकि अनुवाद एक बहुआयामी प्रक्रिया है। वे सबसे पहले भाषिक क्षेत्र के अनुसार अनुवाद को अंतरभाषिक, अंत:भाषिक और अंतरसांकेतिक श्रेणियों में विभाजित करते हैं। दूसरा आधार विषय के अनुसार है, जिसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक और शैक्षणिक अनुवाद सम्मिलित है। तीसरा आधार विधा के अनुसार है, जिसके अंतर्गत कविता, कथा, नाटक, आलोचना आदि के अनुवादों को पृथक रूप में देखा जाता है। चौथा आधार पद्धति या प्रक्रिया के अनुसार है, जिसमें शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, अर्थानुवाद और मुक्त अनुवाद जैसी विधियाँ आती हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. नगेंद्र उद्देश्य अथवा प्रयोजन को भी अनुवादवर्गीकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार मानते हैं, क्योंकि अनुवाद का उद्देश्य ही यह निर्धारित करता है कि अनुवाद किस सीमा तक शाब्दिक होगा और कहाँ वह सृजनात्मक स्वतंत्रता ग्रहण करेगा।

इन दोनों भारतीय अनुवाद चिंतकों के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल भाषाओं के बीच स्थानांतरण नहीं है, बल्कि वह अर्थ, संस्कृति, शैली, संदर्भ और प्रयोजन के बीच संतुलन स्थापित करने वाली जटिल प्रक्रिया है। भारतीय अनुवादचिंतन इस तथ्य को स्वीकार करता है कि अनुवाद का स्वरूप स्थिर नहीं होता, बल्कि वह मूल पाठ, लक्ष्य भाषा, पाठक वर्ग और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर परिवर्तित होता रहता है। अत: जब इन भारतीय तथा पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों के विचारों को समग्रता में देखा जाता है, तब अनुवाद की अवधारणा के आलोक में अनुवाद के प्रमुख प्रकारों पर विचार करना अधिक व्यवस्थित, सार्थक और सैद्धांतिक रूप से सुदृढ़ हो जाता है। यही वैचारिक आधार आगे होने वाले अनुवाद-विश्लेषण को गंभीरता और अकादमिक प्रामाणिकता प्रदान करता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1यूजीन ए. नाइडा ने अनुवाद को कितने प्रमुख रूपों में वर्गीकृत किया है?

प्रश्न 2.रोमन जैकोब्सन के अनुसार अंतरभाषिक अनुवाद का क्या अर्थ है?

प्रश्न 3.डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद के वर्गीकरण का मूल आधार क्या है?

7.4.अनुवाद के प्रमुख प्रकार

7.4.1 शाब्दिक अनुवाद-

शाब्दिक अनुवाद, अनुवाद की सबसे मूल और परंपरागत विधि मानी जाती है। इस प्रकार के अनुवाद में स्रोत भाषा के शब्दों का लक्ष्य भाषा में शब्द प्रति शब्द रूपांतरण किया जाता है। इसमें वाक्य की संरचना, व्याकरणिक क्रम और शब्दचयन को यथासंभव मूल पाठ के निकट बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। शाब्दिक अनुवाद विशेष रूप से उन क्षेत्रों में उपयोगी होता है, जहाँ तथ्यात्मक शुद्धता, अर्थ की स्पष्टता और सूचना की प्रामाणिकता अनिवार्य होती है, जैसे- धार्मिक ग्रंथ, कानून, तकनीकी दस्तावेज, वैज्ञानिक लेखन तथा शासकीय अभिलेख आदि। इस पद्धति में अनुवादक को सृजनात्मक स्वतंत्रता अपेक्षाकृत कम मिलती है, क्योंकि मुख्य उद्देश्य मूल पाठ की भाषिक संरचना को अक्षुण्ण बनाए रखना होता है।

शाब्दिक अनुवाद की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह मूल पाठ के शब्दगत अर्थ को सुरक्षित रखता है, परंतु कभी-कभी इससे भाषा स्वाभाविक नहीं रह जाती। जब स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की संरचना भिन्न होती है, तब शाब्दिक अनुवाद बनावटी या बोझिल प्रतीत हो जाता है। उदाहरण स्वरूप-

He is a man of few words.

वह कुछ शब्दों का आदमी है।

यह अनुवाद शब्द प्रति शब्द के अनुसार सही है, पर अभिव्यक्ति के स्तर पर हिंदी में स्वाभाविक नहीं लगती। फिर भी यह उदाहरण शाब्दिक अनुवाद की प्रकृति को स्पष्ट करता है। इसी प्रकार-

Knowledge is power.

ज्ञान शक्ति है।

यहाँ शाब्दिक अनुवाद सफल माना जा सकता है, क्योंकि दोनों भाषाओं में वाक्य संरचना और अर्थ निकट हैं।

7.4.2 भावानुवाद-

भावानुवाद अनुवाद की वह विधि है जिसमें शब्दों से अधिक भावों और आशयों को प्रधानता दी जाती है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक का उद्देश्य मूल पाठ के शब्द-क्रम या भाषिक संरचना को यथावत बनाए रखना नहीं होता, बल्कि उसके भाव, आशय, अनुभूति और प्रभाव को लक्ष्य भाषा में स्वाभाविक रूप से संप्रेषित करना होता है। भावानुवाद विशेष रूप से साहित्यिक रचनाओंजैसे- कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंधके अनुवाद में उपयोगी माना जाता है, क्योंकि साहित्य की आत्मा शब्दों में नहीं, बल्कि उसके पीछे निहित संवेदना और अर्थ में होती है।भावानुवाद में अनुवादक को सृजनात्मक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। वह मूल भाषा की अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा की प्रकृति, संस्कृति और पाठकमन के अनुरूप ढाल सकता है। इस प्रक्रिया में कभी-कभी शब्द बदल जाते हैं, वाक्य-रचना परिवर्तित हो जाती है, पर मूल भाव सुरक्षित रहता है। उदाहरण के लिए-

He broke down after the failure.

असफलता के बाद वह पूरी तरह टूट गया।

यहाँ broke down का शब्द प्रति शब्द अनुवाद न करके उसके भाव को हिंदी में सहज रूप से व्यक्त किया गया है।

एक अन्य उदाहरण-

The child's eyes sparkled with joy.

बच्चे की आँखों में खुशी झलक उठी।

यह अनुवाद मूल वाक्य के भाव को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है, भले ही शब्द समान न हों।

भावानुवाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इससे पाठ स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण और जीवंत बनता है। पाठक को यह अनुभव होता है कि रचना मूलत: उसी भाषा में लिखी गई है। हालांकि, भावानुवाद में यह सावधानी आवश्यक है कि अनुवादक मूल भाव से भटके नहीं और अपनी कल्पना को उस पर आरोपित न करे। संतुलन के साथ किया गया भावानुवाद ही सफल माना जाता है।

7.4.3 छायानुवाद

छायानुवाद अनुवाद की वह विधि है जिसमें मूल पाठ की भाषा, संरचना और अभिव्यक्ति की छाया को लक्ष्य भाषा में यथासंभव बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में मूल रचना का रूप, वाक्य-विन्यास और शब्द-संयोजन अनुवाद के साथ चलते हैं, मानो लक्ष्य भाषा का पाठ स्रोत भाषा की प्रतिछाया हो। यही कारण है कि इसे छायानुवाद कहा जाता है। इसमें शाब्दिकता और भावात्मकता-दोनों का सीमित संतुलन दिखाई पड़ता है, पर प्रधानता मूल पाठ की भाषिक संरचना के अनुकरण को दी जाती है।

छायानुवाद का प्रयोग मुख्यत: काव्यात्मक रचनाओं, धार्मिक ग्रंथों और शास्त्रीय साहित्य के अनुवाद में किया जाता है, जहाँ मूल पाठ की शैली, लय और भाषा-संरचना को सुरक्षित रखना आवश्यक माना जाता है। इस पद्धति में अनुवादक मूल भाषा के वाक्य-क्रम, बिंबों और अलंकारिक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा में यथासंभव उसी क्रम में प्रस्तुत करता है। परिणामस्वरूप अनुवाद कभी-कभी लक्ष्य भाषा में बनावटी या बोझिल लग सकता है, परंतु इससे मूल पाठ की भाषिक पहचान बनी रहती है।

उदाहरण के रूप में-

The sun rises in the east.

सूरज पूर्व में उदय होता है।

यहाँ वाक्य-संरचना और अर्थ दोनों लगभग समान हैं।

एक अन्य उदाहरण-

Tears rolled down her cheeks.

आँसू उसके गालों पर लुढ़क गए।

यह अनुवाद मूल वाक्य की छाया को सुरक्षित रखता है और साथ ही समझने योग्य भी है।

छायानुवाद की सीमा यह है कि इसमें भाषा की स्वाभाविकता कई बार प्रभावित हो जाती है, किंतु इसका महत्व इस बात में है कि इससे पाठक को मूल भाषा की अभिव्यक्ति-शैली का प्रत्यक्ष बोध होता है।

अत: कहा जा सकता है कि छायानुवाद मूल पाठ की भाषिक संरचना और शैली को सुरक्षित रखने वाली विधि है, जो अनुवादअध्ययन में शाब्दिक अनुवाद और भावानुवाद के मध्य एक सेतु का कार्य करती है।

7.4.4 रूपांतरण

रूपांतरण साहित्यिक सृजन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें किसी मूल रचना को लक्ष्यभाषा या नए माध्यम में प्रस्तुत करते समय उसके रूप, संरचना, शिल्प और अभिव्यक्ति शैली में आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं। यह प्रक्रिया केवल भाषा-परिवर्तन तक सीमित नहीं रहती,बल्कि कथानक, पात्र-योजना, संवाद और प्रस्तुतिपद्धति तक विस्तृत होती है। रूपांतरण का उद्देश्य मूल कृति की आत्मा और केंद्रीय भाव को सुरक्षित रखते हुए उसे नए सामाजिक, सांस्कृतिक या कलात्मक संदर्भ में इस प्रकार प्रस्तुत करना होता है कि वह समकालीन पाठक या दर्शक के लिए अधिक प्रभावी बन सके। इसी कारण रूपांतरण में अनुवाद की तुलना में रचनात्मक स्वतंत्रता अधिक होती है।रूपांतरण के उदाहरण विशेष रूप से नाटक, सिनेमा और साहित्य में देखने को मिलते हैं। विलियम शेक्सपीयर के नाटकोंजैसे- हैमलेट और मैकबेथपर आधारित फिल्में उनके कथ्य और मूल भाव को बनाए रखते हुए दृश्य माध्यम के अनुरूप रूपांतरित की गई हैं। हिंदी साहित्य में भी अनेक कहानियाँ फिल्मों में रूपांतरित हुई हैं; जैसे मुंशी प्रेमचंद की कहानी सद्गति का फिल्मांकन या भीष्म साहनी की कहानी तमस का दृश्य रूपांतरण। इसी प्रकार किसी कहानी का नाटक-रूप में मंचन या लोककथाओं का आधुनिक सामाजिक संदर्भ में पुनर्लेखन भी रूपांतरण के उदाहरण हैं। इन सभी स्थितियों में रूपांतरण करने वाला व्यक्ति केवल अनुवादक नहीं, बल्कि सहरचनाकार बन जाता है। इस प्रकार रूपांतरण मूल रचना और नवीन सृजन के बीच एक सृजनात्मक सेतु के रूप में कार्य करता है।

7.4.5 अनुसृजन

अनुसृजन साहित्यिक अनुवाद की एक सृजनात्मक प्रक्रिया है, जिसमें मूल रचना को केवल भाषा-परिवर्तन तक सीमित न रखकर उसे लक्ष्यभाषा की सांस्कृतिक और संवेदनात्मक पृष्ठभूमि में पुन: रचा जाता है। इसमें मूल कृति प्रेरणास्रोत के रूप में कार्य करती है, जबकि लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत रचना एक स्वतंत्र साहित्यिक कृति का रूप ग्रहण कर लेती है। अनुसृजन का उद्देश्य शब्दों की समानता बनाए रखना नहीं, बल्कि मूल रचना के भाव, रस, लय और अनुभूति को समान प्रभाव के साथ अभिव्यक्त करना होता है। विशेषत: काव्य और नाट्य साहित्य के अनुवाद में अनुसृजन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

भारतीय साहित्य में अनुसृजन के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। भक्ति और सूफी काव्य की रचनाएँ विभिन्न भाषाओं में भावानुकूल रूप में मिलती हैं, जो प्राय: अनुसृजन का परिणाम होती हैं। कबीर के पदों या मीरा के भजनों का आधुनिक भाषाओं में पुनर्लेखन, संस्कृत नाटकों के आधार पर आधुनिक काव्य-नाट्यों की रचना, अथवा किसी विदेशी कविता से प्रेरित होकर नई कविता का सृजन- ये सभी अनुसृजन के उदाहरण हैं। इन स्थितियों में रचनाकार मूल रचना का अनुकरण नहीं करता, बल्कि उसे आत्मसात कर नवीन सृजन करता है। इस प्रकार अनुसृजन अनुवाद और मौलिक लेखन के बीच एक सेतु के रूप में साहित्य को नवीनता और विस्तार प्रदान करता है।

7.4.6 पुनर्सृजन

पुनर्सृजन साहित्यिक अनुवाद की वह प्रक्रिया है, जिसमें मूल रचना को आधार बनाकर उसे नए संदर्भ, नए युग या नए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में पुन: रचा जाता है। इसमें मूल कृति का कथ्य, भाव या विचार तो सुरक्षित रहता है, किंतु उसकी प्रस्तुति, भाषा, शिल्प और दृष्टिकोण में व्यापक परिवर्तन किया जाता है। पुनर्सृजन का उद्देश्य मूल रचना की पुनरावृत्ति करना नहीं, बल्कि उसे समकालीन संदर्भों के अनुरूप नया रूप प्रदान करना होता है। इस प्रक्रिया में रचनाकार की सृजनात्मक भूमिका अत्यंत सक्रिय होती है और रचना एक स्वतंत्र कृति के रूप में सामने आती है।

पुनर्सृजन के उदाहरण साहित्य और रंगमंच में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। किसी पौराणिक या ऐतिहासिक कथा को आधुनिक सामाजिक संदर्भ में पुनर्लिखित करनाजैसे- रामायण या महाभारत की कथाओं का समकालीन उपन्यास या नाटक के रूप में प्रस्तुतीकरण-पुनर्सृजन का उदाहरण है। इसी प्रकार किसी पुरानी कथा या नाटक को आधुनिक फिल्म के रूप में नए पात्रों और परिस्थितियों के साथ प्रस्तुत करना भी पुनर्सृजन के अंतर्गत आता है। इन सभी स्थितियों में मूल कथा प्रेरणास्रोत होती है, किंतु रचना का स्वरूप पूर्णत: नया होता है। इस प्रकार पुनर्सृजन परंपरा और आधुनिकता के बीच सृजनात्मक संवाद स्थापित करता है।

7.4.7नवलेखन

नवलेखन साहित्यिक सृजन की वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी पूर्ववर्ती रचना, मिथक, लोककथा, ऐतिहासिक घटना या विचारधारा से प्रेरणा लेकर एक पूर्णत: नई साहित्यिक कृति का निर्माण किया जाता है। इस प्रक्रिया में मूल रचना का प्रत्यक्ष अनुवाद, रूपांतरण या अनुसरण नहीं किया जाता, बल्कि उसके केंद्रीय विचार या भावभूमि को आत्मसात कर नए सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संदर्भों में प्रस्तुत किया जाता है। नवलेखन का उद्देश्य साहित्य को नवीन दृष्टि, नवीन संवेदना और नवीन अभिव्यक्ति प्रदान करना होता है। इसमें रचनाकार को पूर्ण सृजनात्मक स्वतंत्रता प्राप्त होती है और रचना एक स्वतंत्र साहित्यिक इकाई के रूप में सामने आती है।

नवलेखन में कथानक, पात्र, भाषा और शिल्प सभी नए होते हैं, यद्यपि उसकी वैचारिक प्रेरणा किसी पूर्व स्रोत से ली जा सकती है। उदाहरणस्वरूप, महाभारत की कथा से प्रेरित होकर रचित नरेश मेहता का 'यशोधरा' या धर्मवीर भारती का 'अंधा युग' नवलेखन के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जहाँ पौराणिक कथ्य को आधुनिक मानवीय संकट और नैतिक द्वंद्व के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार रामकथा से प्रेरित मैथिलीशरण गुप्त की 'साकेत' भी नवलेखन का सशक्त उदाहरण है, जिसमें परंपरागत कथा को नए काव्यात्मक दृष्टिकोण से देखा गया है। लोककथाओं और मिथकों से प्रेरणा लेकर रचित गिरीश कर्नाड का नाटक 'ययाति' भी नवलेखन के अंतर्गत आता है, क्योंकि इसमें मूल कथा का अनुसरण न होकर आधुनिक मनोवैज्ञानिक संघर्षों की अभिव्यक्ति की गई है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

धर्मवीर भारती का नाटक 'अंधा युग' नवलेखन का सशक्त उदाहरण है। यह रचना महाभारत के युद्धोत्तर प्रसंग से प्रेरित है, किंतु इसका उद्देश्य मूल कथा का पुनर्कथन नहीं, बल्कि आधुनिक मानव की नैतिक, सामाजिक और मानसिक विडंबनाओं को अभिव्यक्त करना है। धर्मवीर भारती ने पौराणिक पात्रों- गांधारी, धृतराष्ट्र, युयुत्सु और अद्दत्थामाके माध्यम से युद्ध, हिंसा, सत्ता और नैतिक अंधत्व की समकालीन समस्याओं को प्रस्तुत किया है। मूल महाकाव्य से कथ्य लेकर लेखक ने उसे आधुनिक संवेदना, प्रतीकात्मकता और वैचारिक दृष्टि के साथ नया रूप दिया है। इसी कारण 'अंधा युग' को महाभारत से प्रेरित नवलेखन की विशिष्ट कृति माना जाता है।

7.4.8 टीकानुवाद

टीकानुवाद अनुवाद की वह विशिष्ट और परंपरागत प्रक्रिया है, जिसमें किसी मूल ग्रंथ का अनुवाद करते समय उसके साथ टीका, भाष्य या व्याख्या भी प्रस्तुत की जाती है। इसका उद्देश्य केवल मूल पाठ को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना नहीं होता, बल्कि उसके दार्शनिक, सांस्कृतिक, भाषिक और संदर्भगत अर्थों को स्पष्ट करना भी होता है। टीकानुवाद में अनुवादक पाठ के कठिन शब्दों, प्रतीकों, सांस्कृतिक संकेतों, ऐतिहासिक संदर्भों और दार्शनिक अवधारणाओं की व्याख्या करता है, जिससे पाठक मूल ग्रंथ की गहराई तक पहुँच सके। इस प्रकार टीकानुवाद अनुवाद और आलोचना- दोनों का संयुक्त रूप माना जाता है।

भारतीय परंपरा में टीकानुवाद का इतिहास अत्यंत समृद्ध और प्राचीन रहा है। संस्कृत, पालि और प्राकृत साहित्य में अनेक ऐसे ग्रंथ हैं, जिसे टीकाओं के माध्यम से ही समझा गया है। उदाहरणस्वरूप, शंकराचार्य की 'भगवद्गीता-भाष्य', रामानुजाचार्य की 'गीता-भाष्य' तथा माध्वाचार्य की गीता पर लिखी टीका टीकानुवाद के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ मूल श्लोकों के साथ उनके गूढ़ दार्शनिक अर्थों की व्याख्या की गई है। इसी प्रकार पतंजलि के योगसूत्र पर व्यासभाष्य तथा भरतमुनि के नाट्यशास्त्र पर अभिनवगुप्त की 'अभिनवभारती' भी टीकानुवाद की परंपरा को सुदृढ़

करते हैं।

आधुनिक भारतीय भाषाओं में भी टीकानुवाद का महत्व बना हुआ है। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' पर लिखी गई टीकाएँ, जैसे- गोस्वामी विश्वनाथ प्रसाद मिश्र या अन्य विद्वानों द्वारा की गई व्याख्याएँ, सामान्य पाठकों के लिए ग्रंथ को अधिक बोधगम्य बनाती हैं। इसी प्रकार कालिदास के नाटकों- 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' आदि के हिंदी टीकानुवाद साहित्यिक अध्ययनों में विशेष स्थान रखते हैं। इस प्रकार टीकानुवाद न केवल ग्रंथ की समझ को सरल बनाता है, बल्कि पाठक और मूल पाठ के बीच एक बौद्धिक सेतु का कार्य करता है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

कालिदास का नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' टीकानुवाद की परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस नाटक के संस्कृत मूल पाठ के साथ विद्वानों ने हिंदी और अन्य भाषाओं में अनुवाद करते हुए विस्तृत टीकाएँ प्रस्तुत की हैं, जिसमें कठिन शब्दों, संधियों, अलंकारों, रससिद्धांत और सांस्कृतिक संदर्भों की व्याख्या की गई है। टीकानुवाद के माध्यम से नाटक के श्लोकों का केवल अर्थ ही नहीं बताया गया, बल्कि पात्रों की मन:स्थिति, नाट्य-परंपरा और तत्कालीन सामाजिक मूल्यों को भी स्पष्ट किया गया। इस प्रकार टीकानुवाद ने 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' को साधारण पाठकों और विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य तथा अध्ययनयोग्य बनाया।

7.4.9सारानुवाद

सारानुवाद अनुवाद की वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी मूल ग्रंथ या पाठ का शब्दश: अथवा पूर्ण अनुवाद न करके उसके मुख्य विचार, केंद्रीय भाव और आवश्यक निष्कर्षों को संक्षेप में दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में विस्तार, उदाहरण, अलंकरण और गौण विवरणों को छोड़ दिया जाता है तथा केवल पाठ का सार तत्व ही लक्ष्यभाषा में व्यक्त किया जाता है। सारानुवाद का प्रमुख उद्देश्य पाठक को कम समय में मूल रचना की विषयवस्तु, दिशा और निष्कर्ष से परिचित कराना होता है। इसलिए इसे व्यावहारिक और उपयोगितावादी अनुवाद माना जाता है।

सारानुवाद विशेष रूप से उन क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हुआ है, जहाँ संक्षिप्तता और स्पष्टता की आवश्यकता होती है, जैसे- शोध, प्रशासन, पत्रकारिता, विधि साहित्य और शैक्षणिक लेखन। उदाहरणस्वरूप, किसी विस्तृत शोधप्रबंध या अकादमिक पुस्तक का हिंदी या अंग्रेजी में सार प्रस्तुत करना सारानुवाद कहलाता है। इसी प्रकार संविधान के किसी अध्याय, नीति आयोग या योजना आयोग की रिपोर्ट, अथवा संयुक्त राष्ट्र (N) की लंबी रिपोर्टों का संक्षिप्त अनुवाद सारानुवाद का उदाहरण है। साहित्यिक क्षेत्र में भी किसी लंबे उपन्यास या महाकाव्य का संक्षेप में परिचयात्मक अनुवादजैसे- महाभारत या रामायण की कथा का संक्षिप्त हिंदी/अंग्रेजी रूप- सारानुवाद के अंतर्गत आता है। सारानुवाद में अनुवादक की भूमिका चयनकर्ता और विवेचक की होती है, क्योंकि उसे यह निर्णय लेना पड़ता है कि कौन से तथ्य और विचार अनिवार्य हैं और किसे छोड़ा जा सकता है। इस प्रक्रिया में मूल पाठ की भावना को सुरक्षित रखना आवश्यक होता है, किंतु भाषाशैली सरल और संक्षिप्त रखी जाती है। इस प्रकार सारानुवाद मूल ग्रंथ और पाठक के बीच एक प्रभावी माध्यम बनकर ज्ञान के संप्रेषण को सरल और सुगम बनाता है।

7.4.10आशु अनुवाद

आशु अनुवाद वह अनुवाद प्रक्रिया है, जिसमें वक्ता द्वारा कही गई बात को बहुत कम समय में, प्राय: तुरंत, दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। इसे तात्कालिक या मौखिक अनुवाद भी कहा जाता है। आशु अनुवाद में अनुवादक को बिना पूर्व तैयारी के भाषापरिवर्तन करना पड़ता है, इसलिए इसमें शीघ्र निर्णय क्षमता, दोनों भाषाओं पर समान अधिकार और विषय की सामान्य समझ अत्यंत आवश्यक होती है। इस प्रकार का अनुवाद मुख्यत: मौखिक होता है और इसमें शब्दश: अनुवाद के स्थान पर भाव और आशय की त्वरित अभिव्यक्ति पर अधिक बल दिया जाता है।

आशु अनुवाद का प्रयोग विशेष रूप से सार्वजनिक सभाओं, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, राजनीतिक भाषणों, न्यायालयों और मीडिया संवादों में किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, संयुक्त राष्ट्र महासभा (UN General Assembly) में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों के भाषणों का तत्काल दूसरी भाषाओं में अनुवाद आशु अनुवाद का स्पष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार भारत के संसद सत्रों में हिंदी और अंग्रेजी के बीच होने वाला तत्काल मौखिक अनुवाद, या किसी विदेशी

अतिथि के भाषण का मंच पर तुरंत हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करना भी आशु अनुवाद के अंतर्गत आता है। समाचार चैनलों पर किसी विदेशी नेता के वक्तव्य का तुरंत हिंदी रूपांतरण भी इसी प्रकार का अनुवाद है। आशु अनुवाद में अनुवादक को भाषा के साथ-साथ वक्ता की भाव-भंगिमा, संदर्भ और उद्देश्य को भी समझना होता है, क्योंकि समय की सीमा के कारण शब्दों की शुद्धता से अधिक संप्रेषण की स्पष्टता और प्रभावशीलता महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार आशु अनुवाद विभिन्न भाषाओं के बीच त्वरित संवाद स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है।

7.4.11पुनःअनुवाद

पुनःअनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसमें किसी रचना का पहले से अनूदित रूप उपलब्ध होने के बावजूद उसे दोबारा अनूदित किया जाता है। यह आवश्यकता तब उत्पन्न होती है, जब पूर्व अनुवाद भाषाशैली, वैचारिक दृष्टि या सांस्कृतिक संदर्भ के कारण कालांतर में अप्रासंगिक हो जाए, या जब नई पीढ़ी के पाठकों के लिए अधिक सरल, स्पष्ट और प्रभावी भाषा में अनुवाद की आवश्यकता महसूस की जाए। पुनःअनुवाद का उद्देश्य मूल रचना को नए समय, नए पाठक वर्ग और नए भाषिक मानकों के अनुरूप पुनः प्रस्तुत करना होता है।

पुनःअनुवाद साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान- सभी क्षेत्रों में व्यापक रूप से देखा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, होमर की 'इलियड' और 'ओडिसी' के विभिन्न कालखंडों में किए गए अनेक अंग्रेजी अनुवाद पुनःअनुवाद के उदाहरण हैं। भारतीय संदर्भ में भगवद्गीता के समय-समय पर किए गए नए हिंदी और अंग्रेजी अनुवाद जैसे- शंकराचार्य, लोकमान्य तिलक और सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा प्रस्तुत अनुवाद- पुनःअनुवाद की परंपरा को दर्शाते हैं। इसी प्रकार कालिदास के नाटकों, शेक्सपीयर के नाटकों तथा प्रेमचंद की कहानियों के आधुनिक हिंदी या अंग्रेजी पुनःअनुवाद भी इसी श्रेणी में आते हैं। पुनःअनुवाद में अनुवादक का दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि वह पूर्व अनुवादों से भिन्न भाषाशैली, शब्द चयन और व्याख्या प्रस्तुत करता है। इस प्रकार पुनःअनुवाद साहित्य को जीवंत बनाए रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि महान रचनाएँ समय के साथ संवाद करती रहें।

7.4.12लिप्यंकन

जैसा कि शब्द से ही स्पष्ट है, लिप्यंकन का तात्पर्य ध्वनियों अथवा उच्चारण को लिखित रूप में अंकित करना है। लिप्यंकन में शब्दों के अर्थ की अपेक्षा उसके उच्चारण को प्रमुख आधार माना जाता है। अंग्रेजी के Transcrià¿tion शब्द का हिंदी पर्याय लिप्यंकन है, जिसमें किसी भाषा की ध्वनियों को निर्धारित लिपि-चिह्नों के माध्यम से लिखित रूप दिया जाता है। इस प्रक्रिया में वक्ता द्वारा बोले गए शब्दों, ध्वनियों और उच्चारण-भंगिमाओं को यथासंभव उसी रूप में लिपिबद्ध किया जाता है, जिससे मौखिक अभिव्यक्ति की प्रामाणिकता बनी रहे।

लिप्यंकन का प्रयोग भाषाविज्ञान, समाजशास्त्र, लोकसाहित्य, शोध कार्य तथा अभिलेखीकरण के क्षेत्र में व्यापक रूप से किया जाता है। साक्षात्कार, भाषण, वार्तालाप, लोकगीत और मौखिक कथाओं को लिखित रूप में सुरक्षित करने के लिए लिप्यंकन की विधि अपनाई जाती है। इसके लिए आई.पी.ए. (International Phonetic Alphabet) अथवा अन्य स्वीकृत लिप्यंकन प्रणालियों का उपयोग किया जाता है, जिसके माध्यम से ध्वनियों को सटीक रूप में दर्शाया जा सके। विशेष रूप से लुप्तप्राय भाषाओं और बोलियों के संरक्षण में लिप्यंकन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस प्रकार लिप्यंकन मौखिक भाषा और लिखित परंपरा के बीच सेतु का कार्य करता है तथा भाषा के संरक्षण और अध्ययन में सहायक सिद्ध होता है।

7.4.13लिप्यंतरण

लिप्यंतरण अंग्रेजी के Transliterationशब्द का हिंदी पर्याय है। इसका तात्पर्य किसी भाषा के शब्दों या ध्वनियों को उसके उच्चारण के आधार पर दूसरी लिपि में लिखने की प्रक्रिया से है। लिप्यंतरण में भाषा नहीं बदली जाती, केवल लिपि परिवर्तित होती है। इसमें अर्थ या भाव की अपेक्षा ध्वनि-साम्य को प्रधानता दी जाती है, ताकि मूल शब्द का उच्चारण यथासंभव सुरक्षित रह सके। यही कारण है कि लिप्यंतरण को अनुवाद से भिन्न माना जाता है, क्योंकि अनुवाद में अर्थपरिवर्तन होता है, जबकि लिप्यंतरण में केवल लिपि का परिवर्तन होता है। लिप्यंतरण की प्रक्रिया सामान्यतः तीन चरणों में समझी जा सकती है। प्रथम चरण में स्रोत भाषा के शब्दों को उसकी ध्वन्यात्मक इकाइयों में विभाजित किया जाता है। द्वितीय चरण में इन ध्वन्यात्मक इकाइयों के समकक्ष लक्ष्य भाषा की ध्वनियाँ निर्धारित की जाती हैं। तृतीय

चरण में इन ध्वनियों को लक्ष्य भाषा की लिपि में अंकित किया जाता है। इस प्रकार लिप्यंतरण में उच्चारण-ध्वनि-लिपि का क्रम अपनाया जाता है। लिप्यंतरण का प्रयोग साहित्य, भाषाविज्ञान, शब्दकोश निर्माण, तकनीकी लेखन और वैदिक संप्रेषण में व्यापक रूप से होता है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी शब्द भारतको रोमन लिपि में Bharat लिखना, संस्कृत को Sanskrit लिखना, अथवा अंग्रेजी शब्द Computer को हिंदी में कंप्यूटर लिखना- ये सभी लिप्यंतरण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार अरबी या फारसी मूल के शब्दों का देवनागरी लिपि में लेखन भी लिप्यंतरण की प्रक्रिया के अंतर्गत आता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4. शाब्दिक अनुवाद की प्रमुख विशेषता क्या है और इसे किन क्षेत्रों में अधिक उपयोगी माना जाता है?

प्रश्न 5. भावानुवाद और छायानुवाद में मुख्य अंतर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 6. रूपांतरण और अनुसृजन को अनुवाद की अपेक्षा अधिक सृजनात्मक प्रक्रिया क्यों माना जाता है?

प्रश्न 7. लिप्यंकन और लिप्यंतरण में मूलभूत भेद क्या है?

27.5 सारांश

- अनुवाद के प्रकार : इकाई में अनुवाद की विविध प्रकृतियों और उनके स्वरूप का अध्ययन किया गया है। अनुवाद की प्रक्रिया विभिन्न उद्देश्यों, भाषिक परिस्थितियों और विषय-वस्तु के आधार पर अलग-अलग रूपों में प्रकट होती है। इसी कारण अनुवाद को कई प्रकारों में विभाजित किया गया है, जिनके माध्यम से अनुवाद की पद्धति, उद्देश्य और प्रयोग को अधिक स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है।
- इस इकाई में मुख्य रूप से शब्दानुवाद, शाब्दिक अनुवाद और भावानुवाद जैसे पारंपरिक प्रकारों का परिचय दिया गया है। शब्दानुवाद में मूल भाषा के शब्दों को लक्ष्य भाषा में यथासंभव समान शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है, जबकि शाब्दिक अनुवाद में वाक्य संरचना और शब्द क्रम को ध्यान में रखा जाता है। इसके विपरीत भावानुवाद में मूल पाठ के भाव, आशय और प्रभाव को प्रमुखता दी जाती है, जिससे लक्ष्य भाषा में पाठ अधिक स्वाभाविक और बोधगम्य बन सके।
- इसके अतिरिक्त इस इकाई में सांस्कृतिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, वैज्ञानिक अनुवाद और वैधानिक अनुवाद जैसे विशिष्ट प्रकारों की प्रकृति और आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया है। इन प्रकारों में विषय-वस्तु की सटीकता, पारिभाषिक शब्दावली और संदर्भ की स्पष्टता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। साथ ही आधुनिक संदर्भ में मशीन अनुवाद जैसे नवीन रूपों का भी उल्लेख किया गया है, जो तकनीकी प्रगति के साथ अनुवाद प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।
- इस प्रकार यह इकाई अनुवाद के विभिन्न प्रकारों, उनकी विशेषताओं और उनके प्रयोग की समझ विकसित करती है तथा यह स्पष्ट करती है कि अनुवाद की प्रक्रिया केवल भाषाई परिवर्तन न होकर एक सुविचारित और बहुआयामी कार्य है।

K7.6 प्रगति विवरण(केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : यूजीन ए. नाइडा ने अनुवाद को तीन प्रमुख रूपों- शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और पर्याय आधारित अनुवाद में वर्गीकृत किया है। विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु पूर्ववर्ती खंड का अवलोकन करें।

प्रश्न 2 का उत्तर : रोमन जैकोब्सन के अनुसार अंतर भाषिक अनुवाद का अर्थ एक भाषा के संदेश को दूसरी भाषा में अर्थ-संप्रेषण के साथ रूपांतरित करना है।

प्रश्न 3 का उत्तर : डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार अनुवाद के वर्गीकरण का एक प्रमुख आधार गद्य और पद्य का

भेद माना गया है। इस संदर्भ की अधिक स्पष्टता के लिए ऊपर प्रस्तुत सामग्री पर ध्यान दें।

प्रश्न 4 का उत्तर : शाब्दिक अनुवाद की प्रमुख विशेषता शब्द प्रति शब्द रूपांतरण है और यह विधि, तकनीकी तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में अधिक उपयोगी मानी जाती है। अतिरिक्त विवरण समझने के लिए पूर्व वर्णित अंश को देखना उपयोगी रहेगा।

प्रश्न 5 का उत्तर : भावानुवाद भाव और प्रभाव को प्राथमिकता देता है, जबकि छायानुवाद मूल पाठ की भाषिक संरचना और शैली को अधिक सुरक्षित रखता है।इ स विषय की गहन जानकारी के लिए पहले दिए गए विवेचन को पढ़ें।

प्रश्न 6 का उत्तर : रूपांतरण और अनुसृजन को अधिक सृजनात्मक इसलिए माना जाता है क्योंकि इसमें मूल रचना के आधार पर नई संरचना और अभिव्यक्ति का निर्माण किया जाता है। संबंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए ऊपर उल्लिखित भाग सहायक सिद्ध होगा।

प्रश्न 7 का उत्तर : लिप्यंकन में ध्वनियों को लिखित रूप दिया जाता है, जबकि लिप्यंतरण में शब्दों को एक लिपि से दूसरी लिपि में परिवर्तित किया जाता है। इस विषय को विस्तार से समझने हेतु ऊपर दिए गए अंश पर दृष्टि डालें।

O7.7अधिक जानने के लिए पढ़ें

- शुक्ल, आनन्द कुमार. (2015). आचार्य रामचंद्र शुक्ल का अनुवाद-कर्म. वाराणसी: लोकभारती प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2011). अनुवाद: सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- गोस्वामी, के. के. (2010). अनुवाद: सिद्धांत और दृष्टिकोण. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2014). ई-अनुवाद और हिंदी. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2011). अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
- नगेन्द्र. (2010). अनुवाद विज्ञान: सिद्धांत और अनुप्रयोग. नई दिल्ली: किताब महल।
- तिवारी, भोलानाथ. (2009). अनुवाद-विज्ञान. इलाहाबाद: किताब महल।
- मिश्र, शिवकुमार. (2012). भारतीय परंपरा में अनुवाद और भाष्य. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
- शास्त्री, रमेशचंद्र. (2013). संस्कृत साहित्य और भारतीय अनुवादपरंपरा. नई दिल्ली: संस्कृत भारती।
- वर्मा, कृष्णदत्त. (2016). भक्ति आंदोलन और लोकभाषा का अनुवाद-बोध. इलाहाबाद: साहित्य भवन।

M7.8 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.अनुवाद के प्रकार से क्या अभिप्राय है ? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

2.शाब्दिक अनुवाद और भावानुवाद में क्या अंतर है ?

3.छायानुवाद की संकल्पना क्या है ? संक्षेप में लिखिए।

4.टीकानुवाद से क्या तात्पर्य है ?

5.लिप्यंतरण और लिप्यंकन में क्या अंतर है ?

6.आशु अनुवाद किसे कहते हैं ? संक्षेप में बताइए।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1.अनुवाद के प्रकारों के संबंध में पाश्चात्य और भारतीय अनुवाद सिद्धांतकारों के विचारों की विवेचना कीजिए।

2.शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और छायानुवाद के स्वरूप तथा विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

3.रूपान्तरण, अनुसृजन और पुनर्सृजन को अनुवाद के प्रकार के रूप में स्पष्ट कीजिए।

4.टीकानुवाद, सारानुवाद और नवलेखन की प्रकृति तथा उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

5.आशु अनुवाद और पुनः अनुवाद की प्रक्रिया एवं महत्व का वर्णन कीजिए।

6.लिप्यंकन और लिप्यंतरण को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 8 अनुवाद .उद्देश्य और सीमाएँ

इकाई की रूप रेखा

8.0. उद्देश्य
8.1 प्रस्तावना
8.2. अनुवाद की सीमाएँ, अर्थ एवं स्वरूप
8.3. भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाएँ
8.4 सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में अनुवाद की सीमाएँ
8.5 लोकोक्ति मुहावरों का अनुवाद
8.6 अनुवाद की स्थानीयपरक सीमाएँ
8.7 पाठ की प्रकृति और अनुवाद की सीमाएँ
8.8 वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के पाठ के स्तर पर अनुपाद
8.9 अनुवाद का उद्देश्य
8.10 सारांश
8.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
8.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें
8.13 अभ्यास प्रश्न

8.0. उद्देश्य

- अनुवाद की अवधारणा से जुड़ी अर्थगत और संरचनात्मक सीमाओं की स्पष्ट समझ।
- भाषा की प्रकृति के स्तर पर उत्पन्न होने वाली अनुवाद से संबंधित समस्याओं की वैचारिक पहचान कर सकेंगे।
- सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों, लोकोक्तियों और स्थानीय तत्वों से जुड़ी अनुवाद की सीमाओं का सम्यक विश्लेषण कर पाएंगे।
- साहित्यिक तथा साहित्येतर पाठों के संदर्भ में अनुवाद की व्यावहारिक कठिनाइयों का तुलनात्मक आकलन कर सकते हैं।
- कार्यालयी, मीडिया तथा वैज्ञानिक-तकनीकी पाठों में अनुवाद की सीमाओं के स्वरूप की तथ्यपरक परख कर सकते हैं।

8.1 प्रस्तावना

अनुवाद को प्राय: दो भाषाओं के बीच अर्थ-संप्रेषण की सहज प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है, किंतु व्यवहार में यह प्रक्रिया अनेक स्तरों पर जटिलताओं और सीमाओं से घिरी रहती है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सामाजिक अनुभव और अभिव्यक्ति परंपरा होती है, जिन्हें पूर्णत: समान रूप में दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना सदैव संभव नहीं होता। इसी कारण अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थगत, भाषिक और संदर्भगत असंगतियाँ उत्पन्न होती हैं।

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और समाज से निर्मित एक जीवंत प्रणाली है। जब कोई पाठ एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश करता है, तो उसके साथ जुड़ी सांस्कृतिक धारणाएँ, स्थानीय संकेत, लोकोक्तियाँ और पाठ-प्रकृति भी स्थानांतरित होती हैं, जिनमें कई बार अर्थ-हानि या अर्थ परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इस इकाई में अनुवाद की इन्हीं सीमाओं को भाषा, समाज और पाठ की प्रकृति के विविध स्तरों पर समझने

का प्रयास किया गया है, जिससे अनुवाद की वास्तविक चुनौतियों का सम्यक बोध विकसित हो सके।

8.2. अनुवाद की सीमाएँ, अर्थ एवं स्वरूप

अनुवाद को सामान्यत: एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है, जिसके माध्यम से स्रोत भाषा के पाठ को लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित किया जाता है। किंतु व्यावहारिक स्तर पर यह प्रक्रिया जितनी सहज प्रतीत होती है, उतनी सरल वास्तव में नहीं होती। अनुवाद के दौरान अर्थ और स्वरूप- दोनों स्तरों पर अनेक प्रकार की सीमाएँ सामने आती हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी विशिष्ट आंतरिक संरचना, ध्वन्यात्मक व्यवस्था, व्याकरणिक नियम तथा अभिव्यक्ति की परंपरा होती है। जब किसी पाठ का रूपांतरण एक भाषा से दूसरी भाषा में किया जाता है, तब यह आवश्यक नहीं कि मूल भाषा की अर्थ- सूक्ष्मताएँ और अभिव्यक्तिगत विशेषताएँ उसी रूप में लक्ष्य भाषा में भी सुरक्षित रह सकें। इसी कारण अनुवाद को पूर्ण समानता की प्रक्रिया न मानकर एक सापेक्ष तथा संतुलन आधारित कार्य के रूप में देखा जाता है।

अर्थ के स्तर पर अनुवाद की सीमाएँ उस समय अधिक स्पष्ट होती हैं, जब किसी शब्द, वाक्यांश या कथन का आशय केवल उसके शब्दार्थ तक सीमित न होकर सांस्कृतिक, सामाजिक अथवा भावनात्मक संकेतों से भी जुड़ा होता है। अनेक शब्दों के पीछे ऐतिहासिक अनुभव, सामाजिक मूल्य और सामूहिक स्मृतियाँ निहित रहती हैं। ऐसी स्थिति में लक्ष्य भाषा में उनके लिए उपयुक्त शब्द तो मिल सकता है, किंतु मूल आशय की संपूर्ण गहराई और संदर्भात्मक व्यापकता का संप्रेषण कठिन हो जाता है। इसके अतिरिक्त, एक ही शब्द विभिन्न संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण कर सकता है, जिससे अनुवादक को संदर्भ के अनुरूप अर्थ का चयन करना पड़ता है। यह चयन प्रक्रिया स्वयं यह संकेत देती है कि अनुवाद में कुछ अर्थ तत्व अनिवार्य रूप से परिवर्तित या सीमित हो सकते हैं।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

अनुवाद की प्रक्रिया में भाषा की संरचना, अर्थ व्यवस्था और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण पूर्ण समानता संभव नहीं होती, जिससे अनुवाद सदैव एक सापेक्ष और संतुलन आधारित कार्य बना रहता है।

स्वरूप के स्तर पर अनुवाद की सीमाएँ भाषाओं की संरचनात्मक और शैलीगत भिन्नताओं के कारण उत्पन्न होती हैं। प्रत्येक भाषा की वाक्य रचना, पद क्रम, काल प्रयोग और शैलीगत प्रवृत्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। किसी भाषा में जो अभिव्यक्ति संक्षिप्त और प्रभावशाली प्रतीत होती है, वही दूसरी भाषा में विस्तार अथवा पुनर्संरचना की अपेक्षा कर सकती है। इस प्रक्रिया में मूल पाठ की संरचनात्मक बनावट में परिवर्तन आना स्वाभाविक है। विशेष रूप से साहित्यिक अनुवाद में यह समस्या अधिक जटिल रूप धारण कर लेती है, क्योंकि यहाँ भाषा केवल सूचना के संप्रेषण का माध्यम न होकर संवेदना, सौंदर्य और कलात्मकता का वाहक भी होती है। ऐसे में अर्थ की रक्षा करते हुए स्वरूप का संतुलन बनाए रखना अनुवादक के लिए एक जटिल कार्य बन जाता है। भाषा के सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम भी अनुवाद की सीमाओं को रेखांकित करते हैं। प्रत्येक समाज के मूल्य, विद्रास और व्यवहार भाषा में अंतर्निहित रूप से समाहित होते हैं। जब किसी विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में रचित पाठ का अनुवाद भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली भाषा में किया जाता है, तो पाठ का स्वरूप आंशिक रूप से परिवर्तित हो जाता है। इस स्थिति में अनुवाद न तो पूरी तरह मूल पाठ के समान रह पाता है और न ही पूर्णत: स्वतंत्र रचना का रूप ग्रहण कर पाता है। इसी द्वंद्वात्मक स्थिति में अर्थ और स्वरूप- दोनों स्तरों पर अनुवाद की सीमाएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं।

8.3 भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद सीमाएँ

भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाएँ इस तथ्य से उत्पन्न होती हैं कि प्रत्येक भाषा की अपनी आंतरिक संरचना, व्याकरणिक व्यवस्था और अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया होती है। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं होती, बल्कि वह अपने भीतर समाज, संस्कृति और चिंतन-पद्धति को समाहित किए रहती है। अनुवाद करते समय स्रोत भाषा की

इस अंतर्निहित व्यवस्था को लक्ष्य भाषा में उसी रूप में स्थानांतरित करना प्राय: संभव नहीं होता। उदाहरणस्वरूप, अंग्रेजी भाषा में वाक्य रचना अपेक्षाकृत स्थिर होती है और कर्ता-क्रिया-कर्म का क्रम अनिवार्य माना जाता है, जबकि हिंदी में शब्द क्रम अधिक लचीला होता है। जैसे अंग्रेजी वाक्य Ram killed Ravana को हिंदी में राम ने रावण को मारा कहा जाता है। यदि अंग्रेजी का शब्द क्रम हिंदी में ज्यों का त्यों रखा जाए, तो वाक्य अस्वाभाविक प्रतीत होगा। यह संरचनात्मक भिन्नता अनुवाद की एक मौलिक सीमा को रेखांकित करती है। भाषा की प्रकृति में लिंग व्यवस्था भी अनुवाद को सीमित करती है। हिंदी में क्रिया, विशेषण और सर्वनाम लिंग के अनुसार परिवर्तित होते हैं, जिससे अर्थ का एक अतिरिक्त स्तर निर्मित होता है। इसके विपरीत, अंग्रेजी जैसी भाषाओं में लिंग सूचकता अपेक्षाकृत सीमित है। उदाहरण के लिए, हिंदी वाक्य वह थक गया और वह थक गई में लिंग का भेद स्पष्ट है, किंतु अंग्रेजी में दोनों के लिए He/She got tired कहना पड़ता है। इस प्रक्रिया में मूल भाषा की सूक्ष्म अर्थ संकेतक शक्ति क्षीण हो जाती है। अत: भाषा की व्याकरणिक प्रकृति अनुवाद के पूर्ण समतुल्य रूप को बाधित करती है। अर्थ बहुलता भी भाषा की एक ऐसी विशेषता है जो अनुवाद में सीमा उत्पन्न करती है। अनेक शब्द और वाक्य संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करते हैं। हिंदी में कहा गया वाक्य उसका हाथ मजबूत है शारीरिक शक्ति, सामाजिक प्रभाव या राजनीतिक सत्ता- तीनों अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है। किंतु अनुवाद करते समय अनुवादक को इनमें से किसी एक अर्थ का चयन करना पड़ता है। इस चयन की प्रक्रिया में अन्य संभावित अर्थ स्वत: ही छूट जाते हैं। इस प्रकार भाषा की बहुअर्थक प्रकृति अनुवाद को एक सीमित और चयनात्मक प्रक्रिया बना देती है। भाषा का सांस्कृतिक आधार भी अनुवाद के मार्ग में एक महत्वपूर्ण सीमा के रूप में उपस्थित होता है। अनेक शब्द और अभिव्यक्तियाँ ऐसी होती हैं जो किसी विशिष्ट संस्कृति से गहराई से जुड़ी होती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी वाक्य घर की लक्ष्मी आ गई केवल किसी महिला के आगमन का संकेत नहीं देता, बल्कि उसमें शुभता, समृद्धि और देवी-परंपरा का सांस्कृतिक भाव निहित होता है। किसी अन्य भाषा में इसका सीधा अनुवाद करने पर यह सांस्कृतिक अर्थ प्राय: नष्ट हो जाता है। इस प्रकार भाषा की सांस्कृतिक प्रकृति अनुवाद को अर्थ-स्तर तक सीमित कर देती है और भाव-संपदा को पूरी तरह संप्रेषित नहीं होने देती। सामाजिक संबोधन की व्यवस्था भी भाषा की प्रकृति से जुड़ी एक महत्वपूर्ण सीमा है। हिंदी में 'तू', 'तुम' और 'आप' जैसे संबोधन सामाजिक दूरी, सम्मान और आत्मीयता को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, तुम कब आओगे ? और आप कब आएँगे ? दोनों वाक्यों में सामाजिक भाव भिन्न है। किंतु अंग्रेजी में दोनों के लिए When will you come? कहना पड़ता है। यहाँ भाषा की सामाजिक संवेदनशीलता अनुवाद में लुप्त हो जाती है, जिससे सामाजिक अर्थ का क्षरण होता है। भाषा की भावात्मक प्रकृति भी अनुवाद की सीमाओं को और गहरा करती है। कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनमें भावनात्मक तीव्रता और सांस्कृतिक अनुभव अंतर्निहित होता है। हिंदी के शब्द 'ममता', 'वात्सल्य' या 'लाज' केवल अर्थ नहीं, बल्कि अनुभूति भी व्यक्त करते हैं। इनका अन्य भाषा में अनुवाद करने पर भाव की गहराई पूरी तरह संप्रेषित नहीं हो पाती। परिणामस्वरूप अनुवाद भावात्मक दृष्टि से अपेक्षाकृत कमजोर प्रतीत होता है। भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाएँ अनिवार्य हैं। भाषा की संरचना, व्याकरण, अर्थ बहुलता, सांस्कृतिक संदर्भ, सामाजिक संबोधन और भावात्मक शक्ति- ये सभी तत्व अनुवाद को पूर्ण समतुल्यता से दूर ले जाते हैं। अनुवादक इन सीमाओं को समझते हुए संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है, किंतु मूल भाषा की संपूर्ण प्रकृति को लक्ष्य भाषा में हूबहू स्थानांतरित करना संभव नहीं होता। यही कारण है कि अनुवाद को एक सृजनात्मक, विवेकशील और विश्लेषणात्मक प्रक्रिया माना जाता है।

8.4 सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में अनुवाद की सीमाएँ-

प्रत्येक भाषा की अपनी एक विशिष्ट प्रकृति होती है। यह प्रकृति केवल शब्दों या व्याकरण तक सीमित नहीं होती, बल्कि भाषा के ध्वनि तंत्र, वाक्य विन्यास, अर्थ व्यवस्था, अभिव्यक्ति शैली और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से मिलकर बनती है। भाषा किसी समाज के सोचने, अनुभव करने और भाव व्यक्त करने के तरीकों को प्रतिबिंबित करती है। यही कारण है कि अनुवाद की प्रक्रिया में भाषा की यह प्रकृति सबसे बड़ी सीमा के रूप में सामने आती है।

सबसे पहले भाषा की प्रकृति का प्रभाव वाक्य विन्यास पर देखा जा सकता है। विभिन्न भाषाओं में वाक्य रचना की

व्यवस्था अलग-अलग होती है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी भाषा में वाक्य का क्रम सामान्यत: कर्ता-क्रिया-कर्म होता है, जबकि हिंदी में कर्ता कर्म क्रिया का प्रयोग किया जाता है। यदि अंग्रेजी वाक्य The boy wrote a letter का शब्दश: अनुवाद लड़का लिखा पत्र कर दिया जाए, तो वाक्य अर्थहीन हो जाएगा। सही अनुवाद होगा- लड़के ने पत्र लिखा। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद में भाषा की संरचना को ध्यान में रखना आवश्यक है। भाषा की प्रकृति का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष लिंग, वचन और पुरुष की व्यवस्था से जुड़ा है। हिंदी जैसी भाषाओं में लिंग का प्रभाव क्रिया और विशेषण पर भी पड़ता है, जबकि अंग्रेजी में यह प्रभाव सीमित होता है। उदाहरणस्वरूप, हिंदी वाक्य वह डॉक्टर है में यह स्पष्ट नहीं होता कि डॉक्टर पुरुष है या स्त्री। जब इसका अनुवाद अंग्रेजी में किया जाता है- He is a doctor या She is a doctor तो अनुवादक को अतिरिक्त जानकारी जोड़नी पड़ती है, जो मूल वाक्य में निहित नहीं थी। यह स्थिति भाषा की प्रकृति से उत्पन्न अनुवाद की एक सीमा को दर्शाती है। भाषा की प्रकृति में बहुअर्थकता भी एक प्रमुख तत्व है। एक ही शब्द अलग-अलग संदर्भों में भिन्न अर्थ देता है। उदाहरण के लिए, हिंदी शब्द हल्का भोजन, रंग और दर्द- तीनों के लिए प्रयुक्त होता है। किंतु अंग्रेजी में इन अर्थों के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है- light food, pale colour और Mild Pain इससे यह स्पष्ट होता है कि स्रोत भाषा के शब्द की बहुअर्थकता को लक्ष्य भाषा में पूरी तरह बनाए रखना कठिन होता है। भाषा की प्रकृति से जुड़ी एक अन्य सीमा अर्थ-निहितता है। कई बार वाक्य का वास्तविक अर्थ शब्दों में नहीं, बल्कि संदर्भ, लहजे या भाव में छिपा होता है। उदाहरण के लिए, वाक्य तुम तो बड़े समझदार हो! प्रशंसा भी हो सकता है और व्यंग्य भी। यदि इसका अनुवाद अंग्रेजी में You are very intelligent किया जाए, तो व्यंग्य का भाव समाप्त हो जाता है। यह उदाहरण बताता है कि निहित अर्थ को दूसरी भाषा में उसी प्रभाव के साथ व्यक्त करना कठिन होता है।

मुहावरे और विशेष अभिव्यक्तियाँ भी भाषा की प्रकृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। ये किसी विशेष संस्कृति में विकसित होती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी मुहावरा नाक कटना यदि अंग्रेजी में शब्दश: nose cut कर दिया जाए, तो उसका कोई अर्थ नहीं रह जाता। इसका उपयुक्त अनुवाद to lose honour होगा। इससे स्पष्ट होता है कि मुहावरों का अनुवाद भाषा की प्रकृति को समझे बिना संभव नहीं है। अंत में, भाषा की प्रकृति में ध्वन्यात्मक सौंदर्य और लयात्मकता भी शामिल होती है, विशेषकर काव्यात्मक रचनाओं में। उदाहरण के लिए, पंक्ति झर-झर बहती नदी में ध्वनि की पुनरावृत्ति से सौंदर्य उत्पन्न होता है। जब इसे अंग्रेजी में The river flows कहा जाता है, तो अर्थ तो व्यक्त हो जाता है, लेकिन ध्वन्यात्मक प्रभाव नष्ट हो जाता है। यह साहित्यिक अनुवाद की एक बड़ी सीमा है।

8.5 लोकोक्ति मुहावरों का अनुवाद

लोककथाएँ और मुहावरे किसी भी भाषा की लोक-संस्कृति, सामूहिक अनुभव और सामाजिक चेतना के सघन रूप होते हैं। ये केवल भाषिक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि पीढ़ियों से संचित जीवनानुभव, विद्रास और मूल्य बोध का सार प्रस्तुत करते हैं। इसी कारण इनके अनुवाद में साधारण शब्द प्रतिस्थापन पर्याप्त नहीं होता। जब लोककथा या मुहावरे का अनुवाद किया जाता है, तब अनुवादक को भाषा के साथ-साथ उस समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखना पड़ता है, अन्यथा मूल भाव विकृत या अपूर्ण हो जाता है। लोककथाओं के अनुवाद में सबसे बड़ी सीमा यह होती है कि वे स्थान, काल और समाज विशेष से गहरे रूप में जुड़ी होती हैं। किसी ग्रामीण लोककथा में प्रयुक्त पात्र, घटनाएँ और प्रतीक उस समाज के दैनिक जीवन से निकलते हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी की लोककथाओं में चालाक सियार, भोला किसान या अन्यायकारी राजा जैसे पात्र प्रतीकात्मक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। यदि ऐसी कथा का अनुवाद किसी विदेशी भाषा में किया जाए, तो पाठक के लिए इन प्रतीकों का आशय स्वत: स्पष्ट नहीं होता। ऐसी स्थिति में अनुवादक को या तो कथा के भीतर संकेतात्मक व्याख्या जोड़नी पड़ती है या फिर समान सांस्कृतिक प्रभाव उत्पन्न करने वाले प्रतीकों का चयन करना पड़ता है। मुहावरों के अनुवाद में यह समस्या और अधिक जटिल हो जाती है। मुहावरे भाषा के वे स्थायी प्रयोग हैं, जिनका अर्थ उनके शब्दों के सीधे योग से नहीं निकलता। उदाहरण के लिए, हिंदी में कहा जाता है- दाल में कुछ काला है। इसका शाब्दिक अनुवाद किसी अन्य भाषा में करने पर अर्थ निरर्थक हो सकता है। यहाँ भाव यह है कि किसी स्थिति में संदेह या गड़बड़ी है। अत: अनुवादक को लक्ष्य भाषा में ऐसे वाक्य या

मुहावरे की तलाश करनी पड़ती है, जो संदेह का वही भाव उत्पन्न करे, भले ही शब्द संरचना भिन्न हो। अंग्रेजी के मुहावरे to beat about the bush का यदि शब्दश: हिंदी अनुवाद किया जाए, तो उसका आशय स्पष्ट नहीं होता। इसका भाव है- मूल विषय से बचते हुए इधर-उधर की बातें करना। हिंदी में इसे घुमा-फिराकर बात करना जैसे भावात्मक अनुवाद से अधिक सटीक रूप में व्यक्त किया जा सकता है। हिंदी- वह कुछ भी नहीं जानता। अंग्रेजी— He knows nothing. यहाँ कुछ भी नहीं में जो बल है, वह अंग्रेजी में अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली हो जाता है। यह भी भाषा की प्रकृति से जुड़ी सूक्ष्म सीमा है। यहाँ यह स्पष्ट होता है कि मुहावरों का अनुवाद भाव-समानता के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि शब्द-समानता के आधार पर।

लोककथाओं और मुहावरों के अनुवाद में एक अन्य सीमा सांस्कृतिक मूल्यांकन से जुड़ी होती है। किसी समाज में जो व्यवहार हास्यपूर्ण या व्यंग्यात्मक माना जाता है, वही किसी अन्य समाज में अपमानजनक या असंगत प्रतीत हो सकता है। उदाहरणस्वरूप, कुछ लोककथाओं में चतुराई को छल के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है और उसे सकारात्मक गुण माना जाता है, जबकि अन्य संस्कृतियों में छल को नैतिक रूप से नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है। अनुवाद करते समय यह सांस्कृतिक भिन्नता अर्थ-ग्रहण को प्रभावित करती है। कई मुहावरे और लोककथात्मक अभिव्यक्तियाँ ऐतिहासिक या पौराणिक संदर्भों पर आधारित होती हैं। यदि लक्ष्य भाषा के पाठक उन संदर्भों से परिचित नहीं हैं, तो अनुवाद का प्रभाव क्षीण हो जाता है। उदाहरण के लिए, हिंदी में किसी को अत्यंत बलवान या परिश्रमी बताने के लिए किसी पौराणिक पात्र से तुलना की जाती है। ऐसी तुलना का अनुवाद तभी प्रभावी होगा, जब पाठक उस पात्र की विशेषताओं को जानता हो; अन्यथा अनुवादक को तुलनात्मक व्याख्या का सहारा लेना पड़ता है।

8.6. अनुवाद की स्थानीयपरक सीमाएँ-

अनुवाद की प्रक्रिया में स्थानीयपरकता एक अत्यंत महत्वपूर्ण तथा जटिल सीमा के रूप में उभरकर सामने आती है। प्रत्येक भाषा किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र, सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक अनुभव और सांस्कृतिक जीवन पद्धति से जुड़ी होती है। उसी के अनुरूप उस भाषा में प्रयुक्त शब्द, संबोधन, पदबंध, मुहावरे और अर्थ-संकेत विकसित होते हैं। जब ऐसे स्थानीय संदर्भों से जुड़े भाषिक प्रयोगों का अनुवाद किसी दूसरी भाषा में किया जाता है, तो प्राय: लक्ष्य भाषा में न तो उनके लिए पूर्ण समतुल्य शब्द उपलब्ध होते हैं और न ही वही सांस्कृतिक प्रभाव उत्पन्न हो पाता है। यही स्थिति अनुवाद की स्थानीयपरक सीमा को जन्म देती है।

स्थानीयपरक शब्द सामान्यत: किसी क्षेत्र विशेष की जीवन शैली, रहन-सहन, खान-पान, पर्यावरण और सामाजिक व्यवहार से जुड़े होते हैं। उदाहरणस्वरूप, हिंदी के ग्रामीण और अर्ध-ग्रामीण जीवन में प्रयुक्त शब्द- आँगन, ओखली, मड़ई, हुक्का-पानी के लिए अंग्रेजी या अन्य भाषाओं में सटीक समतुल्य शब्द नहीं मिलते। यदि आँगन का अनुवाद केवल courtyard कर दिया जाए, तो उसके साथ जुड़े पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक भाव पूरी तरह व्यक्त नहीं हो पाते। इसी प्रकार, मड़ई का केवल hut कहना उसके स्थानीय रूप और उपयोग को सीमित कर देता है। ऐसी स्थिति में अनुवाद या तो अधूरा रह जाता है या अत्यधिक व्याख्यात्मक हो जाता है।

स्थानीयपरकता केवल शब्दों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि अर्थ बोध की पद्धति तक विस्तृत होती है। उदाहरण के लिए, हिंदी में प्रयुक्त वाक्य- उसकी भाषा में देहाती सादगी झलकती है का अर्थ केवल शैली से नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन के अनुभवों से जुड़ा होता है। यदि इसका सीधा अनुवाद किया जाए— His language reflects rural simplicity तो मूल वाक्य में निहित आत्मीयता और सामाजिक संदर्भ काफी हद तक कम हो जाता है। इसी प्रकार, किसी मरुस्थलीय क्षेत्र में प्रयुक्त वाक्य- यहाँ पानी सोने के बराबर है केवल जल की कमी नहीं, बल्कि जीवन की कठिन परिस्थितियों का भी संकेत देता है, जिसे शब्दश: अनूदित करना प्रभावहीन हो जाता है। स्थानीयपरक सीमा प्रशासनिक और सामाजिक अनुवादों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारत की प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़े शब्द जैसे- ग्राम सभा, राजस्व गाँव, आंगनवाड़ी, पंचायत सचिव के लिए अन्य भाषाओं में केवल आंशिक समकक्ष शब्द मिलते हैं। उदाहरणस्वरूप, Gram Sabha को केवल village council कहना उसकी संवैधानिक भूमिका और कार्यक्षेत्र को पूरी तरह स्पष्ट नहीं करता। इसलिए अनुवादक को अक्सर शब्द को मूल रूप में रखते हुए अतिरिक्त

व्याख्या जोड़नी पड़ती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि स्थानीयपरक शब्दों की समस्या केवल भाषिक नहीं, बल्कि प्रशासनिक और संस्थागत भी होती है।

स्थानीयपरक मुहावरे और लोकोक्तियाँ इस सीमा को और अधिक जटिल बना देती हैं। उदाहरण के लिए- अब तो दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है, यह अभिव्यक्ति अनुभव से उपजी सावधानी को दर्शाती है। इसका शाब्दिक अनुवाद अर्थहीन होगा। इसी प्रकार- अपने घर की आग पड़ोस को भी जलाती है जैसी लोकोक्ति का प्रभाव केवल उसी सांस्कृतिक संदर्भ में पूर्ण रूप से समझा जा सकता है। लक्ष्य भाषा में समान प्रभाव उत्पन्न करने वाली अभिव्यक्ति हर बार उपलब्ध हो, यह आवश्यक नहीं है। परिणामस्वरूप अनुवाद में या तो भाव का सरलीकरण हो जाता है या सांस्कृतिक विशिष्टता का ह्रास।

8.7. पाठ की प्रकृति और अनुवाद की सीमाएँ -

अनुवाद की प्रक्रिया को केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों के रूपांतरण के रूप में नहीं देखा जा सकता। वास्तव में अनुवाद उस पाठ की प्रकृति, उसके उद्देश्य और उसकी संप्रेषणात्मक भूमिका से गहरे रूप में जुड़ा होता है। प्रत्येक पाठ अपने भीतर एक विशिष्ट संरचना, शैली और प्रयोजन को समाहित करता है। यही कारण है कि किसी पाठ का अनुवाद कभी सरल प्रतीत होता है, तो कभी अत्यंत जटिल। साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी अथवा मीडिया से जुड़े पाठ- सभी की भाषिक प्रकृति भिन्न होती है और इसी भिन्नता के कारण अनुवाद की सीमाएँ भी अलग-अलग स्तरों पर उभरकर सामने आती हैं। अनुवादक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह सबसे पहले यह समझे कि मूल पाठ का उद्देश्य भावात्मक अभिव्यक्ति है, तथ्यात्मक सूचना देना है या स्पष्ट निर्देश प्रदान करना है, क्योंकि इसी के आधार पर अनुवाद की दिशा तय होती है।

साहित्यिक पाठों की प्रकृति मूलत: भावप्रधान और शैलीनिष्ठ होती है। कविता, कहानी, उपन्यास या नाटक में शब्द केवल अर्थ के वाहक नहीं होते, बल्कि वे भाव, प्रतीक, ध्वनि और सांस्कृतिक संकेतों को भी व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी कहानी में वाक्य आता है- उसके जीवन में साँझ उतर आई थी तो इसका आशय केवल दिन के अंत से नहीं, बल्कि जीवन के अवसान, थकान या निराशा से होता है। यदि इसका अनुवाद केवल evening had come into his life कर दिया जाए, तो मूल भाव पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो पाता। यहाँ अनुवादक को लक्ष्य भाषा में ऐसी संरचना तलाशनी पड़ती है, जो जीवन की इस सांकेतिक अवस्था को व्यक्त कर सके। इसी स्तर पर साहित्यिक पाठ में अनुवाद की सीमा उभरती है, क्योंकि भाव और प्रतीक को दूसरी भाषा में उसी तीव्रता से स्थानांतरित करना प्राय: संभव नहीं होता। इसके विपरीत, साहित्येतर या कार्यालयी पाठों की प्रकृति अपेक्षाकृत वस्तुनिष्ठ और उद्देश्यपरक होती है। प्रशासनिक, विधिक या सरकारी दस्तावेजों में भाषा का प्रयोग स्पष्ट, एकार्थी और निश्चित अर्थ में किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी आदेश में लिखा वाक्य- यह आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होगा का अनुवाद करते समय शब्दों में किसी प्रकार का भावात्मक या शैलीगत परिवर्तन नहीं किया जा सकता। यदि इसे This order may be implemented soon अनूदित कर दिया जाए, तो तत्काल का आशय समाप्त हो जाता है। यहाँ अनुवाद की सीमा रचनात्मकता नहीं, बल्कि अर्थ की सटीकता और संरचनात्मक अनुशासन से निर्धारित होती है। फिर भी, अलग-अलग भाषाओं की प्रशासनिक परंपराओं के कारण समान पदों के लिए उपयुक्त शब्द ढूँढना कई बार कठिन हो जाता है। वैज्ञानिक और तकनीकी पाठों की प्रकृति और भी अधिक विशिष्ट होती है। ऐसे पाठों में प्रयुक्त शब्द सामान्य भाषा में प्रचलित अर्थ से अलग, निश्चित वैज्ञानिक या तकनीकी परिभाषा के अंतर्गत प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, विज्ञान के पाठ में प्रयुक्त शब्द कार्य का अर्थ सामान्य भाषा में किए गए किसी भी काम से नहीं, बल्कि भौतिकी में परिभाषित ऊर्जा संबंधी प्रक्रिया से होता है। यदि अनुवादक विषय ज्ञान से परिचित न हो, तो वह शब्द का सामान्य अर्थ लेकर अनुवाद कर सकता है, जिससे पाठ भ्रामक हो जाता है। इस स्तर पर अनुवाद की सीमा भाषिक न होकर ज्ञानात्मक और वैचारिक बन जाती है। मीडिया पाठों की प्रकृति अपेक्षाकृत समसामयिक, प्रभावशाली और पाठक केन्द्रित होती है। समाचार, विज्ञापन और डिजिटल सामग्री में भाषा का प्रयोग तात्कालिक प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, किसी विज्ञापन की पंक्ति- एक कदम बेहतर भविष्य की ओर यदि शब्दश: अनूदित कर दी जाए,

तो लक्ष्य भाषा में उसका प्रभाव कम हो सकता है। इसलिए अनुवादक को मूल संदेश बनाए रखते हुए भाषा और शैली में परिवर्तन करना पड़ता है। इस प्रक्रिया में कभी-कभी मूल पाठ से कुछ दूरी भी बन जाती है। यही मीडिया पाठ के स्तर पर अनुवाद की एक महत्वपूर्ण सीमा है।

(1) साहित्यिक पाठ में भाव, शैली और अर्थ का अनुवाद

(क) सैद्धांतिक विवेचन

साहित्यिक पाठ में भाव और शैली एक-दूसरे से इस प्रकार जुड़ी होती हैं कि उन्हें अलग-अलग करके नहीं समझा जा सकता। साहित्यकार अपने अनुभवों, संवेदनाओं और अंतर्मन की अवस्थाओं को केवल कथ्य के माध्यम से व्यक्त नहीं करता, बल्कि वह भाषा की लय, शब्द चयन, प्रतीकों, उपमाओं, बिंबों और व्यंजनाओं के सहारे अपने भावों को कलात्मक रूप देता है। यही शैली साहित्यिक पाठ की आत्मा बनती है और पाठ को सामान्य भाषा से अलग पहचान प्रदान करती है। जब पाठक किसी रचना को पढ़ता है, तो वह केवल सूचना ग्रहण नहीं करता, बल्कि भाषा के सौंदर्य के माध्यम से लेखक की अनुभूति को अनुभव करता है।

साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया में यह संबंध और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि अनुवादक केवल शाब्दिक अर्थ को केंद्र में रखकर अनुवाद करता है, तो वह मूल रचना के भावात्मक और सौंदर्यात्मक पक्ष की उपेक्षा कर देता है। ऐसे में अनुवाद यद्यपि अर्थ के स्तर पर सही प्रतीत हो सकता है, किंतु वह मूल पाठ के प्रभाव को उत्पन्न करने में असफल रहता है। उदाहरण के लिए, किसी कविता में प्रयुक्त प्रतीक या बिंब यदि केवल शब्दशः अनूदित कर दिए जाएँ, तो वे लक्ष्य भाषा के पाठक के लिए अर्थहीन या सपाट हो सकते हैं। इससे रचना की आत्मा नष्ट हो जाती है। इसी कारण साहित्यिक अनुवाद में भावानुकूलता और संदर्भानुकूलता को विशेष महत्व दिया जाता है। अनुवादक को यह समझना पड़ता है कि कौन-सा शब्द केवल सूचना देता है और कौन-सा शब्द भाव, अनुभूति और सांस्कृतिक संकेत का संवाहक है। कई बार एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, और अनुवादक को संदर्भ के आधार पर यह निर्णय लेना पड़ता है कि कौन-सा अर्थ उपयुक्त है। भाव और शैली के बीच संतुलन बनाए बिना किया गया अनुवाद प्रायः नीरस, कृत्रिम और प्रभावहीन हो जाता है। अतः साहित्यिक अनुवाद की सफलता इसी में निहित है कि अनुवादक मूल रचना के भाव सौंदर्य और शैलीगत विशेषताओं को लक्ष्य भाषा में यथासंभव जीवंत रूप में प्रस्तुत कर सके।

(ख) उदाहरण

अंग्रेजी मूल काव्यांश

Dreaming when Dawn's left hand is in the sky,
I heard a voice within the tavern cry,
Awake, my little ones, and fill the cup,
Before life's liquor in its cup be dry.

हिंदी भावानुवाद

जब उषा का हाथ नभ में फैला था,
मदिरालय से आती आवाज मैंने सुनी,
उठो मेरे बालको, प्याले भर लो,
जीवन की मदिरा सूख जाने से पहले।

व्याख्या

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि साहित्यिक अनुवाद में शब्दानुवाद के स्थान पर भावानुवाद अधिक प्रभावी होता है। यहाँ 'Dawn's left hand समय और चेतना का प्रतीक है, जबकि 'life's liquor' जीवन की क्षणभंगुरता को दर्शाता है। हिंदी अनुवाद में इन प्रतीकों को सांस्कृतिक अनुकूलता के साथ रूपांतरित किया गया है, जिससे मूल भाव सुरक्षित रहता है।

(2) काव्य अनुवाद की जटिलता

(क) सैद्धांतिक विवेचन- काव्य साहित्य भाषा की अभिव्यक्ति का सबसे संवेदनशील और कलात्मक रूप माना जाता है। इसमें भाषा केवल अर्थ वहन का माध्यम नहीं रहती, बल्कि वह स्वयं एक सौंदर्यात्मक अनुभव बन जाती है। छंद, लय, तुक, रस, अलंकार और ध्वनि सौंदर्य- ये सभी तत्व मिलकर कविता को विशिष्ट बनाते हैं। कवि अपने भावों और अनुभूतियों को शब्दों की ध्वनि, गति और संरचना के माध्यम से इस प्रकार गढ़ता है कि पाठक केवल अर्थ ही नहीं, बल्कि एक गहरी भावनात्मक अनुभूति भी प्राप्त करता है। इसी कारण काव्य अनुवाद अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा अधिक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है।

काव्य अनुवाद में अनुवादक के सामने सबसे बड़ी सैद्धांतिक समस्या यह होती है कि वह अर्थ को प्राथमिकता दे या लय और छंद को। यदि अनुवादक मूल कविता के अर्थ को पूरी तरह सुरक्षित रखने का प्रयास करता है, तो प्राय: छंद, तुक और ध्वनि सौंदर्य नष्ट हो जाते हैं। इसके विपरीत, यदि वह मूल छंद और लय को बनाए रखने का प्रयास करता है, तो अर्थ में परिवर्तन या संक्षेप अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार अर्थ और रूप के बीच एक प्रकार का द्वंद्व उत्पन्न होता है, जिसे पूरी तरह सुलझाना संभव नहीं होता।

(ख) उदाहरण

हिंदी मूल

कहत नटत रीझत खीझत,

मिलत खिलत लजियात।

अंग्रेज़ी भावानुवाद:

The dancer speaks with smiling eyes,

Meeting, blooming, yet veiled in shy delight.

व्याख्या

यहाँ 'रीझत', 'खिलत' और 'लजियात' जैसे शब्द भावों की सूक्ष्म परतें रचते हैं। अंग्रेजी अनुवाद में इन्हें 'smiling eyes' और 'shy delight' के माध्यम से भावात्मक रूप से व्यक्त किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि काव्य अनुवाद में पूर्ण समानता नहीं, बल्कि भावात्मक साम्य ही लक्ष्य होता है।

(3) प्रतीक, अलंकार और बहुअर्थी शब्दों का अनुवाद

(क) सैद्धांतिक विवेचन- साहित्यिक भाषा की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका प्रतीकात्मक और बहुअर्थी होना है। साहित्य में शब्द केवल अपने कोशीय (dictionary) अर्थ तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे संदर्भ, संस्कृति, परंपरा और भाव-संवेदना के आधार पर अनेक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। प्रतीक, अलंकार और बहुअर्थी शब्द साहित्यिक अभिव्यक्ति को गहन, कलात्मक और प्रभावशाली बनाते हैं। यही तत्व साहित्य को सामान्य भाषिक संप्रेषण से अलग करते हैं, परंतु अनुवाद की दृष्टि से यही तत्व सबसे अधिक जटिलताएँ भी उत्पन्न करते हैं।

प्रतीकात्मक शब्द किसी ठोस वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के माध्यम से किसी अमूर्त भाव या विचार को व्यक्त करते हैं। उदाहरणत: 'दीपक' शब्द केवल प्रकाश का साधन नहीं, बल्कि आशा, ज्ञान और चेतना का प्रतीक भी हो सकता है। इसी प्रकार 'अंधकार' अज्ञान, भय या सामाजिक दमन का संकेतक बन जाता है। जब ऐसे प्रतीकों का अनुवाद किया जाता है, तो अनुवादक के सामने यह समस्या आती है कि लक्ष्य भाषा और संस्कृति में वही प्रतीक समान अर्थ और प्रभाव उत्पन्न करेगा या नहीं। यदि प्रतीक का सीधा अनुवाद कर दिया जाए, तो संभव है कि उसका सांस्कृतिक और भावात्मक अर्थ नष्ट हो जाए। बहुअर्थी शब्दों की समस्या इससे भी अधिक जटिल है। एक ही शब्द अलग-अलग संदर्भों में भिन्न अर्थ ग्रहण करता है। उदाहरण के लिए 'हरि' शब्द का प्रयोग ईश्वर, हरियाली, सूर्य अथवा चेतना के अर्थ में हो सकता है। यदि अनुवादक किसी एक अर्थ को चुनता है, तो अन्य संभावित अर्थ स्वत: समाप्त हो जाते हैं। इससे मूल साहित्यिक पाठ की बहुअर्थकता (polysemy) और व्यंजना क्षीण हो जाती है। कई बार यह निर्णय करना अत्यंत कठिन हो जाता है कि कौन-सा अर्थ प्रधान है और कौन-सा गौण। अलंकारों- जैसे उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि का अनुवाद भी इसी श्रेणी की चुनौती है। अलंकार भाषा की शोभा बढ़ाते हैं और भावों को सघन बनाते हैं। किंतु सभी अलंकार हर भाषा में समान रूप से प्रभावी नहीं होते। इसलिए अनुवादक को कभी-कभी अलंकार को यथावत रखने,

कभी उसके समतुल्य अलंकार खोजने और कभी केवल भाव को सुरक्षित रखने का निर्णय लेना पड़ता है।

(ख) उदाहरण

हिंदी मूल

हरि बोलो, हरि में समाओ।

संभावित अंग्रेजी अनुवाद:

Chant the name of Hari and merge into the divine.

व्याख्या

यहाँ 'हरि' शब्द ईश्वर, हरियाली और चेतना- तीनों अर्थों को समेटे हुए है। अंग्रेजी अनुवाद में केवल 'divine' लिखने से बहुअर्थिता सीमित हो जाती है। इसलिए कई बार अनुवादक को व्याख्या या टिप्पणी का सहारा लेना पड़ता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1 भाषा की संरचना, अर्थ और सांस्कृतिक संदर्भ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2 भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की प्रमुख सीमाएँ कौन-कौन सी हैं?

प्रश्न 3 सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अनुवाद को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

(4) साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक की भूमिका

(क) सैद्धांतिक विवेचन- साहित्यिक अनुवाद की प्रक्रिया को केवल एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्दों के रूपांतरण के रूप में नहीं देखा जा सकता। वास्तव में साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक की भूमिका एक सह-सर्जक (co-creator) की होती है, क्योंकि उसे मूल लेखक की रचना दृष्टि, भाव लोक और संवेदनात्मक संरचना में प्रवेश कर उसी प्रभाव को लक्ष्य भाषा में पुन: निर्मित करना होता है। साहित्यकार जिस अनुभूति, कल्पना और सौंदर्यबोध के साथ अपनी रचना करता है, अनुवादक को भी उसी मानसिक और भावनात्मक स्तर पर पहुँचकर कार्य करना पड़ता है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद एक रचनात्मक प्रक्रिया मानी जाती है, न कि यांत्रिक या तकनीकी कार्य।

मूल साहित्यिक पाठ में शब्दों के पीछे भाव, बिंब, प्रतीक, सांस्कृतिक संकेत और ध्वन्यात्मक सौंदर्य छिपा होता है। यदि अनुवादक केवल शब्दार्थ को पकड़कर अनुवाद करता है, तो रचना का भावात्मक और कलात्मक पक्ष नष्ट हो जाता है। इसके विपरीत, जब अनुवादक मूल लेखक के भाव लोक को समझकर लक्ष्य भाषा में समान अनुभूति जगाने का प्रयास करता है, तब वह एक नई रचना का सृजन करता है, जो मूल से प्रेरित होती है, किंतु लक्ष्य भाषा में स्वतंत्र अस्तित्व भी रखती है। इस प्रक्रिया में अनुवादक की साहित्यिक संवेदना, भाषा बोध और सृजनात्मक क्षमता निर्णायक भूमिका निभाती है। सह-सर्जक के रूप में अनुवादक को यह तय करना पड़ता है कि कहाँ शब्द निष्ठा आवश्यक है और कहाँ भावानुकूल स्वतंत्रता। उसे मूल पाठ के प्रति निष्ठा और लक्ष्य भाषा की स्वाभाविकता के बीच संतुलन साधना होता है। अत्यधिक शाब्दिक अनुवाद पाठ को बोझिल बना देता है, जबकि अत्यधिक स्वतंत्रता मूल रचना से विचलन पैदा कर सकती है। इसलिए साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक की भूमिका एक संवेदनशील रचनाकार की होती है, जो दो भाषाओं और दो संस्कृतियों के बीच सेतु बनाकर साहित्यिक सौंदर्य और संवेदना का सफल संप्रेषण करता है।

(ख) उदाहरण

हिंदी मूल

उसकी खामोशी में भी एक पूरी कथा बसती थी।

अंग्रेजी अनुवाद:

Even her silence carried an entire story within it.

व्याख्या

यह अनुवाद शब्दों से अधिक भाव को स्थानांतरित करता है। यही साहित्यिक अनुवाद की सफलता का मापदंड है।

अनुवादक की साहित्यिक संवेदना और सृजनात्मक क्षमता ही साहित्यिक अनुवाद को सार्थक बनाती है।

मीडिया साहित्य के स्तर पर अनुवाद

मीडिया साहित्य में समाचार पत्र, टेलीविज़न समाचार, विज्ञापन, रेडियो, डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया से संबंधित सामग्री आती है। मीडिया अनुवाद का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि पाठक या दर्शक का ध्यान आकर्षित करना भी होता है। इसलिए इसमें भाषा को सरल, प्रभावशाली और संक्षिप्त रखा जाता है। मीडिया अनुवाद में सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि मूल भाषा का संदेश कम शब्दों में लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव के साथ प्रस्तुत किया जाए। समाचार शीर्षक और विज्ञापन वाक्य विशेष रूप से अनुवाद की कठिन परीक्षा होते हैं।

उदाहरण 1 (अंग्रेजी समाचार शीर्षक)

City breathes easy after heavy rainfall

हिंदी अनुवाद

भारी बारिश के बाद शहर को मिली राहत

व्याख्या

यहाँ breathes easy एक मुहावरेदार प्रयोग है। इसका शाब्दिक अनुवाद आसानी से साँस लेता है करने पर समाचार शैली नहीं बनती। इसलिए भावानुसार राहत मिलना प्रयोग किया गया है। यह मीडिया अनुवाद की विशेषता है कि भाव को प्राथमिकता दी जाती है, शब्दों को नहीं।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

साहित्यिक, वैज्ञानिक, मीडिया तथा कार्यालयी पाठों की भिन्न प्रकृति के कारण अनुवाद की सीमाएँ भी अलग-अलग रूपों में प्रकट होती हैं, जिससे अनुवादक को पाठ-प्रकृति के अनुसार रणनीति अपनानी पड़ती है।

8.8 वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के पाठ के स्तर पर अनुपाद

वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का अनुवाद आधुनिक ज्ञान-समाज की एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, अभियंत्रिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि विज्ञान तथा पर्यावरण अध्ययन जैसे क्षेत्रों में निरंतर नवीन शोध और आविष्कार हो रहे हैं। इन क्षेत्रों में उपलब्ध ज्ञान यदि केवल एक सीमित भाषा तक ही सीमित रह जाए, तो उसका सामाजिक और शैक्षिक लाभ व्यापक स्तर पर नहीं पहुँच पाता। इसलिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य इस विशिष्ट ज्ञान को विभिन्न भाषाओं के माध्यम से अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाना है, ताकि शिक्षा, अनुसंधान और व्यावहारिक उपयोग के नए अवसर सृजित हो सकें।

इस प्रकार के अनुवाद में सटीकता, तथ्यात्मकता और पारिभाषिक शुद्धता सर्वोपरि होती है। साहित्यिक अनुवाद की भाँति यहाँ भावात्मक लचीलापन या सृजनात्मक स्वतंत्रता की गुंजाइश बहुत कम होती है। वैज्ञानिक पाठों में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द, प्रतीक, सूत्र या संकल्पना का एक निश्चित और स्थिर अर्थ होता है। यदि अनुवाद में किसी भी स्तर पर अस्पष्टता या त्रुटि आ जाए, तो उसका सीधा प्रभाव ज्ञान की विद्रसनीयता और उपयोगिता पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा विज्ञान में किसी रोग, औषधि या उपचार विधि से संबंधित शब्द का गलत अनुवाद गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकता है। इसलिए वैज्ञानिक अनुवाद में अनुवादक का विषय ज्ञान और तकनीकी समझ अत्यंत आवश्यक मानी जाती है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है। कई बार लक्ष्य भाषा में किसी तकनीकी शब्द का प्रचलित समतुल्य उपलब्ध नहीं होता। ऐसी स्थिति में या तो शब्द को लिप्यंतरण के रूप में स्वीकार किया जाता है या फिर नए पारिभाषिक शब्द का निर्माण किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में एकरूपता और मानकीकरण आवश्यक होता है, ताकि पाठक भ्रमित न हों। इस संदर्भ में शब्दकोशों, मानक शब्दावलियों और विशेषज्ञ परामर्श की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

वैज्ञानिक भाषा वर्णनात्मक, वस्तुनिष्ठ और तर्कसंगत होती है। उदाहरण–

अंग्रेजी

"Photosynthesis is the process by which green plants convert sunlight into chemical energy."

हिंदी (अनुवाद)

प्रकाश संश्लेषण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हरे पौधे सूर्य के प्रकाश को रासायनिक ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं। यहाँ किसी भी प्रकार की भावात्मकता या शैलीगत अलंकरण नहीं है। प्रत्येक तकनीकी शब्द- Photosynthesis, chemical energy का मानक हिन्दी रूप प्रयोग किया गया है, जिससे अर्थ में कोई भ्रम न उत्पन्न हो।

तकनीकी अनुवाद में सूत्र, मापन इकाइयाँ और संक्षिप्त शब्द (Abbreviations) भी यथावत रखे जाते हैं–

अंग्रेजी

"The temperature was recorded at 37^0C."

हिंदी तापमान 37^0Cदर्ज किया गया।

यहाँ एष्ट को बदला नहीं गया, क्योंकि वैज्ञानिक लेखन में प्रतीकों की सार्वभौमिकता आवश्यक होती है। इस प्रकार वैज्ञानिक अनुवाद में भाषा से अधिक ज्ञान की शुद्ध प्रस्तुति महत्वपूर्ण होती है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4 स्थानीयपरक शब्दों और अभिव्यक्तियों का अनुवाद क्यों कठिन होता है?

प्रश्न 5 साहित्यिक पाठ और वैज्ञानिक/तकनीकी पाठ के अनुवाद में क्या मूलभूत अंतर है?

प्रश्न 6 मीडिया अथवा कार्यालयी पाठ के संदर्भ में विवेचना कीजिए।

8.9. अनुवाद का उद्देश्य

अनुवाद का मूल उद्देश्य विभिन्न भाषाओं के बीच संप्रेषण को प्रभावी और सहज बनाना है, ताकि एक भाषा में निहित विचार, ज्ञान और अनुभव दूसरी भाषा के पाठकों तक समान प्रभाव के साथ पहुँच सकें। यह केवल शब्दों के रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि भाव, संदर्भ और सांस्कृतिक संकेतों को यथासंभव यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की एक जटिल बौद्धिक क्रिया है। जब कोई रचना, दस्तावेज़ या विचार एक भाषा से दूसरी भाषा में स्थानांतरित होता है, तब उसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि पाठक मूल पाठ के आशय को उसी स्पष्टता और संवेदनशीलता के साथ ग्रहण कर सके, जैसा कि मूल भाषा का पाठक करता है। इस प्रकार अनुवाद भाषा-सीमाओं को पार कर मानव समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद की एक सशक्त कड़ी स्थापित करता है। इसके माध्यम से विचारों का प्रवाह निरंतर बना रहता है, जिससे समाज में बौद्धिक विकास और वैचारिक विस्तार संभव हो पाता है। अनुवाद की यह विशेषता उसे केवल एक तकनीकी प्रक्रिया से ऊपर उठाकर एक सामाजिक और मानवीय आवश्यकता बना देती है।

अनुवाद का एक प्रमुख उद्देश्य सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान और संरक्षण भी है, जिसके माध्यम से विभिन्न समाजों की जीवन-शैली, परंपराएँ, विश्वास और मूल्य एक-दूसरे के समक्ष उद्घाटित होते हैं। प्रत्येक भाषा अपने भीतर एक विशिष्ट सांस्कृतिक संसार को समेटे होती है, और जब उसका अनुवाद किया जाता है, तब वह संस्कृति भी साथ-साथ दूसरी भाषा में संप्रेषित होती है। साहित्य, लोककथाएँ, धार्मिक ग्रंथ और ऐतिहासिक विवरण इस प्रक्रिया के महत्वपूर्ण माध्यम बनते हैं, जिनके द्वारा एक समाज दूसरे समाज को समझने का अवसर प्राप्त करता है। इस प्रकार अनुवाद सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखते हुए उसे व्यापक स्तर पर प्रसारित करने का कार्य करता है। साथ ही, यह उन परंपराओं और धरोहरों को संरक्षित करने में भी सहायक होता है, जो समय के साथ लुप्त होने की संभावना रखती हैं। अनुवाद के माध्यम से वे सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ नई भाषाओं में पुनर्जीवित होती हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुलभ बनती हैं, जिससे वैदिक स्तर पर सांस्कृतिक समृद्धि और सहिष्णुता का वातावरण विकसित होता है।

शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में अनुवाद का उद्देश्य अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यापक है, क्योंकि यह ज्ञान को सीमित भाषाई दायरे से निकालकर अधिक लोगों तक पहुँचाने का कार्य करता है। आधुनिक समय में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, समाजशास्त्र और अन्य अनेक विषयों का विशाल ज्ञान भंडार विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध है, किंतु सभी लोग उन भाषाओं को नहीं जानते जिनमें यह ज्ञान मूल रूप से लिखा गया है। ऐसी स्थिति में अनुवाद ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा यह ज्ञान विभिन्न भाषाओं के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं तक पहुँचता है। इससे शिक्षा अधिक समावेशी और सुलभ बनती है, तथा समाज के विभिन्न वर्गों को समान रूप से ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्राप्त होता है। अनुवाद के माध्यम से पाठ्यपुस्तकों, शोध-पत्रों और तकनीकी दस्तावेजों का स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध होना शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को भी बढ़ाता है। इसके साथ ही, विभिन्न देशों और संस्कृतियों में हुए अनुसंधानों का आदान-प्रदान संभव होता है, जिससे नए विचारों और नवाचारों को प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार अनुवाद ज्ञान-विस्तार और शैक्षिक प्रगति का एक अनिवार्य उपकरण बन जाता है।

साहित्यिक सृजन और रचनात्मक अभिव्यक्ति के विस्तार में भी अनुवाद का उद्देश्य अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह एक भाषा के साहित्य को दूसरी भाषा के पाठकों तक पहुँचाने का कार्य करता है। जब किसी रचना का अनुवाद होता है, तो वह केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं होता, बल्कि उस रचना की संवेदनाएँ, सौंदर्यबोध और कलात्मकता भी नई भाषा में पुनः सृजित होती हैं। इससे पाठकों को विभिन्न भाषाओं के साहित्य से परिचित होने का अवसर मिलता है, और वे विविध साहित्यिक परंपराओं का अनुभव कर पाते हैं। अनुवाद के माध्यम से लेखकों को भी व्यापक पाठक वर्ग प्राप्त होता है, जिससे उनकी रचनाएँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल करती हैं। इसके अतिरिक्त, यह विभिन्न साहित्यिक शैलियों और विधाओं के बीच अंतःक्रिया को संभव बनाता है, जिससे नई रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास होता है। इस प्रकार अनुवाद साहित्य को सीमित भाषाई दायरे से निकालकर वैद्रिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित करता है और रचनात्मकता को नए आयाम प्रदान करता है।

सामाजिक, प्रशासनिक और वैद्रिक स्तर पर अनुवाद का उद्देश्य समावेशिता, समानता और सहयोग को बढ़ावा देना भी है, जो आधुनिक समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। विभिन्न देशों, समुदायों और संस्थाओं के बीच संवाद स्थापित करने के लिए अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, विशेषकर तब जब अलग-अलग भाषाएँ और संस्कृतियाँ परस्पर संपर्क में आती हैं। सरकारी नीतियों, कानूनों, न्यायिक निर्णयों और सार्वजनिक सूचनाओं को विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराना इस बात को सुनिश्चित करता है कि समाज के सभी वर्गों को समान रूप से जानकारी प्राप्त हो सके। इससे लोकतांत्रिक व्यवस्था मजबूत होती है और नागरिकों की भागीदारी बढ़ती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अनुवाद विभिन्न देशों के बीच समझ और सहयोग को सुदृढ़ करता है, जिससे शांति और विकास के मार्ग प्रशस्त होते हैं। इस प्रकार अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, न्याय और वैद्रिक एकता को स्थापित करने का एक प्रभावी साधन है, जो मानव समाज को एक साझा मंच पर जोड़ने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

28.10 सारांश

अनुवाद को सामान्यतः दो भाषाओं के बीच अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया माना जाता है, किंतु व्यवहार में यह अनेक भाषिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और पाठगत सीमाओं से घिरी एक जटिल प्रक्रिया है। प्रत्येक भाषा की अपनी संरचना, व्याकरण, अर्थ व्यवस्था और अभिव्यक्ति परंपरा होती है, जिन्हें पूर्ण रूप से दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना संभव नहीं होता। इसी कारण अनुवाद में अर्थ-हानि, अर्थ परिवर्तन और संरचनात्मक परिवर्तन अनिवार्य हो जाते हैं। भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और सामाजिक अनुभवों की वाहक होती है। इसलिए सांस्कृतिक संदर्भ, मुहावरे, लोकोक्तियाँ, सामाजिक संबोधन और भावात्मक शब्द अनुवाद में विशेष कठिनाई उत्पन्न करते हैं। भाषा की बहुअर्थकता, लिंग व्यवस्था, वाक्य विन्यास और ध्वन्यात्मक सौंदर्य भी अनुवाद की सीमाओं को स्पष्ट करते हैं। स्थानीयपरक शब्द, प्रशासनिक पद, लोककथात्मक प्रतीक और सांस्कृतिक संकेत लक्ष्य भाषा में पूर्ण समतुल्य न मिलने के कारण अनुवाद को या तो व्याख्यात्मक बनाते हैं या आंशिक रूप से अपूर्ण छोड़ देते हैं। पाठ की प्रकृति के अनुसार

अनुवाद की सीमाएँ भी भिन्न होती हैं। साहित्यिक पाठों में भाव, शैली और प्रतीकों का अनुवाद सबसे जटिल होता है, जबकि वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य में सटीकता, तथ्यात्मकता और पारिभाषिक शुद्धता सर्वोपरि होती है। इस प्रकार अनुवाद एक यांत्रिक नहीं, बल्कि विवेकशील, संतुलन आधारित और सृजनात्मक प्रक्रिया है।

K8.11 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : भाषा की संरचना, अर्थ और सांस्कृतिक संदर्भ के कारण अनुवाद को पूर्ण समानता की प्रक्रिया नहीं माना जा सकता। प्रत्येक भाषा की अपनी व्याकरणिक बनावट, अर्थ निर्माण की प्रणाली तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है, जो दूसरी भाषा से भिन्न होती है। इस कारण मूल भाषा के अर्थ और अभिव्यक्ति का वही रूप लक्ष्य भाषा में पूरी तरह सुरक्षित नहीं रह पाता। इस संदर्भ में ऊपर दिए गए सैद्धांतिक विवेचन को देखा जा सकता है।

प्रश्न 2 का उत्तर : भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की प्रमुख सीमाएँ उसकी संरचनात्मक भिन्नता, बहुअर्थकता, लिंग व्यवस्था, सामाजिक संबोधन तथा भावात्मक अभिव्यक्ति से संबंधित होती हैं। इन तत्वों के कारण स्रोत भाषा के अर्थ सूक्ष्म संकेत लक्ष्य भाषा में आंशिक रूप से परिवर्तित हो जाते हैं। इन सीमाओं की विस्तृत चर्चा इकाई के संबंधित खंड में की गई है।

प्रश्न 3 का उत्तर : सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अनुवाद को गहराई से प्रभावित करते हैं, क्योंकि भाषा समाज के मूल्यों, विद्वासों और परंपराओं से निर्मित होती है। लोकोक्तियाँ, मुहावरे और सांस्कृतिक प्रतीक किसी विशेष समाज से जुड़े होते हैं, जिनका प्रत्यक्ष समतुल्य दूसरी भाषा में प्राय: उपलब्ध नहीं होता। इस विषय को स्पष्ट करने के लिए ऊपर दिए गए सांस्कृतिक उदाहरण सहायक हैं।

प्रश्न 4 का उत्तर : स्थानीयपरक शब्दों और अभिव्यक्तियों का अनुवाद कठिन होता है, क्योंकि वे किसी विशिष्ट भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े होते हैं। लक्ष्य भाषा में उनके लिए समान अर्थ और प्रभाव उत्पन्न करने वाले शब्दों का अभाव रहता है। इस कारण अनुवाद या तो व्याख्यात्मक हो जाता है या आंशिक अर्थ-हानि का शिकार होता है, जैसा कि इकाई में स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न 5 का उत्तर : साहित्यिक पाठ और वैज्ञानिक/तकनीकी पाठ के अनुवाद में मूलभूत अंतर उनके उद्देश्य और भाषा प्रकृति के कारण होता है। साहित्यिक अनुवाद में भाव, शैली और सौंदर्य की रक्षा आवश्यक होती है, जबकि वैज्ञानिक/तकनीकी अनुवाद में सटीकता, पारिभाषिक शुद्धता और तथ्यात्मक स्पष्टता को प्राथमिकता दी जाती है। इस अंतर को समझने हेतु संबंधित अनुभाग का अवलोकन अपेक्षित है।

प्रश्न 6 का उत्तर : मीडिया तथा कार्यालयी पाठ के संदर्भ में अनुवाद का उद्देश्य त्वरित, स्पष्ट और प्रभावी संप्रेषण होता है। मीडिया अनुवाद में आकर्षण और प्रभाव महत्वपूर्ण होते हैं, जबकि कार्यालयी अनुवाद में स्पष्टता और एकार्थकता अनिवार्य होती है। इन दोनों प्रकार के पाठों में अनुवादक की भूमिका और सीमाएँ भिन्न होती हैं, जिनकी व्याख्या इकाई में विस्तार से दी गई है।

O8.12 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- तिवारी, भोलानाथ. (2004). अनुवाद-विज्ञान : सिद्धांत और प्रयोग. इलाहाबाद: किताब महल।
- वर्मा, धीरेन्द्र. (1998). भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- सिंह, रामकुमार. (2010). भारतीय भाषाएँ : संरचना और संपर्क. नई दिल्ली: साहित्य भवन।
- मिश्र, कैलाशचंद्र. (2006). हिंदी भाषा की लिपि और ध्वनि-व्यवस्था. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
- त्रिपाठी, रामदेव. (2012). अनुवाद और भाषा-संरचना. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- शुक्ल, सत्यदेव. (2009). भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
- अग्रवाल, सुधीर. (2015). लिप्यंतरण : सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- पाण्डेय, शिवकुमार. (2011). देवनागरी लिपि : विकास और प्रयोग. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।

- सिंह, चंद्रभानु. (2014). अनुवाद, लिप्यंतरण और भाषा-संपर्क. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- दुबे, महेंद्रनाथ. (2008). भारतीय भाषाओं में अनुवाद की परंपरा. वाराणसी: विद्या विहार।

M8.13 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ और स्वरूप के स्तर पर कौन-सी सीमाएँ उत्पन्न होती हैं?
2. भाषा की संरचनात्मक भिन्नताएँ अनुवाद को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?
3. बहुअर्थक शब्द अनुवाद में किस प्रकार समस्या उत्पन्न करते हैं?
4. सामाजिक संबोधन की भिन्नता अनुवाद को क्यों जटिल बनाती है?
5. स्थानीयपरक शब्दों के अनुवाद में मुख्य कठिनाई क्या होती है?
6. वैज्ञानिक अनुवाद में शुद्धता को क्यों सर्वोपरि माना जाता है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद की सीमाओं का विवेचन प्रस्तुत कीजिए।
2. सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ अनुवाद की प्रक्रिया को किस प्रकार सीमित करते हैं, इसका विश्लेषण कीजिए।
3. लोककथाओं और मुहावरों के अनुवाद में आने वाली समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
4. स्थानीयपरक अभिव्यक्तियों के अनुवाद की सीमाओं को उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
5. साहित्यिक पाठ के अनुवाद में भाव, शैली और प्रतीक की भूमिका का विवेचन प्रस्तुत कीजिए।
6. वैज्ञानिक, तकनीकी तथा मीडिया पाठों के अनुवाद की विशेषताओं और सीमाओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 9 विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 अनुबाद के विविध श्रेत्र

9.3.1 सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

9.3.2 राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद

9.3.3 संस्कृति एवं धर्म के संदर्भ में अनुवाद

9.3.4 व्यापार-व्यवसाय, सौहार्दपूर्ण संबंधों तथा खेल-कूद के संदर्भ में अनुवाद

9.4 सारांश

9.5 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

9.6 अधिक जानने के लिए पढ़ें

9.7 अभ्यास प्रश्न

9.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- अनुवाद के प्रमुख प्रकारों— शाब्दिक, भावानुवाद, छायानुवाद, रूपांतरण आदि— की संकल्पना और स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त होगा।
- पाश्चात्य तथा भारतीय अनुवाद सिद्धांतकारों द्वारा प्रस्तुत वर्गीकरणों की तुलनात्मक समझ विकसित होगी।
- विभिन्न संदर्भों और प्रयोजनों के अनुसार उपयुक्त अनुवाद-प्रकार के चयन की क्षमता विकसित होगी।
- सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत काव्यानुवाद, कथा-अनुवाद और नाट्यानुवाद से जुड़ी व्यावहारिक चुनौतियों की पहचान कर पाएँगे।
- प्रशासनिक, विधि, मीडिया, शिक्षा और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में अनुवाद की भूमिका का सम्यक विश्लेषण कर सकेंगे।

9.2 प्रस्तावना

अनुवाद मानव सभ्यता की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य प्रक्रिया है, जिसने विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और ज्ञान-परंपराओं के बीच सेतु का कार्य किया है। बहुभाषिक विश्व में प्रत्येक व्यक्ति सभी भाषाओं का ज्ञान नहीं रख सकता, ऐसे में अनुवाद वह माध्यम बनता है जिसके द्वारा एक भाषा में निहित विचार, अनुभव और ज्ञान दूसरी भाषा के लोगों तक सहजता से पहुँचते हैं। इस प्रकार अनुवाद न केवल संप्रेषण को सरल बनाता है, बल्कि विभिन्न समाजों के बीच पारस्परिक समझ, सहयोग और एकता को भी सुदृढ़ करता है। आधुनिक वैश्वीकरण के युग में अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि आज ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, साहित्य और सूचना का तीव्र गति से विस्तार हो रहा है। इन सभी क्षेत्रों में अनुवाद एक आवश्यक उपकरण के रूप में कार्य करता है, जो विभिन्न भाषाई समुदायों को समान रूप से इन संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है। विशेष रूप से बहुभाषी देशों में, अनुवाद शिक्षा, प्रशासन और सामाजिक विकास के लिए अनिवार्य बन जाता है। प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के विविध क्षेत्रों—विशेषत: सृजनात्मक साहित्य, राजनैतिक संदर्भ, संस्कृति एवं धर्म तथा व्यापार-व्यवसाय एवं खेल-कूद—का विस्तार से अध्ययन किया गया है। इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि अनुवाद किस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है और समाज के समग्र विकास में योगदान देता है। यह इकाई अनुवाद को केवल भाषिक

प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि एक बहुआयामी और सृजनात्मक क्रिया के रूप में स्थापित करती है, जो आधुनिक विश्व में संवाद, सहयोग और सांस्कृतिक समन्वय का आधार है।

9.3 अनुवाद के विविध क्षेत्र

9.3.1 सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद

सृजनात्मक साहित्य वह क्षेत्र है जिसमें भाषा केवल सूचना का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह अनुभूति, संवेदना, कल्पना और सौंदर्य-बोध की वाहक बन जाती है। इसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, गीत, लोककथाएँ तथा मुहावरे-लोकोक्तियाँ सम्मिलित होती हैं। इस प्रकार के साहित्य का अनुवाद अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण माना जाता है, क्योंकि यहाँ अनुवाद का लक्ष्य केवल अर्थांतरण नहीं, बल्कि भावांतरण होता है। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में अनुवादक को लेखक की कल्पनाशीलता, भाव-प्रवणता, सांस्कृतिक संदर्भ और भाषिक सौंदर्य को लक्ष्य भाषा में नए रूप में जीवित करना होता है। नीचे इसके प्रमुख रूपों की विस्तार से चर्चा की जा रही है।

(क) काव्यानुवाद (Poetry Translation)

कविता का अनुवाद सृजनात्मक साहित्य में सबसे कठिन कार्य माना जाता है। कविता केवल शब्दों का समूह नहीं होता, बल्कि उसमें लय, छंद, प्रतीक, बिंब, भाव और सांस्कृतिक संकेत निहित होते हैं। जब कविता का अनुवाद किया जाता है, तो शब्दों के साथ-साथ इन सभी तत्वों को भी लक्ष्य भाषा में समायोजित करना पड़ता है। कई बार मूल कविता का शाब्दिक अनुवाद भाव को नष्ट कर देता है, इसलिए काव्यानुवाद में अनुवादक को रचनात्मक स्वतंत्रता लेनी पड़ती है। इस प्रक्रिया में अनुवादक लगभग सह-रचनाकार की भूमिका निभाता है। काव्यानुवाद में सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि स्रोत भाषा की काव्यात्मक लय और सौंदर्य लक्ष्य भाषा में किस सीमा तक सुरक्षित रखा जा सकता है। कई बार छंद का त्याग कर भाव को बचाना पड़ता है, तो कभी भाव की रक्षा हेतु शब्द-संरचना को परिवर्तित करना आवश्यक हो जाता है। श्रेष्ठ काव्यानुवाद वही माना जाता है जिसमें पाठक को यह अनुभूति हो कि कविता मूलत: उसी भाषा में रची गई हो।

काव्यानुवाद के क्षेत्र में हिंदी साहित्य में अनेक ऐसे विद्वान और रचनाकार हुए हैं जिन्होंने अन्य भाषाओं की कविताओं का भावानुकूल और सृजनात्मक अनुवाद किया है। इन अनुवादों में मूल कविता के भाव, बिंब और संवेदना को हिंदी में नए काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। हिंदी काव्यानुवाद की परंपरा न केवल भारतीय भाषाओं से, बल्कि अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषाओं से भी समृद्ध हुई है।

हिंदी में काव्यानुवाद के क्षेत्र में हरिवंश राय बच्चन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने अंग्रेजी कवि °ÇßÇÙÈ¤ÚÅÈÅÁÚÚßÈÇ mÁßÈV ÙÇÎ È¤ÁßÈè·¤ßß ©×ÚÙ ÄZÈæ·¤è Rubaiyat का हिंदी रूपांतरण 'उमर ख़य्याम की रुबाइयाँ' शीर्षक से किया। यह अनुवाद शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद है, जिसमें जीवन-दर्शन, नश्वरता और आनंद-बोध को हिंदी काव्य-परंपरा के अनुरूप ढाला गया है।

निराला (सूर्यकांत त्रिपाठी निराला) ने संस्कृत और बंगला काव्य परंपरा से प्रेरित होकर अनेक काव्यांशों का सृजनात्मक अनुवाद किया। उनका अनुवाद कर्म यह दर्शाता है कि काव्यानुवाद में कवि का होना एक अतिरिक्त योग्यता बन जाता है। अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) ने अंग्रेजी और यूरोपीय आधुनिक कविता के अनेक उदाहरणों का हिंदी में अनुवाद किया। उनकी कृति 'अरी ओ करुणा प्रभामय' में अनूदित कविताएँ यह प्रमाणित करती हैं कि आधुनिक बिंब और प्रतीक हिंदी में भी उसी प्रभाव के साथ व्यक्त किए जा सकते हैं। विदेशी काव्य के हिंदी अनुवाद में रघुवीर सहाय द्वारा रूसी कवियों- विशेषत: मायाकोव्स्की की कविताओं के अनुवाद अत्यंत चर्चित हैं। इन अनुवादों में क्रांतिकारी चेतना और सामाजिक विद्रोह की भावना को हिंदी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। केदारनाथ सिंह और मुक्तिबोध ने भी विश्व कविता से चयनित कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया। मुक्तिबोध के अनुवादों में दार्शनिक गहराई और वैचारिक जटिलता का सफल संप्रेषण दिखाई देता है। भारतीय भाषाओं के संदर्भ में रवींद्रनाथ ठाकुर की बंगला कविताओं का हिंदी में काव्यानुवाद अत्यंत व्यापक है। उनकी कृति गीतांजलि का हिंदी अनुवाद अनेक

कवियों द्वारा किया गया, जिनमें महादेवी वर्मा का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन अनुवादों में अध्यात्म, मानवता और करुणा की भावना को हिंदी में सहज रूप में अभिव्यक्त किया गया है।

उदाहरण (अंग्रेजी → हिंदी)

The woods are lovely, dark and deep

● वन रमणीय हैं, घने और गहन

Hope is the thing with feathers

● आशा वह पंछी है, जिसके पंख होते हैं

My heart leaps up when I behold

● मेरा हृदय उल्लास से भर उठता है

Time holds me green and dying

● समय मुझे हरा-भरा भी रखता है और मुरझाता भी

I wandered lonely as a cloud

● मैं बादल-सा एकाकी भटकता रहा

The child is father of the man

● बालक ही मनुष्य का निर्माता होता है

इन उदाहरणों में शब्द नहीं, बल्कि भाव, बिंब और अनुभूति का रूपांतरण प्रमुख है।

(ख) कथा साहित्य का अनुवाद

कथा साहित्य, जिसमें कहानी और उपन्यास सम्मिलित हैं- का अनुवाद अत्यंत जटिल कार्य है। इसमें केवल कथानक ही नहीं, बल्कि पात्र-निर्माण, संवाद, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और लेखक की दृष्टि भी अंतर्निहित होती है। अनुवादक को यह ध्यान रखना होता है कि कथा का प्रवाह, पात्रों की स्वाभाविकता और वातावरण की विश्वसनीयता लक्ष्य भाषा में बनी रहे। स्रोत भाषा में प्रयुक्त सामाजिक संकेत, सांस्कृतिक प्रतीक या लोकाचार कई बार लक्ष्य भाषा में सीधे उपलब्ध नहीं होते। ऐसी स्थिति में अनुवादक को भाव-साम्य के आधार पर समतुल्य अभिव्यक्तियों का प्रयोग करना पड़ता है। यही कारण है कि कथा साहित्य का अनुवाद केवल भाषिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूपांतरण की प्रक्रिया भी है।

कथा साहित्य का अनुवाद सृजनात्मक अनुवाद का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल क्षेत्र है। कथा साहित्य में केवल घटनाओं का क्रम ही नहीं होता, बल्कि उसमें पात्रों का मनोविज्ञान, सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक संदर्भ, भाषिक बनावट और लेखक की वैचारिक दृष्टि समाहित रहती है। कहानी और उपन्यास के अनुवाद में अनुवादक को केवल भाषा का रूपांतरण नहीं करना होता, बल्कि मूल रचना के संपूर्ण वातावरण और भावभूमि को लक्ष्य भाषा में पुनः स्थापित करना पड़ता है। इसी कारण कथा साहित्य का अनुवाद भावानुवाद, सांस्कृतिक रूपांतरण और सृजनात्मक विवेक की माँग करता है।

हिंदी साहित्य में कथा अनुवाद की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। प्रेमचंद की अनेक कहानियों और उपन्यासों का अंग्रेजी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनकी कृतियाँ 'गोदान', 'निर्मला', 'कफन' और 'पूस की रात' अंग्रेजी में Godaan, Nirmala और The Shroud जैसे शीर्षकों से अनूदित हुई है। इन अनुवादों में भारतीय ग्रामीण जीवन, सामाजिक विषमता और मानवीय संवेदना को वैश्विक पाठकों तक पहुँचाया गया। अंग्रेजी से हिंदी कथा-अनुवाद के क्षेत्र में राधाकृष्ण प्रकाशन और नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अनुवादों का विशेष योगदान रहा है। लियो टॉलस्टॉय की कहानियाँ और उपन्यास- War and Peace, Anna Karenina का हिंदी अनुवाद 'युद्ध और शांति' तथा 'अन्ना कैरेनिना' के रूप में हुआ, जिसमें अनुवादकों में कमलेश्वर और अन्य विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इन अनुवादों ने रूसी समाज, नैतिक द्वंद्व और मानवीय संघर्ष को हिंदी पाठकों के लिए सुलभ बनाया। रवींद्रनाथ

ठाकुर की बांग्ला कहानियों और उपन्यासों का हिंदी अनुवाद कथा-अनुवाद की उत्कृष्ट परंपरा का उदाहरण है। उनकी कहानियाँ जैसे 'काबुलीवाला', 'पोस्टमास्टर' और उपन्यास 'गोरा' का हिंदी अनुवाद विभिन्न अनुवादकों द्वारा किया गया, जिसमें मानवीय करुणा और सांस्कृतिक आत्मीयता को सुरक्षित रखा गया। आधुनिक कथा साहित्य में अलबर्ट कामू के उपन्यास The Stranger का हिंदी अनुवाद 'अजनबी', तथा जॉर्ज ऑरवेल के उपन्यास Animal Farm का हिंदी रूपांतरण 'पशु-फार्म' विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन अनुवादों में राजनीतिक व्यंग्य और दार्शनिक अर्थवत्ता को हिंदी में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भारतीय भाषाओं के बीच कथा-अनुवाद के क्षेत्र में उड़िया, मराठी, तमिल और मलयालम साहित्य से हिंदी में हुए अनुवाद भी महत्वपूर्ण हैं। उड़िया लेखक फणीद्रनाथ रेणु की कथात्मक शैली से प्रेरित होकर कई क्षेत्रीय कथाओं का हिंदी अनुवाद हुआ, जिससे बहुभाषिक भारतीय जीवन का समग्र चित्र उभरता है।

उदाहरण (अंग्रेजी → हिंदी)

He felt like a fish out of water → वह स्वयं को बिल्कुल असहज महसूस कर रहा था

She broke down in tears → वह फूट-फूटकर रो पड़ी

Life had taught him hard lessons → जीवन ने उसे कड़े सबक सिखा दिए थे

The city never slept → वह शहर कभी सोता नहीं था

He carried the burden of memories → वह स्मृतियों का बोझ ढो रहा था

Her silence spoke volumes → उसकी चुप्पी बहुत कुछ कह गई

9.3.2 राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद

वैद्रिक राजनीति के वर्तमान परिदृश्य में विभिन्न देशों, भाषाओं और विचारधाराओं के बीच संवाद स्थापित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है, और इस संदर्भ में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। राजनैतिक गतिविधियाँ केवल एक देश तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों, कूटनीतिक वार्ताओं और वैश्विक संगठनों के माध्यम से व्यापक स्तर पर संचालित होती हैं। ऐसे में भाषा एक बड़ी बाधा बन सकती है, जिसे अनुवाद के माध्यम से दूर किया जाता है। अनुवाद के द्वारा विभिन्न देशों के नेता, राजनयिक और प्रतिनिधि एक-दूसरे के विचारों, नीतियों और दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से समझ पाते हैं, जिससे संवाद प्रभावी और सार्थक बनता है। राजनैतिक क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनेक स्तरों पर होता है—अंतर्राष्ट्रीय समझौतों, संधियों, भाषणों, सरकारी दस्तावेजों, नीतिगत घोषणाओं और समाचार माध्यमों में। यदि इन सभी सामग्रियों का अनुवाद न किया जाए, तो विभिन्न भाषाई समुदायों के लिए इनका अर्थ समझना कठिन हो सकता है। अनुवाद के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि किसी भी राजनैतिक संदेश का सही और सटीक अर्थ सभी तक पहुँचे, जिससे भ्रम और गलतफहमी की संभावना कम हो। विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में अनुवाद और व्याख्या की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, जहाँ विभिन्न भाषाओं में संवाद किया जाता है। राजनैतिक अनुवाद में संवेदनशीलता और सटीकता का विशेष महत्व होता है, क्योंकि एक छोटे से शब्द या वाक्य की गलत व्याख्या भी बड़े विवाद का कारण बन सकती है। चुनाव प्रचार, जनसभाएँ, और अंतर्राष्ट्रीय संवाद में अनुवादक की भूमिका अत्यंत जिम्मेदारीपूर्ण होती है। इस प्रकार राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद केवल भाषा का रूपांतरण नहीं, बल्कि वैश्विक समझ, कूटनीति और शांति स्थापना का एक महत्वपूर्ण साधन है।

उदाहरण

Democracy → लोकतंत्र

Human Rights → मानवाधिकार

Peace Agreement → शांति समझौता

Foreign Policy → विदेश नीति

Election Commission ? निर्वाचन आयोग

9.3.3 संस्कृति एवं धर्म के संदर्भ में अनुवाद

संस्कृति और धर्म मानव जीवन के अत्यंत गहरे और संवेदनशील पहलू हैं, और इनके प्रसार तथा संरक्षण में अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक परंपराएँ, धार्मिक मान्यताएँ और जीवन-दृष्टि होती है, जो उसकी भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होती हैं। जब इन सांस्कृतिक और धार्मिक ग्रंथों, कथाओं या विचारों का अनुवाद किया जाता है, तो वे अन्य भाषाओं के लोगों तक पहुँचते हैं और उन्हें उस संस्कृति को समझने का अवसर मिलता है। इस प्रकार अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के बीच संवाद स्थापित करने का कार्य करता है। संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में अनुवाद का प्रयोग अनेक रूपों में होता है—धार्मिक ग्रंथों, साहित्यिक कृतियों, लोककथाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, प्रवचनों और धार्मिक शिक्षाओं में। यदि ये सामग्री केवल मूल भाषा में ही सीमित रह जाए, तो अन्य भाषाओं के लोग उससे वंचित रह सकते हैं। अनुवाद के माध्यम से इन्हें व्यापक स्तर पर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे विभिन्न समाजों के लोग एक-दूसरे की आस्थाओं और परंपराओं को समझ पाते हैं। इस प्रकार के अनुवाद में भावनात्मक और सांस्कृतिक संवेदनशीलता अत्यंत आवश्यक होती है, क्योंकि किसी भी धार्मिक या सांस्कृतिक तत्व की गलत व्याख्या लोगों की भावनाओं को आहत कर सकती है। इसलिए अनुवादक को मूल पाठ के भाव, संदर्भ और परंपराओं का गहन ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार संस्कृति एवं धर्म के संदर्भ में अनुवाद केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि आपसी सम्मान, सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

उदाहरण

Holy Book → पवित्र ग्रंथ

Religious Ritual → धार्मिक अनुष्ठान

Spiritual Discourse → आध्यात्मिक प्रवचन

Temple → मंदिर

Pilgrimage → तीर्थयात्रा

9.3.4 व्यापार-व्यवसाय, सौहार्दपूर्ण संबंधों तथा खेल-कूद के संदर्भ में अनुवाद

आधुनिक वैद्रीकरण के युग में व्यापार-व्यवसाय, सामाजिक संबंधों और खेल-कूद के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका अत्यंत व्यापक और आवश्यक हो गई है। विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक गतिविधियाँ निरंतर बढ़ रही हैं, जिनमें भाषा एक महत्वपूर्ण बाधा बन सकती है। अनुवाद के माध्यम से व्यापारिक समझौते, अनुबंध, विपणन सामग्री, उत्पाद विवरण और ग्राहक सेवाएँ विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती हैं, जिससे व्यापार सुचारु रूप से संचालित हो सके। यह न केवल व्यापारिक विस्तार को बढ़ावा देता है, बल्कि विभिन्न देशों के बीच आर्थिक संबंधों को भी सुदृढ़ करता है। सामाजिक स्तर पर अनुवाद लोगों के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने में सहायक होता है। जब विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के लोग एक-दूसरे से संवाद करते हैं, तो अनुवाद उनके बीच समझ और विश्वास का पुल बनाता है। यह प्रवासी समुदायों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और बहुसांस्कृतिक समाजों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है, जहाँ भाषा की विविधता अधिक होती है। खेल-कूद के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्व अत्यंत बढ़ गया है, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में विभिन्न देशों के खिलाड़ी, कोच और दर्शक शामिल होते हैं। खेलों से संबंधित नियम, टिप्पणियाँ, समाचार, और प्रसारण विभिन्न भाषाओं में प्रस्तुत किए जाते हैं, जिससे सभी लोग उन्हें समझ सकें। ओलंपिक जैसे वैश्विक आयोजनों में अनुवाद के बिना प्रभावी संचार संभव नहीं है। इस प्रकार व्यापार, सामाजिक संबंधों और खेल-कूद के संदर्भ में अनुवाद केवल सुविधा का साधन नहीं, बल्कि सहयोग, एकता और वैश्विक सहभागिता को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम है।

उदाहरण

Business Agreement → व्यापारिक समझौता

Customer Service → ग्राहक सेवा

International Trade → अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

Sports event → खेल आयोजन

Live Commentary → सीधा प्रसारण टिप्पणी

tमहत्वपूर्ण बिंदु

अनुवाद के विविध क्षेत्रों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक व्यापक, सृजनात्मक और सांस्कृतिक गतिविधि है, जो विभिन्न ज्ञान-परंपराओं, समाजों और विचारधाराओं के बीच संवाद स्थापित करती है। सृजनात्मक साहित्य के संदर्भ में अनुवाद भाव, बिंब, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों के समुचित पुनर्सृजन पर आधारित होता है, जहाँ अनुवादक सह-रचनाकार की भूमिका निभाता है और मूल रचना की संवेदनात्मक एवं कलात्मकता को लक्ष्य भाषा में जीवित करता है।

अनुवाद के विविध क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता बहुआयामी रूप में सामने आती है, जिसमें राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यापारिक और खेल-कूद के क्षेत्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद वैश्विक संवाद, कूटनीति और नीतिगत समझ को सुदृढ़ करता है, जबकि संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में यह विभिन्न समाजों के बीच आपसी समझ, सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देता है। व्यापार-व्यवसाय और सामाजिक संबंधों में अनुवाद सहयोग, विश्वास और आर्थिक विकास का माध्यम बनता है, वहीं खेल-कूद के क्षेत्र में यह अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता और संप्रेषण को संभव बनाता है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में भावांतरण को क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है?

प्रश्न 2. काव्यानुवाद को अन्य प्रकार के अनुवादों की तुलना में अधिक जटिल क्यों माना जाता है?

प्रश्न 3. कथा साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों और पात्र-निर्माण की क्या भूमिका होती है?

29.4 सारांश

प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के विविध आयामों और क्षेत्रों का व्यापक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद केवल भाषाई रूपांतरण की प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक सृजनात्मक, सांस्कृतिक और कार्यात्मक क्रिया है। सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत काव्यानुवाद और कथा-अनुवाद की विशेषताओं को विस्तार से समझाया गया है, जहाँ अनुवादक को मूल रचना के भाव, बिंब, शैली और सांस्कृतिक संदर्भों को लक्ष्य भाषा में पुनर्सृजित करना होता है। विशेष रूप से काव्यानुवाद में लय और संवेदना की पुनर्सृष्टि तथा कथा-अनुवाद में पात्रों, परिवेश और कथानक की विश्वसनीयता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

इकाई में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि अनुवाद का महत्व साहित्यिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, व्यापारिक और खेल-कूद जैसे विविध क्षेत्रों में समान रूप से प्रभावी है। राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद वैश्विक संवाद और कूटनीति को सुदृढ़ करता है, जबकि संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में यह विभिन्न समुदायों के बीच समझ, सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देता है। व्यापार-व्यवसाय और सामाजिक संबंधों में अनुवाद आर्थिक विकास और पारस्परिक विश्वास का आधार बनता है, वहीं खेल-कूद के क्षेत्र में यह अंतरराष्ट्रीय सहभागिता और संप्रेषण को संभव बनाता है।

K9.5 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में भावांतरण को इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसमें केवल शब्दों का नहीं, बल्कि भाव, अनुभूति, बिंब और संवेदनाओं का संप्रेषण आवश्यक होता है। यदि केवल शाब्दिक अनुवाद किया जाए तो मूल रचना का प्रभाव नष्ट हो सकता है। विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु पूर्ववर्ती खंड का अवलोकन करें।

प्रश्न 2 का उत्तर : काव्यानुवाद को अन्य प्रकार के अनुवादों की तुलना में अधिक जटिल इसलिए माना जाता है क्योंकि

कविता में लय, छंद, प्रतीक, बिंब और भाव का विशेष महत्व होता है। इन सभी तत्वों को लक्ष्य भाषा में समुचित रूप से प्रस्तुत करना कठिन होता है, इसलिए अनुवादक को रचनात्मक स्वतंत्रता लेनी पड़ती है। इस संदर्भ की अधिक स्पष्टता के लिए ऊपर प्रस्तुत सामग्री पर ध्यान दें।

प्रश्न 3 का उत्तर : कथा साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भों और पात्र-निर्माण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि कथा केवल घटनाओं का क्रम नहीं होती, बल्कि उसमें सामाजिक परिवेश, मान्यताएँ और पात्रों का मनोविज्ञान भी निहित होता है। अनुवादक को इन सभी तत्वों को लक्ष्य भाषा में प्रभावी रूप से प्रस्तुत करना होता है, ताकि मूल रचना की विद्रसनीयता बनी रहे। विषय से संबंधित विस्तृत जानकारी हेतु पूर्ववर्ती खंड का अवलोकन करें।

9.6 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- Nida, Eugene A. (1964). Toward a science of translating: With special reference to principles and procedures involved in Bible translating. Leiden: E. J. Brill.
- Newmark, Peter. (1981). Approaches to translation. Oxford: Pergamon Press.
- Catford, J. C. (1965). A linguistic theory of translation. London: Oxford University Press.
- Jakobson, Roman. (1959). Linguistic aspects of translation. In R. A. Brower (ed.), On translation (pp. 232-239). Cambridge, MA: Harvard University Press.
- Bassnett, Susan. (2002). Translation studies (Revised ed.). London: Routledge.
- Venuti, Lawrence. (1998). The scandals of translation: Towards an ethics of difference. London: Routledge.
- तिवारी, भोलानाथ. (2004). अनुवाद विज्ञान सिद्धांत और प्रयोग. इलाहाबाद: किताब महल।
- नगेन्द्र. (2006). अनुवाद और सृजन. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी. (2012). अनुवाद अध्ययन: स्वरूप और क्षेत्र. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- सेठी, हरीश कुमार. (2015). तकनीकी, प्रशासनिक एवं मीडिया अनुवाद. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।

M9.7 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत कौन-कौन सी प्रमुख विधाएँ सम्मिलित होती हैं?
2. काव्यानुवाद में किन-किन तत्वों को लक्ष्य भाषा में बनाए रखना आवश्यक होता है?
3. कथा साहित्य के अनुवाद को जटिल क्यों माना जाता है?
4. राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद किन-किन स्तरों पर प्रयुक्त होता है?
5. संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में अनुवाद की क्या भूमिका होती है?
6. व्यापार-व्यवसाय में अनुवाद किस प्रकार सहायक सिद्ध होता है?
7. खेल-कूद के क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत काव्यानुवाद की प्रकृति, विशेषताएँ एवं प्रमुख चुनौतियों का विवेचन कीजिए।
2. कथा साहित्य के अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ, पात्र-निर्माण और सामाजिक परिवेश की भूमिका को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
3. सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में भावांतरण और रचनात्मक स्वतंत्रता के महत्व का विश्लेषण कीजिए।
4. राजनैतिक संदर्भों में अनुवाद की भूमिका, आवश्यकता और संवेदनशीलता पर प्रकाश डालिए।

5. संस्कृति एवं धर्म के क्षेत्र में अनुवाद की उपयोगिता तथा उसकी संवेदनशील प्रकृति का विवेचन कीजिए।
6. व्यापार-व्यवसाय, सामाजिक संबंधों और खेल-कूद के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका एवं व्यावहारिक महत्व का विश्लेषण कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 10 अनुवाद के सन्दर्भ में पाश्चात्य सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

10.1 उद्देश्य
10.2 प्रस्तावना
10.3 पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की परंपरा (1950-वर्तमान तक)
10.4 पाश्चात्य अनुवाद चिंतक: दृष्टि एवं अनुवाद संबंधी दृष्टिको
    10.4.1 यूजीन नाइडा
    10.4.2 जे. सी. कैटफर्ड
    10.4.3 पीटर न्यूमार्क
    10.4.4 गिडियन टौरी
10.5 पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की अवधारणा,प्रासंगिकता एवं उपयोगिकता
    10.5.1 यूजीन नाइडा
    10.5.2 जे. सी. कैटफर्ड
    10.5.3 पीटर न्यूमार्क
    10.5.4 गिडियन टौरी
10.6 अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद चिंतकों की अवधारणाओं के संदर्भ में
    10.6.1 यूजीन नाइडा
    10.6.2 जे. सी. कैटफर्ड
    10.6.3 पीटर न्यूमार्क
    10.6.4 गिडियन टौरी
10.7 सारांश
10.8 प्रगति विवरण
10.9 अधिक जानने के लिए पढ़ें
10.10 अभ्यास प्रश्न

10.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- पाश्चात्य अनुवाद-चिंतनधारा के ऐतिहासिक विकास और उसके प्रमुख चरणों का सम्यक बोध प्राप्त करेंगे।
- बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से वर्तमान काल तक विकसित पाश्चात्य अनुवाद सिद्धांतों की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियों को पहचानने में सक्षम होंगे।
- यूजीन नाइडा, जे. सी. कैटफर्ड, पीटर न्यूमार्क और गिडियन टौरी जैसे प्रमुख पाश्चात्य अनुवाद-चिंतकों की अनुवाद-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर पाएँगे।
- पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में समतुल्यता, संप्रेषण, संरचनात्मक विश्लेषण और व्यवहारिकता जैसी अवधारणाओं की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का विवेचन कर सकेंगे।
- अनुवाद को केवल भाषिक प्रक्रिया न मानकर उसे सामाजिक, सांस्कृतिक और संप्रेषणात्मक परिप्रेक्ष्य में समझने की क्षमता विकसित करेंगे।

- विभिन्न पाश्चात्य अनुवादसिद्धांतों के आलोक में अनुवाद के स्वरूप, उद्देश्य और सीमाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में समर्थ होंगे।

10.2 प्रस्तावना

पाश्चात्य अनुवाद-चिंतनधारा का विकास आधुनिक भाषाविज्ञान, संरचनावाद, संप्रेषण सिद्धांत तथा सांस्कृतिक अध्ययन की पृष्ठभूमि में हुआ है। बीसवीं शताब्दी के मध्य से अनुवाद को केवल शब्दों के स्थानांतरण की प्रक्रिया न मानकर एक सुव्यवस्थित सैद्धांतिक अनुशासन के रूप में देखा जाने लगा। इस काल में अनुवाद अध्ययन ने भाषिक संरचना, अर्थ-संतुलन, पाठक-प्रतिक्रिया और सांस्कृतिक संदर्भ जैसे आयामों को अपने अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया। परिणामस्वरूप पाश्चात्य चिंतकों ने अनुवाद की ऐसी अवधारणाएँ विकसित कीं, जिनमें व्यवहारिकता और संप्रेषणीयता को विशेष महत्व दिया गया।

यूजीन नाइडा ने अनुवाद को प्रभाव और अर्थ की समानता से जोड़ा, जिससे अनुवाद पाठक केंद्रित दृष्टि से समझा जाने लगा। जे. सी. कैटफर्ड ने अनुवाद को भाषिक प्रतिस्थापन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित कर संरचनात्मक विश्लेषण पर बल दिया। पीटर न्यूमार्क ने अर्थ और रूप के संतुलन को अनुवाद की केन्द्रीय समस्या माना, जबकि गिडियन टौरी ने अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में स्थापित किया।

10.3 पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की परंपरा- 1950-वर्तमान तक

पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन की परंपरा का आधुनिक चरण बीसवीं शताब्दी के मध्य से विशेष रूप से विकसित हुआ। यद्यपि अनुवाद की परंपरा पश्चिम में प्राचीन यूनानी और रोमन काल से विद्यमान रही है, किंतु एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में अनुवादअध्ययन का व्यवस्थित विकास 1950 के बाद ही संभव हो सका। इस काल में अनुवाद को केवल साहित्यिक या भाषिक क्रिया न मानकर एक बहुआयामी बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया, जिसमें भाषाविज्ञान, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, संस्कृतिअध्ययन और संप्रेषण सिद्धांतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इस अवधि में पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों ने अनुवाद की प्रकृति, प्रक्रिया, उद्देश्य और प्रभाव को वैज्ञानिक एवं सैद्धांतिक आधार पर समझने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप अनुवाद अध्ययन एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित हुआ।

10.3.1 वर्गीकरण

पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन की परंपरा को सुविधा की दृष्टि से विभिन्न कालखंडों में विभाजित किया जा सकता है। यह वर्गीकरण मुख्यतः अनुवाद-दृष्टियों, पद्धतियों और सैद्धांतिक प्रवृत्तियों के आधार पर किया जाता है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अनुवाद-चिंतन की जिन प्रमुख धाराओं का विकास हुआ, उनमें भाषावैज्ञानिक, व्यवहार-आधारित, संरचनावादी, सांस्कृतिक और कार्यात्मक दृष्टियाँ प्रमुख हैं।

इन विभिन्न धाराओं के अंतर्गत अनुवाद को निम्नलिखित रूपों में समझा गया-

- शाब्दिक अनुवाद (Literal Translation) तथा भावानुवाद (Free Translation)
- वाक्यविन्यासात्मक अनुवाद (Syntactic Translation) तथा अर्थप्रधान अनुवाद (Semantic Translation)
- निष्ठावान अनुवाद (Faithful Translation) तथा स्वतंत्र अनुवाद (Free Translation)
- लेखक-केंद्रित अनुवाद (Author-Oriented Translation) तथा पाठक-केंद्रित अनुवाद (Reader-Oriented Translation)
- स्रोतभाषा केंद्रित अनुवाद (Source Language Oriented Translation) तथा लक्ष्यभाषा केंद्रित अनुवाद (Target Language Oriented Translation)
- दृष्टिकोण आधारित अनुवाद- वैचारिक या वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित
- संस्कृतिआधारित अनुवाद (Culture Based Translation) तथा भाषाविज्ञानआधारित अनुवाद (Linguistics

Based Translation)

- सटीक समतुल्यता (Exact equivalence) तथा सन्निकट समतुल्यता (Approximate Equivalence)
- स्थिर समतुल्यता (Static equivalence) तथा गतिशील समतुल्यता (Dynamic Equivalence)
- सैद्धांतिक प्रभावात्मकता (Theoretical equivalence) तथा कार्यात्मक प्रभावात्मकता (Functional Equivalence)

यह वर्गीकरण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अनुवाद को एक ही रूप में नहीं, बल्कि विभिन्न उद्देश्यों और संदर्भों के अनुसार बहुविध प्रक्रियाओं के रूप में समझा गया।

10.3.2 बीसवीं शताब्दी (1950-1960)

1950 से 1960 के दशक को पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन के आधुनिक चरण का प्रारंभिक काल माना जाता है। इस अवधि में भाषाविज्ञान के विकास ने अनुवादअध्ययन को नई दिशाप्रदान की। संरचनात्मक भाषाविज्ञान, संकेतविज्ञान और अर्थविज्ञान के सिद्धांतों के आधार पर अनुवाद को एक व्यवस्थित भाषिक प्रक्रिया के रूप में देखा गया।

इस काल में अनुवादकों और विद्वानों का ध्यान मुख्यत: भाषा संरचना, शब्दार्थ, वाक्यविन्यास और व्याकरणिक समानताओं पर केंद्रित रहा। इसी दौर में मशीन अनुवाद (Machine Translation) की अवधारणा का प्रारंभ हुआ। तकनीकी और वैज्ञानिक पाठों के अनुवाद में कंप्यूटर की सहायता लेने के प्रयास किए गए, जिससे अनुवाद को यांत्रिक और वैज्ञानिक दृष्टि से समझने की प्रवृत्ति विकसित हुई।

10.3.3 बीसवीं शताब्दी (1960-1965)

1960 से 1965 के कालखंड में व्यवहार आधारित अनुवाद-चिंतन को विशेष महत्व मिला। इस अवधि में यह मान्यता प्रबल हुई कि अनुवाद केवल भाषासंरचना का रूपांतरण नहीं है, बल्कि वह संप्रेषण और प्रभाव से भी जुड़ा हुआ है।

इस दृष्टि के अनुसार अनुवाद का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाने लगा कि लक्ष्यभाषा का पाठ पाठक पर वही प्रभाव उत्पन्न करता है या नहीं, जो मूल पाठ का स्रोतभाषा के पाठक पर होता है। इस दौर में अर्थ, संदर्भ, प्रयोग और प्रभाव को शब्दों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया। परिणामस्वरूप अनुवाद में लचीलापन और व्यावहारिकता का समावेश हुआ।

10.3.4 बीसवीं शताब्दी (1965-1975)

1965 से 1975 का काल पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस अवधि में यूजीन नाइडा, जे. सी. कैटफर्ड और अन्य विद्वानों ने अनुवाद को सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।

नाइडा की गतिशील समतुल्यता की अवधारणा ने अनुवाद-चिंतन को नई दिशा दी, जिसमें पाठक की प्रतिक्रिया को केंद्रीय स्थान दिया गया। वहीं कैटफर्ड ने अनुवाद को भाषिक प्रतिस्थापन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हुए समतुल्यता को भाषावैज्ञानिक स्तर पर समझने का प्रयास किया। इस काल में अनुवाद को भाषाविज्ञान, समाज और संस्कृति के अंतर्संबंधों के संदर्भ में देखा जाने लगा।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन का मूल योगदान यह है कि उसने अनुवाद को स्थिर भाषिक क्रिया के रूप में नहीं, बल्कि समय, समाज, पाठक और संस्कृति से निरंतर प्रभावित होने वाली बहुआयामी संप्रेषणात्मक प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। 1950 के बाद विकसित विभिन्न धाराओं- भाषावैज्ञानिक, व्यवहार आधारित, संरचनावादी और सांस्कृतिक ने यह स्पष्ट किया कि अनुवाद का स्वरूप उद्देश्य, संदर्भ और सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार बदलता रहता है। परिणामस्वरूप अनुवाद अध्ययन एक स्वतंत्र, अंतर्विषयी और गतिशील अकादमिक अनुशासन के रूप में विकसित हुआ।

10.3.5 बीसवीं शताब्दी (1975 से-वर्तमान तक)

1975 के बाद पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में बहुविध दृष्टियों का विकास हुआ। इस दौर में अनुवादअध्ययन केवल भाषिक अनुशासन न रहकर सांस्कृतिक अध्ययन, साहित्यिक सिद्धांत और समाजशास्त्र से भी जुड़ गया।

गिडियन टौरी जैसे विद्वानों ने अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों के अंतर्गत समझने पर बल दिया। इस काल में यह स्वीकार किया गया कि अनुवाद कोई एकरूपी संरचना नहीं है, बल्कि वह दो भाषिक और सांस्कृतिक संरचनाओं की व्याख्यात्मक संगति है।

इसी संदर्भ में यह विचार सामने आया कि-

अनुवाद एक एकात्मक संरचना नहीं, बल्कि दो संरचनाओं की व्याख्यात्मक संयुक्त प्रक्रिया है।

समकालीन पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अनुवाद को शक्ति, संस्कृति, विचारधारा और पहचान से जुड़े प्रश्नों के संदर्भ में भी देखा जा रहा है। डिजिटल तकनीक, वैद्गीकरण और बहुभाषिक समाज ने अनुवाद की भूमिका को और अधिक व्यापक बना दिया है।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. पाश्चात्य अनुवादचिंतनधारा के विकास में 1950 के बाद कौन-कौन से प्रमुख बौद्धिक और अकादमिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. यूजीन नाइडा की गतिशील / कार्यात्मक समतुल्यता की अवधारणा अनुवाद को किस प्रकार पाठककेन्द्रित बनाती है? उदाहरण सहित समझाइए।

प्रश्न 3. जे. सी. कैटफर्ड द्वारा प्रतिपादित भाषिक असंप्रेषणीयता और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता की अवधारणाओं का अनुवाद प्रक्रिया में क्या महत्व है?

10.4 पाश्चात्य अनुवाद चिंतक: दृष्टि एवं अनुवाद संबंधी दृष्टिकोण

10.4.1 यूजीन नाइडा

यूजीन नाइडा बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन को नई दिशा देने वाले सर्वाधिक प्रभावशाली विद्वानों में माने जाते हैं। उनका योगदान इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उन्होंने अनुवाद को केवल भाषिक संरचनाओं के स्थानांतरण तक सीमित न रखकर उसे संप्रेषण, संस्कृति और पाठकप्रतिक्रिया से जोड़कर देखा। नाइडा का अनुवाद-चिंतन भाषाविज्ञान, मानवविज्ञान और संचारसिद्धांत के अंतर्संबंधों पर आधारित है।

नाइडा के अनुसार अनुवाद का मूल उद्देश्य यह नहीं है कि स्रोतभाषा के शब्दों और वाक्यों को लक्ष्यभाषा में यथावत स्थानांतरित कर दिया जाए, बल्कि यह है कि स्रोतपाठ में निहित संदेश, आशय और प्रभाव लक्ष्यभाषा के पाठक तक उसी प्रकार पहुँचे, जिस प्रकार वह मूल भाषा के पाठक तक पहुँचता है। इसी विचार के आधार पर उन्होंने गतिशील समतुल्यता (Dynamic Equivalence) की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके अनुसार सफल अनुवाद वही है जिसमें लक्ष्यभाषा का पाठक अनूदित पाठ को पढ़ते समय लगभग वही अनुभव करता है जो स्रोतभाषा का पाठक मूल पाठ को पढ़ते समय करता है। नाइडा का यह मत पारंपरिक शाब्दिक अनुवाद की अवधारणा से भिन्न है। वे मानते हैं कि शब्द प्रति शब्द अनुवाद कई बार अर्थ को विकृत कर देता है और संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करता है। अत: अनुवादक को शब्दगत समानता के स्थान पर अर्थगत, भावगत और प्रभावगत समानता को प्राथमिकता देनी चाहिए। इसी कारण नाइडा अनुवाद में सांस्कृतिक अनुकूलन को अनिवार्य मानते हैं।

अनुवाद प्रक्रिया को नाइडा ने डिकोडिंग और रिकोडिंग के रूप में समझाया है। पहले चरण में स्रोतभाषा के संदेश का गहन विश्लेषण कर उसके अर्थतत्वों को स्पष्ट किया जाता है और दूसरे चरण में उन अर्थतत्वों को लक्ष्यभाषा की भाषिक और सांस्कृतिक संरचना के अनुरूप पुन: अभिव्यक्त किया जाता है। इस प्रकार नाइडा का अनुवाद-चिंतन अनुवाद को एक सृजनात्मक, उद्देश्यपरक और संप्रेषणकेन्द्रित प्रक्रिया के रूप में स्थापित करता है।

10.4.2 जे. सी. कैटफर्ड

जे. सी. कैटफर्ड का अनुवाद-चिंतन संरचनात्मक भाषाविज्ञान पर आधारित है और वे अनुवाद को एक भाषावैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं। उनकी दृष्टि में अनुवाद दो भाषाओं के बीच घटित होने वाली एक व्यवस्थित भाषिक क्रिया है, जिसमें स्रोतभाषा की पाठ्यसामग्री को लक्ष्यभाषा की समतुल्य भाषिक इकाइयों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है।कैटफर्ड के अनुसार अनुवाद का केंद्रीय सिद्धांत समतुल्यता (Equivalence) है, किंतु यह समतुल्यता पूर्ण समानता नहीं होती। वे स्पष्ट करते हैं कि भाषाएँ अपनी संरचना, व्याकरण, शब्दार्थ और प्रयोग-परंपरा में भिन्न होती हैं, इसलिए अनुवाद में पूर्ण समानता संभव नहीं है। इसी संदर्भ में उन्होंने भाषिक असंप्रेषणीयता और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता की अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं। भाषिक असंप्रेषणीयता तब उत्पन्न होती है जब किसी भाषा की संरचनात्मक विशेषता दूसरी भाषा में उपलब्ध नहीं होती। वहीं सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता तब सामने आती है जब किसी सांस्कृतिक संदर्भ, प्रतीक या सामाजिक व्यवहार का लक्ष्यभाषा में समकक्ष रूप उपलब्ध नहीं होता। कैटफर्ड के अनुसार ऐसी स्थितियों में अनुवादक को भाषिक प्रतिस्थापन के साथ-साथ सांस्कृतिक व्याख्या का सहारा लेना पड़ता है।

कैटफर्ड अनुवाद को मुख्यत: स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा की एकदिशीय प्रक्रिया मानते हैं। उनका योगदान अनुवाद अध्ययन को वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करता है, यद्यपि उनकी दृष्टि को कभी-कभी अत्यधिक संरचनात्मक और सीमित भी माना गया है।

10.4.3 पीटर न्यूमाक

पीटर न्यूमार्क आधुनिक पाश्चात्य अनुवादचिंतकों में एक संतुलित और व्यवहार-प्रधान दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। वे अनुवाद को न तो केवल भाषावैज्ञानिक क्रिया मानते हैं और न ही पूर्णत: सृजनात्मक लेखन, बल्कि दोनों के मध्य स्थित एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में देखते हैं।न्यूमार्क ने अनुवाद की दो प्रमुख विधियों- अर्थानुवाद (Semantic Translation) और संप्रेषणात्मक अनुवाद (Communicative Translation)- को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया। अर्थानुवाद में स्रोतपाठ की भाषा, शैली और संरचना के प्रति अधिक निष्ठा होती है, जबकि संप्रेषणात्मक अनुवाद में लक्ष्यभाषा के पाठक की समझ, अपेक्षा और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को प्राथमिकता दी जाती है।

न्यूमार्क का मत है कि किसी एक विधि को सर्वश्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता। पाठ का प्रकार, उद्देश्य और पाठकवर्ग यह निर्धारित करता है कि किस विधि का प्रयोग किया जाए। वे यह भी स्वीकार करते हैं कि अनुवाद में कुछ हद तक अर्थ-हानि अपरिहार्य है, किंतु कुशल अनुवादक संतुलन बनाकर इस हानि को न्यूनतम कर सकता है।न्यूमार्क अनुवादक को स्वतंत्र निर्णयकर्ता मानते हैं और उसे संदर्भ, शैली तथा प्रयोजन के अनुसार रणनीति अपनाने की अनुमति देते हैं। इसी कारण उनका अनुवाद-चिंतन, अनुवाद शिक्षण और व्यावहारिक प्रशिक्षण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

10.4.4 गिडियन टौरी

गिडियन टौरी आधुनिक अनुवादअध्ययन में वर्णनात्मक अनुवादअध्ययन (Descriptive Translation Studies) के प्रमुख प्रवर्तक हैं। वे अनुवाद को एक सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में देखते हैं, न कि केवल भाषिक प्रक्रिया के रूप में।

टौरी का मानना है कि अनुवाद का अध्ययन इस प्रश्न पर आधारित नहीं होना चाहिए कि अनुवाद कैसा होना चाहिए, बल्कि इस पर आधारित होना चाहिए कि अनुवाद वास्तव में कैसा किया जाता है। इसी दृष्टि से उन्होंने अनुवाद में मानदंडों (Norms) की अवधारणा प्रस्तुत की। ये मानदंड किसी विशेष समाज, साहित्यिक परंपरा और कालखंड में अनुवादक के चयन और रणनीतियों को नियंत्रित करते हैं। टौरी के अनुसार अनुवादक का कार्य पूरी तरह व्यक्तिगत नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक अपेक्षाओं और सांस्कृतिक स्वीकृतियों से प्रभावित होता है। इस कारण एक ही स्रोतपाठ के विभिन्न समाजों में अलग-अलग अनुवाद संभव होते हैं। टौरी की यह दृष्टि अनुवाद को साहित्य, संस्कृति और समाजशास्त्र से जोड़ती है।

उनका योगदान अनुवाद अध्ययन को एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

10.5 पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की अवधारणा उपयोगिता / प्रासंगिकता

10.5.1 यूजीन नाइडा

यूजीन नाइडा की अनुवाद संबंधी अवधारणा की उपयोगिता इस तथ्य में निहित है कि वह अनुवाद को केवल भाषिक रूपांतरण न मानकर अर्थ, प्रभाव और संप्रेषण की समग्र प्रक्रिया के रूप में देखती है। नाइडा का मत है कि अनुवादक के लिए केवल दो भाषाओं का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसे स्रोतपाठ के भाव, संदर्भ और संरचना को गहराई से समझना आवश्यक है। इस दृष्टि से उनकी अवधारणा अनुवादक की बौद्धिक और सृजनात्मक भूमिका को रेखांकित करती है।

नाइडा की अनुवाददृष्टि आधुनिक अनुवाद मान्यताओं के अनुरूप इसलिए भी मानी जाती है क्योंकि वह अनुवादक की व्यक्तिगत संवेदनशीलता, जीवन-दृष्टि तथा सांस्कृतिक समझ को अनुवाद प्रक्रिया का अनिवार्य अंग मानती है। उनके अनुसार मूल रचना का सम्यक् अनुवाद तभी संभव है जब अनुवादक मूल लेखक की मानसिक संरचना और भावात्मक संसार को समझ सके। यह दृष्टिकोण चॉम्स्की की भाषावैज्ञानिक संरचनाओं से प्रभावित होने के कारण भाषिक विश्लेषण को भी पर्याप्त महत्व देता है।

नाइडा की अवधारणा की एक महत्वपूर्ण प्रासंगिकता यह है कि वह अनुवाद को रहस्योद्घाटन (revelation) की प्रक्रिया मानती है, जिसमें मूल संदेश को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उसका प्रभाव पाठक तक सहज रूप से पहुँच सके। इस कारण उनकी अवधारणा धार्मिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक ग्रंथों के अनुवाद में विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होती है। आधुनिक बहुभाषिक समाज में नाइडा की अनुवाद दृष्टि आज भी व्यापक स्वीकृति प्राप्त करती है।

10.5.2 जे. सी. कैटफर्ड

जे. सी. कैटफर्ड की अनुवादअवधारणा की उपयोगिता मुख्यत: उसके भाषावैज्ञानिक और संरचनात्मक आधार में निहित है। उन्होंने अनुवाद को स्रोत भाषा (Source Language) और लक्ष्य भाषा (Target Language) के बीच ¥Í ÂÚ¡ SÍ æÙU (substitution of meanings) की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार अनुवाद में लक्ष्य भाषा के अर्थ, स्रोत भाषा के अर्थों का स्थान लेते हैं, न कि उनका प्रत्यक्ष स्थानांतरण होता है।

In 'Translation, there is substitution ofTL (Target Language) Meanings for SL (Source Language) meanings: Not Transfereuce ofTL meanings in to the SL. In 'Transference' there is an implantation

of SL meanings in to the TL text. These two processes must be clearly differentiated in any theory of Translation."'

J. C. Catford (1965) Linguistic Theory of Translation, Landon : Oxford University Press.

कैटफर्ड की अवधारणा की विशेष प्रासंगिकता यह है कि उन्होंने भाषिक असंप्रेषणीयता (linguistic untranslatability) और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता (cultural untranslatability) जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया। इससे यह समझ विकसित होती है कि प्रत्येक भाषा की अपनी संरचनात्मक सीमाएँ होती हैं और सभी भाषिक इकाइयों का पूर्ण अनुवाद संभव नहीं होता। यह विचार अनुवादक को यथार्थवादी दृष्टि अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

कैटफर्ड की अनुवादअवधारणा की एक विशेष महत्ता यह भी है कि उसने अनुवाद को नियमबद्ध और जाँच योग्य प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया। उनके सिद्धांत के माध्यम से अनुवाद का मूल्यांकन व्यक्तिपरक रुचि या सौंदर्यबोध

पर आधारित न होकर, भाषिक स्तरों जैसे- ध्वन्यात्मक, व्याकरणिक और अर्थगत संरचनाके आधार पर किया जा â·ª æãÐ §ââðª ÙßÂâª ŠØØÙ ×ðßSÌ ê¸ÙÌ æ(objectivity) का विकास हुआ और अनुवाद को अकादमिक अनुशासन के रूप में मान्यता मिली। यद्यपि उनकी दृष्टि साहित्यिक अनुवाद में सीमित प्रतीत होती है, फिर भी तकनीकी, वैज्ञानिक और प्रशासनिक अनुवादों के क्षेत्र में कैटफर्ड की अवधारणा आज भी एक ठोस सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है।

कैटफर्ड की अवधारणा अनुवाद अध्ययन को एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध हुई। यद्यपि उनकी दृष्टि साहित्यिक अनुवाद की अपेक्षा तकनीकी और औपचारिक अनुवादों में अधिक उपयोगी मानी जाती है, फिर भी अनुवाद सिद्धांत के क्षेत्र में उनके द्वारा प्रस्तुत भाषावैज्ञानिक ढाँचा आज भी अकादमिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

10.5.3 पीटर न्यूमार्क

पीटर न्यूमार्क की अनुवाद अवधारणा की प्रमुख उपयोगिता उसका व्यावहारिक और संतुलित स्वरूप है। उन्होंने संरचनात्मक भाषाविज्ञान, संप्रेषण सिद्धांत और अर्थप्रधान दृष्टिकोण के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। न्यूमार्क के अनुसार अनुवादक को पाठ के प्रकार, उद्देश्य और पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए अनुवादपद्धति का चयन करना चाहिए।

न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अर्थ प्रधान अनुवाद (Semantic Translation) औरसंप्रेषणात्मक अनुवाद (Communicative Translation) का भेद उनकी अवधारणा को विशेष रूप से उपयोगी बनाता है। उनके अनुसार साहित्यिक और दार्शनिक ग्रंथों में अर्थानुवाद अधिक उपयुक्त होता है, जबकि व्यावहारिक, प्रशासनिक और जनसंचार से जुड़े पाठों में संप्रेषणात्मक अनुवाद अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। इस प्रकार उनकी अवधारणा अनुवादक को लचीला दृष्टिकोण अपनाने की स्वतंत्रता प्रदान करती है।

न्यूमार्क का यह कथन-

The inspiration for an artistic translation can only come from an artistic translator-

उनकी अवधारणा की सृजनात्मक प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है। आधुनिक अनुवाद प्रशिक्षण, कार्यशालाओं और व्यावसायिक अनुवाद क्षेत्र में न्यूमार्क की अवधारणा आज भी अत्यंत उपयोगी और व्यावहारिक मानी जाती है।

10.5.4 गिडियन टौरी

गिडियनटौरी की अनुवाद अवधारणा की उपयोगिता उसके वर्णनात्मक (Descriptive) और सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण में निहित है। उन्होंने अनुवाद को किसी आदर्श या नियामक सिद्धांत के आधार पर न देखकर, वास्तविक अनुवाद प्रथाओं के अध्ययन के माध्यम से समझने का प्रयास किया। इस कारण उनकी अवधारणा अनुवाद को एक सामाजिक क्रिया के रूप में स्थापित करती है।

formalist and structuralist predecessors, and as such carries certain absolute notions which limitthe coneceptual framework"

edwin Gentzler contemporary Translation Theories, Viva Books pase 130.

टौरीकी मानदंड (Norms) संबंधी अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि अनुवादक का निर्णय व्यक्तिगत न होकर सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक अपेक्षाओं से प्रभावित होता है। विभिन्न कालखंडों में एक ही कृति के भिन्न अनुवाद इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि अनुवाद अपने समय और समाज के मानदंडों से बँधा होता है। इस दृष्टि से टौरी की अवधारणा अनुवाद इतिहास और तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में अत्यंत सहायक है।

10.6 अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद चिंतकों की अवधारणाओं के संदर्भ में

पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अनुवाद का स्वरूप केवल भाषिक क्रिया नहीं माना गया है, बल्कि इसे एक ऐसी बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझा गया है जिसमें अर्थ, संरचना, प्रभाव और पाठकीय ग्रहणशीलता सभी सम्मिलित रहते हैं। विभिन्न अनुवादचिंतकों ने अपने-अपने सैद्धांतिक दृष्टिकोण के आधार पर

अनुवाद के स्वरूप को अलग-अलग रूपों में परिभाषित किया है। इन दृष्टिकोणों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद न तो पूर्णत: यांत्रिक क्रिया है और न ही पूर्णत: स्वतंत्र रचनात्मक प्रक्रिया, बल्कि यह दोनों के बीच स्थित एक संतुलित कार्य है।

10.6.1 यूजीन नाइडा

यूजीन नाइडा के अनुसार अनुवाद का स्वरूप मूलत: संदेश के प्रभाव के पुनर्सृजन से जुड़ा हुआ है। वे अनुवाद को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के शब्दों अथवा संरचनाओं के बीच समानता खोजने की प्रक्रिया नहीं मानते, बल्कि उसे पाठकप्रतिक्रिया के स्तर पर घटित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। नाइडा का मानना है कि यदि अनूदित पाठ लक्ष्य भाषा के पाठक में वही प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं कर पाता जो मूल पाठ स्रोत भाषा के पाठक में करता है, तो ऐसा अनुवाद सफल नहीं कहा जा सकता।

Ùæ§ÇæÙæ»ñÎ ÇðÅ×ðÞ ÙæÃæÎ · ×æÙæSÌÁMÂ¥ õÂÇ¿ æÙæÚU¹âÜ×æÙæÌ æ(Formal Equivalence) से अधिक गतिशील अथवा कार्यात्मक समतुल्यता (Dynamic/Functional Equivalence) पर आधारित होना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि अनुवाद में शब्द प्रति शब्द अर्थ की अपेक्षा भाव, आशय और संप्रेषणीयता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। वे यह स्वीकार करते हैं कि दो भिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच पूर्ण संरचनात्मक समानता संभव नहीं है, इसलिए अनुवादक को आवश्यकतानुसार रूपांतरण की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए।

नाइडा के अनुसार अनुवाद का स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि अनुवाद किस सांस्कृतिक परिवेश में किया जा रहा है और लक्ष्य पाठक की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्या है। इसी कारण वे धार्मिक, बाइबिलीय और जन-संचार से जुड़े अनुवादों में अपने सिद्धांत को विशेष रूप से उपयोगी मानते हैं।

नाइडा के शब्दों में-

"Translation consists in reproducing in the receptor language the closest natural equivalent of the source language message, first in meaning and secondly in style."

इस परिभाषा के आलोक में यह कहा जा सकता है कि नाइडा के लिए अनुवाद का स्वरूप एक पाठक केन्द्रित, प्रभाव प्रधान और सांस्कृतिक रूप से अनुकूल प्रक्रिया है, जिसमें अनुवादक को केवल भाषाविद् नहीं, बल्कि संप्रेषक की भूमिका भी निभानी पड़ती है।

10.6.2 जे. सी. कैटफर्ड

जे. सी. कैटफर्ड ने अनुवाद के स्वरूप को भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। उनके अनुसार अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें स्रोत भाषा की पाठसामग्री को लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठसामग्री से प्रतिस्थापित किया जाता है। यह प्रतिस्थापन अर्थ के स्तर पर होता है, न कि केवल शब्दों के स्तर पर।

कैटफर्ड का मत है कि अनुवाद मेंस्थानांतरण (Transference) नहीं, बल्कि प्रतिस्थापन (Substitution) होता है। वे इस बात पर विशेष बल देते हैं कि स्रोत भाषा के अर्थ लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित नहीं होते, बल्कि लक्ष्य भाषा के अर्थ स्रोत भाषा के अर्थों का स्थान लेते हैं। इसी आधार पर उन्होंने भाषिक और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता (Linguistic and Cultural Untranslatability) की अवधारणा प्रस्तुत की।

कैटफर्ड के अनुसार-

"In translation, there is substitution of TL meanings for SL meanings; not transference of SL meanings into the TL."

अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कैटफर्ड ने पूर्ण अनुवाद (Total Translation) और सीमित अनुवाद (Restricted Translation) की अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं। उनके अनुसार यदि स्रोत भाषा की संरचना के सभी स्तरों का लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापन संभव हो, तो वह पूर्ण अनुवाद कहलाता है; जबकि यदि केवल किसी एक स्तर पर प्रतिस्थापन संभव हो, तो वह सीमित अनुवाद होता है।इस प्रकार कैटफर्ड के लिए अनुवाद का स्वरूप संरचनात्मक, विश्लेषणात्मक और नियमआधारित है, जिसमें भाषाविज्ञान की केंद्रीय भूमिका है और सांस्कृतिक-भावात्मक पक्ष अपेक्षाकृत गौण रहता है।

10.6.3 पीटर न्यूमार्क

पीटर न्यूमार्क ने अनुवाद के स्वरूप को एक व्यावहारिक और संतुलित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया है। वे यह मानते हैं कि अनुवाद का स्वरूप किसी एक निश्चित सिद्धांत से नियंत्रित नहीं किया जा सकता, बल्कि वह पाठ की प्रकृति, उद्देश्य और पाठक पर निर्भर करता है।

न्यूमार्क ने अर्थप्रधान अनुवाद (Semantic Translation) और संप्रेषणात्मक अनुवाद (Communicative Translation) के बीच स्पष्ट भेद स्थापित किया। उनके अनुसार अर्थप्रधान अनुवाद में मूल पाठ के अर्थ, संरचना और शैली को अधिक सुरक्षित रखा जाता है, जबकि संप्रेषणात्मक अनुवाद में लक्ष्य भाषा के पाठक की बोधगम्यता और सहजता को प्राथमिकता दी जाती है।

न्यूमार्क का मानना है कि साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में अर्थप्रधान अनुवाद अधिक उपयुक्त होता है, क्योंकि वहाँ भाषा और शैली का विशेष महत्व होता है। इसके विपरीत, सूचना प्रधान, प्रशासनिक या जन-संचार से जुड़े पाठों में संप्रेषणात्मक अनुवाद अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

न्यूमार्क के अनुसार-

"Generally, a communicative translation is likely to be smoother, simpler, clearer and more direct."

इस दृष्टि से न्यूमार्क के लिए अनुवाद का स्वरूप उद्देश्य आधारित, पाठ-विशेष के अनुरूप और व्यावहारिक निर्णयों से संचालित प्रक्रिया है, जिसमें अनुवादक की भूमिका अत्यंत सक्रिय और विवेकपूर्ण होती है।

10.6.4 गिडियन टौरी

गिडियन टौरी ने अनुवाद के स्वरूप को सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया। उनके अनुसार अनुवाद कोई आदर्श या सार्वभौमिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह लक्ष्य समाज की साहित्यिक परंपराओं, सांस्कृतिक मानदंडों और ऐतिहासिक परिस्थितियों से निर्धारित होता है।

टौरी का मानना है कि अनुवाद का अध्ययन इस आधार पर नहीं किया जाना चाहिए कि अनुवाद कैसा होना चाहिए, बल्कि इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वास्तविक रूप में अनुवाद कैसे किए गए हैं। इसी दृष्टि से उन्होंने मानदंडों (ह्रश्नह्लद्बह्य) की अवधारणा प्रस्तुत की, जो यह स्पष्ट करती है कि अनुवादक के निर्णय सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित होते हैं।

टौरी के अनुसार-

"A translation is not an isolated act but a function of the target culture."

उनके लिए अनुवाद का स्वरूप स्थिर नहीं, बल्कि परिवर्तनशील है। समय, समाज और सांस्कृतिक परिवेश के साथ अनुवाद के स्वरूप में भी परिवर्तन आता रहता है। इस प्रकार टौरी अनुवाद को एक सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में देखते हैं, न कि केवल भाषिक क्रिया के रूप में।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 4. पीटर न्यूमार्क के अनुसार अर्थप्रधान अनुवाद और संप्रेषणात्मक अनुवाद में क्या अंतर है? विभिन्न पाठप्रकारों के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 5. गिडियन टौरी की मानदंड (Norms) की अवधारणा अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में कैसे स्थापित करती है?

प्रश्न 6. पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की अवधारणाओं के आधार पर अनुवाद के स्वरूप का समग्र मूल्यांकन कीजिए तथा बताइए कि अनुवाद को केवल भाषिक प्रक्रिया क्यों नहीं माना जा सकता।

210.7 सारांश

- प्रस्तुत इकाई में पाश्चात्य अनुवाद-चिंतनधारा के विकास, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा प्रतिनिधि अनुवाद-चिंतकों की अवधारणाओं का समग्र अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बीसवीं शताब्दी के मध्य के बाद अनुवाद को केवल भाषिक रूपांतरण की प्रक्रिया न मानकर एक सुव्यवस्थित, सैद्धांतिक और बहुआयामी अकादमिक अनुशासन के रूप में विकसित किया गया। 1950 के बाद पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में भाषाविज्ञान, संप्रेषण सिद्धांत, संरचनावाद, सांस्कृतिक अध्ययन और समाजशास्त्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
- इकाई के आरंभिक भाग में पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन की ऐतिहासिक परंपरा को विभिन्न कालखंडों-1950 से 1960, 1960 से 1965, 1965 से 1975 तथा 1975 से वर्तमान तकके संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इन कालखंडों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक चरण में अनुवाद मुख्यत: भाषिक संरचना और व्याकरणिक समतुल्यता पर आधारित था, जबकि आगे चलकर उसमें व्यवहारिकता, संप्रेषणीयता और सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश हुआ। समकालीन काल में अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार के रूप में समझने की प्रवृत्ति सशक्त रूप में उभरी है।
- यूजीन नाइडा के अनुवाद-चिंतन में गतिशील समतुल्यता की अवधारणा के माध्यम से अनुवाद को पाठककेंद्रित और प्रभावप्रधान प्रक्रिया के रूप में स्थापित किया गया है। नाइडा के अनुसार अनुवाद का उद्देश्य मूल संदेश के अर्थ और प्रभाव को लक्ष्यभाषा के पाठक तक सहज रूप में पहुँचाना है। उनकी दृष्टि में अनुवादक की भूमिका केवल भाषिक नहीं, बल्कि संप्रेषणात्मक और सांस्कृतिक भी है। इसके विपरीत जे. सी. कैटफर्ड ने अनुवाद को भाषावैज्ञानिक प्रतिस्थापन की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हुए समतुल्यता, भाषिक असंप्रेषणीयता और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता जैसी अवधारणाओं को स्पष्ट किया। कैटफर्ड का योगदान अनुवादअध्ययन को वैज्ञानिक और संरचनात्मक आधार प्रदान करता है। पीटर न्यूमार्क ने अनुवाद के स्वरूप को व्यावहारिक और संतुलित दृष्टि से समझाते हुए अर्थानुवाद और संप्रेषणात्मक अनुवाद का भेद प्रस्तुत किया। उनका मत है कि अनुवाद पद्धति का चयन पाठ के प्रकार, उद्देश्य और पाठकवर्ग के अनुसार होना चाहिए। वहीं गिडियन टौरी ने अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक मानदंडों से जुड़ी प्रक्रिया के रूप में व्याख्यायित किया और वर्णनात्मक अनुवाद अध्ययन को एक स्वतंत्र अध्ययन पद्धति के रूप में स्थापित किया।

K10.8 प्रगति विवरण

प्रश्न 1 का उत्तर : 1950 के बाद पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अनुवाद को केवल भाषिक क्रिया न मानकर एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में विकसित किया गया। इस काल में भाषाविज्ञान, संप्रेषण सिद्धांत और सांस्कृतिक अध्ययन के प्रभाव से अनुवाद अध्ययन का विस्तार हुआ। इस विषय का विस्तृत विवेचन इकाई 5.2 में प्रस्तुत है।

प्रश्न 2 का उत्तर : यूजीन नाइडा की गतिशील/कार्यात्मक समतुल्यता की अवधारणा अनुवाद को पाठक केन्द्रित बनाती है, क्योंकि इसमें लक्ष्य भाषा के पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव को प्राथमिकता दी जाती है। संबंधित विवरण के लिए इकाई 5.3.1 एवं 5.5.1 देखें।

प्रश्न 3 का उत्तर : जे. सी. कैटफर्ड ने भाषिक और सांस्कृतिक असंप्रेषणीयता की अवधारणाओं के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि सभी भाषिक इकाइयों का पूर्ण अनुवाद संभव नहीं होता। इसका विस्तृत विवेचन इकाई 5.3.2 तथा 5.4.2 में उपलब्ध है।

प्रश्न 4 का उत्तर : पीटर न्यूमार्क के अनुसार अर्थप्रधान अनुवाद में मूल पाठ की भाषा और शैली को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि संप्रेषणात्मक अनुवाद में लक्ष्य भाषा के पाठक की समझ को महत्व दिया जाता है। इस अंतर की स्पष्ट व्याख्या इकाई 5.3.3 एवं 5.5.3 में दी गई है।

प्रश्न 5 का उत्तर : गिडियन टौरी की मानदंड (Norms) की अवधारणा अनुवाद को सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवहार

के रूप में स्थापित करती है, क्योंकि अनुवादक के निर्णय समाज और परंपराओं से प्रभावित होते हैं। इस विषय की चर्चा इकाई 5.3.4 और 5.4.4 में की गई है।

प्रश्न 6 का उत्तर पाश्चात्य अनुवाद-चिंतकों के अनुसार अनुवाद केवल भाषिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि अर्थ, प्रभाव, संस्कृति और समाज से जुड़ी बहुस्तरीय प्रक्रिया है। इसका समग्र मूल्यांकन इकाई 5.5 में प्रस्तुत किया गया है।

O10.9 अधिक जान्ने के लिए पढ़ें

- नाइडा, यूजीन ए. (1964). Toward a Science of Translating. लीडेन-ई. जे. ब्रिल।
- नाइडा, यूजीन ए. एवं टेबर, चार्ल्स आर. (1969). The Theory and Practice of Translation. लीडेन ई. जे. ब्रिल।
- कैटफर्ड, जे. सी. (1965). Linguistic Theory of Translation. लंदन-ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- न्यूमार्क, पीटर. (1981). Approaches to Translation. ऑक्सफोड-पर्गेमन प्रेस।
- न्यूमार्क, पीटर. (1988). A Textbook of Translation. न्यूयॉक-प्रेंटिस हॉल।
- टौरी, गिडियन. (1995). Descriptive Translation Studies and Beyond. एम्स्टर्डम- जॉन बेंजामिन्स।
- जेन्ट्ज़लर, एडविन. (2001). Contemporary Translation Theories. नई दिल्ली- विवा बुक्स।
- बैसनेट, सुसैन. (2002). Translation Studies. लंदन- रूटलेज।
- वर्मीर, हांस जे. (2000). Skopos and Commission in Translational Action. हाइडेलबग-यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मोण्डी, जेरेमी. (2016). Introducing Translation Studies. लंदन: रूटलेज।

M10.10 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन का आधुनिक चरण किस काल से प्रारंभ माना जाता है?
2. यूजीन नाइडा की गतिशील समतुल्यता से क्या आशय है?
3. जे. सी. कैटफर्ड के अनुसार अनुवाद में प्रतिस्थापन का क्या अर्थ है?
4. पीटर न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अनुवाद की दो प्रमुख विधियाँ कौन-सी हैं?
5. गिडियन टौरी ने अनुवाद-अध्ययन में मानदंड (Norms) की अवधारणा क्यों प्रस्तुत की?
6. पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन में अनुवाद को सामाजिक प्रक्रिया क्यों माना जाता है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. 1950 के बाद विकसित पाश्चात्य अनुवाद-चिंतन की प्रमुख प्रवृत्तियों का समग्र विवेचन प्रस्तुत कीजिए।
2. यूजीन नाइडा की अनुवाद दृष्टि का संक्षिप्त आलोचनात्मक मूल्यांकन दीजिए।
3. जे. सी. कैटफर्ड की भाषावैज्ञानिक अनुवाद अवधारणा की उपयोगिता तथा सीमाओं का तर्कसंगत विश्लेषण दें।
4. पीटर न्यूमार्क के अर्थप्रधान और संप्रेषणात्मक अनुवाद सिद्धांत को उपयुक्त उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।
5. गिडियन टौरी द्वारा प्रतिपादित वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययन के महत्व का व्याख्यात्मक विवरण प्रस्तुत करें।
6. विभिन्न पाश्चात्य अनुवाद चिंतकों की अवधारणाओं के आलोक में अनुवाद के स्वरूप पर विचार करें।

*** ***** ***

इकाई 11 कार्यालयी अनुवाद और महत्व

इकाई की रूपरेखा

11.1 उद्देश्य
11.2 प्रस्तावना
11.3 कार्यालयी अनुवाद स्वरूप, महत्व, सिद्धांत और समस्याएँ
11.4 कार्यालय हिंदी: अर्थ, स्वरूप और महत्व
11.5 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता
11.6 अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के आधार
11.7 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था
11.8 सारांश
11.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
11.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें
11.11 अभ्यास प्रश्न

11.1 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता को समझेंगे।
- अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के आधारों को पहचान पाएंगे।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 को जानेंगे।
- राजभाषा नियम, 1976 के प्रावधान को समझेंगे।
- प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था का अध्ययन कर सकेंगे।
- केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा राजभाषा विधायी खंड के व्यवस्था को समझेंगे।

11.2 प्रस्तावना-

प्रशासनिक तंत्र में अनुवाद एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि भारत जैसे बहुभाषी देश में सरकारी संचार, नीति-निर्माण, आदेशों, अधिसूचनाओं तथा विभिन्न प्रशासनिक दस्तावेजों का आदान-प्रदान कई भाषाओं में होता है। विशेषकर हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाएँ संघ के कामकाज में समान रूप से प्रयोग की जाती हैं। ऐसे में प्रशासनिक अनुवाद न केवल भाषा-परिवर्तन की प्रक्रिया है, बल्कि यह सरकार की पारदर्शिता, जवाबदेही और व्यावहारिक सुचारुता को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम भी है। प्रशासनिक अनुवाद की गुणवत्ता कई स्तरों पर निर्भर करती है अनुवादित सामग्री की प्रकृति, भाषा के प्रयोग की शुद्धता, विषय की संवेदनशीलता और उससे संबंधित दायित्वों की गंभीरता। सामान्य रूटीन पत्रों से लेकर जटिल नीति-निर्देशों, विधिक दस्तावेजों और तकनीकी जानकारी तकप्रत्येक प्रकार की सामग्री का अपना विशिष्ट स्तर होता है, जिसके अनुरूप अनुवादकर्ता को अपनी दक्षता और समझ का प्रयोग करना पड़ता है। भारत सरकार ने राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 के माध्यम से प्रशासनिक अनुवाद के लिए स्पष्ट प्रावधान किए हैं ताकि केंद्र सरकार के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सके और द्विभाषिकता के सिद्धांत को व्यवहारिक रूप दिया जा सके। इन प्रावधानों के अनुसार कई आवश्यक दस्तावेजों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी करना अनिवार्य है।

मंत्रालयों और विभागों में स्थापित हिंदी कक्षों एवं राजभाषा प्रकोष्ठों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे न

केवल अनुवाद करते हैं बल्कि राजभाषा नीति के अनुपालन की निगरानी भी करते हैं। बहुभाषी प्रशासनिक ढाँचे में अनुवाद की आवश्यकता निरंतर बढ़ रही है। कार्य-क्षेत्र के विस्तार, दस्तावेजों की बढ़ती जटिलता, तकनीकी-विधिक सामग्री की वृद्धि और संचार-सुविधाओं के विस्तार के कारण अनुवाद कार्य अधिक व्यापक और अनिवार्य हो गया है। इसी आवश्यकता को देखते हुए सरकार ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से अनुवादकों के लिए व्यवस्थित प्रशिक्षण व्यवस्था भी विकसित की हैताकि अनुवाद में गुणवत्ता, एकरूपता और समयबद्धता सुनिश्चित की जा सके। राजभाषा अधिनियम और राजभाषा नियमों की दृष्टि से यह एक सतत और आवश्यक प्रक्रिया है, जो भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था को संरचित, प्रभावी और नागरिक-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

11.3 कार्यालयी अनुवाद स्वरूप, महत्व, सिद्धांत और समस्याएँ

भारत एक बहुभाषी देश है, जहाँ विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित हैं। प्रशासनिक कार्यों को सुचारु रूप से संचालित करने तथा सरकारी सूचनाओं को अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के बाद सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। किंतु अधिकांश सरकारी कार्य अंग्रेजी से हिंदी अथवा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद के माध्यम से संपन्न होते हैं। फलस्वरूप कार्यालयों में प्रयुक्त हिंदी का एक बड़ा भाग अनुवाद-आधारित भाषा बन गया है। कई बार यह भाषा इतनी जटिल और कृत्रिम हो जाती है कि सामान्य व्यक्ति उसके वास्तविक अर्थ को समझने में कठिनाई अनुभव करता है। इसलिए कार्यालयी अनुवाद का उद्देश्य केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि सूचना को सरल, स्पष्ट और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना होना चाहिए।

कार्यालयी अनुवाद का अर्थ

कार्यालयी अनुवाद से आशय सरकारी, प्रशासनिक, विधिक तथा व्यावसायिक दस्तावेजों का एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण करना है। इस प्रकार के अनुवाद में केवल शब्दों का स्थानांतरण पर्याप्त नहीं होता, बल्कि मूल दस्तावेज के भाव, उद्देश्य, शैली तथा कानूनी महत्व को सुरक्षित रखना भी आवश्यक होता है। सरकारी आदेश, अधिसूचनाएँ, नियमावली, कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र, प्रतिवेदन, अनुबंध तथा आवेदन-पत्र आदि कार्यालयी अनुवाद के अंतर्गत आते हैं।

कार्यालयी अनुवाद का महत्व

कार्यालयी अनुवाद प्रशासन और जनता के बीच संवाद स्थापित करने का एक प्रभावी माध्यम है। भारत जैसे बहुभाषी देश में सभी नागरिकों तक सरकारी योजनाओं, नियमों और नीतियों की जानकारी पहुँचाने के लिए अनुवाद अनिवार्य है। इसके माध्यम से प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता आती है तथा नागरिकों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी प्राप्त होती है।

कार्यालयी अनुवाद राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है। जब सरकारी सूचनाएँ विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होती हैं, तब विभिन्न भाषाई समुदायों के लोग शासन-प्रक्रिया से जुड़ पाते हैं। इसके अतिरिक्त न्यायिक और प्रशासनिक कार्यों में भी अनुवाद की विशेष भूमिका होती है, क्योंकि किसी भी दस्तावेज की गलत व्याख्या गंभीर परिणाम उत्पन्न कर सकती है।

कार्यालयी अनुवाद के प्रमुख प्रकार

1. **प्रशासनिक अनुवादः** इस प्रकार के अनुवाद में सरकारी आदेश, कार्यालय ज्ञापन, परिपत्र, अधिसूचनाएँ, नियमावली, वार्षिक प्रतिवेदन तथा विभागीय पत्राचार सम्मिलित होते हैं। प्रशासनिक अनुवाद का उद्देश्य सरकारी निर्णयों और निर्देशों को स्पष्ट रूप से जनता एवं कर्मचारियों तक पहुँचाना होता है।
2. **विधिक एवं कानूनी अनुवादः** कानूनी दस्तावेजों के अनुवाद में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। संविधान, अधिनियम, नियम, न्यायालयीय आदेश, अनुबंध, निविदाएँ, शपथ-पत्र तथा राजपत्र आदि इसी श्रेणी में आते हैं। इनमें किसी भी प्रकार की त्रुटि कानूनी विवाद उत्पन्न कर सकती है।

3. **तकनीकी अनुवाद:** विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियंत्रण, चिकित्सा तथा सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित दस्तावेजों का अनुवाद तकनीकी अनुवाद कहलाता है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली का सही प्रयोग अत्यंत आवश्यक होता है।
4. **व्यावसायिक अनुवाद:** बैंकिंग, बीमा, विपणन, वित्तीय प्रतिवेदन तथा व्यापारिक अनुबंधों के अनुवाद को व्यावसायिक अनुवाद कहा जाता है। यह आर्थिक गतिविधियों को सुचारु रूप से संचालित करने में सहायक होता है।
5. **मानक प्रपत्रों का अनुवाद:** जन्म प्रमाण-पत्र, मृत्यु प्रमाण-पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट आवेदन, पेंशन प्रपत्र तथा अन्य सरकारी आवेदन-पत्रों का अनुवाद इस श्रेणी में सम्मिलित है।

कार्यालयी अनुवाद के प्रमुख सिद्धांत

1. **सटीकता:** अनुवाद में मूल पाठ के अर्थ, उद्देश्य और भाव में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए। विशेष रूप से कानूनी और प्रशासनिक दस्तावेजों में अर्थ की शुद्धता अत्यंत आवश्यक है।
2. **स्पष्टता :** कार्यालयी भाषा सरल, स्पष्ट और बोधगम्य होनी चाहिए। ऐसे शब्दों और वाक्य संरचनाओं का प्रयोग किया जाना चाहिए जिन्हें सामान्य व्यक्ति आसानी से समझ सके।
3. **संक्षिप्तता :** अनावश्यक विस्तार और जटिल वाक्यों से बचना चाहिए। छोटे और स्पष्ट वाक्य प्रशासनिक संप्रेषण को अधिक प्रभावी बनाते हैं।
4. **पारिभाषिक एकरूपता :** एक ही तकनीकी या प्रशासनिक शब्द के लिए समान शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए। इससे भ्रम की संभावना कम होती है।
5. **शुद्धता और औपचारिकता :** कार्यालयी अनुवाद में व्याकरण, वर्तनी तथा शैली की शुद्धता बनाए रखना आवश्यक है। भाषा औपचारिक तथा गरिमामय होनी चाहिए।

कार्यालयी अनुवाद की प्रमुख समस्याएँ

1. **शाब्दिक अनुवाद की समस्या:** कार्यालयी अनुवाद की सबसे बड़ी समस्या शाब्दिक अनुवाद है। कई बार अनुवादक अंग्रेजी के प्रत्येक शब्द का हिंदी रूप प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिससे भाषा अप्राकृतिक और कठिन हो जाती है। उदाहरण के लिए 'भुगतान' के स्थान पर 'संदाय' तथा 'लाइसेंस' के स्थान पर 'अनुज्ञप्ति' जैसे शब्द सामान्य पाठकों के लिए कम परिचित हैं। इसलिए जहाँ संभव हो, प्रचलित और सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
2. **पुरानी अंग्रेजी शैली का प्रभाव:** भारत के अधिकांश सरकारी दस्तावेजों की भाषा पर ब्रिटिश काल की प्रशासनिक शैली का प्रभाव दिखाई देता है। अंग्रेजी के लंबे और जटिल वाक्य हिंदी अनुवाद को भी कठिन बना देते हैं। परिणामस्वरूप भाषा बोझिल और दुरूह हो जाती है।
3. **तकनीकी शब्दावली की जटिलता:** विज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रशासन से संबंधित अनेक शब्दों के लिए हिंदी में मानक शब्द उपलब्ध होने के बावजूद उनका प्रयोग सीमित है। कई बार अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों के कारण पाठकों को अर्थ समझने में कठिनाई होती है।
4. **शब्दावली में असमानता:** केंद्र और विभिन्न राज्यों में एक ही शब्द के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए 'फाइल' के लिए कहीं 'संचिका', कहीं 'पत्रावली' और कहीं 'मिसिल' शब्द प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार 'Candidate' के लिए 'उम्मीदवार', 'अभ्यर्थी' और 'प्रत्याशी' जैसे शब्द प्रचलित हैं। यह विविधता भ्रम उत्पन्न करती है।
5. **प्रशिक्षित अनुवादकों का अभाव:** अनेक कार्यालयों में प्रशिक्षित और अनुभवी अनुवादकों की कमी है। परिणामस्वरूप अनुवाद की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा कई बार अर्थगत त्रुटियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।
6. **आधुनिक तकनीक की चुनौतियाँ:** यद्यपि मशीन अनुवाद और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों का प्रयोग बढ़ रहा है, फिर भी वे संदर्भ, शैली और सांस्कृतिक अर्थों को हमेशा सही ढंग से नहीं समझ पाते। इसलिए मानव अनुवाद की आवश्यकता बनी रहती है।

कार्यालयी अनुवाद को प्रभावी बनाने के उपाय

- सरल और व्यवहारिक हिंदी का प्रयोग किया जाए।
- शाब्दिक अनुवाद से बचकर भावानुवाद को प्राथमिकता दी जाए।
- प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दावली का मानकीकरण किया जाए।
- अनुवादकों को नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
- आधुनिक अनुवाद तकनीकों का उपयोग किया जाए किंतु अंतिम संपादन मानव विशेषज्ञ द्वारा किया जाए।
- केंद्र और राज्यों में समान पारिभाषिक शब्दावली के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

कार्यालयी अनुवाद प्रशासन और जनता के बीच संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है। इसकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि अनुवाद कितना सटीक, सरल और बोधगम्य है। शाब्दिक अनुवाद, जटिल शब्दावली तथा मानकीकरण के अभाव जैसी समस्याओं को दूर करके कार्यालयी हिंदी को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। जब सरकारी दस्तावेज सामान्य नागरिक की समझ में आने लगेंगे, तभी राजभाषा हिंदी का वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा और प्रशासनिक कार्यों में उसकी उपयोगिता और सार्थकता बढ़ेगी।

11.4 कार्यालय हिंदी: अर्थ, स्वरूप और महत्व

भाषा किसी भी राष्ट्र के प्रशासन, संस्कृति और सामाजिक जीवन का आधार होती है। शासन और जनता के मध्य संवाद स्थापित करने का सबसे प्रभावी माध्यम भाषा ही है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शासन की भाषा जनता की भाषा से कितनी निकट है। भारत जैसे बहुभाषी देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात प्रशासनिक कार्यों के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता अनुभव की गई जो देश की बहुसंख्यक जनता द्वारा समझी जा सके तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बना सके। इसी उद्देश्य से हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और कार्यालयों में उसके प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त हिन्दी को सामान्यत: 'कार्यालयी हिन्दी' कहा जाता है। कार्यालयी हिन्दी केवल भाषा का एक रूप नहीं है, बल्कि यह शासन, प्रशासन और नागरिकों के मध्य संचार का एक प्रभावी माध्यम है। इसका उद्देश्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल, स्पष्ट और जनसुलभ बनाना है। वर्तमान समय में जब प्रशासन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो चुका है, तब कार्यालयी हिन्दी का महत्व और भी बढ़ गया है।

कार्यालयी हिन्दी का अर्थ एवं स्वरूप

कार्यालयी हिन्दी से अभिप्राय उस हिन्दी से है जिसका प्रयोग सरकारी, अर्द्ध-सरकारी तथा निजी संस्थानों के प्रशासनिक कार्यों में किया जाता है। कार्यालयों में तैयार किए जाने वाले पत्र, ज्ञापन, कार्यालय आदेश, अधिसूचनाएँ, प्रतिवेदन, टिप्पणियाँ, कार्यवृत्त, परिपत्र तथा अन्य अभिलेख इसी भाषा में लिखे जाते हैं। कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप साहित्यिक हिन्दी से भिन्न होता है। साहित्य का उद्देश्य भावाभिव्यक्ति और सौंदर्यबोध है, जबकि कार्यालयी हिन्दी का लक्ष्य सूचना, आदेश और निर्णय को स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना होता है। इसलिए इसमें अलंकारिकता, कल्पनाशीलता और भावुकता के स्थान पर स्पष्टता, सटीकता तथा संक्षिप्तता को महत्व दिया जाता है।

कार्यालयी हिन्दी का विकास

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रशासनिक कार्यों में अंग्रेजी का प्रभुत्व था। अंग्रेजी शासन की भाषा थी और अधिकांश सरकारी कार्य उसी में संपन्न होते थे। स्वतंत्रता के बाद संविधान निर्माताओं ने यह अनुभव किया कि लोकतांत्रिक शासन तभी सफल होगा जब प्रशासन जनता की भाषा में संचालित हो। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा नियम, 1976 के माध्यम से हिन्दी के प्रयोग को संस्थागत आधार प्रदान किया गया। इसके पश्चात विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएँ चलाई गईं। हिन्दी प्रशिक्षण, अनुवाद व्यवस्था, पारिभाषिक शब्दावली निर्माण तथा राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की स्थापना इसी दिशा में उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं।

कार्यालयी हिन्दी की आवश्यकता

कार्यालयी हिन्दी की आवश्यकता अनेक कारणों से अनुभव की जाती है। सबसे पहले यह प्रशासन और जनता के बीच की दूरी को कम करती है। जब सरकारी सूचनाएँ, आदेश और योजनाएँ नागरिकों की समझ में आने वाली भाषा में उपलब्ध होती हैं, तब प्रशासन अधिक प्रभावी बनता है। दूसरे, कार्यालयी हिन्दी लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करती है। लोकतंत्र में जनता सर्वोच्च होती है, इसलिए प्रशासन की भाषा भी जनसामान्य के अनुकूल होनी चाहिए। यदि प्रशासनिक कार्य किसी ऐसी भाषा में हों जिसे अधिकांश नागरिक न समझ सकें, तो शासन और जनता के बीच संवाद बाधित हो जाता है। तीसरे, हिन्दी राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होती है। भारत की भाषाई विविधता के बीच हिन्दी संपर्क भाषा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए कार्यालयी हिन्दी प्रशासनिक समन्वय को भी सशक्त बनाती है।

कार्यालयी हिन्दी की प्रमुख विशेषताएँ

1. **सरलता :** कार्यालयी हिन्दी का सबसे महत्वपूर्ण गुण उसकी सरलता है। प्रशासनिक भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे सामान्य शिक्षित व्यक्ति आसानी से समझ सके। अनावश्यक रूप से कठिन या दुरूह शब्दों का प्रयोग संप्रेषण में बाधा उत्पन्न करता है।
2. **स्पष्टता :**कार्यालयी लेखन में प्रत्येक वाक्य का अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। अस्पष्ट भाषा से भ्रम उत्पन्न हो सकता है और प्रशासनिक कार्य प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए कार्यालयी हिन्दी में अर्थ की स्पष्टता को विशेष महत्व दिया जाता है।
3. **निश्चितार्थता :**प्रशासनिक भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ निश्चित होने चाहिए। एक ही शब्द के अनेक अर्थ होने पर विवाद की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए कार्यालयी हिन्दी में ऐसे शब्दों का चयन किया जाता है जिनका अभिप्राय स्पष्ट और सर्वमान्य हो।
4. **संक्षिप्तता :** कार्यालयी लेखन में अनावश्यक विस्तार से बचा जाता है। कम शब्दों में अधिकतम जानकारी देना इसकी विशेषता है। इससे समय की बचत होती है और संप्रेषण अधिक प्रभावी बनता है।
5. **पारिभाषिकता :** आधुनिक प्रशासन विज्ञान, प्रौद्योगिकी, विधि, अर्थशास्त्र और प्रबंधन जैसे अनेक क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। इसलिए कार्यालयी हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। यह प्रशासनिक कार्यों की सटीकता सुनिश्चित करता है।
6. **वस्तुनिष्ठता :** कार्यालयी हिन्दी तथ्यों पर आधारित होती है। इसमें व्यक्तिगत विचारों, भावनाओं अथवा कल्पनाओं के लिए स्थान नहीं होता। इसका उद्देश्य निष्पक्ष और तथ्यपरक जानकारी प्रदान करना है।

कार्यालयी हिन्दी और साहित्यिक हिन्दी में अंतर

साहित्यिक हिन्दी और कार्यालयी हिन्दी दोनों के उद्देश्य अलग-अलग हैं। साहित्यिक हिन्दी में भावनाओं, अनुभूतियों और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति होती है, जबकि कार्यालयी हिन्दी का संबंध प्रशासनिक कार्यों से होता है। साहित्यिक भाषा में अलंकार, प्रतीक और व्यंजना का प्रयोग किया जाता है, जबकि कार्यालयी हिन्दी में अभिधात्मक और सीधी भाषा को प्राथमिकता दी जाती है।साहित्य का उद्देश्य पाठक को सौंदर्यानुभूति प्रदान करना होता है, जबकि कार्यालयी हिन्दी का लक्ष्य सूचना और आदेश का प्रभावी संप्रेषण होता है। इस प्रकार दोनों भाषिक रूपों की प्रकृति और प्रयोजन भिन्न होते हैं।

वर्तमान संदर्भ में कार्यालयी हिन्दी

डिजिटल युग में कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप निरंतर विकसित हो रहा है। ई-ऑफिस, ई-गवर्नेंस, ऑनलाइन पत्राचार तथा डिजिटल अभिलेखन के कारण हिन्दी का प्रयोग नई तकनीकों के साथ बढ़ रहा है। यूनिकोड तथा कम्प्यूटर अनुप्रयोगों ने हिन्दी के प्रयोग को और अधिक सरल बना दिया है। आज सरकारी वेबसाइटों, पोर्टलों तथा ऑनलाइन सेवाओं में हिन्दी का व्यापक उपयोग हो रहा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रमों ने भी हिन्दी के प्रशासनिक उपयोग को नई दिशा प्रदान की है। परिणामस्वरूप हिन्दी केवल पारंपरिक कार्यालयों तक सीमित नहीं रही, बल्कि डिजिटल प्रशासन की भी एक महत्वपूर्ण भाषा बन गई है।

कहा जा सकता है कि कार्यालयी हिन्दी भारतीय प्रशासन की एक सशक्त और प्रभावी भाषा है। यह शासन और जनता के मध्य संवाद स्थापित करने, प्रशासन को जनोन्मुख बनाने तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरलता, स्पष्टता, संक्षिप्तता, पारिभाषिकता और निश्चितार्थता इसके प्रमुख गुण हैं। वर्तमान वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के युग में भी कार्यालयी हिन्दी की प्रासंगिकता निरंतर बढ़ रही है। अत: इसके व्यापक प्रयोग, मानकीकरण और संवर्धन के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि प्रशासन अधिक पारदर्शी, प्रभावी और जनहितकारी बन सके।

11.5 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता-

अनुवाद की ज़रूरत केवल भारत तक सीमित नहीं रही, बल्कि दुनिया के लगभग हर देश में समय-समय पर इसकी आवश्यकता पड़ी है। इसका कारण यह है कि इतिहास में कई बार शासकों की भाषा आम जनता की बोली से अलग होती थी। ऐसे में शासन और जनता के बीच संवाद स्थापित करने के लिए अनुवाद अनिवार्य हो जाता था। भारत में भी सदियों से अनुवाद महत्वपूर्ण रहा है। मुस्लिम शासनकाल के दौरान और बाद में अंग्रेज़ों के शासन के समय, प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद की भूमिका अत्यंत आवश्यक थी। अंग्रेजी हुकूमत में निचले स्तर के कई कार्यालयों में काम देशी भाषाओं में होता थालेकिन उच्च प्रशासनिक अधिकारियों जैसे कलेक्टर, डिप्टी कमिश्नर या जिला मजिस्ट्रेट को भेजे जाने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी में अनुवाद करके प्रस्तुत किया जाता था। उच्च स्तरीय सरकारी कामकाज पूरी तरह अंग्रेज़ी में संचालित होता था लेकिन जनता से संबंधित सूचनाएँ स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध करवाई जाती थीं इसलिए निचली अदालतों और तहसीलों में हिंदी और उर्दू के अनुवादक नियुक्त किए जाते थे।

युद्धकाल में भी अनुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की गतिविधियों, रणनीतियों और घोषणाओं को समझने के लिए उनके दस्तावेज़ों, समाचारों और संदेशों का अनुवाद कराता रहा है। इसके विपरीत, अपनी बात को दूसरे देश की जनता तक पहुँचाने के लिए रेडियो प्रसारण, पर्चों, प्रचार सामग्री और संवाद के विभिन्न माध्यमों में अनुवाद का सहारा लिया गया है। प्रथम विश्व युद्ध के समय भी यह प्रक्रिया अपनाई गई थी और द्वितीय विश्व युद्ध में तो अनुवाद और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गया था। युद्ध समाप्ति के बाद भी अनुवाद की आवश्यकता कम नहीं हुई। व्यापारिक समझौते, संधियाँ, अंतर्राष्ट्रीय करार, देशों के बीच होने वाले प्रतिनिधि मंडलों के आदान-प्रदान, सांस्कृतिक परिचय और मित्रतापूर्ण संबंधों को मजबूत करने के प्रयास इन सब में अनुवाद अत्यंत आवश्यक साधन के रूप में काम आता है। शासन, युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय संबंध या सांस्कृतिक आदान-प्रदान हर स्तर पर अनुवाद मानव समाज के लिए अनिवार्य रहा है और आगे भी उसकी आवश्यकता बनी रहेगी।

समय के साथ भारतीय संसद में यह निर्णय लिया गया कि यदि सांसद हिंदी में प्रश्न पूछते हैं, तो उनके उत्तर भी हिंदी में ही उपलब्ध कराए जाएँ। पहले इन प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी में तैयार किए जाते थे और मंत्री द्वारा अनुमोदन के बाद उनका हिंदी अनुवाद किया जाता था। इसी तरह संसद सदस्यों द्वारा भेजे जाने वाले हिंदी पत्रों की संख्या भी लगातार बढ़ रही थी। परिणामस्वरूप मंत्रालयों के हिंदी अनुभाग या प्रकोष्ठ को दो दिशाओं में अनुवाद का कार्य करना पड़ता था। हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी। जैसे-जैसे अनुवाद का कार्य बढ़ता गया, वैसे-वैसे अनुवादकों और हिंदी अधिकारियों की आवश्यकता भी स्पष्ट होने लगी और सरकार ने अनुवाद संबंधी नियमित पदों तथा राजपत्रित हिंदी अधिकारियों के पदनामों का सृजन करना शुरू किया। फिर भी यह व्यवस्था मुख्य रूप से मंत्रालयों तक ही सीमित रही; जबकि संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में अनुवाद का कोई विशेष पद नहीं था। वहाँ अनुवाद की जरूरत पड़ने पर हिंदी जानने वाले कर्मचारियों की मदद से ही काम चलाया जाता था। अनुवाद की बढ़ती मांग ने हिंदी के प्रशासनिक उपयोग, अनुवाद पदों की वृद्धि और राजभाषा कार्यान्वयन के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मार्च 1961 में केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय के आधार पर जारी आदेश ने सरकारी अनुवाद कार्य के दायरे को काफी व्यापक कर दिया। इस आदेश के अनुसार गृह मंत्रालय से प्रकाशित सभी प्रपत्रों के शीर्षक द्विभाषिक हिंदी और अंग्रेजी में होने चाहिए, और राजपत्र के कई हिस्सों में प्रकाशित होने वाली अधिसूचनाएँ भी दोनों भाषाओं में ही छापी जानी अनिवार्य की गईं। चूँकि सरकार के अलग-अलग मंत्रालयों, विभागों और उनके अधीनस्थ कार्यालयों में उपयोग

किए जाने वाले फार्मों की संख्या बहुत अधिक होती है, साथ ही समय-समय पर इन फार्मों में संशोधन या नए फार्म तैयार किए जाते हैं, इसलिए उनके अनुवाद का कार्य निरंतर चलता रहता है।

इसी के साथ संविधान के अनुच्छेद 343(2) के अनुसार केंद्र सरकार के कामकाज में अंग्रेजी के प्रयोग की अनुमति प्रारंभ में केवल संविधान लागू होने के बाद 15 वर्षों तक ही थी। यदि संसद ने अनुच्छेद 343(3) के तहत कोई विधेयक पारित न किया होता, तो 26 जनवरी 1965 के बाद संघ सरकार का सारा काम केवल हिंदी में होना था। लेकिन संसद द्वारा 1963 का राजभाषा अधिनियम और उसमें 1967 में हुए संशोधन के अनुसार 26 जनवरी 1965 ई.के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था की गई। संशोधित अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत कई सरकारी कार्यों में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का समानांतर प्रयोग अनिवार्य घोषित है। परिणामस्वरूप केंद्र सरकार में द्विभाषिक व्यवस्था स्थापित है और यह स्थिति अभी अनिश्चितकाल तक बनी रहने वाली है।

11.6 अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के आधार-

अनुवाद की आवश्यकता समय के साथ लगातार बढ़ती जा रही है, क्योंकि आज का प्रशासनिक, सामाजिक, अंतरराष्ट्रीय, वैज्ञानिक और तकनीकी परिवेश बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक हो गया है। भारत जैसे बहुभाषी देश में तो अनुवाद एक अत्यंत जरूरी माध्यम है, क्योंकि यहाँ शासन-प्रशासन में हिंदी और अंग्रेजी के साथ-साथ अनेक भाषाएँ प्रयुक्त होती हैं। सरकारी आदेश, नियमावली, परिपत्र, अधिसूचनाएँ और राजपत्र आदि दो भाषाओं हिंदी और अंग्रेजी में प्रकाशित किए जाते हैं, जिसके कारण अनुवाद अत्यावश्यक बन जाता है। इसके अतिरिक्त संसद में हिंदी में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में देना, मंत्रालयों में द्विभाषी फार्मों का निर्माण, तथा विभागीय दस्तावेजों का दोनों भाषाओं में उपलब्ध होना भी अनुवाद की बढ़ती माँग को दर्शाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अनुवाद का महत्व तेजी से बढ़ा है, क्योंकि विदेशी प्रतिनिधिमंडलों के आगमन पर उनके विचारों को समझने और अपनी बात उन तक पहुँचाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। अंतरराष्ट्रीय संधियाँ, करार, व्यापारिक समझौते और राजनीतिक संवाद अक्सर कई भाषाओं में तैयार किए जाते हैं, जिससे सभी राष्ट्रों तक समान अर्थ पहुँच सके। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी तेज प्रगति के कारण दुनिया के विभिन्न देशों में शोध एवं आविष्कार अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित होते हैं। इन नवाचारों का लाभ अपने देश में पहुँचाने के लिए उनका अनुवाद करना अनिवार्य होता है।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3-

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि केंद्र सरकार के कामकाज मेंहिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग समान रूप से होता रहे। संविधान के अनुसार, 26 जनवरी 1965 के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की व्यवस्था इसी धारा के माध्यम से की गई। इस धारा के महत्वपूर्ण प्रावधान बताते हैं कि कई प्रकार के सरकारी दस्तावेज़ों को द्विभाषी रूप यानी हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार करना अनिवार्य है, ताकि देश के सभी भाषा-समुदायों तक प्रशासनिक सूचनाएँ स्पष्ट रूप से पहुँच सकें और संचार में कोई कठिनाई न आए।

धारा 3 के मुख्य बिंदु

1. अनिवार्य द्विभाषिकता- केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा जारी किए जाने वाले महत्वपूर्ण दस्तावेज़ जैसे- संकल्प, नियम, आदेश, अधिसूचनाएँ, रिपोर्टें, प्रेस के लिए सूचनाएँ, निविदाएँ, अनुबंध आदि एक साथ हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार किए जाने चाहिए।
2. अनिवार्य दस्तावेज़ों की सूची- धारा 3(3) के तहत निम्न दस्तावेज़ अनिवार्य रूप से दोनों भाषाओं में जारी किए जाते हैं- संकल्प, सामान्य आदेश, नियम और विनियम, अधिसूचनाएँ, प्रशासनिक रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियाँ, अनुबंध, करार, लाइसेंस, परमिट, निविदा संबंधी दस्तावेज़, संसद के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली सामग्री। इस सूची का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी अधिकारी या नागरिक आवश्यक जानकारी से वंचित न रहे।
3. अधिकारी की जिम्मेदारी- किसी भी दो-भाषी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का दायित्व है कि

दस्तावेज़दोनों भाषाओं में सही और समान अर्थ सहितउपलब्ध हों।

4. सेवा संबंधी मामले (धारा 3(4))- यदि कोई कर्मचारी चाहे कि उसके संबंध में जारी कोई आदेश- जैसे पदस्थापन, अवकाश, सेवा संबंधी नोटिस या अनुशासनात्मक कार्रवाई हिंदी या अंग्रेजी में से किसी एक भाषा मेंदिया जाए, तो विभाग को उसे उसी भाषा में उपलब्ध कराना अनिवार्य है।
5. प्रभावशीलता- धारा 3 के प्रावधान 26 जनवरी 1965 से लागू हुए, और इनके द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि हिंदी को प्रोत्साहन देते हुए भी अंग्रेजी का उपयोग अचानक समाप्त न हो। देश के अनेक गैर-हिंदी भाषी राज्यों से सुचारु संचार बनाए रखने के लिए यह द्विभाषिक व्यवस्था पूरी तरह आवश्यक है।

राजभाषा नियम, 1976 के प्रावधान-

राजभाषा नियम, 1976 का मुख्य उद्देश्य केंद्र सरकार के दफ्तरों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना और उसे एक सुव्यवस्थित रूप देना है। इन नियमों में राज्यों का भाषा-आधारित विभाजन, कार्यालयों के बीच पत्राचार की भाषा, दस्तावेज़ों का द्विभाषी स्वरूप, कर्मचारियों के लिए भाषा-संबंधी अधिकार और दायित्व आदि विषयों को स्पष्ट किया गया है। कुल मिलाकर इनका लक्ष्य सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और उसे नियंत्रित ढांचे के भीतर लागू करना है।

मुख्य प्रावधान

1. राज्यों का वर्गीकरण (नियम 3)- हिंदी के प्रयोग की स्थिति के आधार पर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों 'क', 'ख' और 'ग' में बाँटा गया है। 'क' क्षेत्रमें वे राज्य शामिल हैं जहाँ हिंदी व्यापक रूप से बोली जाती है, जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि।
2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्राचार (नियम 4)- मंत्रालय या विभाग आपस में पत्राचार करते समय हिंदी या अंग्रेजी दोनों में से किसी भी भाषा का प्रयोग कर सकते हैं। यदि किसी कार्यालय को कोई पत्र हिंदी में मिलता है, तो उसका उत्तर भी हिंदी में देना आवश्यक है यह नियम 5 है।
3. द्विभाषी दस्तावेजों का प्रयोग (धारा 3(3))- कुछ महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेज़—जैसे अधिसूचनाएँ, संकल्प, आदेश और रिपोर्ट हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार करना अनिवार्य है, ताकि सभी के लिए समझना आसान हो सके।
4. कर्मचारियों के लिए प्रावधान (नियम 10, 11)- कर्मचारी आवेदन या अपील हिंदी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में कर सकते हैं।

फाइलों पर टिप्पणियाँ भी कोई कर्मचारी अपनी सुविधा अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में लिख सकता है।

5. प्रवीण कर्मचारियों के लिए नियम 8(4))- सरकार कुछ कार्यालयों को ऐसे घोषित कर सकती है जहाँ हिंदी जानने वाले कर्मचारियों को सभी सरकारी कार्य जैसे- टिप्पण, प्रारूपण, पत्र लेखन केवल हिंदी में ही करने होंगे।
6. कार्यालय प्रमुख का उत्तरदायित्व (नियम 12)- प्रत्येक कार्यालय प्रमुख का दायित्व है कि वह अपने कार्यालय में राजभाषा अधिनियम और नियमों के सही पालन को सुनिश्चित करे और निगरानी की व्यवस्था बनाए।

11.7 प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था-

सरकारी अनुवाद कार्य की प्रकृति बहुत विविध होती है, क्योंकि जिन दस्तावेज़ों का अनुवाद किया जाता है, वे अलग-अलग विषयों, प्रारूपों और उद्देश्यों से जुड़े होते हैं। सरकारी मंत्रालय और विभाग पूरे देश में फैले हुए हैं और कई दफ़्तर विदेशों में भी कार्यरत हैं, इसलिए यह संभव नहीं कि सभी अनुवाद कार्य एक ही स्थान पर या एक ही संस्था द्वारा किए जाएँ। कुछ दस्तावेज़ों का अनुवाद तुरंत करना पड़ता है, कुछ नियमित प्रकृति के होते हैं, जबकि कुछ में विशेष विशेषज्ञता की आवश्यकता रहती है विशेषकर विधिक दस्तावेज़ या तकनीकी नियम-पुस्तकें जिनमें शब्दावली की एकरूपता बने रहना अत्यंत आवश्यक है। इन भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनुवाद की व्यवस्था ऐसी बनाई गई है कि विभिन्न प्रकार के अनुवाद कार्य अलग-अलग जिम्मेदार संस्थाओं में किए जाएँ। उदाहरण के

लिए, बहुत से अनुवाद कार्य केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में संपन्न होते हैं, जबकि विधिक और संसद-संबंधी दस्तावेज़ों का अनुवादविधायी विभाग के राजभाषा अनुभाग में किया जाता है। इसलिए विभिन्न संस्थाओं में किस प्रकार का अनुवाद होता है, इसकी जानकारी होना आवश्यक है।

हिंदी कक्ष-

आज लगभग सभी मंत्रालयों और सरकारी विभागों में हिंदी कक्ष स्थापित हैं। इन कक्षों का संचालन सामान्यत:हिंदी अधिकारी या सहायक निदेशक (राजभाषा)करते हैं। बड़े मंत्रालयों में यह जिम्मेदारी और उच्च स्तर के अधिकारियों जैसे वरिष्ठ हिंदी अधिकारीयाउप निदेशक (राजभाषा) को सौंपी जाती है। कुछ मंत्रालयों में तो निदेशक (राजभाषा) जैसे उच्च पद भी मौजूद हैं। इन अधिकारियों की सहायता के लिए वरिष्ठ अनुवादक और सहायक अनुवादक नियुक्त किए जाते हैं, जिनकी संख्या काम की मात्रा के अनुसार निर्धारित होती है। केंद्रीय सरकार के अधीनस्थ कार्यालयों में भी इसी प्रकार के राजभाषा संबंधित पद बनाए गए हैं। इसी तरह, सरकारी उपक्रमों, विभिन्न निगमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और सरकारी कंपनियों में भी अनुवाद तथा राजभाषा कार्यों की व्यवस्थित व्यवस्था है। यहाँ के हिंदी/राजभाषा कक्षों का संचालन आमतौर परप्रबंधक (राजभाषा), उप प्रबंधक (राजभाषा) या सहायक प्रबंधक (राजभाषा)करते हैं। कई संस्थानों में इससे भी ऊँचे स्तर के पद बनाए गए हैं। हिंदी कक्ष केवल अनुवाद करवाने तक सीमित नहीं हैं; वे सरकार की राजभाषा नीतिको लागू करने, उसके पालन की निगरानी करने और हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी निभाते हैं।

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो तथा राजभाषा विधायी खंड-

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग के अंतर्गत कार्य करने वालाकेंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, और विधि एवं न्याय मंत्रालय के विधायी विभाग का राजभाषा प्रकोष्ठ, केवल अपने-अपने मंत्रालयों का अनुवाद कार्य नहीं संभालते। इन दोनों संस्थाओं को केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों और कार्यालयों से विशेष प्रकार की अनुवाद सामग्री प्राप्त होती है। इन अनुवाद कार्यों को सुचारु रूप से पूरा करने के लिए इन संस्थानों में विभिन्न स्तर के पद मौजूद हैं जिनमें निदेशक, संयुक्त निदेशक, उप निदेशक, सहायक निदेशक, तथा उनके साथ कार्य करने वाले अनुवाद अधिकारी, वरिष्ठ अनुवादक और तकनीकी सहायक शामिल हैं। ये सभी मिलकर उच्च स्तर के अनुवाद कार्यों को संभालते हैं।

अनुवाद प्रशिक्षण की व्यवस्था-

अनुवाद कार्य अत्यंत जिम्मेदारी और विशेष कौशल मांगने वाला क्षेत्र है। प्रशासनिक, विधिक, तकनीकी और राजकीय दस्तावेज़ों का अनुवाद केवल भाषा-ज्ञान से नहीं होता, बल्कि विषय की समझ, शब्दावली की एकरूपता, विधिक संवेदनशीलता और प्रशासनिक प्रथाओं की जानकारी भी आवश्यक होती है। इन सभी क्षमताओं को विकसित करने के लिए सरकार और विभिन्न संस्थाओं ने अनुवाद प्रशिक्षण की संगठित व्यवस्था तैयार की है।

केंद्रीय सरकार द्वारा चलाए जा रहे केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का निर्माण भी इसी उद्देश्य से किया गया था कि सरकारी कर्मचारियों, अनुवादकों तथा अधिकारियों को नियमित रूप से अनुवाद कौशल का प्रशिक्षण दिया जा सके। यह ब्यूरो समय-समय पर संक्षिप्त अवधि (शॉर्ट-टर्म)और दीर्घ अवधि (लॉन्ग-टर्म) दोनों प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है, जिनमें अनुवाद की तकनीक, सरकारी शब्दावली, द्विभाषिक प्रारूप, रिपोर्ट-लेखन और प्रशासनिक भाषा की विशिष्टताएँ सिखाई जाती हैं।

इसके साथ ही विभिन्न मंत्रालयों/विभागों केहिंदी कक्ष एवं राजभाषा प्रकोष्ठ भी अपने कर्मचारियों के लिए अनुवाद संबंधी कार्यशालाएँ, उन्मुखीकरण कार्यक्रम और व्यावहारिक अभ्यास सत्र आयोजित करते हैं। सरकारी उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों और निगमों में भी राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अनुवाद प्रशिक्षण की अलग व्यवस्था होती है, ताकि कर्मचारियों को न केवल भाषा में दक्षता प्राप्त हो, बल्कि वे आधिकारिक दस्तावेजों का सटीक और मानक अनुवाद तैयार कर सकें।

wअपनी प्रगति जांचें

1. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 का मुख्य उद्देश्य क्या है?

2. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था की आवश्यकता क्यों होती है?
3. मंत्रालयों एवं विभागों में अनुवाद कार्य की देखरेख कौन करता है?
4. राजभाषा नियम, 1976 में राज्यों को कितने क्षेत्रों में वर्गीकृत किया गया है?
5. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था किस प्रकार सुनिश्चित की जाती है?

211.8 सारांश

- प्रशासनिक अनुवाद शासन-प्रणाली का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि इसके माध्यम से सरकारी नीतियाँ, आदेश, नियम, अधिसूचनाएँ और जनहित से जुड़े संदेश विभिन्न भाषाभाषी नागरिकों तक समान रूप से पहुँचते हैं। प्रशासनिक अनुवाद की सामग्री का स्तर विषय वस्तु की जटिलता, दस्तावेज़ की प्रकृति और उसके कानूनी या तकनीकी महत्व पर निर्भर करता है, इसलिए अनुवादक को विषय-संबंधी ज्ञान, संदर्भ की समझ और परिभाषित शब्दावली का सटीक उपयोग करना अनिवार्य होता है। भाषा का स्तर भी प्रशासनिक अनुवाद का महत्वपूर्ण पहलू है, जिसमें औपचारिकता, स्पष्टता, एकार्थिता और मानकीकृत शब्द चयन आवश्यक माना जाता है, ताकि अनुवादित दस्तावेज़ मूल पाठ के अनुरूप और त्रुटि रहित बने। दायित्व के स्तर पर अनुवादक और दस्तावेज़ जारी करने वाले अधिकारियों दोनों की बड़ी जिम्मेदारी होती है, क्योंकि अनुवाद की छोटी-सी त्रुटि भी नीतिगत निर्णयों, कानूनी अर्थों या प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भ्रम पैदा कर सकती है। इसी कारण प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता निरंतर बनी रहती है चाहे वह केंद्र राज्य पत्राचार हो, मंत्रालयों के बीच संचार, जनता तक सूचना पहुँचाना हो, या नीतिगत दस्तावेजों का द्विभाषी प्रकाशन। अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के पीछे संवैधानिक और विधिक कारण भी हैं।
- राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 के अनुसार संघ के कामकाज में हिंदी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा तथा कई महत्वपूर्ण दस्तावेजों को द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है। वहीं, राजभाषा नियम, 1976 ने राज्यों का क-ख-ग वर्गीकरण, पत्राचार की भाषा, हिंदी में प्राप्त पत्रों का हिंदी में जवाब, द्विभाषी दस्तावेजों का उपयोग, कर्मचारियों को हिंदी में आवेदन-टिप्पणी की सुविधा और प्रवीण कर्मचारियों द्वारा हिंदी में कार्य करने की अनिवार्यता जैसे स्पष्ट प्रावधानों के माध्यम से प्रशासनिक अनुवाद को व्यवस्थित रूप से विनियमित किया है। इन सभी बातों का समेकित परिणाम यह है कि प्रशासनिक अनुवाद केवल भाषाई कार्य न होकर शासन की पारदर्शिता, जवाबदेही, समावेशिता और दक्षता का आधार बन गया है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि अनुवाद के मानकीकरण, गुणवत्ता-नियंत्रण, तकनीकी प्रशिक्षण, विशेषज्ञता, प्रूफरीडिंग और डिजिटल संसाधनों के उपयोग को बढ़ावा दिया जाए, ताकि शासन के सभी दस्तावेज़ दोनों भाषाओं में समान रूप से विश्वसनीय, सटीक और प्रभावी रूप में उपलब्ध हो सकें।

K11.9 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)-

प्रश्न 1 का उत्तर : राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 का मुख्य उद्देश्य है- महत्वपूर्ण सरकारी दस्तावेजों में हिंदी और अंग्रेजी दोनों का अनिवार्य उपयोग सुनिश्चित करना।

प्रश 2 का उत्तर : प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था की आवश्यकता इसलिए होती है कि- भारत बहुभाषी देश है, केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कार्य निष्पादन के लिए अनुवाद व्यवस्था आवश्यक होती है, ताकि संचार स्पष्ट, सुलभ और सभी के लिए समझ योग्य बने।

प्रश्न 3 का उत्तर : मंत्रालयों/विभागों में हिंदी कक्ष या राजभाषा कक्ष स्थापित होते हैं, जिनके प्रभारी हिंदी अधिकारी, सहायक निदेशक (राजभाषा) या वरिष्ठ हिंदी अधिकारी होते हैं। इन्हीं के द्वारा अनुवाद कार्य और राजभाषा नीति का देख रेख किया जाता है।

प्रश्न 4 का उत्तर : राजभाषा नियम, 1976 में राज्यों को तीन क्षेत्रों 'क, ख और ग' में वर्गीकृत किया गया है।

प्रश्न 5 का उत्तर : प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था मंत्रालयों में हिंदी कक्ष, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो और विधायी विभाग का राजभाषा खंड मिलकर अनुवाद कार्य और इसकी गुणवत्ता सुनिश्चित करते हैं।

O11.10 अधिक जानने के लिए पढ़ें -

- सिंह, उ. (2015). प्रशासनिक हिंदी. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, क. (2012). हिंदी राजभाषा: स्वरूप और व्यवहार. दिल्ली: भूमिका प्रकाशन।
- श्रीवास्तव, म. (2010). भारतीय प्रशासन और राजभाषा नीति. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- अग्रवाल, र. (2018). सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग. दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।
- सिंह, वी. (2016). राजभाषा हिंदी: प्रशासनिक संदर्भ. लखनऊ: साहित्य भवन।
- चौधरी, प. (2014). भारतीय प्रशासन: सिद्धांत और भाषा-प्रयोग. जयपुर: विद्यार्थी प्रकाशन।
- त्रिपाठी, आर. (2011). हिंदी की प्रशासनिक रूपरेखा. दिल्ली: अयन प्रकाशन।
- मिश्र, एस. (2017). राजभाषा नियम और प्रशासनिक हिंदी. नई दिल्ली: अवधेश प्रकाशन।

M11.11 अभ्यास प्रश्न-

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता किन कारणों से बढ़ी है?
2. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 में अनुवाद से संबंधित कौन-सा प्रमुख प्रावधान निहित है?
3. राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार द्विभाषी दस्तावेजों का प्रयोग क्यों आवश्यक है?
4. अनुवाद व्यवस्था में केन्द्रीय मंत्रालयों की क्या भूमिका होती है?
5. प्रशासनिक आदेशों और सूचनाओं में भाषा की एकरूपता बनाए रखने में अनुवाद की क्या भूमिका है।

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता कैसे उत्पन्न हुई? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के आधारों की व्याख्या कीजिए और इसमें राजभाषा नीति की भूमिका बताइए।
3. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 के अंतर्गत हिंदी और अंग्रेजी के प्रयोग से अनुवाद कार्य पर क्या प्रभाव पड़ा? विस्तार से लिखिए।
4. राजभाषा नियम, 1976 के प्रमुख प्रावधानों को अनुवाद संबंधी दायित्वों के संदर्भ में समझाइए।
5. प्रशासनिक क्षेत्र में अनुवाद व्यवस्था की आवश्यकता का विस्तार से वर्णन कीजिए। भारत की बहुभाषिक स्थिति इस आवश्यकता को किस प्रकार प्रभावित करती है?

*** ***** ***

इकाई 12 जनसंचार माध्यमों का अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य
12.2 प्रस्तावना
12.3 जनसंचार माध्यमों का ऐतिहासिक विकास
12.4 जनसंचार माध्यमों के प्रकार
12.5 जनसंचार और जनमाध्यम से तापर्य
12.6 जनसंचार और जनमाध्यम की विशेषताएँ
12.7 जनसंचार और जनमाध्यम की भूमिका एवं चुनौतियाँ
12.8 आधुनिक जनसंचार माध्यमों का संक्षिप्त विवेचन
12.9 सारांश
12.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
12.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
12.12 अभ्यास प्रश्न

12.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- जनसंचार माध्यमों का एतिहासिक विकास किस प्रकार हुआ उससे परिचित होंगे।
- जनसंचार माध्यम के प्रकार को जानेंगे।
- जनसंचार और जनमाध्यम के अर्थ, स्वरुप आदि को समझ पाएंगे।
- इसकी विशेषताओं से परिचित होंगे।
- जनसंचार और जनमाध्यम की भूमिका एवं चुनौतियों को समझेंगे।
- आधुनिक जनसंचार माध्यमों से भी परिचय प्राप्त कर पाएंगे।

12.2 प्रस्तावना

मानव समाज एक संवादशील समाज है, जहाँ सूचना का आदान-प्रदान उसकी प्रगति, विकास और सांस्कृतिक संरचना का आधार है। इस संवाद और सूचना के आदान-प्रदान को सुचारु रूप से संचालित करने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जनसंचार माध्यम वे साधन हैं, जिनके माध्यम से एक संदेश या सूचना बड़े जनसमूह तक पहुँचाई जाती है। वर्तमान युग सूचना का युग है, जहाँ संचार साधनों ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र—राजनीति, शिक्षा, मनोरंजन, संस्कृति, व्यापार और सामाजिक चेतना—को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

जनसंचार माध्यमों के विविध स्वरूप जैसे—प्रिंट मीडिया (अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (रेडियो, टेलीविजन), डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया, वेबसाइट्स, पोडकास्ट्स) और सिनेमा आदि—ने समाज में सूचनाओं के प्रचार-प्रसार के तरीके को ही नहीं बदला, बल्कि सोचने और समझने की दिशा को भी नया मोड़ दिया है। आज एक क्लिक पर विद्र की घटनाएँ हमारे समक्ष उपस्थित हो जाती हैं।

निचे हम जनसंचार के विभिन्न माध्यमों के स्वरूप, उनकी प्रकृति, कार्यशैली और समाज में इसके क्या प्रभाव है इसे समझने का प्रयास करेंगे। आईए, अब जनसंचार और जनमाध्यम क्या है इसे जान लेते है।

12.3 जनसंचार माध्यमों का ऐतिहासिक विकास

जनसंचार माध्यमों का विकास प्राचीन काल से आधुनिक युग तक विभिन्न चरणों में हुआ है। प्रारंभिक समय में मौखिक परंपरा, गीत, लोककथाएँ, भजन, गाथाएँ और लोकनाट्य ही समाज को संदेश पहुँचाने के प्रमुख साधन थे, वहीं शासक वर्ग अपने आदेश शिलालेखों, स्तंभलेखों और दूतों के माध्यम से जनता तक पहुँचाता था। मध्यकाल में हस्तलिखित पांडुलिपियाँ, धार्मिक ग्रंथ, पत्र, लोक-नाट्य, कीर्तन, कव्वाली और मेलों के द्वारा संचार का कार्य हुआ। आधुनिक युग की शुरुआत मुद्रण कला के आविष्कार से हुई, जिसने सूचना प्रसार में क्रांति ला दी। भारत में 1780 में प्रकाशित हिक्की गजट से पत्रकारिता का प्रारंभ हुआ और समाचार पत्र स्वतंत्रता आंदोलन में जनजागरण का सशक्त साधन बने। 20वीं शताब्दी में रेडियो का उदय हुआ, जिसने समाचार, शिक्षा और मनोरंजन को घर-घर तक पहुँचाया। 1959 से टेलीविज़न ने जनसंचार को नया रूप दिया और 1982 में रंगीन प्रसारण के बाद इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी। सिनेमा का आरंभ 1913 में दादासाहेब फाल्के की राजा हरिश्चंद्र फिल्म से हुआ, जिसने सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोरंजन के क्षेत्र में क्रांति ला दी। 21वीं सदी में इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के आने से संचार का स्वरूप पूरी तरह बदल गया। सोशल मीडिया, ई-न्यूज़ पोर्टल, ब्लॉग और मोबाइल एप्स ने सूचना को वैश्विक, त्वरित और सहभागितापूर्ण बना दिया। इस प्रकार, जनसंचार माध्यमों की यात्रा मौखिक परंपरा और शिलालेखों से शुरू होकर आज डिजिटल मीडिया और इंटरनेट तक पहुँच चुकी है।

जनसंचार माध्यमों का ऐतिहासिक विकास को यदि प्राचीन से आधुनिक काल तक देखा जाए तो इसे अलग-अलग चरणों में निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता हैं-

क) प्राचीन काल

- प्रारंभ में संचार का मुख्य साधन मौखिक परंपरा थी।
- गीत, लोककथाएँ, गाथाएँ, भजन और लोकनाट्य जैसे माध्यमों से समाज को संदेश दिए जाते थे।
- राजाओं और शासकों के आदेश दूतों, ढोल-नगाड़ों और शिलालेखों के माध्यम से जनता तक पहुँचते थे।
- अशोक के शिलालेख और स्तंभलेख प्राचीन भारत में जनसंचार के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

ख) मध्यकाल

- इस काल में हस्तलिखित पांडुलिपियाँ, पत्र और धार्मिक ग्रंथ ज्ञान-वितरण का साधन बने।
- सूफी संतों और भक्ति आंदोलन के कवियों ने अपने भजनों और कविताओं से समाज को संदेश दिए।
- लोक-नाट्य, कीर्तन, कव्वाली और मेले सामाजिक संचार के महत्वपूर्ण रूप रहे।

ग) आधुनिक काल की शुरुआत - मुद्रण युग (15वीं सदी से आगे)

- 15वीं शताब्दी में गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रण कला (Printing Press) के आविष्कार ने संचार में क्रांति ला दी।
- भारत में 18वीं शताब्दी में अंग्रेज़ों के आगमन के बाद अखबारों की शुरुआत हुई।
- 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने हिक्की गजट (Bengal Gazette) नामक पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया।
- इसके बाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में भी समाचार पत्र निकले और स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेस ने बड़ी भूमिका निभाई।

घ) रेडियो युग (20वीं सदी की शुरुआत)

- 1927 में भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत हुई।
- 1936 में ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) की स्थापना हुई।
- समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और संगीत—सबका प्रमुख साधन रेडियो बना।
- द्वितीय विश्व युद्ध और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान रेडियो अत्यंत प्रभावशाली माध्यम साबित हुआ।

ङ) टेलीविज़न युग

- 1959 में दिल्ली से टेलीविज़न प्रसारण की शुरुआत हुई।
- 1982 एशियाई खेलों के समय भारत में रंगीन टीवी की शुरुआत हुई।
- मनोरंजन, समाचार और शैक्षिक कार्यक्रमों के कारण टीवी जनसंचार का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन गया।
- 1990 के दशक में उपग्रह चैनलों और निजी चैनलों के आने से टीवी की पहुँच और प्रभाव बढ़ा।

च) सिनेमा

- 1913 में दादासाहेब फाल्के ने राजा हरिश्चंद्र नामक पहली मूक फिल्म बनाई।
- इसके बाद भारतीय सिनेमा ने सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को स्वरूप देने का कार्य किया।
- आज सिनेमा न केवल मनोरंजन बल्कि सामाजिक संदेश, जनचेतना और विचारधारा का भी सशक्त माध्यम है।

छ) डिजिटल और इंटरनेट युग (21वीं सदी)

- इंटरनेट और मोबाइल तकनीक ने संचार की परिभाषा ही बदल दी।
- ई-मेल, वेबसाइट, ई-न्यूज़ पोर्टल, ऑनलाइन जर्नल, ब्लॉग और सोशल मीडिया (Facebook, WhatsApp, Twitter, YouTube आदि) नए जनसंचार माध्यम बने।
- डिजिटल मीडिया ने सूचना को तेज, सुलभ और वैद्रिक बना दिया।
- अब एकतरफा संचार की जगह द्विपक्षीय और सहभागितापूर्ण संचार का दौर है।

12.4 जनसंचार माध्यमों के प्रकार

जनसंचार माध्यमों को उनकी प्रकृति और तकनीक के आधार पर पाँच मुख्य वर्गों में बाँटा जा सकता है। सबसे पहले प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल मीडिया, लोक माध्यम और सोशल मीडिया। इन पाँच माध्यमों को हम निम्नलिखित रूप से समझ सकते हैं-

क) प्रिंट मीडिया- यह जनसंचार का सबसे पुराना और प्रभावशाली माध्यम है, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, जर्नल, पुस्तिकाएँ और पुस्तकें शामिल होती हैं। यह माध्यम विस्तृत और स्थायी जानकारी उपलब्ध कराता है तथा समाज को समाचार, विचार, विश्लेषण और ज्ञान प्रदान करता है। भारत में प्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन के समय जनजागरण और राष्ट्रवाद को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज भी प्रिंट मीडिया विश्वसनीयता और गहराई के कारण समाज, राजनीति और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण माना जाता है, हालाँकि डिजिटल माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता ने इसके सामने नई चुनौतियाँ भी खड़ी कर दी हैं।

ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया- इसमें मुख्यत: रेडियो और टेलीविज़न शामिल हैं, जो श्रव्य और दृश्य दोनों रूपों में जनसंचार के प्रभावशाली साधन हैं। रेडियो समाचार, संगीत, नाटक और शैक्षिक कार्यक्रमों का सरल व सस्ता माध्यम है, जबकि टेलीविज़न ध्वनि और चित्र के सम्मिलित रूप से अत्यधिक प्रभाव उत्पन्न करता है। भारत में रेडियो ने स्वतंत्रता आंदोलन और बाद में ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, वहीं टेलीविज़न ने मनोरंजन, शिक्षा और सामाजिक संदेश प्रसार को नई दिशा दी। आज उपग्रह और निजी चैनलों की वृद्धि ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को और भी सशक्त और बहुआयामी बना दिया है।

ग) डिजिटल मीडिया- डिजिटल मीडिया आधुनिक संचार का सबसे तीव्र और वैद्रिक स्वरूप है। इसमें इंटरनेट आधारित प्लेटफ़ॉर्म जैसे ई-पेपर, न्यूज़ पोर्टल, ब्लॉग, पॉडकास्ट और वेबसाइटें शामिल हैं, जो 24 घंटे त्वरित और इंटरैक्टिव सूचना उपलब्ध कराते हैं। यह माध्यम पाठ, ध्वनि, चित्र और वीडियो के मिश्रण से अधिक प्रभावशाली संचार करता है। डिजिटल मीडिया ने समाचारों को सीमाओं से मुक्त कर वैद्रिक स्तर पर पहुँचाया है, साथ ही आम नागरिक को भी सामग्री निर्माता और प्रसारक बना दिया है। हालाँकि, फेक न्यूज़ और सूचना की प्रामाणिकता इसके सामने बड़ी चुनौतियाँ हैं।

घ) लोक माध्यम- यह माध्यम जनसंचार का सबसे पुराना और पारंपरिक स्वरूप है, जो मौखिक परंपराओं और लोककला पर आधारित है। इसमें लोकगीत, लोकनाट्य, कठपुतली, कीर्तन, भजन, मेले और जात्रा जैसे माध्यम शामिल हैं। ये साधन विशेष रूप से ग्रामीण और अशिक्षित समाज तक संदेश पहुँचाने में प्रभावी रहे हैं, क्योंकि इनमें सरल भाषा, स्थानीय संस्कृति और मनोरंजन का सम्मिश्रण होता है। विकास योजनाओं, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक संदेशों के प्रसार में आज भी लोक माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ङ) सोशल मीडिया- यह आधुनिक युग का सबसे तेज़ और सहभागितापूर्ण जनसंचार माध्यम है। फेसबुक, ट्विटर (X), इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफ़ॉर्म इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यहाँ हर व्यक्ति केवल संदेश ग्रहणकर्ता ही नहीं बल्कि संदेश प्रेषक भी होता है, जिससे यह दो तरफ़ा संवाद का मंच बन गया है। सोशल मीडिया जनमत निर्माण, सामाजिक आंदोलनों, राजनीतिक अभियानों और वैद्रिक संपर्क का प्रभावी साधन है। हालाँकि, फेक न्यूज़, अफवाहें और साइबर सुरक्षा से जुड़ी समस्याएँ इसकी बड़ी चुनौतियाँ हैं।

12.5 जनसंचार एवं जनमाध्यम से तात्पर्य

मानव सभ्यता के विकास में संचार की महती भूमिका रही है। प्रारंभिक युग में जब मानव केवल संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से संवाद करता था, तब भी वह एक दूसरे से विचार साझा करने की कोशिश करता था। कालांतर में भाषा, लेखन और मुद्रण कला के विकास के साथ संचार ने न केवल तीव्रता प्राप्त की, बल्कि वह एक सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक शक्तिस्वरूप बन गया। विशेष रूप से जब संचार केवल दो व्यक्तियों तक सीमित न रहकर जनसमूह को संबोधित करने लगा, तो इसे जनसंचार कहा गया। इसी जनसंचार को सक्षम करने वाले साधनों को जनमाध्यम कहा जाता है।

12.5.1 जनसंचार से तात्पय

जनसंचार (Mass Communication) का अर्थ है - किसी सूचना, विचार, संदेश, ज्ञान या भावना को एक व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा बड़े जनसमूह तक एक साथ पहुँचाना। यह संप्रेषण एकतरफा भी हो सकता है और कभी-कभी बहुपरस्पर (इंटरैक्टिव) भी, विशेषत: आधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से।

जनसंचार के प्रमुख घटक हैं:

1. प्रेषक (Sender)-जो संदेश भेजता है।
2. संदेश (Message)-जो सामग्री प्रेषित की जाती है।
3. माध्यम (Medium)-जिसके द्वारा संदेश जनसमूह तक पहुँचता है।
4. प्रापक (Receiver)-वह जनसमूह जो संदेश को ग्रहण करता है।
5. प्रतिक्रिया (Feedback)-प्रापक की प्रतिक्रिया, जो संचार को पूर्ण बनाती है (डिजिटल मीडिया में विशेष रूप से स्पष्ट)।

जनसंचार का उद्देश्य न केवल सूचना देना होता है, बल्कि शिक्षित करना, मनोरंजन करना, जनमत बनाना और सामाजिक चेतना को जागृत करना भी होता है।

12.5.2 जनमाध्यम से तात्पय

जनमाध्यम (Mass Media) वे सभी साधन हैं, जिनके द्वारा संप्रेषण की प्रक्रिया को बड़े स्तर पर जनसमूह तक पहुँचाया जाता है। ये माध्यम ही संचार प्रक्रिया के वाहक होते हैं।

जनमाध्यमों को मुख्यत: निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है:

1. प्रिंट मीडिया (मुद्रित माध्यम)

- जैसे: अखबार, पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, पोस्टर, पैम्पलेट आदि
- विशेषता: स्थायित्व, गहराई से पढ़ने की सुविधा, दस्तावेजी प्रमाण

2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

- जैसे: रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा
- विशेषता: श्रव्य-दृश्य प्रभाव, व्यापक पहुँच, तत्काल संप्रेषण

3. नव-संचार माध्यम (New Media या डिजिटल मीडिया)

- जैसे: इंटरनेट, सोशल मीडिया (फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम), ब्लॉग, वेब पोर्टल, यूट्यूब आदि
- विशेषता: संवादात्मकता (इंटरैक्टिविटी), तात्कालिकता, वैश्विक पहुँच, लोकतांत्रिक स्वरूप

अपनी प्रगति जांचें

1. जनसंचार से आप क्या समझते है ?
2. क्या फेसबुक नव-संचार माध्यम का हिस्सा है ?
3. लोकतंत्र का चौथा स्तंभ किसे कहा जाता है ?
4. दो प्रिंट मीडिया का उदाहरण दीजिए ?
5. MOOCs का पूर्ण रूप क्या है?

12.6 जनसंचार और जनमाध्यम की विशेषताएँ

जनसंचार और जनमाध्यम आधुनिक युग की संचार प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग हैं। इनकी सहायता से समाज में सूचना, विचार, मनोरंजन और शिक्षण जैसे उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है। जनसंचार वह प्रक्रिया है जिसमें किसी संदेश को बड़े जनसमूह तक एक साथ पहुँचाया जाता है, जबकि जनमाध्यम वे उपकरण और साधन हैं जिनके द्वारा यह प्रक्रिया संभव होती है। आज के डिजिटल और वैद्रिक युग में जनमाध्यमों की भूमिका अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली हो गई है। इनके अनेक स्वरूप जैसे - प्रिंट मीडिया (अखबार, पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (रेडियो, टेलीविजन), और डिजिटल मीडिया (सोशल मीडिया, वेबसाइट्स) समाज को अनेक स्तरों पर प्रभावित कर रहे हैं। इनके प्रभाव और कार्यक्षमता को समझने के लिए उनकी प्रमुख विशेषताओं को समझना आवश्यक है।

1. व्यापक पहुँच (Massive Reach) :

जनमाध्यमों की सबसे बड़ी विशेषता इनकी व्यापक पहुँच है। ये ऐसे माध्यम हैं जो एक ही समय में लाखों-करोड़ों लोगों तक सूचना या विचार को पहुँचाने में सक्षम होते हैं। टेलीविजन चैनलों, समाचार पत्रों, रेडियो कार्यक्रमों और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों की मदद से कोई भी जानकारी अथवा संदेश विद्र के किसी भी कोने तक पहुँचाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक अंतरराष्ट्रीय समाचार चैनल किसी आपदा की जानकारी कुछ ही मिनटों में वैद्रिक दर्शकों तक पहुँचा सकता है। डिजिटल माध्यमों की पहुँच सीमाओं से परे है और इंटरनेट से जुड़े किसी भी व्यक्ति तक वह सूचना तुरन्त पहुँचा सकता है। यह विशेषता जनमाध्यमों को पारंपरिक संवाद के तरीकों से अलग और प्रभावशाली बनाती है।

2. तत्काल प्रभाव (Instant Impact) :

जनमाध्यमों की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता इनका तात्कालिक प्रभाव है। घटनाओं की जानकारी या समाचारों का प्रसारण वास्तविक समय में किया जा सकता है। इससे आम जनता को किसी भी घटना या परिस्थिति के बारे में तुरंत जानकारी मिलती है और वे उसी अनुसार प्रतिक्रिया भी दे सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, किसी प्राकृतिक आपदा के समय टेलीविजन और सोशल मीडिया के माध्यम से राहत कार्यों की स्थिति और सरकारी कदमों की जानकारी तुरंत आम लोगों तक पहुँचाई जा सकती है। इसी तरह, चुनाव परिणाम, खेल प्रतियोगिताओं, मौसम की चेतावनियाँ आदि भी तुरंत जनसमूह तक पहुँचती हैं। यह विशेषता जनसंचार को न केवल तेज बनाती है बल्कि जनहित के कार्यों में भी सहायक सिद्ध होती है।

3. लोकतांत्रिक स्वरूप (Democratic Nature) :

आधुनिक जनमाध्यम विशेष रूप से डिजिटल माध्यम, अपने लोकतांत्रिक स्वरूप के लिए जाने जाते हैं। सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्मों ने आम नागरिक को भी अपनी बात रखने, विचार व्यक्त करने और वैद्रिक संवाद में भाग लेने का अवसर प्रदान किया है। यह विशेषता जनसंचार को केवल एकपक्षीय संचार से बहुपक्षीय संवाद की ओर ले जाती है। अब केवल मीडिया संस्थान ही नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक स्वयं भी पत्रकार, लेखक, समीक्षक और विचारक बन सकता है। ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों ने जनतंत्र को सूचना और अभिव्यक्ति की नई ऊर्जा दी है। इससे लोकतांत्रिक मूल्यों को बल मिला है और सत्ता तथा समाज के बीच संवाद अधिक पारदर्शी हुआ है।

4. बहु-विषयक प्रभाव (Multidimensional Impact) :

जनमाध्यमों का प्रभाव केवल सूचना या समाचार तक सीमित नहीं है, बल्कि ये शिक्षा, राजनीति, समाज, विज्ञान, संस्कृति और मनोरंजन जैसे अनेक क्षेत्रों में भी अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

- शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन कक्षाएँ, शैक्षणिक पोर्टल और यूट्यूब चैनल्स ने शिक्षा को सुलभ और सस्ता बना दिया है।
- राजनीति में जनमाध्यम चुनाव प्रचार, जनमत निर्माण और नीति संवाद का प्रमुख माध्यम बन चुके हैं।
- सामाजिक सुधार की दिशा में मीडिया ने भ्रूण हत्या, दहेज, बाल विवाह, पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जनचेतना फैलाई है।
- मनोरंजन के रूप में सिनेमा, धारावाहिक, वेब सीरीज़ और लाइव स्ट्रीमिंग ने समाज को नए आयाम दिए हैं।
- विज्ञान और तकनीक की जानकारी भी मीडिया के माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचती है, जिससे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

जनसंचार और जनमाध्यमों की उपर्युक्त विशेषताएँ इन्हें आज के युग का एक प्रभावशाली और अपरिहार्य अंग बनाती हैं। इनकी पहुँच, गति, संवादात्मकता और बहुआयामी प्रभाव ने समाज के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। यदि इनका उपयोग सकारात्मक, नैतिक और जनहितकारी ढंग से किया जाए, तो यह न केवल सूचना प्रसार का माध्यम बन सकते हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, जनजागरण और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण के प्रमुख औजार भी सिद्ध हो सकते हैं।

12.7 जनसंचार और जनमाध्यम की भूमिका एवं चुनौतियाँ

आज का युग सूचना और संचार का युग है। जनसंचार और जनमाध्यम आधुनिक समाज की रीढ़ बन चुके हैं। ये न केवल जानकारी देने वाले माध्यम हैं, बल्कि सामाजिक चेतना, शिक्षा, लोकतांत्रिक सशक्तिकरण और मनोरंजन के क्षेत्र में भी इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जनसंचार के माध्यम जैसे—अखबार, टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा और डिजिटल प्लेटफॉर्म (जैसे सोशल मीडिया)—आज हर व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी रूप में जुड़े हुए हैं। ये साधन समाज के निर्माण, दिशा निर्धारण और जनहित के संरक्षण में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

12.7.1 जनसंचार और जनमाध्यम की भूमिका

जनसंचार और जनमाध्यम की निम्नलिखित विशेषताएँ है-

1. जनचेतना का निर्माण

जनमाध्यम समाज में व्याप्त बुराइयों, अंधविद्रास, अशिक्षा, लैंगिक भेदभाव, दहेज प्रथा, बाल विवाह जैसे मुद्दों पर जनचेतना फैलाने का कार्य करते हैं। विभिन्न अभियानों, वृत्तचित्रों, रिपोर्टिंग और चर्चाओं के माध्यम से ये माध्यम जनमत को जागरूक करते हैं और सामाजिक सुधार की दिशा में जनभागीदारी सुनिश्चित करते हैं। उदाहरणस्वरूप, 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसे अभियानों को मीडिया ने घर-घर पहुँचाया।

2. लोकतंत्र का चौथा स्तंभ

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, क्योंकि वह शासन के कार्यों की निगरानी करता है। यह सरकार की

नीतियों और निर्णयों की आलोचना, समीक्षा और विश्लेषण करके जनता की आवाज को मुखर करता है। जब कार्यपालिका, विधायिका या न्यायपालिका में कहीं चूक होती है, तब मीडिया ही वह मंच है जो जनहित में सवाल उठाता है और सत्ता को उत्तरदायी बनाता है। यही मीडिया की लोकतांत्रिक ताकत है।

3. शिक्षा और जानकारी का साधन

जनसंचार के माध्यम शिक्षा के प्रचार-प्रसार में सहायक हैं, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में। दूरदर्शन के ज्ञानदर्शन, रेडियो के 'रेडियो पाठशाला' या यूट्यूब के शैक्षणिक चैनलों के माध्यम से शिक्षा को सरल, सुलभ और सस्ता बनाया गया है। इसके अलावा, कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण और तकनीक जैसे विषयों की जानकारी भी जनमाध्यमों के जरिये आमजन तक पहुँचती है।

4. मनोरंजन

जनमाध्यम केवल गंभीर जानकारी ही नहीं, बल्कि मनोरंजन का भी प्रमुख स्रोत हैं। फिल्मों, धारावाहिकों, संगीत, हास्य कार्यक्रमों और खेलों के माध्यम से वे जनमानस को मानसिक राहत और तनावमुक्ति प्रदान करते हैं। अच्छा मनोरंजन व्यक्ति की सृजनात्मकता, सामाजिक समझ और भावनात्मक संतुलन को भी बढ़ाता है।

5. आपातकालीन सूचनाएँ

आपदा या संकट की स्थिति में जनमाध्यम तत्काल और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करने का सशक्त साधन हैं। भूकंप, बाढ़, महामारी, चक्रवात आदि जैसी आपात परिस्थितियों में समाचार चैनल, रेडियो और सोशल मीडिया पर प्रसारित सूचनाएँ जनजीवन को सुरक्षित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। हाल ही में कोविड-19 महामारी के दौरान स्वास्थ्य सुझावों और सरकारी दिशा-निर्देशों को मीडिया ने व्यापक रूप से प्रचारित किया।

12.7.2 जनसंचार और जनमाध्यम की चुनौतियाँ

1. सूचनाओं की प्रामाणिकता पर संकट

डिजिटल मीडिया और विशेषकर सोशल मीडिया के अत्यधिक विस्तार से फर्जी खबरों (Fake News) और अफवाहों का प्रसार एक गंभीर समस्या बन गया है। बिना सत्यापन के प्रसारित खबरें समाज में भ्रम, भय और हिंसा का कारण बन सकती हैं। यह मीडिया की विश्वसनीयता को भी प्रभावित करता है।

2. व्यावसायीकरण

जनमाध्यमों का एक बड़ा हिस्सा अब व्यावसायिक लाभ के लिए संचालित होता है। इस कारण कई बार समाचारों की जगह विज्ञापन, सनसनीखेज और भ्रामक सामग्री को तरजीह दी जाती है। इससे जनहित की खबरें हाशिये पर चली जाती हैं और मीडिया की प्राथमिकता बदल जाती है।

3. राजनीतिक पक्षधरता

कुछ जनमाध्यम राजनीतिक दलों या विचारधाराओं के प्रति पक्षपाती रुख अपना लेते हैं। निष्पक्ष और संतुलित पत्रकारिता की जगह जब मीडिया किसी एक विचारधारा का प्रचारक बन जाता है, तब उसका उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं रह जाता, बल्कि वह प्रचार का औजार बन जाता है। इससे जनमत को गलत दिशा में मोड़ा जा सकता है।

4. सूचनात्मक असमानता

ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अब भी इंटरनेट, बिजली और संचार के आधुनिक साधनों की पहुँच सीमित है। यह सूचनात्मक असमानता डिजिटल विभाजन (Digital Divide) को जन्म देती है, जिससे समाज का एक बड़ा हिस्सा सूचना क्रांति के लाभ से वंचित रह जाता है।

12.8 आधुनिक जनसंचार माध्यमों का संक्षिप्त विवेचन

जनसंचार माध्यमों का स्वरूप समय के साथ तेजी से परिवर्तित हुआ है। पहले जहाँ केवल मौखिक, मुद्रित और दृश्य माध्यमों तक जनसंचार सीमित था, वहीं आज तकनीक के विकास ने इसे वैश्विक, डिजिटल और बहुआयामी बना दिया है। आधुनिक जनसंचार माध्यम न केवल सूचना देने का कार्य करते हैं, बल्कि संवाद, शिक्षा, प्रचार, जनजागरण और

मनोरंजन जैसे उद्देश्यों की पूर्ति में भी अहम भूमिका निभाते हैं। इनका प्रभाव समाज, राजनीति, संस्कृति, और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

निम्नलिखित आधुनिक जनसंचार माध्यमों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत है

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media) :

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे रेडियो, टेलीविजन और सैटेलाइट चैनल सूचना और मनोरंजन का प्रभावशाली साधन हैं।

- रेडियो अब भी ग्रामीण क्षेत्रों में लोकप्रिय है, विशेषकर कृषि, स्वास्थ्य और शैक्षणिक जानकारी के लिए।
- टेलीविजन दृश्य और श्रव्य दोनों रूपों में कार्य करता है, जिससे यह समाचार, शिक्षा और मनोरंजन का सशक्त साधन बनता है।

2. डिजिटल मीडिया (Digital Media) :

डिजिटल युग में इंटरनेट आधारित माध्यमों ने जनसंचार की परिभाषा ही बदल दी है।

- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फ़ेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि अब व्यक्ति को वैद्रिक स्तर पर संवाद की शक्ति देते हैं।
- वेबसाइट्स, ब्लॉग्स, पोडकास्ट और वेब न्यूज़ पोर्टल सूचना को तेजी से और सुलभता से उपलब्ध कराते हैं।
- डिजिटल मीडिया इंटरएक्टिव है, यानी उपभोक्ता केवल श्रोता नहीं, बल्कि सक्रिय भागीदार भी होता है।

3. मोबाइल और ऐप्स आधारित संचार

स्मार्टफोन और मोबाइल ऐप्स जैसे WhatsApp, Telegram, News Apps आदि ने व्यक्तिगत और सामूहिक संचार को अत्यंत सरल और तेज बना दिया है। अब समाचार, वीडियो, ऑडियो और दस्तावेज कुछ ही क्षणों में एक स्थान से दूसरे तक पहुँचाए जा सकते हैं।

4. ऑनलाइन शिक्षा और वेबिनार

कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन कक्षाएँ, MOOCs, वेबिनार और ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स (जैसे: Coursera, BYJU's, SWAYAM) शिक्षा के आधुनिक साधन बन चुके हैं। ये ज्ञान के लोकतंत्रीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु :

MOOCs ऐसे ऑनलाइन पाठ्यक्रम होते हैं जो किसी भी व्यक्ति के लिए खुले होते हैं, और जिनमें एक साथ हज़ारों लोग भाग ले सकते हैं। ये पाठ्यक्रम अक्सर नि:शुल्क होते हैं या नाममात्र शुल्क पर उपलब्ध होते हैं।

5. ओटीटी (OTT) **प्लेटफॉर्म**

Netflix, Amazon Prime, Disney+ Hotstar जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्मों ने पारंपरिक टेलीविजन और सिनेमा को नई चुनौती दी है। ये दर्शकों को उनकी पसंद का कंटेंट कभी भी, कहीं भी देखने की सुविधा देते हैं। यह मनोरंजन का नवीनतम और लोकप्रिय माध्यम बन चुका है।

आधुनिक जनसंचार माध्यमों ने संवाद की परंपरागत सीमाएँ तोड़ दी हैं। अब संचार एकतरफा नहीं रहा, बल्कि सहभागिता पर आधारित हो गया है। हालांकि, इनके साथ कुछ चुनौतियाँ—जैसे फेक न्यूज़, निजता का उल्लंघन और सूचना का अतिरेक—भी जुड़ी हैं। बावजूद इसके, यदि इन माध्यमों का विवेकपूर्ण और नैतिक उपयोग किया जाए तो ये जनचेतना, लोकतंत्र और सामाजिक प्रगति के सशक्त साधन सिद्ध हो सकते हैं।

212.9 सारांश

- आधुनिक जनसंचार माध्यमों ने सूचना, शिक्षा, मनोरंजन और जनचेतना के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे टेलीविजन और रेडियो से लेकर डिजिटल माध्यमों जैसे सोशल मीडिया, वेबसाइट्स, मोबाइल ऐप्स और ओटीटी प्लेटफॉर्म तक, ये सभी साधन समाज को जागरूक, शिक्षित और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये न केवल त्वरित और व्यापक संचार संभव बनाते हैं, बल्कि आम व्यक्ति को

अभिव्यक्ति का मंच भी प्रदान करते हैं। ऑनलाइन शिक्षा, वेबिनार और डिजिटल संवाद से ज्ञान अधिक सुलभ हुआ है। हालांकि फर्जी खबरें, व्यावसायीकरण और सूचनात्मक असमानता जैसी चुनौतियाँ भी इनसे जुड़ी हैं, फिर भी यदि इनका विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए तो ये माध्यम लोकतंत्र, सामाजिक सुधार और विकास के सशक्त उपकरण सिद्ध हो सकते हैं।

K12.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न संख्या 1. का उत्तर जनसंचार का अर्थ है – किसी सूचना, विचार, संदेश, ज्ञान या भावना को एक व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा बड़े जनसमूह तक एक साथ पहुँचाना।

प्रश्न 2. का उत्तर हाँ।

प्रश्न 3. का उत्तर मीडिया को।

प्रश्न 4 का उत्तर अखबार, पत्रिका7

प्रश्न 5 का उत्तर– मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स 7

O12.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- कुमार, कृष्ण. (2013). जनसंचार: सिद्धांत और दृष्टिकोण. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- लाल, रतन. (2016). जनसंचार माध्यम. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
- धूल, सुभाष. (2018). संप्रेषण और जनसंचार. लखनऊ विद्द पुस्तकालय।
- शर्मा, जगदीश. (2014). जनसंचार: सिद्धांत, प्रक्रिया एवं प्रभाव. दिल्ली विद्या प्रकाशन।
- कुमार, अरविंद. (2017). संचार माध्यम और प्रौद्योगिकी. नई दिल्ली अनुभव प्रकाशन।
- शर्मा, रघुनन्दन प्रसाद। (2008). प्रयोजनमूलक हिन्दी. वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- पाण्डेय, कैलाश नाथ। (2014). प्रयोजनमूलक हिन्दी की नयी भूमिका. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन।
- तरूण, रमेश। (2007). प्रयोजनमूलक हिन्दी. नई दिल्ली अशोक प्रकाशन।
- श्रीवास्तव, अर्चना। (2014). प्रयोजनमूलक हिन्दी विविध आयाम. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- सोनटके, माधव। (2024). प्रयोजनमूलक हिन्दी. इलाहाबाद लोकभारती प्रकाशन।

M12.12 अभ्यास प्रश्न

क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. प्राचीन काल में प्रयुक्त होने वाले संचार माध्यम कौन-कौन से थे ?
2. प्रिंट मीडिया के अंतर्गत कौन-कौन से साधन आते हैं ?
3. जनसंचार किसे कहते हैं ?
4. जनमाध्यमों के दो उदाहरण लिखिए।
5. प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में क्या अंतर है ?
6. सोशल मीडिया जनसंचार के क्षेत्र में किस प्रकार प्रभाव डालता है ?

ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. जनसंचार माध्यमों के ऐतिहासिक विकास को प्राचीन से आधुनिक काल तक विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
2. जनसंचार के प्रमुख घटकों की विवेचना कीजिए एवं इसके प्रभावों का वर्णन कीजिए।
3. जनमाध्यमों की भूमिका लोकतंत्र में कैसे महत्वपूर्ण है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

4. जनसंचार माध्यमों की प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
5. जनसंचार और जान माध्यम दोनों के महत्व और चुनौतियों पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।
6. आधुनिक तकनीक और डिजिटल मीडिया ने जनसंचार की प्रक्रिया को किस प्रकार परिवर्तित किया है?

*** ***** ***

इकाई 13: बैंकों में अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य
13.2 प्रस्तावना
13.3 बैंकिंग अनुवाद का अर्थ एव बैंकिंग अनुवाद की परिभाषा
13.4 भारत में बैंकिंग का इतिहास और आधुनिक विकास
13.5 भारत में बैंकिंग प्रणाली: श्रेणियाँ: प्रशासन और भाषा का महत्व
13.6 बैंकिंग साहित्य की भाषा: स्वरूप, शब्दावली और अभिव्यक्ति
13.7 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद पूर्वापेक्षाएँ और आवश्यकताएँ
13.8 बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ
13.9 सारांश
13.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
13.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें
13.12 अभ्यास प्रश्न

13.1 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन से आप-

- बैंकिंग अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा के संबंध में जान सकेंगे।
- भारत में बैंकिंग का इतिहास और आधुनिक विकास से परिचित हो सकेंगे।
- भारत में बैंकिंग प्रणाली के श्रेणियाँ एव प्रशासन और भाषा का महत्व को समझेंगे।
- बैंकिंग साहित्य की भाषा के स्वरूप, शब्दावली और अभिव्यक्ति से अवगत होंगे।
- बैंकिंग साहित्य का अनुवाद पूर्वापेक्षाएँ और आवशाकातएं से परिचित होंगे।
- बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ के बारे में जानेंगे।

13.2 प्रस्तावना-

भाषा मनुष्य के विचारों को साझा करने का सबसे प्रभावी साधन है। किसी भी भाषा की सार्थकता इसी में निहित होती है कि वह अपने संदेश को स्पष्ट, सहज और प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सके। मनुष्य की भावनाएँ और विचार सबसे स्वाभाविक रूप से मौखिक भाषा में व्यक्त होते हैं किंतु जब वही विचार लिखित रूप में एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचाए जाते हैं तो अनुवाद की आवश्यकता उत्पन्न होती है। अनुवाद तभी सफल माना जाता है जब मूल भाषा का आशय लक्ष्य भाषा में बिना विकृति के संप्रेषित हो सके।

आज के समय में अनुवाद केवल साहित्य तक सीमित नहीं है बल्कि प्रशासन, विधि, विज्ञान, तकनीक और वाणिज्य जैसे व्यावहारिक क्षेत्रों में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। इन्हीं क्षेत्रों में बैंकिंग भी एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सीधा संबंध समाज के प्रत्येक वर्ग से है। बचत, ऋण, निवेश और वित्तीय लेन-देन के माध्यम से बैंक आम जनजीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। ऐसे में बैंकिंग क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा का स्पष्ट, सटीक और मानकीकृत होना अनिवार्य है।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत सरकारी क्षेत्र के बैंकों में हिंदी के प्रयोग और प्रचार पर विशेष बल दिया गया है। राजभाषा अधिनियम तथा वार्षिक राजभाषा कार्यक्रमों के कारण बैंकिंग कार्यों, दस्तावेज़ों और संचार में अनुवाद की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। बैंकिंग अनुवाद सामान्य अनुवाद से भिन्न होता है क्योंकि इसमें

विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली, निश्चित वाक्य संरचना और औपचारिक शैली का प्रयोग किया जाता है।

13.3 बैंकिंग अनुवाद का अर्थ एव बैंकिंग अनुवाद की परिभाषा-

बैंकिंग अनुवाद से आशय उस प्रक्रिया से है, जिसके अंतर्गत बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र से संबंधित तथ्यों, सूचनाओं, नियमों, शर्तों, दस्तावेज़ों तथा तकनीकी शब्दावली का एक भाषा से दूसरी भाषा में सटीक, स्पष्ट और अर्थपूर्ण रूपांतरण किया जाता है। इसमें केवल शब्दों का अनुवाद नहीं होता बल्कि बैंकिंग प्रणाली में प्रयुक्त अवधारणाओं, प्रक्रियाओं और कानूनी पक्षों को ध्यान में रखते हुए भाव एवं आशय का सही संप्रेषण किया जाता है।

बैंकिंग क्षेत्र में अनेक प्रकार के दस्तावेज़ जैसे- खाता खोलने के प्रपत्र, ऋण एवं निवेश से संबंधित कागजात, बैंक परिपत्र, अधिसूचनाएँ, वित्तीय विवरण, ऑडिट रिपोर्ट, चेक, ड्राफ्ट, पासबुक प्रविष्टियाँ तथा डिजिटल बैंकिंग सामग्री (वेबसाइट, मोबाइल ऐप, ई-मेल इत्यादि) प्रयुक्त होती हैं। इन सभी का अनुवाद करते समय तकनीकी शुद्धता, विधिक सटीकता और मानक शब्दावली का प्रयोग अत्यंत आवश्यक होता है।

भारत जैसे बहुभाषी देश में बैंकिंग अनुवाद का विशेष महत्व है, क्योंकि विभिन्न भाषा-भाषी ग्राहक बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करते हैं। ऐसे में बैंकिंग अनुवाद ग्राहकों और बैंक के बीच प्रभावी संचार का माध्यम बनता है। इसके माध्यम से ग्राहक बैंकिंग नियमों, शर्तों और प्रक्रियाओं को अपनी भाषा मंय आसानी से समझ पाते हैं, जिससे भ्रम और गलतफहमी की संभावना कम हो जाती है।

इस प्रकार बैंकिंग अनुवाद वह सशक्त माध्यम है जो बैंकिंग व्यवस्था को सरल, पारदर्शी और जनसुलभ बनाता है तथा बैंक और ग्राहक के बीच विद्वास और समझ को मजबूत करता है। बैंकिंग अनुवाद वह विशिष्ट अनुवाद प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र से संबंधित तकनीकी, विधिक और प्रशासनिक पाठ्य-सामग्री का एक भाषा से दूसरी भाषा में इस प्रकार रूपांतरण किया जाता है कि मूल पाठ का अर्थ, आशय, कानूनी वैधता और तकनीकी सटीकता पूर्णत: सुरक्षित रहे। इसमें केवल भाषिक रूपांतरण ही नहीं, बल्कि बैंकिंग प्रणाली, वित्तीय नियमों, आर्थिक अवधारणाओं तथा मानकीकृत शब्दावली की गहन समझ भी आवश्यक होती है।

बैंकिंग अनुवाद के अंतर्गत बैंक परिपत्र, अधिसूचनाएँ, खाता विवरण, ऋण दस्तावेज़, वित्तीय विवरण, ऑडिट रिपोर्ट, बीमा एवं निवेश संबंधी कागजात तथा डिजिटल बैंकिंग सामग्री का अनुवाद किया जाता है। इस प्रकार का अनुवाद अत्यंत संवेदनशील होता है, क्योंकि किसी भी शब्दगत या भावगत त्रुटि से आर्थिक हानि अथवा कानूनी विवाद उत्पन्न हो सकता है।

भोलानाथ तिवारी के अनुसार-अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसमें स्रोत भाषा के भावों को लक्ष्य भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि अर्थ और प्रभाव दोनों सुरक्षित रहें।

इस परिभाषा के संदर्भ में बैंकिंग अनुवाद को वित्तीय एवं तकनीकी क्षेत्र में भाव और प्रभाव की रक्षा करने वाला अनुवाद कहा जा सकता है।

नाइडा के अनुसार- Translation consists in reproducing in the receptor language the closest natural equivalent of the source language message.

बैंकिंग अनुवाद में यह 'निकटतम समतुल्य' (closest natural equivalent) अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि बैंकिंग शब्दावली का सटीक समतुल्य ही विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है।

डॉ. नगेंद्र के मतानुसार-

तकनीकी अनुवाद में शब्दों की अपेक्षा विषय-वस्तु और संदर्भ की शुद्धता अधिक महत्वपूर्ण होती है। बैंकिंग अनुवाद तकनीकी अनुवाद का ही एक रूप है, जिसमें संदर्भ और विषय की शुद्धता सर्वोपरि होती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि बैंकिंग अनुवाद वह व्यवस्थित एवं तकनीकी प्रक्रिया है, जिसमें बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं, दस्तावेज़ों और नियमों का एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थपूर्ण, सटीक, विधिसम्मत एवं मानकीकृत रूपांतरण किया जाता है, ताकि संचार में स्पष्टता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनी रहे।

बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य -

1. अर्थ की सटीकता बनाए रखना

बैंकिंग अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य यह है कि स्रोत भाषा में निहित अर्थ, भाव और आशय लक्ष्य भाषा में पूर्णत: सुरक्षित रहें। बैंकिंग दस्तावेज़ों में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द वित्तीय और कानूनी दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है, अत: अनुवाद में किसी प्रकार की अस्पष्टता या भ्रांति नहीं होनी चाहिए।

2. तकनीकी एवं मानक शब्दावली का संरक्षण

बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र में प्रचलित मानकीकृत तकनीकी शब्दावली का सही प्रयोग करना है, ताकि दस्तावेज़ों की प्रामाणिकता बनी रहे और अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय मानकों का पालन हो सके।

3. ग्राहकों तक जानकारी को सरल बनाना

भारत जैसे बहुभाषी देश में बैंकिंग अनुवाद का एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि विभिन्न भाषाओं के ग्राहक बैंकिंग नियमों, शर्तों और प्रक्रियाओं को अपनी भाषा में सरलता से समझ सकें। इससे बैंकिंग सेवाएँ अधिक जनसुलभ और पारदर्शी बनती हैं।

4. कानूनी एवं वित्तीय जोखिम को कम करना

बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य बैंक और ग्राहक दोनों को संभावित कानूनी विवादों एवं वित्तीय हानि से बचाना है। सटीक अनुवाद गलत व्याख्या की संभावना को कम करता है और दस्तावेज़ों की कानूनी वैधता सुनिश्चित करता है।

5. प्रभावी संचार स्थापित करना

बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य बैंक, सरकारी संस्थाओं, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और ग्राहकों के बीच प्रभावी एवं सुचारु संचार स्थापित करना है। इससे बैंकिंग व्यवस्था अधिक संगठित और विद्रसनीय बनती है।

6. वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना

स्थानीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग सामग्री का अनुवाद करने का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को बैंकिंग प्रणाली से जोड़ना है। इससे वित्तीय साक्षरता और समावेशन को बढ़ावा मिलता है।

7. अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग में सहूलियत

अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन, विदेशी निवेश और वैश्विक बैंकिंग में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग होता है। बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य विभिन्न देशों और भाषाओं के बीच समान समझ और विद्रास स्थापित करना है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बैंकिंग अनुवाद का उद्देश्य केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि बैंकिंग व्यवस्था को स्पष्ट, सुरक्षित, पारदर्शी और जनहितकारी बनाना है। यह बैंक और ग्राहक के बीच सेतु का कार्य करता है और आधुनिक बैंकिंग प्रणाली की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

13.4 भारत में बैंकिंग का इतिहास और आधुनिक विकास-

भारत में बैंकिंग का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। भले ही आज हम आधुनिक बैंकिंग की सुविधाओं से परिचित हैं, परंतु प्राचीन काल में भी धन का संचय, ऋण देना, जमा राशि का प्रबंधन और ब्याज लेना आम व्यवहार था। हमारे यहाँ पूँजी, ऋण, जमा, ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज जैसी शब्दावली आज की तरह ही उस समय भी प्रचलित थी। इसका प्रमाण हमें वैदिक ग्रंथों, महाकाव्यों और स्मृतियों में मिलता है। भारतीय समाज में अर्थ और धन का महत्व अत्यंत प्राचीन काल से माना गया। आचार्य भर्तृहरि ने कहा था, सर्वे गुणा: कांचनम् आश्रयन्ते, अर्थात सभी गुण धन या ऐद्रर्य पर आश्रित होकर ही पूर्णता पाते हैं। इसी दृष्टिकोण से स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय समाज में धन का महत्व केवल व्यक्तिगत समृद्धि के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक सम्मान और कार्यशीलता के लिए भी अत्यंत आवश्यक था।

वैदिक काल में ऋण देने और लेने का प्रचलन था। ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है कि ऋण पर आठवाँ या सोलहवाँ भाग ब्याज के रूप में लिया जाता था। यदि ऋण समय पर न लौटाया जाता, तो ब्याज वसूला जाता था। रामायण और महाभारत काल में बैंकिंग व्यवसाय और अधिक विकसित हुआ। महाजन, जो धन-संपत्ति के प्रबंधक थे,

जनता से जमा राशि लेते और जमानती या बेजमानती ऋण प्रदान करते थे। संकट के समय वे राजाओं को ऋण भी उपलब्ध कराते थे। स्मृति काल में वैश्यों को ब्याज का व्यवसाय सौंपा गया। महाजन वे कार्य करते थे, जो आज के बैंक करते हैं—जैसे कि चल और अचल संपत्ति को गिरवी रखना, मुद्रा का प्रबंधन करना, विभिन्न भागों में मुद्रा परिवर्तन करना और जनता से जमा राशि का संचालन करना। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में ऋण, ब्याज और मुद्रा के आदान-प्रदान का विस्तृत विवरण मिलता है। प्राचीन भारत में नगर सेठ और जगत सेठ की प्रतिष्ठा अत्यंत अधिक थी। मुगल काल में नगर सेठों को राज्य की ओर से राजस्व वसूलने का अधिकार भी प्राप्त था। यूरोप के एक यात्री फ्रांसीसी बर्नियर ने लिखा कि यहूदी बैंकर भारतीय बैंकरों की तुलना में फीके पड़ जाते हैं।

यूरोप में बैंकिंग और बैंक शब्द की उत्पत्ति-

यूरोप में बैंकिंग की शुरुआत इटली से हुई। भूमध्य सागर के तट पर स्थित वेनिस नगर में सेंट मार्क चौक पर यहूदी साहूकार लकड़ी की बेंचों पर मुद्रा रखते और लेन-देन करते थे। इतालवी भाषा में बेंच को %बांका% कहा जाता था, जिससे अंग्रेज़ी शब्द %बैंक% उत्पन्न हुआ। येरूशलम के उपासना गृहों में भी मुद्रा परिवर्तन और वित्तीय लेन-देन का उल्लेख मिलता है। उपासना गृहों के पुजारी वित्तीय एजेंट के रूप में कार्य करते थे। इससे स्पष्ट है कि बैंकिंग केवल भारत या यूरोप तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि प्राचीन सभ्यताओं में भी विकसित थी।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1.बैंकिंग अनुवाद से आशय क्या है ?

प्रश्न 2.बैंकिंग क्षेत्र में किस प्रकार के दस्तावेज होते है ?

प्रश्न 3.भारत में बैंकिंग अनुवाद की क्या महत्वता है ?

प्रश्न 4.बैंकिंग अनुवाद किस तरह की प्रक्रिया है ?

प्रश्न 5.बैंकिंग अनुवाद में अर्थ की सटीकता का से आप क्या समझते है?

भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरुआत 18वीं शताब्दी में हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंबई और कलकत्ता में एजेंसी हाउस स्थापित किए। ये संस्थाएं व्यापारिक कार्य करने के साथ-साथ जनता की जमा राशियों का संचालन करती थीं। इसके बाद प्रेसीडेंसी बैंक की स्थापना हुई, जिसे 1921 में मिलाकर इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया बनाया गया। 1955 में इसे अधिनियम के तहत भारतीय स्टेट बैंक में परिवर्तित किया गया। स्टेट बैंक समूह में अब छह प्रमुख बैंक शामिल हैं: स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, पटियाला, बीकानेर एवं जयपुर, मैसूर, सौराष्ट्र और हैदराबाद। स्वतंत्रता से पूर्व बैंकिंग केवल संपन्न वर्ग के लिए उपलब्ध थी। आम जनता की पहुँच वहां तक नहीं थी। बैंकों की शाखाएँ शहरी इलाकों में ही थीं और ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत कम। कृषि, लघु उद्योग और अन्य जरूरतमंद क्षेत्रों को ऋण मिलना कठिन था। इसे क्लास बैंकिंग कहा गया।

बैंकिंग का राष्ट्रीयकरण-

सरकार ने इस असमानता को देखते हुए 19 जुलाई 1969 को 14 बड़े बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। इनमें इंडियन ओवरसीज़ बैंक, इलाहाबाद बैंक, केनरा बैंक, देना बैंक, पंजाब नेशनल बैंक आदि शामिल थे। बाद में 15 अप्रैल 1980 को 6 और बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ। राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों का उद्देश्य केवल मुनाफा कमाना नहीं रहा, बल्कि आम जनता तक वित्तीय सेवाएँ पहुँचाना भी बन गया। समाज के सभी वर्ग बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाने लगे। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में बैंक शाखाएँ खुलीं और कृषि तथा लघु उद्योगों को ऋण मिलने लगा। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) और उसकी भूमिका भारतीय रिजर्व बैंक देश का केंद्रीय बैंक है और सभी बैंकों का नियामक है। इसका गठन भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 के तहत हुआ। इसका उद्देश्य था-

- बैंक नोटों के जारीकरण पर नियंत्रण।
- देश में मौद्रिक स्थायित्व बनाए रखना।
- देश की मुद्रा और साख प्रणाली का संचालन।

रिजर्व बैंक के प्रमुख कार्य हैं-

- बैंकिंग लाइसेंस देना।
- बैंक नोट जारी करना और मौद्रिक नीति लागू करना।
- सरकारी और निजी बैंकों के लिए बैंकर के रूप में कार्य करना।
- अनुसूचित बैंकों की नकद आरक्षित निधि रखना।
- अंतिम उपाय के रूप में उधार देना।
- विदेशी मुद्रा और विदेशी आरक्षित निधि का प्रबंधन।
- बैंकों और वित्तीय संस्थाओं की निगरानी।

भारतीय रिजर्व बैंक ने 1 जनवरी 1949 से देश के नियंत्रण वाले केंद्रीय बैंक के रूप में कार्य शुरू किया।

आधुनिक बैंकिंग सेवाएँ-

आज के बैंक केवल जमा और ऋण तक सीमित नहीं हैं। उन्होंने अपनी सेवाओं का दायरा अनेक क्षेत्रों में विस्तारित कर दिया है।

- ऋण और जमा प्रबंधन - व्यक्तिगत, कृषि, शिक्षा, लघु उद्योग और आवास ऋण।
- प्रतिभूतियों का व्यापार - स्टॉक, डिबेंचर, शेयर आदि।
- विनिमय बिल और ड्राफ्ट - अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू व्यापार में।
- सुरक्षित जमा वॉल्ट - मूल्यवान वस्तुओं की सुरक्षा।
- विदेशी मुद्रा का लेन-देन - यात्रा और व्यापार के लिए।
- स्वयं सहायता समूहों और गरीब वर्ग को ऋण - वित्तीय समावेशन।
- नो फ्रिल खाते - बिना न्यूनतम शेष राशि वाले खाते, ग्रामीण और गरीब वर्ग के लिए।
- अन्य वित्तीय उत्पाद (थर्ड पार्टी प्रॉडक्ट) - बीमा, म्युचुअल फंड आदि का वितरण।

बैंकिंग का समाज पर प्रभाव-

बैंकों ने समाज के उत्थान में भी योगदान दिया है। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और लघु उद्योगों में ऋण और निवेश के माध्यम से लोगों की मदद कर रहे हैं।आज वाणिज्य और उद्योग बैंकिंग के बिना संभव नहीं हैं। औद्योगिक इकाइयों, कल-कारखानों और राष्ट्र निर्माण से जुड़े परियोजनाओं में बैंकों का योगदान महत्वपूर्ण है।बैंकों ने आधुनिक वित्तीय उपकरणों जैसे कि क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग के माध्यम से समाज की आर्थिक गतिविधियों को सरल और तेज़ किया है।

भारतीय बैंकिंग का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक निरंतर विकसित हुआ। प्रारंभिक ऋण और जमा से लेकर आधुनिक बैंकिंग सेवाओं और वित्तीय समावेशन तक, बैंकों ने समाज और राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई है। आज बैंकिंग केवल आर्थिक साधन नहीं, बल्कि समाज और देश के विकास का महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुकी है।

13.5 भारत में बैंकिंग प्रणाली: श्रेणियाँ: प्रशासन और भाषा का महत्व-

बैंकिंग व्यवस्था किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का आधार है। यह न केवल पूंजी संचय और ऋण वितरण का माध्यम है, बल्कि समाज के हर वर्ग को आर्थिक सेवाएँ उपलब्ध कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमारे देश में बैंकिंग का आधुनिक स्वरूप ब्रिटिश शासन के दौरान विकसित हुआ। प्रारंभ में बैंकों का कार्यक्षेत्र सीमित था और उनके दस्तावेज अंग्रेजी में होते थे। समय के साथ बैंकिंग व्यवस्था में बदलाव आया, विशेषकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद। आज बैंकिंग प्रणाली में न केवल आर्थिक लेन-देन, बल्कि ग्राहकों की सुविधा, प्रशासनिक प्रक्रियाएँ और भाषा का उचित प्रयोग भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। इससे हम बैंकिंग की प्रमुख श्रेणियों, उनके प्रशासनिक ढाँचे और भाषा के महत्व पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. बैंकों की प्रमुख श्रेणियाँ-

बैंकों का मुख्य कार्यक्षेत्र आर्थिक गतिविधियाँ हैं। उनके कार्यकलापों के आधार पर बैंकों को मुख्यत: दो प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1.1 वाणिज्यिक बैंक-

वाणिज्यिक बैंक वे बैंक हैं जो आम जनता, उद्योग और व्यापारियों को सामान्य बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं। इनमें राष्ट्रीयकृत बैंक और निजी क्षेत्र के बैंक शामिल हैं।

राष्ट्रीयकृत बैंक-

ØðÕñ¤ Âéèì Ùèâ ðàÚUæéÚU ÖæSÌæ×ß ×ðåÌ ðæDÍ æÚUÙæ ÕÇÜ° , ÒæéUÙæØSÌæÙÕñ¤(SBI), पंजाब नेशनल बैंक (PNB) आदि। इन बैंकों का मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं, बल्कि देश के सभी हिस्सों में बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराना है।

निजी क्षेत्र के बैंक-

ये बैंक निजी स्वामित्व में होते हैं और उन्हें सरकार द्वारा सीधे नियंत्रित नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए, एक्सिस बैंक, कर्नाटक बैंक, एचडीएफसी बैंक आदि। निजी बैंक मुख्य रूप से लाभ के उद्देश्य से कार्य करते हैं, लेकिन ग्राहक सेवा और सुविधा के स्तर पर प्रतिस्पर्धा के कारण उनकी भूमिका भी समाज में महत्वपूर्ण हो गई है। वाणिज्यिक बैंकों की सेवाओं में जमा, ऋण, चालू और बचत खाता, ओवरड्राफ्ट सुविधा, और ऑनलाइन बैंकिंग जैसी सुविधाएँ शामिल हैं। इनके माध्यम से उद्योगों को पूंजी मिलती है और व्यक्तियों के वित्तीय लेन-देन सुगम बनते हैं।

1.2 विकास बैंक-

विकास बैंक किसी विशेष क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए प्रतिबद्ध रहते हैं। ये बैंक न केवल पूंजी उपलब्ध कराते हैं, बल्कि तकनीकी मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता भी प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (IDBI) औद्योगिक क्षेत्र के विकास में वित्तीय सहयोग प्रदान करता है।

नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट (NABARD) कृषि और ग्रामीण विकास में सहायता करता है।

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) लघु उद्योगों के लिए ऋण और अन्य वित्तीय सेवाएँ प्रदान करता है।

हाउसिंग डेवलपमेंट फाइनेंस कॉरपोरेशन (HDFC): आवास क्षेत्र में वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है।

विकास बैंक विशेष परियोजनाओं या क्षेत्रीय विकास कार्यक्रमों को वित्तीय सहायता देकर देश की समग्र आर्थिक प्रगति में योगदान देते हैं। इन दोनों श्रेणियों के बैंकों के बीच मुख्य अंतर यह है कि वाणिज्यिक बैंक आम जनता और उद्योग के लिए सामान्य सेवाएँ प्रदान करते हैं जबकि विकास बैंक विशेष आर्थिक उद्देश्यों और क्षेत्रों के लिए कार्यरत होते हैं।

2. बैंकों का प्रशासनिक ढाँचा-

बैंकिंग प्रशासन का संगठनात्मक ढाँचा उस बैंक की व्यावसायिक योजना और मिशन पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, जब भारत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ, तो मुख्य उद्देश्य था देश के कोने-कोने में बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाना और समाज के हर वर्ग को बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराना।

2.1 त्रिस्तरीय प्रशासनिक ढाँचा-

भारतीय बैंकों में सामान्यत: तीन स्तरों का प्रशासनिक ढाँचा होता है।

शाखाएँ यह सबसे निचला स्तर है जहाँ ग्राहक और बैंक का प्रत्यक्ष संबंध होता है।

अंचल/क्षेत्र/मंडल कार्यालय: यह स्तर शाखाओं के संचालन और निगरानी का कार्य करता है। प्रत्येक मंडल में लगभग 50-100 शाखाएँ होती हैं।

प्रधान कार्यालय (Head Office)-यह सबसे उच्च स्तर है जो बैंक की नीति, दिशा और प्रशासनिक नियंत्रण तय करता है। कुछ बड़े बैंकों जैसे कि भारतीय स्टेट बैंक में अतिरिक्त स्तर होता है जिसे स्थानीय प्रधान कार्यालय कहा जाता है। निदेशक मंडल बैंक का सर्वोच्च प्रबंधन करता है। इसमें भारत सरकार के वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अंशकालिक निदेशक के रूप में शामिल किया जाता है।

2.2 शाखाओं का वर्गीकरण-

शाखाओं की संख्या और कारोबार के आधार पर उन्हें बड़ी, बहुत बड़ी, मंझोली और छोटी शाखा में विभाजित किया जाता है। बैंकिंग सेवाओं में विशेषज्ञता लाने के लिए विशेष शाखाएँ भी स्थापित की जाती हैं जैसे-

- कॉर्पोरेट कारोबार शाखाएँ
- ओवरसीज शाखाएँ
- लघु उद्योग शाखाएँ
- सेवा शाखाएँ
- पूँजी बाजार शाखाएँ

शाखाओं में कार्यरत अधिकारियों को स्केल-1 से स्केल-6 तक विभाजित किया जाता है।

2.3 पत्राचार और अनुवाद की भूमिका-

बैंकिंग प्रशासन में भाषा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रारंभ में बैंकों के दस्तावेज अंग्रेजी में होते थे। स्वतंत्रता से पहले बैंक के ग्राहक अधिकतर पढ़े-लिखे नहीं होते थे। ऐसे में बैंक कर्मचारी ग्राहकों के आवेदन पत्र स्वयं भरते और आवश्यक दस्तावेजों को अंग्रेजी में अनुवादित करते। आज के समय में भी बैंकिंग दस्तावेजों और प्रक्रियाओं का हिंदी और स्थानीय भाषाओं में अनुवाद ग्राहकों की सुविधा के लिए आवश्यक है। यह न केवल बैंक की सेवाओं की पहुँच बढ़ाता है, बल्कि ग्राहक संतुष्टि और विद्वास भी सुनिश्चित करता है।

3. भाषा और ग्राहक सेवा में हिंदी का महत्व

बैंकिंग केवल वित्तीय लेन-देन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सेवा क्षेत्र भी है। ग्राहक चाहे कृषक हो, लघु उद्यमी हो, छात्र हो या व्यवसायी, सभी को बैंक की सेवाएँ समझना आवश्यक है।

3.1 स्वतंत्रता के बाद की परिस्थितियाँ-

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 14 सितंबर 1949 को हिंदी को केंद्र सरकार के कार्यालयों की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके बाद राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा नियम, 1976 लागू हुए। इन नियमों के अनुसार राष्ट्रीयकृत बैंकों में भी हिंदी और भारतीय भाषाओं में काम करना अनिवार्य कर दिया गया।

3.2 ग्राहक सेवा में हिंदी का प्रयोग-

आज के समय में- बैंक अपने साइनबोर्ड, खाता वितरण, विज्ञापन और सूचना हिंदी में प्रदान करते हैं। ग्राहकों को फोन या ऑनलाइन माध्यम से भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। बैंक कर्मचारियों को समय-समय पर हिंदी में प्रशिक्षण दिया जाता है। उदाहरण के लिए स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने अपने एटीएम और ऑनलाइन पोर्टल में हिंदी विकल्प जोड़ा है। इसी प्रकार, एचडीएफसी बैंक और आईसीआईसीआई बैंक भी अपने मोबाइल एप और शाखाओं में हिंदी में सेवाएँ प्रदान करते हैं।

यह केवल ग्राहकों की सुविधा के लिए नहीं, बल्कि बैंक की प्रतिस्पर्धा क्षमता बढ़ाने के लिए भी जरूरी है। वर्तमान में उदारीकरण और वैश्वीकरण के चलते निजी और विदेशी बैंक भी हिंदी और स्थानीय भाषाओं का प्रयोग कर रहे हैं ताकि ग्राहकों को जोड़े रखा जा सके।

3.3 प्रशिक्षण और अनुवाद-

बैंकों के प्रशिक्षण सत्रों में कर्मचारियों को-

- ग्राहकों के साथ संवाद के लिए हिंदी का प्रयोग सिखाया जाता है।
- आंतरिक दस्तावेजों में हिंदी का उपयोग अनिवार्य किया जाता है।
- कंप्यूटर, एटीएम और ऑनलाइन बैंकिंग में हिंदी विकल्प उपलब्ध कराया जाता है।

इन सभी प्रयासों का उद्देश्य है ग्राहक-केंद्रित सेवा प्रदान करना। भारत में बैंकिंग प्रणाली का विकास, प्रशासनिक ढाँचा और भाषा नीति सभी मिलकर बैंकिंग सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाते हैं। वाणिज्यिक बैंक आम जनता और उद्योग को सेवाएँ प्रदान करते हैं। विकास बैंक विशेष क्षेत्रीय और आर्थिक विकास के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

प्रशासनिक ढाँचा शाखाओं, मंडल/अंचल कार्यालयों और प्रधान कार्यालय पर आधारित त्रिस्तरीय प्रणाली के माध्यम से व्यवस्थित है। भाषा और अनुवाद का प्रयोग ग्राहक सेवा और बैंकिंग दस्तावेजों की समझ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आज के प्रतिस्पर्धी बैंकिंग परिवेश में ग्राहक सेवा ही वह मुख्य साधन है जो ग्राहकों को बैंक से जोड़ता है। हिंदी और भारतीय भाषाओं में कार्य करने से न केवल ग्राहकों की सुविधा बढ़ती है, बल्कि बैंकिंग सेवाओं का विद्गसनीयता स्तर भी उन्नत होता है। आधुनिक बैंकिंग केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक, भाषाई और प्रशासनिक जिम्मेदारियों का संगम भी है।

13.6 बैंकिंग साहित्य की भाषा स्वरूप, शब्दावली और अभिव्यक्ति-

बैंकिंग क्षेत्र की अपनी विशिष्ट भाषा होती है, जिसे विशिष्ट प्रयोजन की भाषा (Language for Specific Purposes) या प्रयोजनमूलक भाषा (Functional Language) कहा जाता है। प्रयोजनमूलक भाषा विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूप में प्रकट होती है। उदाहरण के लिए, विज्ञान की भाषा, वाणिज्य एवं व्यापार की भाषा, साहित्यिक भाषा, कार्यालयी भाषा आदि। इसी प्रकार, बैंकिंग साहित्य की भाषा भी अपने विशिष्ट स्वरूप और प्रयोजन के अनुसार विकसित हुई है।

प्रयोजनमूलक भाषा के प्रत्येक क्षेत्र में भाषा की अपनी विशेष प्रयुक्ति (register) होती है, जो शब्दावली, अभिव्यक्तियों और वाक्य संरचना के स्तर पर देखी जा सकती है। बैंकिंग साहित्य की भाषा साहित्यिक भाषा की शैली से पूरी तरह भिन्न होती है। यह साहित्यिक भाषा की तरह भाव प्रधान या व्याकरण प्रधान नहीं होती। यही कारण है कि बैंकिंग साहित्य की भाषा को साहित्यिक भाषा से अलग पहचान प्राप्त होती है।

हालांकि बैंकिंग साहित्य प्रयोजनमूलक है फिर भी यह सरल बोलचाल की भाषा जैसी सहज नहीं होती। इसका कारण यह है कि बैंक कार्यालय होते हैं और कार्यालय में प्रयुक्त भाषा का लहजा कार्यालयी और औपचारिक होता है। बैंकिंग साहित्य में कार्य-शैली के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग प्रकार के कार्य और कार्रवाई के लिए शब्द, अभिव्यक्तियाँ और वाक्य संरचनाएँ निर्धारित होती हैं। यही कारण है कि बैंकिंग साहित्य की भाषा सामान्य बोलचाल की भाषा से स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देती है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

बैंकिंग साहित्य में प्रशासनिक और बोलचाल की भाषा का मिश्रण देखने को मिलता है। इसका मूल कारण यह है कि बैंक की आंतरिक कार्यप्रणाली किसी भी प्रशासनिक कार्यालय जैसी होती है। लेकिन यदि ग्राहक के प्रयोग में आने वाली सामग्री की भाषा से तुलना करें तो बैंकिंग साहित्य की भाषा अपेक्षाकृत क्लिष्ट होती है। उदाहरणस्वरूप, ग्राहक सेवा में प्रयुक्त दस्तावेज जैसे आवेदन-पत्र, जमा पर्ची, निकासी पर्ची आदि में भाषा सरल और सुबोध होती है, जबकि बैंकिंग विज्ञापन में भाषा चुटीली, ध्यान आकर्षक और संक्षिप्त होती है। वहीं, ग्राहक सेवा से जुड़े वचन-पत्र, बंधक और फार्म विधिक प्रकृति के होते हैं, इसलिए उनकी भाषा भी कानूनी और औपचारिक होती है।

बैंकिंग क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के बैंक विकसित हुए हैं, जैसे व्यापारिक बैंक, औद्योगिक बैंक, विनिमय बैंक, भू-विकास बैंक, सहकारी बैंक आदि। इन सभी का मूल उद्देश्य जमा स्वीकार करना, वित्तीय लेन-देन करना, ऋण उपलब्ध कराना, मुद्रा विनिमय करना और देश के व्यापार में आर्थिक सहायता प्रदान करना है। इन प्रणालियों के अंतर्गत बैंक बचत खाता, सावधि जमा खाता, चालू खाता आदि सुविधाएँ ग्राहकों को उपलब्ध कराते हैं। विभिन्न प्रकार के बैंक और उनके कार्य-व्यवहार की विविधता के कारण बैंकिंग साहित्य में भाषा प्रयोग के स्तर पर भी विविधता दिखाई देती है। बैंकिंग साहित्य की भाषा के वैशिष्ट्य शब्दावली, अभिव्यक्तियों और वाक्य संरचना के संदर्भ में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

1. बैंकिंग शब्दावली का वैशिष्ट्य-

बैंकिंग साहित्य की भाषा में प्रयुक्त शब्दावली विशिष्ट रूप से विकसित हुई है। बैंकिंग शब्दावली जटिल नहीं होती, लेकिन इसमें हिंदी और अंग्रेजी के कई प्रचलित शब्दों का मिश्रण पाया जाता है। उदाहरण स्वरूप, बैंक, ड्राफ्ट, वाउचर, चैक, बिल, गारंटी, प्रीमियम, रजिस्टर, पासबुक, टोकन आदि शब्द लिप्यंतरित रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसके अलावा परंपरागत देशी बैंकिंग प्रणाली के शब्द भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका अर्थ पारिभाषिक होता है। उदाहरण के लिए: फुटकर, कर्ज, चुंगी, लेनदार, देनदार, पट्टा, ब्याज, साहूकार, बीजक, बट्टा, घाटा, बेबाकी पत्र, हुंडी, जमा, नामे, गिरवी, रेहन, खाता, बंधक, चालान आदि।

बैंकिंग साहित्य में संस्कृत शब्द भी प्रयुक्त होते हैं, जैसे आबंटन, संचय, निधि, धारक, विलेख, अवमूल्यन, स्वामित्व, संसाधन। इसके अतिरिक्त, अरबी-फारसी या अंग्रेजी भाषाओं के प्रचलित शब्द जैसे बजट, पेशगी, मुआवजा, पार्सल, अमानत, खपत, बकाया, बैंकर, दावा आदि भी देखे जा सकते हैं।

अंग्रेजी शब्दों के हिंदी शब्दानुवाद भी प्रयुक्त होते हैं जैसे-

financial →वित्तीय

annual account → वार्षिक लेखा

financial crisis → वित्तीय संकट

money order → धनादेश

field work → क्षेत्र कार्य

free economy → मुक्त अर्थव्यवस्था

export-oriented → निर्यातोन्मुखी

gross weight → कुल भार

head-note → शीर्ष टिप्पणी

head-control → शीर्ष-नियंत्रण

open account → खुला खाता

money value → मुद्रा मूल्य

इस प्रकार बैंकिंग शब्दावली में संस्कृत शब्दों के साथ-साथ प्रचलित और विदेशी शब्दों का संयोजन देखने को मिलता है। कई शब्द पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जैसे क्षति-नुकसान, संपत्ति-जायदाद, मुआवजा-क्षतिपूर्ति, कारोबार-व्यवसाय, अग्रिम-पेशगी, मूल्य-कीमत, शेष-बाकी इत्यादि। कुछ शब्द संकर शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं, जैसे शेयरधारी, बैंक उधार, चुकौती पत्र, रद्द नोट, नीलाम कमीशन, नकदी प्रमाण-पत्र। ग्राहक के लिए प्रयुक्त सामग्री में भाषा सहज और बोलचाल के अधिक निकट होती है।

2. विशिष्ट अभिव्यक्ति प्रयोग-

ग्राहकों से संबंधित बैंकिंग कामकाज और प्रक्रियाओं में कई विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। इनमें अधिकांश अभिव्यक्तियाँ प्रशासनिक कार्यालयों से ली गई हैं, लेकिन कुछ बैंक की अपनी विशिष्ट अभिव्यक्तियाँ भी होती हैं। ये अभिव्यक्तियाँ बैंकिंग साहित्य की भाषा को विशिष्ट बनाती हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकिंग अभिव्यक्तियों की द्विभाषी सूची तैयार की है, जिसे सभी बैंक अपने कर्मचारियों के उपयोग के लिए अपनाते हैं। उदाहरण स्वरूप-

अंग्रेज़ी अभिव्यक्ति

हिंदी अनुवाद-

It will be considered

इस पर विचार किया जाएगा

Cash received

नकद प्राप्त

Gross stock of hire and leased assets

किराए तथा पट्टे पर दी गई परिसंपत्तियों का सकल स्टॉक

I am directed to inform you

मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करूँ

3. विशिष्ट वाक्य संरचना-

बैंकिंग साहित्य की भाषा की वाक्य संरचना इसे विशिष्ट बनाती है। सरकारी तंत्र में अधिकारों का सुनिश्चित क्रम में वितरण होता है। प्रत्येक अधिकारी अपने उच्च अधिकारी के आदेश का पालन करता है और अपने अधीनस्थों को आदेश देता है। इसीलिए अधिकारी अपनी व्यक्तिगत राय व्यक्त नहीं करते और भाषा निर्वैयक्तिक होती है। इसी तरह, बैंकिंग साहित्य में अधिकांश वाक्य कर्तृवाच्य विहीन और कर्मवाच्य रूप में होते हैं।

उदाहरणस्वरूप-

क) Depositors are requested to keep their pass-books in a place of safety. The bank will not be responsible for any loss or fraudulent withdrawal arising out of the loss of a pass book due to a depositor's neglect.

हिंदी: जमाकर्ता से निवेदन है कि वे पासबुक को सुरक्षित स्थान में रखें। जमाकर्ता की असावधानी से पासबुक के खो जाने पर हुई क्षति या धोखे से निकासी के लिए बैंक जिम्मेदार नहीं होगा।

ख) The Bank will not hold itself responsible for the payment, through an oversight, or in the hurry of business, or cheques which may have been advised as lost or mislaid. It will do all in its power to protect the public, but does not guarantee the non-payment of such cheques.

हिंदी: जिन चेकों के खो जाने या यहाँ-वहाँ हो जाने की सूचना दी गई हो, उनके गलती से या कारोबार की जल्दीबाजी में अदायगी हो जाने पर बैंक अपने आपको उनकी अदायगी के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराएगा। बैंक जनता को बचाने के लिए यथाशक्ति प्रयत्न करेगा, परंतु वह ऐसे चेकों की अदायगी न किए जाने की कोई गारंटी नहीं देता है।

ग) Branches are requested to honour the Interest Warrants issued by the captioned company on presentation, if otherwise in order.

हिंदी: शाखाओं से अनुरोध है कि वे उक्त कंपनी द्वारा जारी किए गए ब्याज वारंटों को प्रस्तुत किए जाने पर तथा अन्यथा ठीक पाए जाने पर स्वीकार करें।

घ) As you may be aware, facilities under the Bills Rediscounting Scheme are available for purchase of phassis, or complete vehicle.

हिंदी: जैसा कि आपको विदित है, बिलों को पुन: भुनाने की योजना के अंतर्गत चेसीस या पूर्ण वाहन की खरीद हेतु सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मूल Banking Translation-v :

I/We have read the terms and conditions for providing the products/services opted by me/us and I/We agree to abide by and be bound by them as they are in force now and from time to time in force for such products/facilities. I/We request you to provide me/us the initial password/PIN which I/We shall change periodically for maintaining secrecy of my/our account level information. I/We undertake to keep my password/PIN with myself/ourselves without giving any room for disclosure of the same to any third party. Further, I/We shall be responsible for any disclosure of my/our password/PIN to any third party and the Bank shall not be held responsible for any loss/damage caused to me/us on account of such disclosures. I/We shall be availing this Product/Service at my/our request without any liability, either expressed or implied, to the Bank. I/We have read/understood the Bank's rule pertaining to the account/deposit scheme opted by me/us and the terms and conditions governing the same. The Bank may use the details furnished above for opening any other account for me/us in future with the Bank.

हिंदी अनुवाद-

मुझे/हमें जो उत्पाद/सेवाएँ चाहिए, उन्हें देने संबंधी शर्तें मैंने/हमने पढ़ ली हैं और मैं/हम ऐसे उत्पादों/सुविधाओं के लिए उनका अनुपालन करने और उनसे बाध्य होने के लिए सहमत हूँ, क्योंकि अब वे लागू हैं और समय-समय पर लागू होंगी। मेरा/हमारा अनुरोध है कि मुझे/हमें प्रारंभिक संकेत शब्द/निजी पहचान संख्या (PIN) प्रदान करें, जिन्हें मैं/हम समय-समय पर बदलते रहेंगे ताकि मेरे/हमारे खाते की जानकारी गोपनीय बनी रहे। मैं/हम वचन देता/देती हूँ कि संकेत शब्द/PIN को किसी अन्य पक्ष को बताए बिना अपने पास रखूंगा/रखेंगे। इसके अतिरिक्त, यदि संकेत शब्द/PIN किसी तीसरे पक्ष को प्रकट होता है, तो मैं/हम इसके लिए जिम्मेदार होंगे और बैंक को किसी भी हानि/नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जाएगा। मैं/हम यह उत्पाद/सेवा अपने अनुरोध पर बैंक की किसी भी जिम्मेदारी के बिना प्राप्त करेंगे। मैंने/हमने चुने हुए खाता/जमा योजना से संबंधित नियम और शर्तें पढ़/समझ ली हैं और उनका पालन करने के लिए सहमत हूँ। भविष्य में मेरे/हमारे लिए बैंक में अन्य खाता खोलने हेतु बैंक ऊपर दिए गए विवरणों का उपयोग कर सकता है।

बैंकिंग साहित्य की भाषा प्रशासनिक और व्यावसायिक भाषा का मिश्रण है। आंतरिक प्रक्रियाएँ प्रशासनिक भाषा की गंभीरता बनाए रखती हैं, जबकि ग्राहक लेन-देन व्यावसायिक भाषा का स्वरूप प्रदान करते हैं। इसलिए बैंकिंग साहित्य में प्रयुक्त शब्दावली, अभिव्यक्तियाँ और वाक्य संरचना बोलचाल की भाषा के करीब होने के साथ-साथ स्पष्ट, सुबोध और प्रयोजनमूलक होती हैं। भाषा की सहजता बैंकिंग साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, क्योंकि यह कथ्य की स्पष्ट अभिव्यक्ति सुनिश्चित करती है।

13.7 बैंकिंग साहित्य का अनुवाद पूर्वापेक्षाएँ और आवश्यकताएँ-

बैंकिंग प्रणाली सदियों से व्यावसायिक गतिविधियों का हिस्सा रही है। भारत में भी इसकी जड़ें प्राचीन काल तक जाती हैं। तथापि, आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था पश्चिमी सभ्यता का उपहार है। भारत में यह विशेष रूप से ब्रिटिश शासनकाल के दौरान विकसित हुई। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय बैंकिंग उद्योग का विकास पाश्चात्य बैंकिंग मॉडल से प्रभावित और प्रेरित रहा। इस प्रभाव के कारण आज भी बैंकों की प्रक्रियाएँ, कार्य पद्धतियाँ और दस्तावेज अंग्रेजी पर आधारित हैं। बैंकिंग कार्यों में मूल लेखन, पत्राचार, फॉर्म, नियम-पुस्तक, प्रचार सामग्री और आवश्यक दस्तावेजों का निर्माण अधिकांशत: अंग्रेजी में होता है।

हालांकि बैंकिंग का स्वरूप समय के साथ बदलता रहा। विशेषकर बैंकिंग के राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक अपनी सेवाक्षेत्रीय भूमिका में बड़े बदलाव के साथ सामने आए। संविधान और विधिक प्रावधानों के कारण बैंक भी राजभाषा के प्रयोग के दायरे में आए और उनके कार्यों में अनुवाद को नियमित स्थान मिला। तब तक, जब तक बैंकिंग प्रशासन में हिंदी का प्रचलन और मूल लेखन नहीं होता, द्विभाषिक नीति के तहत हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग चलता रहेगा।

बैंकिंग साहित्य का अनुवाद आम जनता के साथ बैंक की भाषा को जोड़ने में एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। आज भी बैंकिंग कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता बढ़ी हुई है। किसी भी बैंकिंग सामग्री का सही अनुवाद करने के लिए अनुवादक से कुछ आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ अपेक्षित होती हैं।

1. स्रोत और लक्ष्य भाषा पर अधिकार-

बैंकिंग साहित्य सहित किसी भी प्रकार की सामग्री का अनुवाद करने वाला अनुवादक पहले यह सुनिश्चित करे कि उसे स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर पूर्ण अधिकार हो। अनुवाद का अर्थ केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं, बल्कि एक भाषा के विचार, भाव और तथ्य की दूसरी भाषा में सही प्रस्तुति है। इसके लिए अनुवादक को दोनों भाषाओं की सूक्ष्मताओं और संरचनाओं की जानकारी होना आवश्यक है।

प्रत्येक भाषा की अपनी व्याकरणिक संरचना और अभिव्यक्ति प्रणाली होती है। उदाहरण स्वरूप, हिंदी में वाक्य संरचना कर्ता-कर्म-क्रिया के अनुसार होती है, जबकि अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया-कर्म का क्रम प्रचलित है। यदि अनुवादक दोनों भाषाओं के प्राकृतिक अंतर को समझता है, तो वह न केवल स्रोत भाषा की भावनाओं को सही समझ पाएगा,

बल्कि उन्हें लक्ष्य भाषा में भी सटीक रूप में प्रस्तुत कर पाएगा। उदाहरण के लिए अंग्रेजी वाक्य Admission with permission का शाब्दिक अनुवाद अनुमति से प्रवेश समझ में आते हुए भी सही प्रतीत नहीं होता। इसका उपयुक्त अनुवाद होगा पूछकर आइए या आज्ञा लेकर अंदर आइए। इसी प्रकार, All public sector banks का अनुवाद केवल सभी सरकारी क्षेत्र के बैंक करना उचित नहीं है। सही होगा सरकारी क्षेत्र के सभी बैंक।

अनुवादक को न केवल भाषिक स्वरूप की समझ होनी चाहिए, बल्कि उसे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और सामाजिक संदर्भ का भी ध्यान रखना आवश्यक है। उदाहरणत: अंग्रेजी में Please come in का अनुवाद केवल कृपया अंदर आइए करना पर्याप्त है; कृपया बंदर जाजी जैसी शब्द-शैली पूरी तरह गलत होगी।

2. विषय एवं संदर्भ सापेक्षता-

किसी भी विषय का अनुवाद करने के लिए अनुवादक को उस क्षेत्र का विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। बैंकिंग में विभिन्न विभाग और उनके विशेष कार्य होते हैं, जैसे ऋण, लेखा, निरीक्षण, विवरण योजना, सतर्कता, अंतर्राष्ट्रीय बैंकिंग, निवेश आदि। इन विभागों की विशेषताओं और प्रक्रियाओं का ज्ञान अनुवादक को संदर्भगत अर्थ स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करता है।

वस्तुत:, शब्दकोश का प्रयोग केवल प्रारंभिक मार्गदर्शन कर सकता है; संदर्भ का सही अर्थ जानने के लिए अनुवादक को मूल पाठ की आंतरिक भावना समझनी होती है। उदाहरणस्वरूप-

Stale cheque - शाब्दिक-बासी चेक; संदर्भगत-गतावधि चेक

Retired bill - शाब्दिक: सेवानिवृत्त बिल; संदर्भगत-छुडाए गए बिल

Capital expenditure - शाब्दिक-राजधानी व्यय; संदर्भगत-पूँजीगत व्यय

Bad debt - शाब्दिक: बुरा ऋण; संदर्भगत-अशेष्य ऋण

Face value - शाब्दिक चेहरा मूल्य; संदर्भगतअकृति मूल्य

Bull and bear - शाब्दिक सांड़ और भालू; संदर्भगत जड़िया और मंदड़िया

Speed money - शाब्दिक गति मुद्रा ; संदर्भगत रिद्वत

Sundry debtor - शाब्दिक सुंद्री ऋणी; संदर्भगत विविध देनदार

SAP audit - शाब्दिक फोटो लेखा परीक्षा; संदर्भगत अकस्मात् लेखा परीक्षा

Window dressing - शाब्दिक-खिड़की सजावट; संदर्भगत-ऊपरी दिखावा

Seed money - शाब्दिक बीज पन; संदर्भगत-प्रारंभिक धन

Character of security - शाब्दिक प्रतिभूति का चरित्र; संदर्भगत प्रतिभूति का स्वरूप

इस प्रकार विषय और संदर्भ बोध से अनुवादक सही और स्पष्ट अनुवाद प्रस्तुत कर सकता है। उदाहरणत: मूल वाक्य: मूल रूप से, शाखाओं को सभी बकाया राशि का भुगतान करना आवश्यक है ताकि वार्षिक समापन तक उन्हें बकाया-मुक्त घोषित किया जा सके।

अनुवादक यदि संदर्भगत ज्ञान के साथ अनुवाद करता है, तो यह होगा- शाखाओं से अपेक्षित है कि ये समस्त बकाया कार्यों का अद्यतन मिलान सुनिश्चित करें ताकि वार्षिक लेखाबंदी तक उन्हंष बकायामुक्त घोषित किया जा सके। यहां केवल शब्दों का अनुवाद नहीं बल्कि मूल भाव और उद्देश्य का सही प्रस्तुतीकरण हुआ।

3. पाठक वर्ग का ध्यान-

अनुवाद का उद्देश्य केवल सटीक शब्दानुवाद नहीं, बल्कि पाठक के समझने योग्य और प्रयुक्त भाषा में प्रस्तुति भी है। बैंकिंग साहित्य सीधे जनता के साथ जुड़ा होने के कारण, इसे सरल, सहज और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत करना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए बैंक द्वारा जारी किसी नोटिस में Please ensure all pending dues are cleared before the end of financial year को सरल भाषा में अनुवाद करना होगा- कृपया सुनिश्चित करें कि सभी बकाया राशि वार्षिक लेखाबंदी से पहले निपटाई जाए। यह जनता के लिए स्पष्ट और समझने योग्य है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा की प्राकृतिक वाक्य संरचना का ध्यान रखते हुए छोटे, संक्षिप्त और प्रभावशाली वाक्य रचना करनी चाहिए।

4. अनुवाद में सहजता और मूल भाव की सुरक्षा-

एक सफल अनुवादक वह होता है जो भाषा और वाक्य संरचना को बदलकर भी मूल भाव और उद्देश्य को अक्षुण्ण रखे। उदाहरणस्वरूप बैंकिंग प्रक्रिया में प्रयुक्त शब्दों का सही और संदर्भगत अनुवाद आवश्यक है। यह न केवल पाठक को समझ में आता है बल्कि कार्यों के सुचारु संचालन में भी मदद करता है।

अनुवाद में शब्दों के अलावा संस्कृति, परंपरा और सामाजिक अर्थ का भी ध्यान रखना चाहिए। जैस Annual General Meeting का शाब्दिक अनुवाद वार्षिक सामान्य बैठक सही प्रतीत होता है लेकिन संदर्भगत और प्रयुक्त अर्थ के अनुसार इसे वार्षिक महा-सभा अधिक उपयुक्त होगा। इसी प्रकार Net Banking का शाब्दिक अनुवाद नेट बैंकिंग रखा जाता है, क्योंकि यह तकनीकी और सामान्य उपयोग में अधिक स्पष्ट है।

बैंकिंग साहित्य का अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है बल्कि यह स्रोत और लक्ष्य भाषा की पूर्ण समझ, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ की जानकारी, विषयगत और संदर्भगत ज्ञान, और पाठक वर्ग के अनुसार उपयुक्त भाषा चयन पर निर्भर करता है। अनुवादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि अनूदित सामग्री न केवल सरल और सहज हो बल्कि मूल भाव, उद्देश्य और तथ्य का संपूर्ण प्रतिपादन करे।

अंतत: बैंकिंग साहित्य में अनुवाद का महत्व केवल प्रशासनिक कार्यों में ही नहीं बल्कि जनता और बैंक के बीच भाषा का सेतु बनने में है। सही अनुवाद से बैंकिंग कार्य अधिक पारदर्शी, सुलभ और प्रभावी बनते हैं। उदाहरणों से स्पष्ट हुआ कि संदर्भ के अनुसार शब्द चयन, सरल वाक्य संरचना और पाठक के लिए उपयुक्त प्रस्तुति अनुवाद की सफलता के प्रमुख आधार हैं।

अत: बैंकिंग साहित्य के अनुवादक के लिए आवश्यक पूर्वापेक्षाएँ तीन मुख्य आयामों में सीमित की जा सकती हैं:

- स्रोत और लक्ष्य भाषा का अधिकार
- विषय और संदर्भ की सापेक्षता का बोध
- पाठक वर्ग का ध्यान

इन तीनों पर ध्यान देने से अनुवादक न केवल भाषिक सटीकता प्राप्त करता है, बल्कि बैंकिंग कार्यों और जनता के बीच भाषा का प्रभावी पुल भी बना पाता है।

13.8 बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ-

सामान्य रूप से यह मान लिया जाता है कि जिस व्यक्ति को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा—दोनों पर अच्छा अधिकार हो, विषय-वस्तु की समुचित समझ हो तथा पाठक वर्ग की अपेक्षाओं का बोध हो, उसके लिए अनुवाद कोई विशेष कठिन कार्य नहीं है। परंतु यह धारणा व्यावहारिक स्तर पर पूर्णत: सत्य सिद्ध नहीं होती। अनुवाद मात्र शब्दों के स्थानांतरण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह विचार, संदर्भ, संस्कृति और प्रयोग-क्षेत्र के समन्वय की एक जटिल प्रक्रिया है। अनुवादक को न केवल भाषाओं की संरचना समझनी होती है, बल्कि विषय विशेष की शब्दावली, उसकी पारिभाषिक परंपरा और प्रयोगगत सूक्ष्मताओं को भी आत्मसात करना पड़ता है। बैंकिंग साहित्य का अनुवाद इस दृष्टि से और भी चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

आधुनिक बैंकिंग व्यवस्था पश्चिमी देशों की देन है। इसी कारण बैंकिंग का संपूर्ण कार्य प्रारंभ से ही अंग्रेज़ी भाषा में संचालित होता रहा है। भारत में जब बैंकिंग कार्यों को हिंदी में करने की पहल हुई, तब अनुवाद को एक आवश्यक माध्यम के रूप में अपनाया गया। द्विभाषिक नीति लागू होने के बाद बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद अनिवार्य हो गया। परिणामस्वरूप बैंकिंग अनुवादक के सामने अनेक प्रकार की समस्याएँ और चुनौतियाँ उभरकर सामने आईं। इन चुनौतियों में प्रमुख हैं—उपयुक्त शब्द चयन, सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का विशिष्ट अर्थ, शब्दावली की एकरूपता का अभाव, पारिभाषिक शब्दों का सही प्रयोग, विशिष्ट शब्दों और अभिव्यक्तियों का भावानुवाद, वाक्य-रचना संबंधी कठिनाइयाँ, संक्षिप्ताक्षरों का अनुवाद तथा अभिव्यक्ति शैली से जुड़ी समस्याएँ।

1. उपयुक्त शब्द चयन की चुनौती-

अनुवाद प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील पक्ष शब्द चयन का होता है। मूल भाषा में प्रयुक्त अनेक शब्दों के लक्ष्य भाषा में एक से अधिक पर्याय उपलब्ध होते हैं। ऐसे में अनुवादक के लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि कौन-सा शब्द संदर्भ के अनुकूल, अर्थ की दृष्टि से सटीक और प्रयोग की दृष्टि से स्वीकार्य है। यद्यपि पर्याय शब्द कोशों में समान अर्थ वाले माने जाते हैं परंतु उनकी अर्थछायाओं में सूक्ष्म अंतर होता है। इन सूक्ष्म भेदों को समझना और सही शब्द का चयन करना अनुवादक की भाषिक दक्षता का परिचायक है।

बैंकिंग क्षेत्र में 'credit' शब्द इसका उपयुक्त उदाहरण है। यह शब्द जमा, साख, ऋण और श्रेय—चारों अर्थों में प्रयुक्त होता है। 'pustomers account credited' में इसका अर्थ 'जमा' होता है, जबकि 'letter of credit' में 'साखपत्र'। 'predit proposal under consideration' में यह 'ऋण' का सूचक है और 'The credit goes to the branch manager में 'श्रेय' का। यदि अनुवादक संदर्भ को न समझे और केवल शब्दानुवाद करे तो अर्थ की गंभीर विकृति हो सकती है।

इसी प्रकार अनेक सामान्य विशेषण बैंकिंग संदर्भ में भिन्न अर्थ ग्रहण कर लेते हैं। 'Physical' शब्द सामान्य भाषा में 'भौतिक' के लिए प्रयुक्त होता है किंतु बैंकिंग में 'physical verification' का अर्थ 'प्रत्यक्ष सत्यापन' तथा 'physical assets' का अर्थ 'गोचर परिसंपत्तियाँ' होता है। 'ह्रश्चदृढ़' शब्द से बने युग्म—जैसे open cheque, open market, open credit—अलग-अलग अर्थछायाएँ प्रस्तुत करते हैं। 'Fast' शब्द भी 'fast growing sector', 'fast track facility' और 'fast buck' में भिन्न-भिन्न भाव प्रकट करता है। अत: संदर्भ की उपेक्षा अनुवाद को त्रुटिपूर्ण बना सकती है।

2. सामान्य प्रतीत होने वाले शब्दों का विशिष्ट अर्थ-

बैंकिंग साहित्य में अनेक ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जो सामान्य भाषा में साधारण अर्थ रखते हैं, परंतु तकनीकी संदर्भ में उनका अर्थ पूरी तरह बदल जाता है। उदाहरण के लिए 'fate' शब्द सामान्यत: भाग्य या भविष्य के अर्थ में लिया जाता है, किंतु बैंकिंग में यह बिल या चेक की वसूली की स्थिति का द्योतक होता है। 'Advise fate of bills' का सही अर्थ 'बिलों की वसूली की सूचना दें' है, न कि 'बिलों का भाग्य बताइए'।

इसी प्रकार 'window' शब्द बैंकिंग में सुविधा या अवसर के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'Special credit window' का अर्थ विशेष ऋण सुविधा होता है। 'Window dressing' जैसे शब्द-युग्म का शाब्दिक अनुवाद अर्थहीन होगा जबकि इसका भावार्थ 'आँकड़ों को अस्थायी रूप से आकर्षक दिखाना' है। ऐसे ही अन्य उदाहरण हैं—bad debts, dead money, blue chip shares, acid test ratio, black economy, golden handshake, naked debenture और hot money इन सभी शब्दों का सही अनुवाद तभी संभव है जब अनुवादक उनके तकनीकी आशय से परिचित हो।

3. शब्दावली में एकरूपता का अभाव-

बैंकिंग अनुवाद में शब्दावली की असंगति एक गंभीर समस्या है। यद्यपि भारतीय रिज़र्व बैंक ने मानक बैंकिंग शब्दावली विकसित की है, फिर भी विभिन्न बैंकों और कार्यालयों में अलग-अलग शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। 'Deposit' के लिए कहीं 'जमा' तो कहीं 'निक्षेप' प्रयुक्त होता है। 'Crop loan' कभी 'फसल ऋण' तो कभी 'शस्य ऋण' कहा जाता है। 'Hypothecation' के लिए 'आडमान' और 'दृष्टिबंधक' दोनों शब्द प्रचलित हैं। एक ही दस्तावेज़ में भिन्न-भिन्न पर्यायों का प्रयोग पाठक को भ्रमित करता है। इसलिए अनुवाद में शब्दावली की एकरूपता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है साथ ही अत्यधिक संस्कृतनिष्ठता से भी बचना चाहिए।

4. पारिभाषिक शब्दावली का सटीक प्रयोग-

बैंकिंग अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग अत्यधिक सावधानी से करना पड़ता है। 'Security' शब्द सामान्य भाषा में सुरक्षा का बोध कराता है किंतु बैंकिंग में इसका सही समतुल्य 'प्रतिभूति' या 'जमानत' है। इसी प्रकार 'recovery', 'collection' और 'realisation' तीनों का मूल भाव वसूली है, पर इनके प्रयोग-क्षेत्र अलग हैं। 'Cost', 'price', 'charge' और 'surcharge' भी अलग-अलग अर्थछायाएँ रखते हैं, जिनके लिए हिंदी में क्रमश: 'लागत', 'मूल्य',

'प्रभार' और 'अधिभार' जैसे सुनिश्चित शब्द प्रयोग किए जाते हैं। इन सूक्ष्म भेदों की अनदेखी तकनीकी त्रुटियों को जन्म दे सकती है।

5. विशिष्ट शब्दों और अभिव्यक्तियों का भावानुवाद-

बैंकिंग साहित्य तकनीकी होते हुए भी आम जनता से जुड़ा होता है। इसमें प्रयुक्त कई शब्द और मुहावरे ऐसे होते हैं çÁÙ ¤¥ ÙBâe ¥Í ãæÙ Øæãæ8Øæ8ÂÎ ãôâ·ÞæãÐ Rainy days' का अर्थ वर्षा से नहीं बल्कि कठिन समय से है। 'To give a blank cheque' का भाव 'पूरी छूट देना' है। 'Interest income was his only support' का सही अनुवाद होगा—'ब्याज की आय ही उसके जीवन-निर्वाह का एकमात्र साधन थी'। इससे स्पष्ट है कि अनुवादक को शब्द के स्थान पर भाव का अनुवाद करना चाहिए।

6. वाक्य-रचना संबंधी समस्याएँ-

प्रत्येक भाषा की अपनी व्याकरणिक संरचना और वाक्य-क्रम होता है। अंग्रेज़ी में लंबे, कर्मवाच्य वाक्य सामान्य हैं जबकि हिंदी में छोटे, कर्तृवाच्य वाक्य अधिक स्वाभाविक माने जाते हैं। यदि अंग्रेज़ी की वाक्य-रचना का अंधानुकरण हिंदी में किया जाए तो भाषा बोझिल हो जाती है। लंबे अंग्रेज़ी वाक्यों को हिंदी में अनुवाद करते समय उन्हें छोटे वाक्यों में विभाजित करना उपयुक्त होता है ताकि अभिव्यक्ति स्पष्ट और सहज बनी रहे।

7. संक्षिप्ताक्षरों के अनुवाद की समस्या-

बैंकिंग से जुड़े कार्य-व्यवहार में संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संक्षिप्ताक्षर मानव की प्रयत्न-लाघव प्रवृत्ति के सूचक होते हैं। इनके प्रयोग से भाषा में संक्षेप, गति और कार्य कुशलता आती है। बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिदिन असंख्य वित्तीय लेन-देन होते हैं, जिन्हें सीमित समय में संपन्न करना पड़ता है तथा ग्राहकों को त्वरित, प्रभावी और संतोषजनक सेवा प्रदान करना अनिवार्य होता है। इसी कारण बैंकिंग जगत में संक्षिप्ताक्षरों का व्यापक और नियमित उपयोग देखने को मिलता है।

परंपरागत रूप से बैंकिंग व्यवस्था अंग्रेज़ी भाषा पर आधारित रही है, इसलिए अधिकांश संक्षिप्ताक्षर भी अंग्रेज़ी में ही विकसित हुए हैं। जैसे—A/c (Account), B/C (Bills for Collection), B/D (Brought Down), B/e (Bill of exchange), C/A (Current Account), C/C (Cash Credit), C/F (Carried Forward), Cr. (Credit), CRR (Cash Reserve Ratio), DD (Demand Draft), Dr. (Debit), ECS (electronic Clearing Service), FD (Fixed DeCosit), KYC (Know Your Customer), MF (Mutual Fund), NRI (Non-Resident Indian), O/D (Overdraft), RD (Recurring DeCosit), RTGS (Real Time Gross Settlement), SB (Saving Bank), Tr. (Transfer), VAT (Value Added Tax), ZCB (Zero CouCon Bond) आदि संक्षिप्ताक्षर बैंकिंग कार्य-व्यवहार में सामान्य रूप से प्रयुक्त होते हैं।

जब बैंकिंग कार्य हिंदी में किया जाता है, तब इन अंग्रेज़ी संक्षिप्ताक्षरों के लिए हिंदी समानार्थक प्रस्तुत करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है। किंतु यही आवश्यकता अनुवादक के लिए एक बड़ी चुनौती बन जाती है। अंग्रेज़ी भाषा रोमन लिपि में लिखी जाती है, जो वर्ण-आधारित लिपि है। इस कारण उसमें शब्दों के प्रथम अक्षरों से संक्षिप्ताक्षर बनाना अपेक्षाकृत सरल होता है। इसके विपरीत हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली आक्षरिक भाषा है, जिसमें अक्षर और मात्राएँ संयुक्त रूप से अर्थ का निर्माण करती हैं। यही कारण है कि हिंदी में संक्षिप्ताक्षर निर्माण की प्रवृत्ति अंग्रेज़ी की तुलना में सीमित रही है।

फिर भी आधुनिक हिंदी में कुछ संक्षिप्ताक्षर प्रचलन में आ चुके हैं जैसे—बसपा, सपा, जद, राजद, इंक, माकपा, भाजपा इत्यादि। इनसे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी में भी संक्षिप्ताक्षर बनाए और स्वीकार किए जा सकते हैं। किंतु बैंकिंग क्षेत्र में इस दिशा में कोई व्यवस्थित और मानकीकृत प्रयास नहीं हुआ है। परिणामस्वरूप संक्षिप्ताक्षरों के निर्माण, प्रयोग और अनुवाद के लिए कोई निश्चित सिद्धांत उपलब्ध नहीं हैं।

ऐसी स्थिति में अनुवादक के सामने यह दुविधा उत्पन्न होती है कि वह अंग्रेज़ी संक्षिप्ताक्षर को देवनागरी में लिप्यंतरित करे, उसके पूर्ण रूप का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत करे, अथवा हिंदी में नया संक्षिप्ताक्षर निर्मित करे। उदाहरण के लिए, ष्टक्रक्र को 'सीआरआर' लिखना, 'नकद आरक्षित अनुपात' कहना, या 'ना.आ.अ.' जैसा कोई संक्षिप्त रूप

गढ़ना—तीनों विकल्प सामने आते हैं। व्यवहार में देखा गया है कि पाठक और बैंककर्मी अंग्रेज़ी संक्षिप्ताक्षरों के इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि हिंदी के नए या अनूदित संक्षिप्ताक्षरों को सहज रूप से स्वीकार नहीं कर पाते। इस संदर्भ में मानकता के अभाव के कारण अनुवादक की चुनौती और भी बढ़ जाती है।

8. अभिव्यक्ति-शैली के अनुवाद की चुनौती-

बैंकिंग साहित्य का स्वरूप सृजनात्मक साहित्य से भिन्न होता है। यह किसी विशेष विधा—जैसे कविता, कहानी या नाटक—से संबद्ध नहीं होता। इसलिए इसमें अभिव्यक्ति-शैली का प्रश्न भी अलग ढंग से उपस्थित होता है। बैंकिंग साहित्य का मूल उद्देश्य सूचना, निर्देश और नीति-निर्देशों का स्पष्ट संप्रेषण होता है। अत: इसके अनुवाद में तथ्य और कथ्य की शुद्धता सर्वोपरि होती है। लक्ष्य भाषा में मूल पाठ की तथ्यात्मक सामग्री को यथावत और स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना ही अनुवादक की सफलता का मापदंड माना जाता है।

इसके लिए आवश्यक है कि सामान्य संदर्भों में सामान्य शब्दों का प्रयोग किया जाए और तकनीकी या बैंकिंग संदर्भों में पारिभाषिक शब्दों का। किंतु इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक होता है कि मूल भाषा में प्रयुक्त विशिष्ट अभिव्यक्ति-शैली को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप रूपांतरित किया जाए। अंग्रेज़ी बैंकिंग साहित्य में अनेक ऐसे वाक्यांश और स्थिर प्रयोग मिलते हैं जो धीरे-धीरे एक विशेष शैली का निर्माण कर लेते हैं। उदाहरणस्वरूप—with regard to, in connection with, it is needless to mention, at the instance of, by and large, at any rate, by all means, time and again, over and above, more or less, in anticipation of, in the aggregate, notwithstanding anything to the contrary, inter alia, in favour of, as it were, in the first instance, within jurisdiction आदि।

इन अभिव्यक्तियों का शब्दश: अनुवाद करने पर भाषा कृत्रिम और बोझिल हो जाती है। इसलिए अनुवादक को लक्ष्य भाषा की स्वाभाविक अभिव्यक्ति-शैली को ध्यान में रखते हुए इनके मानक और स्वीकृत समतुल्य प्रयोग करने चाहिए। जहाँ ऐसे मानक समतुल्य उपलब्ध हों, वहीं उनका प्रयोग करना उचित होता है। उदाहरण के लिए 'with regard to' का अनुवाद 'के संबंध में', 'by and large' का 'कुल मिलाकर' तथा 'not with standing anything to the contrary' का 'इसके विपरीत कुछ भी होते हुए भी' के रूप में किया जा सकता है।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा प्रकाशित बैंकिंग शब्दावली में मुख्यत: पारिभाषिक शब्दों पर ही ध्यान दिया गया है। वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों की अलग से सूची उसमें उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थिति में बैंकिंग साहित्य के अनुवादक को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित प्रशासनिक शब्दावली का सहारा लेना पड़ता है। वस्तुत: बैंकिंग अनुवाद में अभिव्यक्ति-शैली का संतुलित और विवेकपूर्ण प्रयोग ही अनुवाद को प्रभावी, संप्रेषणीय और व्यवहारिक बनाता है।

13.9 सारांश

- बैंकिंग क्षेत्र में अनुवाद का महत्व अत्यंत व्यापक और अनिवार्य है। इसका मुख्य कारण यह है कि बैंकिंग से संबंधित अधिकांश अवधारणाएँ, नियम, नीतियाँ और तकनीकी साहित्य मूलत: अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध होते हैं। भारत जैसे बहुभाषी देश में जहाँ बैंकिंग सेवाएँ सीधे आम जनता से जुड़ी हैं वहाँ इन सूचनाओं को हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना आवश्यक हो जाता है। इसी आवश्यकता के कारण बैंकिंग अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण किंतु महत्वपूर्ण कार्य बन जाता है।
- बैंकिंग अनुवाद करते समय अनुवादक को केवल भाषा का ज्ञान ही नहीं बल्कि विषयवस्तु की गहरी समझ भी होनी चाहिए। बैंकिंग एक तकनीकी और विधिक क्षेत्र है इसलिए कई संदर्भों में शब्दश: अनुवाद अपरिहार्य होता है ताकि अर्थ की सटीकता और एकरूपता बनी रहे। विशेष रूप से कानूनी दस्तावेज़ों, परिपत्रों और नियमावलियों में पारिभाषिक शब्दावली का सही प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। अनुवाद की प्रक्रिया में लक्ष्य पाठक वर्ग का ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी है। यदि सामग्री बैंक ग्राहकों के लिए तैयार की जा रही है तो भाषा सरल, स्पष्ट और प्रचलित होनी चाहिए। कठिन या दुर्लभ शब्दों के स्थान पर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए जो आम

लोगों को सहज रूप से समझ में आ सकें। साथ ही जहाँ आवश्यक हो, अंग्रेजी शब्दों को देवनागरी लिपि में कोष्ठक के भीतर देने से पाठक को अर्थ समझने में सहायता मिलती है।

- बैंकिंग अनुवाद की एक प्रमुख चुनौती अंग्रेजी भाषा की वाच्य संरचना का प्रभाव है। अक्सर अंग्रेजी के कर्मवाच्य वाक्यों का सीधा अनुवाद हिंदी में किया जाता है जिससे भाषा बोझिल और अप्राकृतिक हो जाती है। अच्छे अनुवाद में इस प्रवृत्ति से बचते हुए हिंदी की स्वाभाविक वाक्य-रचना को अपनाना चाहिए। लंबे और जटिल वाक्यों को छोटे स्पष्ट वाक्यों में बदलना अनुवाद को अधिक प्रभावी बनाता है।
- अनुवाद एक सतत अभ्यास से निखरने वाली कला है। कोई भी अनुवाद पूर्ण नहीं होता, किंतु निरंतर अभ्यास शब्दकोशों और शब्दावलियों के सही उपयोग तथा स्रोत और लक्ष्य भाषा पर अच्छी पकड़ से अनुवाद की गुणवत्ता में निरंतर सुधार किया जा सकता है। यह इकाई बैंकिंग अनुवाद की आवश्यकताओं, चुनौतियों और व्यावहारिक पक्षों को समझने में सहायक है तथा विद्यार्थियों को अभ्यास के माध्यम से अपने अनुवाद कौशल को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है।

K 13.10 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर बैंकिंग अनुवाद से आशय उस प्रक्रिया से है, जिसके अंतर्गत बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र से संबंधित तथ्यों, सूचनाओं, नियमों, शर्तों, दस्तावेज़ों तथा तकनीकी शब्दावली का एक भाषा से दूसरी भाषा में सटीक, स्पष्ट और अर्थपूर्ण रूपांतरण किया जाता है।

प्रश्न 2 का उत्तर बैंकिंग क्षेत्र में अनेक प्रकार के दस्तावेज़ जैसे- खाता खोलने के प्रपत्र, ऋण एवं निवेश से संबंधित कागजात, बैंक परिपत्र, अधिसूचनाएँ, वित्तीय विवरण, ऑडिट रिपोर्ट, चेक, ड्राफ्ट, पासबुक प्रविष्टियाँ तथा डिजिटल बैंकिंग सामग्री (वेबसाइट, मोबाइल ऐप, ई-मेल आदि) प्रयुक्त होती हैं।

प्रश्न 3 का उत्तर भारत जैसे बहुभाषी देश में बैंकिंग अनुवाद का विशेष महत्व है, क्योंकि विभिन्न भाषाभाषी ग्राहक बैंकिंग सेवाओं का उपयोग करते हैं। ऐसे में बैंकिंग अनुवाद ग्राहकों और बैंक के बीच प्रभावी संचार का माध्यम बनता है। इसके माध्यम से ग्राहक बैंकिंग नियमों, शर्तों और प्रक्रियाओं को अपनी भाषा में आसानी से समझ पाते हैं, जिससे भ्रम और गलतफहमी की संभावना कम हो जाती है।

प्रश्न 4 का उत्तर बैंकिंग अनुवाद वह विशिष्ट अनुवाद प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र से संबंधित तकनीकी, विधिक और प्रशासनिक पाठ्य-सामग्री का एक भाषा से दूसरी भाषा में इस प्रकार रूपांतरण किया जाता है कि मूल पाठ का अर्थ, आशय, कानूनी वैधता और तकनीकी सटीकता पूर्णतः सुरक्षित रहे। इसमें केवल भाषिक रूपांतरण ही नहीं, बल्कि बैंकिंग प्रणाली, वित्तीय नियमों, आर्थिक अवधारणाओं तथा मानकीकृत शब्दावली की गहन समझ भी आवश्यक होती है।

प्रश्न 5 का उत्तर बैंकिंग अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य यह है कि स्रोत भाषा में निहित अर्थ, भाव और आशय लक्ष्य भाषा में पूर्णतः सुरक्षित रहें। बैंकिंग दस्तावेज़ों में प्रयुक्त प्रत्येक शब्द वित्तीय और कानूनी दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है, अतः अनुवाद में किसी प्रकार की अस्पष्टता या भ्रांति नहीं होनी चाहिए।

O13.11 अधिक जानने के लिए पढ़ें

1. तिवारी, भोलानाथ. (2012), अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. नगेंद्र, (2010), भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा, नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
3. वर्मा, रामविलास. (2008), हिंदी भाषा की संरचना, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
4. सिंह, रामचंद्र. (2015), प्रयोजनमूलक हिंदी, इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
5. मिश्र, विद्यानिवास. (2009), भाषा, साहित्य और संस्कृति, नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ।
6. शुक्ल, रामचंद्र. (2011). हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नागरी प्रचारिणी सभा।

7. Nida, e. A. (1964). Toward a science of translating. LeidenÑ e. J. Brill.
8. Newmark, P. (1988). A textbook of translation. LondonÑ Prentice Hall.
9. cÅrystal, D. (2003). The cÅambridge encycloà¿edia of the english language. cÅambridgeÑ cÅambridge University Press.
10. Byrne, J. (2012). Scientific and technical translation exà¿lained. LondonÑ Routledge.

M13.12 अभ्यास प्रश्न

(क) संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. ग्राहकों तक जानकारी किस प्रकार सरल बनाया जा सकता है ?
2. बैंकिंग में प्रभावी संचार किस प्रकार स्थापित कर सकते है ?
3. भारतीय रिजर्व बैंक से आप क्या समझते है ?
4. भारतीय रिजर्व बैंक का मुख्य कार्य क्या है ?
5. आधुनिक बैंकिंग सेवाएँ किस प्रकार सेवा प्रदान करती है ?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. बैंकिंग अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
2. भारत में बैंकिंग का इतिहास और आधुनिक विकास पर प्रकाश डालिए।
3. भारत में बैंकिंग प्रणाली की श्रेणियाँ एवं प्रशासन और भाषा का महत्व पर एक आलेख प्रस्तुत कीजिए।
4. बैंकिंग साहित्य की भाषा की स्वरूप, शब्दावली और अभिव्यक्ति को विविध उदाहरणों के माध्यम से लिखिए।
5. बैंकिंग साहित्य का अनुवाद पूर्वापेक्षाएँ और आवश्यकताओं पर प्रकाश डालिए।
6. बैंकिंग अनुवाद की चुनौतियाँ को विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

*** ***** ***

इकाई 14 पारिभाषिक शब्दावली

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य
14.2 प्रस्तावना
14.3 पारिभाषिक शब्दावली: अर्थ एवं स्वरूप
14.4 पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ
14.5 हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार
14.6 सारांश
14.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)
14.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें
14.9 अभ्यास प्रश्न

14.1 उद्देश्य-

इस इकाई के अध्ययन से आप—

- पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ एवं स्वरूप को समझ पाएंगे।
- विभिन्न विषयों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से परिचित होंगे।
- पारिभाषिक शब्दों के निर्माण और प्रयोग की प्रक्रिया को समझने में आसानी होंगी।
- हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली के विकास की दिशा को जान सकेंगे।
- तकनीकी, वैज्ञानिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दों के महत्व को जान पाएंगे।

14.2 प्रस्तावना

हिंदी भाषा का विकास केवल साहित्यिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, शिक्षा, विधि और व्यापार जैसे विविध क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होने लगी है। इन क्षेत्रों में प्रभावी संप्रेषण के लिए सामान्य शब्दावली पर्याप्त नहीं होती, बल्कि विशेष अर्थ वाले मानकीकृत शब्दों की आवश्यकता होती है, जिन्हें पारिभाषिक शब्द कहा जाता है।

पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किसी भी भाषा के विकास का महत्वपूर्ण संकेतक होता है। जब कोई भाषा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में प्रयुक्त होने लगती है, तब उसमें नई शब्दावली का विकास आवश्यक हो जाता है। हिंदी में भी स्वतंत्रता के बाद विभिन्न आयोगों और संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया गया, जिससे हिंदी को एक सशक्त ज्ञान-भाषा के रूप में स्थापित किया जा सके।

14.3 पारिभाषिक शब्दावली: अर्थ एवं स्वरूप

पारिभाषिक शब्दावली' शब्द की संरचना को यदि गहराई से देखा जाए तो यह दो प्रमुख अवयवों—'पारिभाषिक' और 'शब्दावली'—से मिलकर बना है, और इन दोनों अवयवों के अंतर्निहित अर्थ को समझे बिना इसकी संपूर्ण अवधारणा स्पष्ट नहीं हो सकती। 'पारिभाषिक' शब्द 'परिभाषा' से व्युत्पन्न है, और 'परिभाषा' का मूल अर्थ है—किसी वस्तु, विचार, सिद्धांत या अवधारणा को एक निश्चित सीमा, रूपरेखा और संदर्भ में इस प्रकार बाँध देना कि उसका अर्थ स्पष्ट, निश्चित और विवादरहित हो जाए। परिभाषा का उद्देश्य ही यह होता है कि किसी भी वस्तु या विचार की पहचान

और समझ में कोई भ्रम न रहे। जब किसी शब्द को इस प्रकार सीमित, नियंत्रित और सुनिश्चित अर्थ प्रदान कर दिया जाता है, तब वह 'पारिभाषिक' हो जाता है। दूसरी ओर 'शब्दावली' का अर्थ है—किसी विशेष क्षेत्र, भाषा या विषय में प्रयुक्त शब्दों का संगठित समूह या संग्रह। इस प्रकार जब हम 'पारिभाषिक शब्दावली' कहते हैं, तो इसका शाब्दिक अर्थ होता है—ऐसे शब्दों का व्यवस्थित समूह जिनके अर्थ पूर्वनिर्धारित, सीमित और विशेष संदर्भों में मान्य होते हैं। यह केवल सामान्य शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक संगठित और सुव्यवस्थित प्रणाली है, जिसमें प्रत्येक शब्द का अपना निश्चित स्थान और कार्य होता है।

गहराई से विचार करने पर स्पष्ट होता है कि पारिभाषिक शब्दावली का शाब्दिक अर्थ केवल शब्दों के समूह तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान के संगठन, वर्गीकरण और संप्रेषण की एक पद्धति भी है। जब कोई शब्द किसी विशेष क्षेत्र—जैसे विज्ञान, विधि, प्रशासन या तकनीक—में एक निश्चित अर्थ के साथ बार-बार प्रयुक्त होने लगता है और उसे उस क्षेत्र में सर्वमान्य स्वीकृति मिल जाती है, तब वह पारिभाषिक शब्द बन जाता है। इस प्रकार 'पारिभाषिक शब्दावली' का शाब्दिक अर्थ उन सभी शब्दों के समूह से है, जो किसी विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र में परिभाषित, मानकीकृत और नियंत्रित अर्थों के साथ प्रयुक्त होते हैं। इसमें न केवल शब्दों की संरचना महत्वपूर्ण होती है, बल्कि उनका प्रयोग, संदर्भ और स्वीकार्यता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है।

पारिभाषिक शब्दावली का तात्पर्य केवल शब्दों के सीमित और निश्चित अर्थों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण ज्ञान-प्रणाली के व्यवस्थित और सुसंगत संप्रेषण से जुड़ा हुआ है। जब हम किसी भी ज्ञान-क्षेत्र—जैसे विज्ञान, तकनीक, विधि, चिकित्सा, प्रशासन या शिक्षा—की बात करते हैं, तो वहाँ केवल सामान्य भाषा पर्याप्त नहीं होती, क्योंकि इन क्षेत्रों में जटिल अवधारणाओं, प्रक्रियाओं और सिद्धांतों को स्पष्ट और सटीक रूप में व्यक्त करना आवश्यक होता है। इस आवश्यकता की पूर्ति पारिभाषिक शब्दावली के माध्यम से होती है, जो प्रत्येक अवधारणा के लिए एक निश्चित और मानकीकृत शब्द प्रदान करती है। पारिभाषिक शब्दावली का तात्पर्य इस बात से भी है कि भाषा को इस प्रकार विकसित किया जाए कि वह ज्ञान के संप्रेषण में बाधा न बने, बल्कि उसे सरल, स्पष्ट और प्रभावी बनाए। उदाहरण के लिए यदि विज्ञान में 'ऊर्जा', 'बल' या 'दाब' जैसे शब्दों के स्थान पर सामान्य भाषा के अस्पष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाए, तो ज्ञान का सही संप्रेषण संभव नहीं होगा। इसी प्रकार विधि क्षेत्र में 'अधिनियम', 'विधेयक', 'अनुच्छेद' जैसे शब्दों का निश्चित अर्थ होता है, जो कानून की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली का वास्तविक तात्पर्य एक ऐसी भाषा-व्यवस्था से है, जो ज्ञान को व्यवस्थित, सटीक और सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम हो। यह केवल शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक बौद्धिक उपकरण है, जो विभिन्न विषयों के अध्ययन, अनुसंधान और व्यवहारिक प्रयोग को संभव बनाता है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा परिभाषाएँ

भारतीय विद्वान

1. भोलानाथ तिवारी के अनुसार- पारिभाषिक शब्द वे शब्द हैं, जो किसी विशेष ज्ञान-क्षेत्र में निश्चित और एकार्थी रूप में प्रयुक्त होते हैं।
2. नगेन्द्र के अनुसार-पारिभाषिक शब्दावली वह शब्द-संपदा है, जो किसी विषय की अवधारणाओं को सटीक और सीमित अर्थों में व्यक्त करती है।
3. गोपीनाथन के अनुसार-पारिभाषिक शब्दावली ज्ञान-विज्ञान की वह विशेष भाषा है, जो संप्रेषण को स्पष्ट और मानकीकृत बनाती है।
4. के. के. गोस्वामी के अनुसार- पारिभाषिक शब्द किसी विषय के तकनीकी पक्ष को व्यक्त करने वाले निश्चित अर्थयुक्त शब्द होते हैं।
5. भोलानाथ तिवारी (अनुवाद-विज्ञान)- पारिभाषिक शब्दावली वह प्रणाली है, जिसमें शब्दों का प्रयोग एक निश्चित संदर्भ और अर्थ-सीमा में किया जाता है।

पाश्चात्य विद्वान

6. eugen Nida. अनुसार- Technical terminology consists of terms that carry precise meaning within

a specific field of knowledge.

7. J. C. Catford के अनुसार–Terminology refers to the specialized vocabulary used in particular branches of knowledge with fixed meanings.
8. Peter Newmark के अनुसार–Terminology is the set of technical terms used to ensure accuracy and clarity in specialized communication.
9. Roman Jakobson के अनुसार– Scientific and technical terms function as precise linguistic units that minimize ambiguity in communication.
10. Lawrence Venuti के अनुसार– Terminology represents a structured system of specialized words that convey specific cultural and disciplinary meanings.

14.4 पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ-

पारिभाषिक शब्दावली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **एकार्थता**– पारिभाषिक शब्दावली की सबसे प्रमुख विशेषता एकार्थता है, अर्थात प्रत्येक शब्द का केवल एक निश्चित और सीमित अर्थ होता है। सामान्य भाषा में एक ही शब्द के अनेक अर्थ हो सकते हैं, लेकिन पारिभाषिक शब्दों में ऐसा नहीं होता। उदाहरण के लिए 'बल' शब्द सामान्य भाषा में शारीरिक शक्ति, दबाव या जोर के अर्थ में प्रयोग हो सकता है, किंतु भौतिकी में 'बल' (Force) का अर्थ एक निश्चित वैज्ञानिक परिभाषा से जुड़ा होता है—किसी वस्तु पर लगाया गया वह प्रभाव जो उसकी अवस्था या गति में परिवर्तन करे। इसी प्रकार 'अनुच्छेद' विधि के क्षेत्र में संविधान या अधिनियम के एक निश्चित खंड को दर्शाता है। इस प्रकार एकार्थता संप्रेषण को स्पष्ट और भ्रमरहित बनाती है।
2. **सटीकता**– पारिभाषिक शब्दों में सटीकता अत्यंत आवश्यक होती है, क्योंकि ये शब्द अपने विषय के अनुरूप स्पष्ट और सही अर्थ व्यक्त करते हैं। यदि शब्द सटीक न हो, तो अर्थ में भ्रम उत्पन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए 'ताप' और 'ऊष्मा' दोनों शब्द सामान्य भाषा में समान प्रतीत हो सकते हैं, किंतु विज्ञान में 'ताप' (Temperature) और 'ऊष्मा' (Heat) के अर्थ अलग-अलग हैं। इसी प्रकार 'अनुमति', 'अनुमोदन' और 'स्वीकृति' प्रशासनिक संदर्भ में भिन्न-भिन्न अर्थ रखते हैं। इसलिए पारिभाषिक शब्दों का चयन अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाता है, ताकि अर्थ पूर्णत: स्पष्ट और सटीक बना रहे।
3. **मानकीकरण**–मानकीकरण का अर्थ है कि किसी पारिभाषिक शब्द का प्रयोग एक निश्चित और स्वीकृत रूप में किया जाए। विभिन्न क्षेत्रों में एक ही अवधारणा के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग भ्रम उत्पन्न कर सकता है, इसलिए मानकीकरण आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'Budget' के लिए हिंदी में 'बजट' शब्द व्यापक रूप से स्वीकृत है। यदि कहीं 'आय-व्यय योजना' और कहीं 'वित्तीय योजना' कहा जाए, तो एकरूपता नहीं रहेगी। इसी प्रकार 'संविधान' शब्द पूरे देश में एक ही अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार मानकीकरण भाषा को व्यवस्थित और एकरूप बनाता है।
4. **विषय-विशिष्टता**– पारिभाषिक शब्द किसी विशेष विषय या क्षेत्र से संबंधित होते हैं और उसी संदर्भ में उनका प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए 'समीकरण' गणित का शब्द है, 'अनुबंध' प्रशासन या विधि का शब्द है, और 'परमाणु' विज्ञान का शब्द है। इन शब्दों का अर्थ अपने-अपने क्षेत्र में ही पूर्णत: स्पष्ट होता है। यदि इन्हें सामान्य संदर्भ में प्रयोग किया जाए, तो उनका सही अर्थ समझना कठिन हो सकता है। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली विषय-विशेष की आवश्यकताओं के अनुसार विकसित होती है और उसी के अनुरूप प्रयुक्त होती है।
5. **संक्षिप्तता**– पारिभाषिक शब्द सामान्यत: छोटे, संक्षिप्त और स्पष्ट होते हैं, ताकि उन्हें आसानी से समझा और प्रयोग किया जा सके। लंबे और जटिल वाक्यांशों के स्थान पर एक संक्षिप्त शब्द अधिक प्रभावी होता है। उदाहरण के लिए 'दूरभाष' शब्द 'दूर से बात करने का यंत्र' के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार 'संगणक' शब्द 'गणना करने वाली मशीन' के लिए प्रयुक्त होता है। संक्षिप्तता के कारण भाषा सरल, स्पष्ट और

प्रभावी बनती है तथा संप्रेषण में समय की भी बचत होती है।

6. **अद्विअर्थता**– अद्विअर्थता का अर्थ है कि पारिभाषिक शब्दों में किसी प्रकार की द्विअर्थता या भ्रम की स्थिति नहीं होती। ये शब्द इस प्रकार बनाए जाते हैं कि उनका केवल एक ही अर्थ हो और उसमें कोई अस्पष्टता न हो। उदाहरण के लिए 'अधिनियम' शब्द विधि के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ रखता है—कानून का वह रूप जो संसद या विधानमंडल द्वारा पारित किया गया हो। इसी प्रकार 'डेटा' शब्द सूचना के संगठित रूप को दर्शाता है। यदि किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, तो वह पारिभाषिक शब्द नहीं माना जाएगा।
7. **व्यावहारिकता**– पारिभाषिक शब्दावली केवल सैद्धांतिक नहीं होती, बल्कि उसका प्रयोग वास्तविक जीवन और कार्यक्षेत्र में किया जाता है। यह शब्दावली विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, शिक्षा, न्याय और व्यापार जैसे क्षेत्रों में सक्रिय रूप से उपयोग में आती है। उदाहरण के लिए 'प्रतिवेदन' (Report) प्रशासनिक कार्यों में, 'समीकरण' गणित में, 'अनुच्छेद' विधि में तथा 'डेटा' तकनीकी क्षेत्र में नियमित रूप से प्रयुक्त होते हैं। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि उसे व्यवहार में लागू करना भी है।

tमहत्वपूर्ण बिंदु

- पारिभाषिक शब्दावली किसी विशेष विषय, क्षेत्र या विद्या में प्रयुक्त मानकीकृत शब्दों का समूह होती है।
- इन शब्दों का अर्थ निश्चित, स्पष्ट और एकार्थी होता है, जिससे भ्रम की स्थिति उत्पन्न नहीं होती।
- पारिभाषिक शब्दावली का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का सटीक और प्रभावी संप्रेषण करना है।
- हिंदी में पारिभाषिक शब्दावली का विकास स्वतंत्रता के बाद विभिन्न आयोगों और संस्थाओं द्वारा किया गया।

14.5 हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के प्रकार

1. पूर्ण रूपांतरित शब्द–

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली में पूर्ण रूपांतरित शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि ये किसी भी भाषा के विकास, आत्मनिर्भरता और ज्ञान-विस्तार के प्रमुख साधन माने जाते हैं। पूर्ण रूपांतरित शब्द वे होते हैं, जिनका मूल स्रोत प्राय: अंग्रेज़ी या अन्य विदेशी भाषाएँ होती हैं, किंतु उन्हें हिंदी में इस प्रकार रूपांतरित किया जाता है कि वे पूर्णत: हिंदी के रूप, संरचना और व्याकरण के अनुरूप ढल जाते हैं। इस प्रक्रिया में केवल शब्द का शाब्दिक अनुवाद ही नहीं किया जाता, बल्कि उसके साथ जुड़ी अवधारणा, संदर्भ और अर्थ की संपूर्णता को भी ध्यान में रखा जाता है, ताकि हिंदी में उसका प्रयोग उसी सटीकता और प्रभाव के साथ किया जा सके, जैसा मूल भाषा में होता है।

पूर्ण रूपांतरण की प्रक्रिया एक साधारण भाषिक क्रिया नहीं है, बल्कि यह एक सुविचारित और व्यवस्थित बौद्धिक प्रक्रिया है, जिसमें भाषा-विशेषज्ञ, विषय-विशेषज्ञ और अनुवादक मिलकर ऐसे शब्दों का निर्माण करते हैं, जो न केवल अर्थ की दृष्टि से सटीक हों, बल्कि उच्चारण, लेखन और प्रयोग की दृष्टि से भी सरल और स्वाभाविक हों। इस प्रक्रिया में प्राय: संस्कृत मूल के शब्दों का सहारा लिया जाता है, क्योंकि संस्कृत हिंदी की आधारभूत भाषा है और उसमें नए शब्दों के निर्माण की अपार संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए 'Constitution' के लिए 'संविधान' शब्द केवल एक अनुवाद नहीं है, बल्कि यह उस संपूर्ण विधिक और राजनीतिक व्यवस्था को व्यक्त करता है, जो मूल शब्द में निहित है। इसी प्रकार 'Energy' के लिए 'ऊर्जा' और 'Equation' के लिए 'समीकरण' जैसे शब्द विज्ञान और गणित के क्षेत्रों में सटीक और मानकीकृत रूप में प्रयुक्त होते हैं।

पूर्ण रूपांतरित शब्दों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे हिंदी को एक सक्षम ज्ञान-भाषा के रूप में विकसित करने में सहायक होते हैं। यदि किसी भाषा में सभी तकनीकी और वैज्ञानिक शब्द विदेशी रूप में ही बने रहें, तो वह भाषा आत्मनिर्भर नहीं बन सकती। इसलिए हिंदी में ऐसे शब्दों का निर्माण अत्यंत आवश्यक था, जिससे विज्ञान, तकनीक, विधि, प्रशासन, शिक्षा और अर्थशास्त्र जैसे क्षेत्रों में हिंदी का प्रभावी उपयोग किया जा सके।

यही कारण है कि स्वतंत्रता के बाद विभिन्न संस्थाओं, विशेष रूप से वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT), ने इस दिशा में व्यापक कार्य किया और हजारों पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया।

इसके अतिरिक्त, पूर्ण रूपांतरित शब्दों का एक महत्वपूर्ण गुण उनकी स्वाभाविकता है। ये शब्द हिंदी में इस प्रकार रच-बस जाते हैं कि उनका विदेशी मूल प्रायः अनुभव नहीं होता। उदाहरण के लिए 'समिति', 'नीति', 'प्रशासन', 'शिक्षा' आदि शब्द आज सामान्य प्रयोग का हिस्सा बन चुके हैं। इन शब्दों की स्वीकार्यता इस बात का प्रमाण है कि पूर्ण रूपांतरण की प्रक्रिया सफल रही है।

हालाँकि, इस प्रक्रिया में कुछ चुनौतियाँ भी होती हैं। कई बार ऐसे शब्द अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ या जटिल हो जाते हैं, जिससे उनका प्रयोग सामान्य लोगों के लिए कठिन हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करते समय सटीकता के साथ-साथ सरलता और व्यवहारिकता का भी ध्यान रखा जाए। जब शब्द सरल, स्पष्ट और प्रयोग में सहज होते हैं, तभी वे व्यापक रूप से स्वीकार किए जाते हैं और भाषा के विकास में योगदान करते हैं।

पूर्ण रूपांतरित शब्द हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का आधारभूत तत्व हैं। ये न केवल भाषा को समृद्ध बनाते हैं, बल्कि उसे विभिन्न ज्ञान-क्षेत्रों में सक्षम और प्रभावी भी बनाते हैं। इनके माध्यम से हिंदी भाषा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराती है और एक समग्र ज्ञान-भाषा के रूप में विकसित होती है।

उदाहरण

1. Constitution : संविधान
2. Committee : समिति
3. Amendment : संशोधन
4. Energy : ऊर्जा
5. Force : बल
6. Equation : समीकरण
7. Geometry : ज्यामिति
8. Budget : बजट
9. Policy : नीति
10. Education : शिक्षा

2.मिश्रित शब्दावली

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली में मिश्रित शब्दावली एक महत्वपूर्ण और व्यावहारिक स्वरूप है, जिसमें हिंदी और अंग्रेज़ी (या अन्य विदेशी भाषाओं) के शब्दों का सम्मिलित प्रयोग किया जाता है। यह स्वरूप आधुनिक समय की भाषिक आवश्यकताओं का परिणाम है, जहाँ पूर्ण रूपांतरण हर स्थिति में संभव या प्रचलित नहीं हो पाता, इसलिए दोनों भाषाओं के शब्दों को मिलाकर एक ऐसा रूप तैयार किया जाता है, जो अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट, प्रयोग में सहज और संप्रेषण में प्रभावी हो। मिश्रित शब्दावली का निर्माण मुख्यतः उन परिस्थितियों में होता है, जब किसी तकनीकी या आधुनिक अवधारणा के लिए हिंदी में उपयुक्त और प्रचलित शब्द उपलब्ध नहीं होता, या यदि उपलब्ध होता भी है तो वह व्यवहार में कम प्रयुक्त होता है। ऐसे में अंग्रेज़ी शब्द को यथावत रखते हुए उसके साथ हिंदी शब्द जोड़ दिया जाता है, जिससे एक नया मिश्रित पद बनता है। उदाहरण के लिए 'Computer केंद्र' में 'Computer' अंग्रेज़ी का शब्द है, जबकि 'केंद्र' हिंदी का शब्द है। इसी प्रकार 'Digital शिक्षा' में 'Digital' अंग्रेज़ी का और 'शिक्षा' हिंदी का शब्द है। इस प्रकार के शब्द आधुनिक जीवन, विशेषकर तकनीक, शिक्षा, प्रशासन और मीडिया के क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। मिश्रित शब्दावली की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यावहारिकता और सहजता है। यह भाषा को अधिक लचीला और उपयोगी बनाती है, क्योंकि इसमें कठिन और जटिल अनुवादों के स्थान पर ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें लोग आसानी से समझ सकें।

उदाहरण के लिए 'ई-मेल सेवा', 'ऑनलाइन पंजीकरण', 'डिजिटल भुगतान' जैसे शब्द आज सामान्य जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। यदि इनके स्थान पर अत्यधिक संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रयोग किया जाए, तो वे कम प्रचलित हो सकते हैं और संप्रेषण में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

मिश्रित शब्दावली के प्रयोग में कुछ सीमाएँ भी होती हैं। यह भाषा की शुद्धता और मानकीकरण की दृष्टि से चुनौतीपूर्ण हो सकती है, क्योंकि इसमें दो भाषाओं के तत्व एक साथ मिलते हैं। इसके कारण कभी-कभी एकरूपता का अभाव भी देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए कहीं 'डिजिटल शिक्षा' कहा जाता है तो कहीं 'अंकीय शिक्षा' का प्रयोग किया जाता है। इसलिए भाषा-विशेषज्ञों का यह प्रयास रहता है कि जहाँ संभव हो, वहाँ पूर्ण रूपांतरित और मानकीकृत शब्दों का प्रयोग किया जाए, और जहाँ आवश्यक हो, वहीं मिश्रित शब्दावली का उपयोग किया जाए। यह स्वीकार करना होगा कि आधुनिक युग में मिश्रित शब्दावली का महत्व अत्यंत बढ़ गया है। वैद्रीकरण, तकनीकी विकास और संचार के विस्तार के कारण भाषाओं के बीच पारस्परिक प्रभाव बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप इस प्रकार की शब्दावली का प्रयोग स्वाभाविक रूप से बढ़ा है। यह भाषा को जीवंत, गतिशील और समयानुकूल बनाए रखने में सहायक होती है।

उदाहरण

I. Computer → केंद्र
II. Digital → शिक्षा
III. Online → पंजीकरण
IV. Mobile → सेवा
V. Internet → सुविधा
VI. Smart → कक्षा
VII. Digital → भुगतान
VIII. E-mail → सेवा
IX. Software → विकास
X. Online → परीक्षा

3. देवनागरी में अंग्रेज़ी शब्द

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का एक महत्वपूर्ण स्वरूप वह है, जिसमें अंग्रेज़ी शब्दों को सीधे देवनागरी लिपि में लिखकर हिंदी में स्वीकार कर लिया जाता है। इस प्रकार के शब्दों में न तो उनका अर्थ बदला जाता है और न ही उनका मूल रूप पूरी तरह परिवर्तित किया जाता है, बल्कि केवल उनकी लिपि को हिंदी (देवनागरी) के अनुरूप बना दिया जाता है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से उन शब्दों के लिए अपनाई जाती है, जो आधुनिक विज्ञान, तकनीक, संचार और दैनिक जीवन में अत्यधिक प्रचलित हो चुके हैं और जिनके लिए हिंदी में समान रूप से लोकप्रिय या सरल शब्द उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार की शब्दावली का विकास मुख्यत: वैद्रीकरण, तकनीकी प्रगति और भाषाई संपर्क के परिणामस्वरूप हुआ है। आज के समय में 'मोबाइल', 'इंटरनेट', 'ट्रेन', 'बस' जैसे शब्द इतने सामान्य हो चुके हैं कि इनके स्थान पर हिंदी के विकल्प (जैसे 'दूरभाष यंत्र', 'अंतरजाल' आदि) प्राय: व्यवहार में कम ही प्रयुक्त होते हैं। इसलिए सुविधा और व्यवहारिकता के दृष्टिकोण से इन अंग्रेज़ी शब्दों को देवनागरी में लिखकर ही प्रयोग किया जाता है। शब्दावली की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सरलता और व्यापक स्वीकृति है। ये शब्द लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाते हैं और संप्रेषण को सहज बनाते हैं। हालाँकि, भाषा की शुद्धता और मानकीकरण की दृष्टि से यह एक चुनौती भी हो सकती है, क्योंकि इससे हिंदी में विदेशी प्रभाव बढ़ता है। फिर भी, व्यावहारिकता के कारण इस प्रकार की शब्दावली को स्वीकार किया जाता है और यह आधुनिक हिंदी का अभिन्न अंग बन चुकी है।

4.उपसर्ग-प्रत्यय से निर्मित शब्द

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली में एक महत्वपूर्ण प्रकार वह है, जिसमें उपसर्ग (क्क्हद्दद्धद्ब3) और प्रत्यय (Suffix) के माध्यम से नए शब्दों का निर्माण किया जाता है। यह प्रक्रिया हिंदी (विशेषत: संस्कृत मूल) की शब्द-निर्माण क्षमता को दर्शाती है और भाषा को समृद्ध बनाने में अत्यंत सहायक होती है। इसमें मूल शब्द के साथ उपसर्ग (जैसे—प्र, उप, अनु, प्रति आदि) या प्रत्यय (जैसे—ता, क, ईय, इत्यादि) जोड़कर नए शब्द बनाए जाते हैं, जिनका अर्थ अधिक विशिष्ट और पारिभाषिक हो जाता है।

उदाहरण के लिए 'ज्ञान' शब्द में 'ि-क' प्रत्यय जोड़ने से 'वैज्ञानिक' शब्द बनता है, जो एक विशेष अर्थ—विज्ञान से संबंधित व्यक्ति या वस्तु—को व्यक्त करता है। इसी प्रकार 'विधि' में '-क' प्रत्यय जोड़कर 'विधिक' शब्द बनता है, जो विधि (कानून) से संबंधित अर्थ देता है। इस प्रकार शब्द-निर्माण की यह प्रक्रिया भाषा को न केवल सटीक बनाती है, बल्कि उसमें नए-नए पारिभाषिक शब्दों के निर्माण की क्षमता भी प्रदान करती है।

शब्दावली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह पूरी तरह स्वदेशी और मानकीकृत होती है। इसमें विदेशी शब्दों पर निर्भरता कम होती है और भाषा अपनी आंतरिक शक्ति के आधार पर विकसित होती है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से विज्ञान, प्रशासन, विधि और शिक्षा के क्षेत्रों में अत्यंत उपयोगी है, जहाँ सटीक और एकार्थी शब्दों की आवश्यकता होती है।

उदाहरण

1. [illegible] → वैज्ञानिक
2. विधि → विधिक
3. शिक्षा → शैक्षणिक
4. राष्ट्र → राष्ट्रीय
5. समाज → सामाजिक
6. राजनीति → राजनीतिक
7. विज्ञान → वैज्ञानिकता
8. इतिहास → ऐतिहासिक
9. अर्थ → आर्थिक
10. संस्कृति → सांस्कृतिक

5. भारतीय भाषाओं से ग्रहण किए गए शब्द

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत अन्य भारतीय भाषाएँ हैं। हिंदी ने समय-समय पर संस्कृत, उर्दू, फारसी, अरबी तथा अन्य भारतीय भाषाओं से अनेक शब्दों को ग्रहण किया है, जो आज उसकी शब्दावली का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। इन शब्दों को बिना किसी बड़े परिवर्तन के हिंदी में स्वीकार कर लिया गया है, क्योंकि वे अर्थ, प्रयोग और ध्वनि की दृष्टि से उपयुक्त और सहज होते हैं।

इस प्रकार के शब्द भाषा की समन्वयकारी प्रकृति को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए 'दस्तावेज', 'करार', 'अदायगी' जैसे शब्द मूलत: फारसी या उर्दू से आए हैं, लेकिन आज प्रशासनिक और विधिक भाषा में व्यापक रूप से प्रयुक्त होते हैं। इसी प्रकार कई शब्द संस्कृत या अन्य भारतीय भाषाओं से भी लिए गए हैं। शब्दावली का मुख्य लाभ यह है कि यह भाषा को अधिक समृद्ध, लचीला और व्यापक बनाती है। यह विभिन्न भाषाई परंपराओं को जोड़कर एक समन्वित भाषा का निर्माण करती है। हालाँकि, इसमें भी मानकीकरण की आवश्यकता होती है, ताकि शब्दों का प्रयोग एकरूपता के साथ किया जा सके।

Wअपनी प्रगति जांचें

प्रश्न 1. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

प्रश्न 3. पारिभाषिक शब्दावली के विकास में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) की क्या भूमिका रही है?

प्रश्न 4. पारिभाषिक शब्दावली किन-किन क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है?

प्रश्न 5. पारिभाषिक शब्दावली और सामान्य शब्दावली में क्या अंतर है?

214.6 सारांश-

- पारिभाषिक शब्दावली किसी भी भाषा के समग्र विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है, क्योंकि इसके माध्यम से भाषा केवल सामान्य संप्रेषण का साधन नहीं रह जाती, बल्कि वह ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, प्रशासन और शिक्षा जैसे जटिल एवं विशिष्ट क्षेत्रों में भी प्रभावी रूप से प्रयोग के योग्य बनती है। पारिभाषिक शब्द वे होते हैं, जिनका अर्थ निश्चित, एकार्थी और मानकीकृत होता है, जिससे किसी भी विषय की अवधारणाओं को स्पष्ट और सटीक रूप में अभिव्यक्त किया जा सके। हिंदी भाषा में पारिभाषिक शब्दावली का विकास स्वतंत्रता के पश्चात विशेष रूप से गति प्राप्त करता है, जब विभिन्न संस्थाओं और आयोगों—जैसे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग—ने इस दिशा में संगठित प्रयास किए। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप हिंदी में विज्ञान, तकनीक, विधि, प्रशासन और अन्य क्षेत्रों के लिए हजारों मानक शब्दों का निर्माण किया गया। पारिभाषिक शब्दावली की विशेषता यह है कि यह भाषा को सटीकता, स्पष्टता और एकरूपता प्रदान करती है, जिससे ज्ञान का संप्रेषण अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बनता है। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दावली न केवल भाषा को समृद्ध करती है, बल्कि उसे आधुनिक ज्ञान-प्रणाली के अनुरूप सक्षम और उपयोगी भी बनाती है।

K14.7 प्रगति विवरण (केवल रूपरेखा)

प्रश्न 1 का उत्तर : पारिभाषिक शब्दावली विशेष विषयों में प्रयुक्त निश्चित और मानकीकृत अर्थ वाले शब्दों का समूह है।

प्रश्न 2 का उत्तर : पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषताएँ एकार्थता, सटीकता, मानकीकरण और विषय-विशिष्टता हैं।

प्रश्न 3 का उत्तर : वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) ने विभिन्न विषयों के लिए मानक शब्दावली तैयार कर हिंदी में पारिभाषिक शब्दों के विकास को दिशा दी।

प्रश्न 4 का उत्तर : पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग विज्ञान, तकनीक, प्रशासन, विधि, शिक्षा और व्यापार आदि क्षेत्रों में किया जाता है।

प्रश्न 5 का उत्तर : पारिभाषिक शब्दावली विशेष क्षेत्रों में निश्चित अर्थ के साथ प्रयुक्त होती है, जबकि सामान्य शब्दावली का प्रयोग दैनिक जीवन में सामान्य अर्थों में किया जाता है।

O14.8 अधिक जानने के लिए पढ़ें

- अनुवाद-विज्ञान -भोलानाथ तिवारी
- अनुवाद सिद्धांत और व्यवहार - हरीश कुमार सेठी
- वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (CSTT) की प्रकाशन सामग्री

M14.9 अभ्यास प्रश्न-

(क) संक्षिप्त प्रश्न के उत्तर लिखिए

1. पारिभाषिक शब्दावली क्या है?

2. पारिभाषिक शब्दों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
3. पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किन-किन क्षेत्रों में होता है?
4. पारिभाषिक शब्दावली और सामान्य शब्दावली में क्या अंतर है?
5. पारिभाषिक शब्दों के मानकीकरण का क्या महत्व है?

(ख) निम्नलिश्वित प्रस्त्रें के उत्तर लिश्विए

1. पारिभाषिक शब्दावली के अर्थ एवं स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डालिए।
2. पारिभाषिक शब्दों की विशेषताओं का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।
3. हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली के प्रकारों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
4. पारिभाषिक शब्दावली के विकास में विभिन्न संस्थाओं और आयोगों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
5. आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में पारिभाषिक शब्दावली के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

*** ***** ***